घट रामायन

[भाग १]

सतगुरु तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की रची हुई

यह ग्रंथ दो प्रमानिक लिपियोँ का मिलान करके बड़ी शुद्धता से दो भागोँ मेँ पूरा छापा गया है, मय उन महात्मा के

जीवन-चरित्र

के

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स मेँ प्रकाशित हुई

सन् १९१६ ई०

दूसरा एडिशन]　　[दाम प्रति भाग ... के है

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओँ की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैँ उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीँ थीँ और जो छपी थीँ सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीँ उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैँ और फुटकल शब्दोँ की हालत में सर्ब-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैँ, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियोँ का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीँ छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दोँ के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैँ। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तोँ और महापुरुषोँ के नाम किसी बानी में आये हैँ उन के बृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैँ।

दो अंतिम पुस्तकेँ इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीँ जिन का नमूना देख कर महामहो-पाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओँ और बुद्धिमानोँ के बचनोँ की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १६१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराज काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओँ का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयोँ की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवेँ उन्हेँ हम को कृपा करके लिख भेजेँ जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावेँ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनोँ से इन पुस्तकोँ के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्ब-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीँ रक्खा गया है।

॥ भूमिका ॥

(पहिले एडिशन की)

हमारा इरादा घट रामायन के छापने का न था क्योंकि इस ग्रंथ को मुंशी देवी प्रसाद साहिब उर्फ़ देवी साहिब पहले छाप चुके हैं परन्तु संतबानी सीरीज़ के बहुत से गाहकों के आग्रह पर कि यह अनमोल ग्रंथ हमारी पुस्तक-माला के सिलसिले में ज़रूर छपना चाहिये क्योंकि औवल तो देवी साहिब की छापी हुई पुस्तक में छेपक बिशेष है जिस से वह तुलसी साहिब की निर्मल और अछूती बानी नहीं कही जा सकती, दूसरे उसका दाम बहुत ज़ियादा है यानी बढ़िया काग़ज़ पर १०॥) और घटिया काग़ज़ पर ७॥) जिसे मामूली हैसियत के लोग नहीं ख़रीद सकते ॥

दो बरस हुए हमारे मित्र लाला बालमकुंदजी हाथरस निवासी ने हम को एक लिखी हुई पुस्तक घट रामायन की दी थी लेकिन बिना दूसरी लिपि के उस से पूरे तौर पर काम नहीं चल सकता था। अब हमारे पूज्य मित्र राय बहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब ने रत्नसागर की तरह इस अनमोल ग्रंथ की हस्त-लिखित प्रति को भी परमपुरुष स्वामीजी महाराज के पाठ की पुस्तकों में से निकाल कर अति दया से प्रेमी जनों के उपकारार्थ छापने को भेज दिया। यह लिपि प्राचीन और प्रमानिक पाई गई और जो अशुद्धता या त्रुटि कहीं कहीं थी वह दूसरी लिपि की सहायता से शोधी और ठीक की गई। अब यह पुस्तक जो छाप कर प्रेमी जनों के सामने रक्खी जाती है मुताबिक़ असल के है और जहाँ तक हो सका शुद्धता के साथ छापी गई है ॥

हम ने तवज्जह के साथ अपनी लिपियों का मुंशी देवीप्रसाद जी की पुस्तक से मुक़ाबला किया और शुरू में जहाँ तक फ़र्क़ कम पाया पाठ-भेद और त्रुटियों को अपनी पुस्तक के फुटनोट में दिखलाया लेकिन आगे चल कर इतना ज़ियादा फ़र्क़ न सिर्फ़ इक्के दुक्के लफ़्ज़ों का बल्कि कड़ियों की लड़ियों का मिला कि वह कोशिश छोड़ दी गई। वह अधिक कड़ियाँ और पद छेपक हैं या असल इसको हर एक बिबेकी पाठक समझ सकता है ॥

तुलसी साहिब का लिखा हुआ उनके पूर्व जन्म का बृत्तांत दूसरे भाग में दिया गया है जैसा कि हमारी लिपियों में है और जोकि मुनासिब जगह उसकी जान पड़ी। सर्वसाधारन के उपकार के हेतु इस ग्रंथ को दो भागों में बाँट दिया गया है और बढ़िया काग़ज़ पर छाप कर दाम केवल एक रुपया प्रति भाग रक्खा गया है जिस में हर एक जिज्ञासू एक या दो बार करके पूरा ग्रंथ मँगा सके ॥

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र उनकी शब्दावली और रत्नसागर के साथ पहले छापा जा चुका है परन्तु जोकि अब एक नई पुस्तक "सुरत-बिलास" नाम की जिस में तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र लिखा है हम को मिली है उसकी सहायता से शोध कर बिस्तार के साथ उन का जीवन-चरित्र यहाँ पर छापते हैं ॥

हम इस अवसर पर रायबहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब को अनेक धन्यबाद देते हैं जिनकी कृपा से यह ग्रंथ छापा गया। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने इस अनमोल रत्न को पहले पहल बड़ी योग्यता और परिश्रम से छापे में प्रकाशित किया इस उपकार का कोई वार पार नहीं है। हम ने भी यदि इस ग्रंथ को उनकी पुस्तक से पहले न पढ़ा होता तो उसके छापने का उत्साह न होता और न बिना उसकी मौजूदगी के अपनी लिपियों को कहीं कहीं शोधने में झिझक दूर होती, इस लिये हम उनको बिशेष धन्यबाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
सितम्बर १९११

अधम,
एडिटर।

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र

सतगुरु तुलसी साहिब जिनको लोग साहिबजी भी कहते थे जाति के दक्खिनी ब्राह्मन राजा पूना के युबराज यानी बड़े बेटे थे जिनका नाम उनके पिता ने श्यामराव रक्खा था। बारह बरस की उमर मेँ उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ पिता ने उनका बिवाह कर दिया पर वह जवान होने पर भी ब्रह्मचर्य्य मेँ पक्के और अपनी स्त्री से अलग रहे। उनकी स्त्री जिसका नाम लक्ष्मीबाई था पूरी पतिब्रता थीँ और अपने पति की सेवा दिल जान से बराबर करती थीँ। आख़िर के एक दिन जबकि उनके पति किसी भारी सेवा पर बड़े प्रसन्न हुए और उनसे बर माँगने के कहा ते उन्हेँने अपनी सास की सीख अनुसार यह माँगा कि मुझे एक पुत्र हो। साहिबजी ने कहा बहुत अच्छा और दस महीने पीछे बेटा हुआ॥

साहिबजी के पिता भी बड़े भक्त थे और अब इनकी इच्छा हुई कि उनको राज गद्दी दे कर आप एकान्त मेँ रह कर मालिक की बंदगी करेँ परन्तु उनको हज़ार समझाया वह किसी तरह राज़ी न हुए और अपने पिता से बैराग और भक्ति की ऐसी चरचा की कि उनको जवाब न आया, फिर भी वह इनके राज गद्दी पर बैठने की तैयारी करते रहे। जब गद्दी पर बैठने के एक दिन बाक़ी रहा ते साहिबजी अपने पिता से मिलने बाग़ के थोड़े से सवारोँ के साथ जो उनकी निगरानी के लिये तईनात थे गये और वहाँ से आगे हवा खाने के बहाने एक तेज़ तुरकी घोड़े पर सवार होकर निकल गये। जब शहर-पनाह के पास पहुँचे ते मौज से ऐसी आँधी उठाई कि घोर अँधेरा छागया जिसकी ओट मेँ वह घोड़ा भगा कर अपने साथियेँ से अलग हो गये। राजा ने यह ख़बर सुनकर इनकी खोज के लिये चारो ओर देश बिदेश आदमी व सवार दौड़ाये पर जब कहीँ पता न लगा ते अति उदास व निरास होकर राज्य के त्याग किया और अपने छोटे कुँवर बाजीराव के गद्दी पर बैठाया॥

तुलसी साहिब कितने ही बरस तक जंगलोँ, पहाड़ोँ और दूर दूर शहरोँ मेँ घूमे और हज़ारोँ आदमियोँ के उपदेश देकर सत्य मार्ग मेँ लगाया और कई बरस पीछे ज़िला अलीगढ़ के हाथरस शहर मेँ आकर पक्के तौर पर ठहरे और वहाँ अपना सतसँग जारी किया॥

घर से निकलने के बयालीस बरस पीछे वह अपने छोटे भाई राजा बाजीराव से बिठूर (ज़िला कानपुर) मेँ मिले थे जहाँ कि बाजीराव गद्दी से उतारे जाने पर सम्वत् १८७६ मेँ भेज दिये गये थे। इसका हाल "घुरत बिलास" ग्रंथ मेँ इस तरह लिखा है कि साहिबजी गंगा के तट पर रम रहे थे कि एक शूद्र और ब्राह्मन मेँ झगड़ा

होते देखा। ब्राह्मन गंगाजी के तट पर संध्या करता था और शूद्र नहा रहा था। शूद्र की देँह से जल का छींटा ब्राह्मन पर पड़ा जिस से वह क्रोध मेँ भर आया और उठ कर शूद्र को गाली देने और मारने लगा। साहिबजी के पूछने पर उसने सब हाल कहा और बोला कि इस शूद्र ने जल की छींट अपने बदन से उड़ा कर मुझे अपवित्र कर दिया और अब मेरे पास दूसरी धोती भी नहीँ है कि फिर नहा कर पहरूँ और पूजा ख़तम करूँ। साहिबजी ने समझाया कि तुम्हारे ही शास्त्र के अनुसार गंगा और शूद्र दोनोँ एक ही पद से याने बिष्नु के चरन से निकले हैँ फिर क्योँ एक को पवित्र और दूसरे को अपवित्र मानते हो! यह सुनकर ब्राह्मन लज्जित हुआ॥

घाट पर जो लोग जमा थे उनमेँ से राजा बाजीराव के एक पंडित ने साहिबजी को पहिचान लिया क्योँकि इनका अति सुन्दर और मोहनी रूप जिस किसी ने एक बार भी दरशन किया उसकी आँखोँ मेँ समा जाता था। उसने तुरत राजा को ख़बर भेजी कि आपके भाई आये हैँ। राजा नंगे पाँव दौड़े और साहिबजी के चरनोँ पर बिलाप करते हुए गिरे और बड़े आदर भाव से सुखपाल पर बैठाकर घर लाये और चाहा कि उनको वहीँ रक्खेँ पर वह एक दिन वहाँ से भी चुपचाप चलते हुए॥

सुरत बिलास में तुलसी साहिब के देशाटन समय के कितने ही चमत्कार लिखे हैँ जैसे रोगियोँ को अरोग्य कर देना, मुरदोँ को जिला देना, अंधोँ को आँख, निर्द्धन को धन और बाँझ को संतान देना इत्यादि, जिनके बिस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीँ है। ऐसी कथायेँ महात्माओँ की महिमा बढ़ाने के लिये लोग अक्सर गढ़ लेते हैँ। संत यद्यपि सर्व समरथ है पर वह कभी सिद्धि शक्ति नहीँ दिखलाते और अपनी ऊँची गति को गुप्त रखते है। हमारे मन मेँ तो सब कथाओँ मेँ यह हाल जो प्रसिद्ध है अधिक बैठता है कि एक साहूकार ने आपका बड़ा सत्कार किया और भोग लगाते समय यह बरदान माँगा कि मुझे दया से एक पुत्र बख़्शा जाय। तुलसी साहिब ने अपना सोँटा उठाया और यह कहकर चलते हुए कि लड़का अपने सर्गुन इष्ट से माँग, संतोँ की दया तो यह है कि अगर उनके दास के औलाद मौजूद भी हो तो उसे उठा लेँ और अपने दास को निर्बंध कर देँ॥

तुलसी साहिब के उत्पन्न होने का सम्बत् सुरत बिलास मेँ नहीँ दिया है पर यह लिखा है कि उन्होँने अनुमान अस्सी बरस की अवस्था मेँ जेठ सुदी २ बिक्रमी सम्वत् १८९९ या १९०० मेँ चोला छोड़ा। इस से उनके देँह धारन करने का समय सम्बत् १८२० के लगभग ठहरता है। हाथरस मेँ उनकी समाध मौजूद है और बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैँ और साल मेँ एक बार भारी मेला होता है॥

यद्यपि इनको इस संसार से गुप्त हुए ७० बरस से कम हुए हैँ पर उनके अनुयाइयोँ ने न जानेँ किस मसलहत से उनके जीवन समय को ऐसी भूल भुलैयाँ मेँ डाल रक्खा है कि लोग उसे सैकड़ोँ बरस समझते हैँ। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने भी जो अब इस मत के आचार्य्य कहे जाते हैँ घट रामायन की भूमिका मेँ इस भरम

को दूर करने की कोशिश नहीँ की है। हमने इस मत के कई साधुवोँ और गृहस्थोँ से तुलसी साहिब का जीवन समय पूछा तो उन्होँने एक मुँह होकर अब से साढ़े तीन सौ बरस पहिले बतलाया जोकि गोसाँईँ तुलसीदास जी जक्त-प्रचलित सर्गुन रामायन के करता का समय है। तुलसी साहिब ने निस्संदेह घट रामायन के अंत मेँ फ़रमाया है कि पूर्ब जन्म मेँ आपही गोसाँईँ तुलसीदास जी के चोले मेँ थे और तब ही घट रामायन को रचा परन्तु चारो ओर से पंडितोँ भेषोँ और सर्ब मत वालोँ का भारी बिरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया और दूसरी सर्गुन रामायन उस की जगह समयानुसार बनादी। इस से यह नतीजा साफ़ तौर पर निकलता है कि घट रामायन को तुलसी साहिब ने जब दूसरा चोला अनुमान एक सौ चालीस बरस पीछे धारन किया तब प्रगट किया न कि पहिले चोले से। सवाल यह है कि कोई संत तुलसी साहिब के नाम के पिछले सत्तर पछत्तर बरस के अंदर हाथरस मेँ उपस्थित थे या नहीँ जो वहाँ सतसंग कराते थे और उपदेश देते थे, और जहाँ उन की समाधि अब तक मौजूद है? हम को इस मेँ कोई संदेह नहीँ है कि ऐसे महापुरुष अवश्य थे क्योँकि हम आप उन की समाधि का दर्शन कर आये हैँ और दो प्रमानिक सतसंगी अब तक मौजूद हैँ जिन्होँ ने अपने लड़कपन मेँ तुलसी साहिब के दर्शन किये थे और उन मेँ से एक को तुलसी साहिब ने अपनी घट रामायन आप दिखलाई थी॥

तुलसी साहिब के मत वाले उनकी महिमा समझ कर इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैँ कि महाराज ने कोई गुरू धारन नहीँ किया और इसके प्रमान मेँ यह कड़ी पेश करते हैँ—

"एक बिधी चित रहूँ सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौँ तिस लारे॥"

यह कड़ी तुलसी साहिब के "पूर्व-जन्म के चरित्र" मेँ पहिली चौपाई की बीसवीँ कड़ी है और उसी के दो पन्ने आगे "बरनन भेद संत मत" मेँ पहिला सोरठा लोगोँ की इस बहस का खंडन करता है—

"तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो को कियौ।
लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ॥"

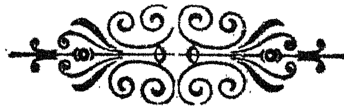
इस मेँ संदेह नहीँ कि तुलसी साहिब स्वयं संत थे जिन को गुरू धारन करने की ज़रूरत न थी लेकिन मरजादा के लिये किसी को नाम मात्र को अवश्य गुरू बना लिया होगा जिसके लिये संत सतगुरु कबीर साहिब और समस्त संतोँ की नज़ीर मौजूद है॥

तुलसी साहिब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्मल ओढ़े और हाथ मेँ डंडा लिये दूर दूर शहरोँ मेँ चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव मेँ जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतोँ को सत्य मार्ग मेँ लगाया॥

इनकी हालत अक्सर गहरे खिँचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा मेँ धारा की तरह ऊँचे घाट की बानी उनके मुख से निकलती, जो कोई निकट-बर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना समझा लिख लिया नहीँ तो वह बानी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली मेँ हैँ॥

तुलसी साहिब के अनुयायी अब तक हज़ारोँ आदमी हिन्दुस्तान के शहरोँ मेँ मौजूद हैँ। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायन और शब्दावली और रत्न-सागर हैँ॥

तुलसी साहिब ने अपनी बानी मेँ बहुत जगह बेद कतेब कुरान पुरान राम रहीम और प्रचलित मतोँ का खोल कर खंडन किया है जिस से लोग उन्हेँ निन्दक और द्रोही समझते हैँ पर यह उनकी अनसमझता की बात है। तुलसी साहिब के पदोँ के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्होँ ने किसी मत को झूठा नहीँ ठहराया है बरन जहाँ तक जिसकी गति है उसको साफ़ तौर पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सब से ऊँचे और समस्त पिंड और ब्राह्मांड के धनियोँ के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा और भक्ति करनी चहिये, निर्मल चेतन्य देश से नीचे के लोकोँ के धनियोँ की भक्ति करने से परिश्रम तो उतना ही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठेगा, अर्थात् भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा, देर सवेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योँकि ये लोक माया के घेर मेँ हैँ चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो॥



तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग १

भेद पिंड और ब्रह्मांड का

॥ सोरठा ॥

सुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया ।
भाखा भोर भियान, भेद भान गुरु सुति लखा ॥

॥ छंद सुति सिंध ॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ । निरखि नित नैनन रहौ ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली । मरम मन मारग गहौ ॥१॥
सम सील लील अपील पेलै । खेल खुलि खुलि लखि परै ॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर । सुरति सजि पल पल भरै ॥
धरि गगन डोरि अपोर[1] परखै । पकरि पट पिउ पिउ करै ॥२॥
सर साधि सुन्न सुधारि जानौ । ध्यान धरि जब थिर थुवा[2] ॥
जहँ रूप रेख न भेष काया । मन न माया तन जुवा ॥३
अलि अंत मूल अतूल कँवला । फूल फिरि फिरि धरि धसै ॥
तुलसि तार निहार सूरति[3] । सैल सत मत मन बसै ॥४॥

॥ छंद २ ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुंदरि । साजि सुति पिउ पै चली ॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग । चढ़त गढ़ गगना गली ॥१॥

---

(१) बिना जोड़ या गाँठ के । (२) हुआ । (३) मुन्शी देबीप्रसाद जी की पुस्तक में "तार" के आगे "पार" का शब्द भी है ।

जहँ ताल तट पट पार प्रीतम । परसि पद आगे अली ॥
जहँ घोर सोर सिहार सुनि के । सिंध सलिता जस मिली ॥२॥
जब ठाट घाट बैराट कीन्हा । मीन जल कँवला कली ॥
अली अंस सिंध सिहार अपना । खलक लखि सुपना छली ॥३॥
अस सार पार सम्हारि सूरति । सम्भि जग जुगजुग जली ॥
गुरुज्ञान ध्यान प्रमान पद बिन । भटकि तुलसी भौ भिली ॥४॥

॥ छंद ३ ॥

अलि अधर धार निहारि निजकै । निकरि सिखर चढ़ावही ॥
जहँ गगन गंगा सुरति जमुना । जतन धार बहावही ॥१॥
जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि । धुर गुरू गति गावही ॥
जहँ संत आस बिलास बेनी । बिमल अजब अन्हावही ॥२॥
कृत कुमति काग सुभाग कलि मल । कर्म धोइ बहावही ॥
हिये हेरि हरष निहारि घर कौ । पार हंस कहावही ॥३॥
मिलि तूल मूल अतूल स्वामी । धाम अबिचल बसि रही ॥
अलि आदिअंत बिचारि पद कौ । तुलसि तब पिव की भई ॥४॥

॥ छंद ४ ॥

अलि पारपलँग बिछाइ पल पल । ललक पिउ सुख पावही ॥
खुस खेल मेल मिलाप पिउ कर । पकरि कंठ लगावही ॥१॥
रस रीति जीति जनाइ आसिक । इस्क रस बस लै रही ॥
पति पुरुष सेज सँवार सजनी । अजब अलि सुख का कही ॥२॥
मुख बैन कहनि न सैन आवै । चैन चौज चिन्हावही ॥
अलि संत अन्त अतन्त जानै । बूझि समझ सुनावही ॥३॥
जिन चीन्हि तन मन सुरति साधी । भवन भीतर लखि लई ॥
जिन गाइ सब्द सुनाइ साखी । भेद भाषा भिनि भई ॥४॥
अलि अलष अंड न खलक खंडा । पलक पट घट घट कही ॥
(तुलसी) तोल बोल अबोल बानी । बूझि लखि बिरले लई ॥५॥

॥ छंद ५ ॥

अलि देख लेख लखाव मधुकर। भरम भौ भटकत रही ॥
दिन तीनि तन सँग साथ जानो। अंत आनँद फिरि नहीं ॥१॥
जग नहिन सार असार सखि री। भ्रमत विधि बस भौ महीं ॥
धन धाम काम न कनक काया। मुलक माया लै बही ॥२॥
येहि समझि बूझि बिचारि मन मैं। निरखि तन सुपना सही ॥
जम जाल जबर कराल सजनी। काल कुल करतब लई ॥३॥
सब तिरथ बरत अचार अलि री। कर्म बस बंधन भई ॥
तुलसि तरक बिचारि तन मन। संत सतगुरु अस कही ॥४॥

॥ छंद ६ ॥

सखि समझि सूर सहूर सुनि कै। बदन बिच सुधि बुधि गई ॥
करूँ कवन भवन उपाव बिन बस। नेक मधुकर बस नहीं ॥१॥
मिलि पाँच तीनि पचीस निस दिन। गाँठि गुन बंधन भई ॥
भइ बिबस बस नहिं दाँव लागै। दृढ़ निमख[1] नहिं आवही ॥२॥
धरि हाथ पटकि पुकारि पिव सँग। हारि जिव सँग हटि रही ॥
कहुँ ठौर मोर न जोर चालै। आली बिपति कछु का कही ॥३
सुनि ज्ञान ध्यान न कान मानै। बिकल तन मन बिचलई ॥
तुलसी बिरह बेहाल[1] हिये मैं। मौत दिन देवै दई ॥४॥

॥ छंद ७ ॥

सखि सीख सुनि गुनि गाँठि बाँधै। ठाट ठट सतसँग करै ॥
जब रंग संग अपंग अलि री। अंग सत मत मन मरै ॥१॥
मन मीन दिल जब दीन देखै। चीन्ह मधुकर सिर धरै ॥
अलि डगर मिलि जब सुरति सरजू। कँवल दल चल पद परै ॥२॥
थिर थाव ठुमकि टिकाव नैना। नीर थिर जिमि थम धिरै ॥
यहि भाँति साथ सुधारि मन कौ। पलक गिरि गगना भरै ॥३॥

---

(१) मुन्शी देवी प्रसाद की पुस्तक में कड़ी २ में "दृढ़ निमख" की जगह "उड़नि मख", और कड़ी ४ में "बेहाल" की जगह "बिकल बेतरह" है।

लखि द्वार दृढ़ दरबार दरसै। परसि पुनि पद पिउ घरै॥
गुरु गैल मेल मिलाप तुलसी। मंत्र बिषधर[१] बसि करै॥४॥

॥ छंद ८ ॥

सखि भेद भाव लखाव लै गुरु। मरम केहि मारग मिलै॥
जेहि जतन पतन पियास पलपल। पकरि मन केहि बिधि चलै॥१
गुन गोह गति मति गजब गैला। सिखरि साधन कस पलै॥
सखि सुरति मंज समान संजम। मैल मन सँग दुख खलै॥२॥
सुनि सुलभ लखन लखाव सजनी। दुलभ[२] दृढ़ कलिमल दलै॥
मोहिं दीन लीन जो चीन्ह चेरी। तपन बिच तन मन जलै॥३॥
सखि चरन सरन निवास निस दिन। दुख दवा मोहिं अब मिलै॥
गुरु सरन मंत्र मिलाप तुलसी। जबर सँग जुलमी टलै॥४॥

॥ छंद ९ ॥

जब बल बिकल दिल देखि बिरहिन। गुरु मिलन मारग दई॥
सखि गगन गुरु पद पार सतगुरु। सुरति अंस जो आवई॥१॥
सुरति अंस जो जीव घर गुरु। गगन बस कंजा मई॥
अलि गगन धार सवार आई। ऐन बस गोगुन रही॥२॥
सखि ऐन सूरति पैन पावै। नील चढ़ि निरमल भई॥
जब दीप सीप सुधारि सजि कै। पछिम पट पद मैं गई॥
गुरु गगन कंज मिलाप करि कै। ताल तज सुन धुनि लई॥३॥
सुनि सब्द से लखि सब्द न्यारा। प्रालबद जद क्या कही॥
जेहि पार सतगुरु धाम सजनी। सुरति सजि भजि मिलि रही॥४
अस अलल अंड अकार डारै। उलटि घर अपने गई॥
येहि भाँति सतगुरु साथ भैंटे। कर अली आनँद लई॥५॥
दुख दाउ कर्म निबास निस दिन। धाम पिया दरसत वहीं॥
सतगुरु दया दिल दीन तुलसी। लखत भै निरभै भई॥६॥

---

(१) साँप। (२) दुर्लभ।

॥ छंद १० ॥

अलि आदि अजर दयाल सतगुरु। मर्म कहौ कहँ लगि कहूँ ॥
अस कुटिल खोट मलीन बुधि मैं। चित छली मनमत रहूँ ॥१॥
घर धोइ सतगुरु सरस साबुन। ज्ञान सिल जल मल बह्यो ॥
सखि मैल मन जस चिकट कपरा। उजल हिये अलिअस भयो ॥२
जब आदि अटल अनादि रँग मैं। चटक रँग सतगुरु दयो ॥
कहुँ कौन सिफति[1] सुनाइ सजनी। अचल सलिता सिंध लह्यो ॥३
सिंध सब्द सतगुरु सुरति सलिता। अलि मिलन अस बिधि भयो॥
सिंध बुन्द तन मन बन बिराटा। बूझ बिन बादै बह्यो ॥४॥
जब उलटि घर अलि आदि चीन्है। दीन दिल सतगुरु लयो ॥
अलि आदि अंत समाद समझौ। बरनि बिधि जसजस कह्यो॥५
सखि संत सतगुरु बरनि बरनै। भाखि समझि सुनावही ॥
गुरु चारि तनअस्थानअलिसुनि। समझि भेद लखावही ॥६॥
सखि प्रथम गुरुसुनि कँवल कंजा। सहस दल पल पावही ॥
सखि दूसर गुरु गढ़ गगन ऊपर। कँवल दुइदल गावही ॥
अलि तीनि गुरु तन माहिँ पेखौ। चौकँवल स्रुति लावही ॥७
सतलोक चौथे चार सतगुरु। अगम सिंध कहावही ॥
जहँ सुरति सब्द मिलाप सजनी। संत वोहि घर जावही ॥८
सखि मूल संत दयाल सतगुरु। पिउ निहाली मोहिँ करी ॥
सत सुरति सिंध सुधारि तुलसी। सार पद जद लखि परी ॥९॥

॥ छंद ११ ॥

लख अगम भेद अलोक अलि री। संत सतगुरु मोहिँ कह्यौ ॥
तिहुँ लोक से री अलोक न्यारा। पार मारग मोहिँ दयौ ॥१॥
सिंध सब्द सतगुरु किरनि चेला। सुरति सब्द मिलावही ॥
सत लोक सिंध सम्हार अलि लख। मिलन समझ सुनावही ॥२॥

---

(१) गुन।

सखि सिंध बुन्द मिलाप सतगुरु। किरनि सुरज कहावही ॥
सखि समुँद जल जस भरत बदरा। भूमि बरस बहावही ॥३॥
अलि सिमटि नीर समीर सलिता। सिंध समझि समावही ॥
सखि सिंध बुन्द जो सिष्य सतगुरु। गवन गत मत गावही ॥४॥
सखि जलहि जल बल एक करिकै। भूमि भर्म नसावही ॥
चित चीन्ह जैसे खेल चौपड़। जुग नरद घर आवही ॥५॥
जिमि किरनि भास निवास रबि मैं। गगन मर्म मिलावही ॥
अलि गगन नास अकास बिनसै। रबि रहन नहिँ पावही ॥६॥
अलि सिंध सूरज ब्रह्म कहि नद[1]। किरनि जीव कहावही ॥
सब ठाट बाट बिराट बिनसै। सुरज कहँ होइ रहावही ॥७
सखि सुरज ब्रह्म बिनास किरनी। जब अकास नसाइये ॥
सखि सुरज कहौ केहि ठाम रहि। सोइ समझ खोज लगाइये॥८
सोइ धाम ठाम ठिकान सजनी। घर समझ जहँ जाइये ॥
नहिँ और आस बिनास सब को। कोइ रहन नहिँ पाइये ॥९॥
सखि नीर छीर मिलाप समँदुर। बदर फिरि भरि लावही ॥
जल बरसि नद मिलि समुँद आवै। जाइ पुनि फिरि आवही॥१०॥
अस जीव आवागवन माहीं। ब्रह्म जीव कहावही ॥
बस कर्म काल बिनास निसदिन। अगम घर नहिँ पावही ॥११॥
अलि समुँद आदि बुनयाद कह सोइ। सोत केहि घर गावही ॥
करि खोजि रोज बिचारि मन मैं। गैल गुरु सँग पावही ॥१२॥
सखि संत चरन निवास चेरी। अधर समझ सुनावही ॥
लखि सिंध बुन्द से अगम आगे। देखि समझि समावही ॥
सोइ समझ सतगुरु सार सजिके। लेख लखन लखावही ॥१३॥

(१) नदी।

जिमि धार मिलि जल मीन चढ़िके। अधर घर धसि धावही ॥
अलि अमर लोक निवास करिके। सुख अचल जुग पावही॥१४
गुरु कंज सतगुरु मंज मिलिके। अंज अमल पिलावही ॥
सज सुरति निरति सम्हार मिलिके। पिलि पुरुष पिय पावही॥१५
एरी अगम दीनदयाल सतगुरु। हाल हरष निहारही ॥
तुलसिदास बिलास कहि अस। संत अज अरथावही ॥१६॥

॥ दोहा ॥

तुलसी अगम निवास, सुरति बास बस घर किया।
पिया परम रस मूल, सो अतूल अंदर हिया॥१॥
फूली बन फुलवारि, भीतर घट के कहि कही।
खग मृग सरवर ताल, गुरु निहाल करि लखि लई॥२॥

॥ सोरठा ॥

तन मन ब्रह्मँड पसार, अंड अंड नौखंड लौ।
सो घट लखन मँझार, करत सैल ब्रह्मंड की॥१॥
सतगुरु गगन गुहार, गगन मगन स्रुति मिलि रही।
मंदिर मगन निहार, कंज भान भिन के कही॥२॥

॥ दोहा ॥

भास भवन घट मैं लखी, सलिल कँवल के माइँ।
पदम पार बेनी बसी, लसी अधर चढ़ि धाइ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल निहार, गुरू अगम पद पदम हीं।
कर दृग ऐन अधार, पार परस पट भवन मैं॥

॥ शब्द चरचरी ॥

तुलसिदास भास भवन, देखा घट माहीं।
लाई स्रुति सलिल कँवल, पदमन पर जाई॥ टेक
सतगुरु गिरि गगन मगन, मंदिर मानौ अजूब।
कंजा भजि झलक भान, कोटिन छबि छाई॥१॥

बेनी मंजन अनूप, रहिनो अंदर अरूप।
चंदा रबि रैनि दिवस, तारे नभ नाहीं ॥ २ ॥
बरनन लखि अलख ऐन, स्याम सिखर निकर कंद।
निरता स्रुति समझि सूर, पंकज अपनाई ॥ ३ ॥
अंडा अंबुज अतूल, बेलि बृच्छ अधर मूल।
फूला फल बन निवास, ललित लता छाई ॥ ४ ॥
भँवर भृंग लसि सुगंध, उरझे रस बस बिलास।
आनँद सीतल समीर[1], सरवर तट माईं ॥ ५ ॥
जहँ जहँ दृग देखि जात, खगपति[2] कृति नभ उड़ात।
बन बन मृग चरत जात, कोकिल करकाई ॥ ६ ॥
धरि कै धस धरन डोर, दृढ़कै चढ़ि कड़क कोरू।
धधकत धसि धधक नोर, फूटा पुल जाई ॥ ७ ॥
भाखा भीतर बयान, सज्जन सुनि समझि साथ।
अद्‌बुद[3] अज अजर बात, संतन लखवाई ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

भान भवन घट बास, लखि अकास अंदर गई।
लीला गिरि चित चास, दीपक मंदिर मरम जस ॥

॥ दोहा ॥

लखि प्रकास पद तेज, सेज गवन गढ़ गगन मैं।
पति प्रिय प्रेम बिलास, तुलसिदास दस गिरा मैं ॥

॥ सोरठा ॥

मैं मति ऐन अयान, गुरु बयान मो को कह्यौ।
लह्यौ गगन सोइ जान, सतगुरु मंजन पदम हीं ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु अगम अपार, सार समझि तुलसी कियो।
दया दोन निरधार, मोहिं निकार बाहिर लियो ॥

---

(१) वायु। (२) गरुड़। (३) अद्भुत।

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल, करि निहाल मो को दियो ।
सूरति सिंध सुधार, सार पार जद लखि पर्यो ॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन पद धूर, मूर मरम मो को दई ।
भई निरति स्रुति सूर, लइ समान मन चूर करि ॥ १ ॥
मैं मति मान अपूर, कूर कुटिल न्यारे किये ।
हिये तिमर तन दूर, तूर तमक तन की गई ॥ २ ॥
मो मन सुरति अयान, जानि सुरति सत रीति ले ।
गहि कर संत सुजान, मान मनी मद छाँड़ि के ॥ ३ ॥
मैं मति सत सम नाहिं, पाइ पकरि लारै लई ।
सतगुरु दीनदयाल, जाल काट न्यारी करी ॥ ४ ॥
सतगुरु चरन निवास, बिमल बास बिधि लखि परी ।
धरी जो तुलसीदास, भास चमकि चढ़ि चाँप धरि ॥ ५ ॥
सतगुरु परम उदार, दल दरिद्र सब दूरि करि ।
संपति सुरति बिचार, निधि निहार सब्दै लखा ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

परथम बन्दौं सतगुरु स्वामी । तुलसी चरन सरनि रति मानी ॥
पुनि बन्दौं संतन सरनाई । जिन पुनि सुरत निरत दरसाई ॥
चरन सरन संतन बलिहारी । सूरति दीन्ही लखन सिहारी ॥
सरन सूर सूरति समझाई । सतगुरु मूर मरम लख पाई ॥
मैं मतिहीन दीन दिल दीन्हा । संत सरन सतगुरु को चीन्हा ॥
सतगुरु अगम सिंध सुखदाई । जिन सत राह रीति दरसाई ॥
पुनिपुनि चरन कँवल सिर नाऊँ । दीन होइ संतन गति गाऊँ ॥
दीनजानिदीन्हीमोहिंआँखी । मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी ॥

मैं तो चरन भाव चित चेरा। मोहिं अति अधम जानि कै हेरा ॥
मैं तो प्रति प्रति दास तुम्हारा। संत बिना कोइ पावै न पारा ॥
संत दयाल कृपा सुखदाई। तुम्हरी सरन अधम तरि जाई ॥
आदि न अंत संत बिन कोई। तुलसी तुच्छ सरन मैं सोई ॥
जो कछु करहिँ करहिँ सोइ संता। संत बिना नहिँ पावै पंथा ॥
मोरे इष्ट संत स्तुति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा ॥
सतगुरु सन्तपुरुष अबिनासी। राह दीन लखि काटी फाँसी ॥
कँवलकंज सतगुरु पद बासी। सूरति कीन दीन निज दासी ॥
सूरति निरत आदि अपनाई। सतगुरु चरन सरन लौ लाई ॥
बार बार सतगुरु बलिहारी। तुलसी अधमअघ नाहिं बिचारी॥
बन्दौं सब चर अचर समाना। जानौ तुलसी दास निदाना ॥
मैं किंकर पर दया बिचारा। अनहित प्रिये करौ हित सारा ॥
सब के चरन बन्दि सिर नाई। प्रिये लार लै प्रीति जनाई ॥
तुम प्रति भूल बंद अस गाई। बार बार चरनन सिर नाई ॥
पुनि बन्दौं सतगुरु सतभावा। जिनसे बस्तु अगोचर पावा ॥
सतगुरु अगम अरूपअकाया। जिनकी गति मति संतन पाया ॥
सतगुरु की कस करहुँ बखानी। सूरति दीन्ही अगम निसानी ॥
लख लख अलख सुरति अलगानी। संत कृपा सतगुरु सहदानी ॥
सूरति सैल पेल रस राती। सतगुरु कंज पदम मद माती ॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिँ जानै। सतगुरु चरन सरन रत मानै ॥
सूरति सतगुरु दीन्ह जनाई। नित नित चढ़ै गगन पर धाई ॥
सैल करै ब्रह्मंड निहारा। देखै आदि अंत पद सारा ॥
निरखा आदि अंत मधि माहीं। सोइ सोइ तुलसीभाखि सुनाई ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना। तुलसी देखा अगम ठिकाना ॥

पिंड ब्रह्मंड मैं आदि अगाधा। पेली सुरति अलख लख साधा ॥
पिंड ब्रह्मंड अगम लख पाया। तुलसी निरखि अगाध सुनाया[१] ॥
पिंड माहिँ ब्रह्मंड दिखाना[१]। ता की तुलसी करी बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिँ ब्रह्मंड, देखा निज घट जोइ कै ।
गुरु पद पदम प्रकास, सत प्रयाग असनान करि ॥

॥ दोहा ॥

बूझै कोइ कोइ संत, आदि अंत जा ने लखी ।
परचै परम प्रकास, जिन अकास अम्बर चखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल तरास, तत बिबेक अंदर कही ।
बूझैंगे निज दास, जिन घट परचे पाइया ॥ १ ॥
पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
जीव काल और स्वाँस, और अकास उतपति भई ॥२॥
भीतर देखि प्रकास, सब ब्रह्मंड बिधि यौं कही ।
रावन राम सँबाद, आदि अंत निज जोइ कै ॥ ३ ॥

॥ चौपाई

जो कोइ घट का परचा पावै। कँवल भेद ता को दरसावै ॥
भिन्न भिन्न कँवलन बिधि गाई। स्वाँसा भिन्न बिधी दरसाई ॥
निज निज तत्त कहेऊ मैं जानी। परखैंगे कोइ संत सुजानी ॥
मैं गति नीच कींच कर सानी। कहत लजाउँ अगम गति जानी ॥
जो अपनी गति कहहुँ बिचारी। तौ मन मोट होत अधिकारी ॥
मैं किंकर संतन कर दासा। घट घट देखा तत्त निवासा ॥
ता की गति ग्रंथन मैं गाई। बूझै जिन सत संगति पाई ॥
सूरति सार सब्द जिन पाया। दस गृह सैल जिन करी अकाया॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अगाध सुनाया" की जगह "परख गत गाया" और आगे की कड़ी में "दिखाना" की जगह "समाना" है।

॥ सोरठा ॥

जिन मानी परतीत, अधर रीति जा ने लखी ।
सब गति कहहुँ अजीत, सत्त बचन परमान कै ॥ १ ॥

तुलसी सब्द सम्हार, वार पार सगरी लखी ।
पकी चखी स्रुति सार, लार सब्द सूरति गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु पुर पद पार, ये अगार अदबुद कही ।
भै बुधि भेष मँझार, सार लार सूझै नहीं ॥

॥ छंद ॥

गुरु पद कंज लखाइ घट परचे पाई। सुरति समानी सिंध मई[1] ॥
देखा वह द्वारा अगम पसारा । दस दिस फोड़ अकासगई १
नाम निअच्छर छर नहिँ अच्छर । देख अगाध अनाद लई ॥
घट भीतर जाना घट परमाना । जेइ जेइ संत अगार कही ॥२
जिनकी रज पावन राम औ रावन । निःअच्छर सत सार सही ॥
पंडित और ज्ञानी यह नहिँ जानी। भेष भेद गति नाहिँ लई ॥३
सब जग संसारा काल की जारा । सकल पसारा भेष मई ॥
रागी बैरागी भै रस त्यागी । साँगी पाँगी भरम बही ॥४॥
ध्यानी बिज्ञानी बन बस जानी। संत पंथ मत राह नहीं ॥
जोगी सन्यासी काल की फाँसी । परमहंस परमान नहीं ॥५
निज गावै बेदा जानै न भेदा । सास्त्र संघ जिन राह लई॥
संतन गति न्यारी सुनै बिचारी । चौथे पद के पार कही ॥६॥
कोइ करिहै संका महा मति रंका। सतसँगति सम सूझ नहीं ॥
तुलसी मति-हीना पायौ चीन्हा। संत कृपा घट घाट लई ॥७

(१) एक लिपि में इस छंद की पहिली कड़ी के दूसरे टुकड़े का पाठ ऐसे है-
"सब सुखदाई सुरति समानी सिंध मई" ।

॥ सोरठा ॥

पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
सब्द सुरति कर बास, वै निरास अच्छर रहत ॥ १ ॥
कह्यौ ग्रन्थ घट सार, गुरु परचै निज कँवल मैं ।
जिन जिन पाय निवास, सो लखिहैं ये भेद सब ॥ २ ॥

॥ चैापाई ॥

अब ब्रह्मंड का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
पाँच तत्त का कहौं बिचारा । अगिनि अकास नीर निरधारा ॥
पृथ्वी पवन सकल कर भेदा । पिंड ब्रह्मंड का रच्यो निषेदा ॥
लखि अकास बाई[1] सँग आई । दोइ मिलि निज अगिनी उपजाई ॥
अब पानी का सुनो बिचारा । ये चारौ मिलि मही अकारा ॥
ऐसे पाँच तत्त उपराजा । निज तन कीन्ह देह कर साजा ॥
पानी बुंद सृष्टि उपजाई । ता मैं चेतन सत्त समाई ॥
अब पानी का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
ता की बिधि बिधि कहौं बिचारा । छत्तिस नीर पचासी धारा ॥
जोइ जोइ नीर नाम बतलाऊँ । नीर छतीसो बरनि सुनाऊँ ॥
बिधि बिधि नाम नीर समझाऊँ । नाम नीर भिन भिन दरसाऊँ ॥

॥ नीर के नाम ॥

॥ चैापाई ॥

जल अजीत परथम करि गाऊँ । करता जल दूसर कर नाऊँ ॥
और अनूप तीसर जल कीन्हा । चैाथा मुक्ति नीर को चीन्हा ॥
नीर पाँच पुरइनि परमाना । अंबुज षष्टम नीर बखाना ॥
नीर सात बिषया झर होई । नीर आठ अटला सुर सोई ॥
नवाँ नीर नाटक दुख भेदा । दसवाँ नीर दसौ मन छेदा ॥
एकादस नीर काल को जाना । द्वादस नीर जिव करै पयाना ॥

---

(१) वायु ।

तेरवाँ नीर पुरुष कैा ध्याना। जो बूझै घट परचै जाना ॥
जीव नीर चैाथा मैँ भूला। पंद्रह नीर भीर सहै सूला ॥
सोला नीर कनक कर संगी। सत्रा नीर रूप रस रंगी[१] ॥
अठरा नीर बोल दे नाऊँ। उन्निस नीर कुसुम रँग राऊ ॥
बिसवाँ नीर कलंगी गाई। निज घट भीतर परचा पाई ॥
इकिस नीर सुखसागर धामा। भँवरकंज उरझा तेहि ठामा ॥
बाइस नीर मूल घट[१] राजा। तेइस नीर निरासू बाजा ॥
नीर चैाबिसवाँ चतुर सुजाना। पच्चिस नीर मेघ परमाना ॥
छब्बिस नीर कहौँ मैँ काला। सताइस नीर धनासुर नाला ॥
अठाइस नीर रूप द्वै आना। उन्तिस नीर अभया द्रुग[२] दाना ॥
तिसवाँ नीर आहि बल भारी। इकतिस नीर आहि संसारी ॥
बतिस नीर निरगुन है सीठा। तैँतिस आलस नीर है मीठा ॥
चौँतिस नीर सरोसिल नाऊँ। पृथ्वी पैँतिस नीर बताऊँ ॥
छत्तिस नीर कामिनी बासा। ब्रह्मा बिस्नु का भोग बिलासा ॥
जीव जंतु जल जीव निबासा। ये सब परे काल की फाँसा ॥
छत्तिस नीर नाम निरधारा। सो कोइ साधू करै बिचारा ॥
आगे कहौँ पचासी पवना। ता कर नाम भेद गुन बरना ॥
भिंनि भिंनि नाम बिधी बतलाऊँ। पवन पिचासी बरनि सुनाऊँ ॥
पिंड मैँ पवन पचासी बासा। सो निज भाखौँ भेद खुलासा ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैँ "रस रंगी" की जगह "परसंगी" है और चार कड़ी आगे "घट" की जगह "घर" है। (२) यह शब्द हमारी समझ मैँ "दुर्ग" होना चाहिये यानी जहाँ कोई पहुँच नहीँ सकता; कठिन। "दानी" नाम काल और उसके नायब धर्मराय का है जो जीव को बिना सतगुरु के बख़शे हुए "निज नाम" का परवाना दिखाये अपनी हद के बाहर नहीँ जाने देता।

॥ पवन के नाम ॥

१ रजलाय	पवन	२४ सकलंध	पवन
२ केदार	,,	२५ सल सोख	,,
३ बिलंभ	,,	२६ सुख रोग	,,
४ समीर	,,	२७ ज्ञान कुंभ	,,
५ पुरभो १	,,	२८ मैना ऊँघ	,,
६ कालूल	,,	२९ त्रिक्रोध	,,
७ स्रुति अंध	,,	३० किवलास	,,
८ नल पती	,,	३१ करनास	,,
९ ब्रह राज	,,	३२ रस नाग	,,
१० मंदोष	,,	३३ तन जीत	,,
११ सकल तेज	,,	३४ सकसीत	,,
१२ मन सोत	,,	३५ बेलोक	,,
१३ जगजोत	,,	३६ मन मोष	,,
१४ उपजीत	,,	३७ बेरूप	,,
१५ जगजीत	,,	३८ सतसूक	,,
१६ पर राज	,,	३९ बीज मन्द	,,
१७ बल कुंभ	,,	४० बीज बन्द	,,
१८ पत राज	,,	४१ अजसार	,,
१९ बल भेद	,,	४२ नितनाल	,,
२० वारुन	,,	४३ शब्दाल	,,
२१ कुंभेर	,,	४४ गिरनाल	,,
२२ जगजाय[१]	,,	४५ सुषपाल	,,
२३ बेधुंध	,,	४६ रूपान	,,

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "जगजाय" की जगह "इन्द्रजीत" है।

४७ बिधान पवन
४८ सुभपती ,,
४९ छेरती ,,
५० उतरंत ,,
५१ तितरंत ,,
५२ पुरवो ,,
५३ सरभो ,,
५४ उबमीत ,,
५५ दरदीत ,,
५६ उपमार ,,
५७ अभियार ,,
५८ अतरीत ,,
५९ ताईत ,,
६० सुषमंद ,,
६१ असमंद ,,
६२ सोराद ,,
६३ लैयाद ,,
६४ करिहाट ,,
६५ कसनाट ,,
६६ बैराग ,,
६७ लैजार पवन
६८ लैलार ,,
६९ नदसूर ,,
७० पदमूर ,,
७१ करकीत ,,
७२ घरजीत ,,
७३ मनमास ,,
७४ सरसूत ,,
७५ अवधूत ,,
७६ आकाश ,,
७७ जगबास ,,
७८ सुनसूत ,,
७९ मनभूत ,,
८० निरधार ,,
८१ सतसार ,,
८२ आसोग ,,
८३ तन भोग ,,
८४ जग जोग ,,
८५ मन रोग ,,

॥ चौपाई ॥

पवन पचासी भाखि सुनाई । कोइ साधू घट भीतर पाई ॥
घट में पवन पचासी जाना । निरखा नैन सैन धरि ध्याना ॥
साध आदि कोइ करै बिबेका । सोइ निज सार पवन का लेखा ॥
तुलसीजिनजिननैन निहारा । पवन पचासो बरनि सिहारा ॥
जिन जिनघटकीसैल सँवारा । पवन भवन सोइ गवन गुहारा ॥

आगे सुनहु गगन का लेखा। सोला गगन पिंड मेँ देखा ॥
जिन जिन सैल सुरति से कीन्हा। सोला गगन भाखि तेहि दीन्हा॥
जो सोला का भेद बतावै। सोइ सज्जन सत साध कहावै ॥
भिन्न भिन्न सोला बिधि भाखौँ। गगन नाम निज एक न राखौँ ॥
बिधिबिधि नाम कहौँ समझाई। चित दे सुनौ गगन कर नाईं ॥

॥ गगन के नाम ॥

॥ चैापाई ॥

परथम गगन निसाधर मोषा। दूसर गगन पृथी पद पोषा ॥
तीसर गगन बिरिछ सुर सोषा। चैाथा गगन दिलंभी गोषा ॥
पंचम गगन हिरा पद स्यामा। षष्टम गगन निरंजन नामा ॥
सप्तम गगन पुलंधर चीन्हा। अष्टम गगन सफानल कीन्हा॥
कदलीकंद नवौं कर नामा। दसवौं गगन जमरस के ठामा ॥
एकादस गगन हरि हिरदे नामा। द्वादस गगन अधर परमाना ॥
तेरा गगन कलंगी रूपा। चैाधा गगन है धुंध सरूपा ॥
पंद्रा गगन मुक्ति कर नामा। सोला गगन गुप्त निज धामा[1] ॥
इतने गगन काया के माहीँ। सज्जन साध खोज कोइ पाईं ॥
सोला का कोइ भेद बतावै। सोइ सोइ गगन गिरा गति गावै ॥
तुलसी निरखि कहा निज लेखा। बूझि साध कोइ करै बिबेका ॥
घट भीतर सब गगन बताया। भिनि भिनि नाम गगन गति गाया ॥
इतने की कोइ जानै संधा। सो नहिं परै काल के फंदा ॥
आगे भेद जो कहौँ अनूपा। भँवर गुफा मँ जोति सरूपा ॥
भँवर गुफा छै भाखि सुनाऊँ। जाको भिनि भिनि भेद बताऊँ ॥

॥ भँवर गुफा के नाम ॥

परथम बेहद नाम सुनइया। भँवर गुफा बिच बास करइया ॥
दूसर नाम निरखि निरधारी। तीसर नाम मुक्ति पद प्यारी ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ८ में "गुप्त निज" की जगह "मुक्ति कर" छपा है (जो कि ठीक नहीं हो सक्ता क्योंकि यही नाम पंद्रहवें गगन का है।

चौथा नाम उनमुनी स्यामा । सोइ सब जोगिन का बिसरामा ॥
पंचम नाम हरी हद सूना । छठवाँ चदर अधर पर धूना[१] ॥
छई छर भँवर गुफा दरसाई । तुलसी नैन नजरि मैं आई ॥
आगे भाखौं भेद निहारा । छै त्रिकुटी घट माहिं सिहारा ॥
जा कौ नाम ठाम दरसाऊँ । भिनि भिनि भाव भेद समझाऊँ ॥

॥ त्रिकुटी के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम कहौं रुकमन्दर[१] नाऊँ । काल कौ चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
दूसर बली बिजै बल सोई । षटदल कँवल फूल जहँ होई ॥
तीसर नाम मुकर मनि[१] जोई । मन बुधि निद्रा से सुख सोई ॥
चौथा नाम सब्दनी होई । नौ नाड़ी सुपने दे सोई ॥
पंचम नाम गोमती गाऊँ । अठदल कँवल फूल तेहि ठाऊँ ॥
हंस मुखी छठवीं कर नामा । हंस बिहंग बसै तेहि ठामा ॥

॥ दोहा ॥

छै त्रिकुटी बिधि बिध कही, दृग निज नैन निहार ।
तुलसिदास घट भीतरे, देखि कही सब सार ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिकुटी छई नाम निज गाया । तुलसी भिन भिन भेद लखाया ॥
जोगी जीत रीत कोइ जानै । त्रिकुटी चढ़ै भेद पहिचानै ॥
आगे सत मत द्वार लखाऊँ । सुकिरत सेत द्वार दरसाऊँ ॥
जौन दिसा सुकिरत है भाई । तौन दिसा सत द्वार लखाई ॥
अष्ट कँवल दल दरपन माईं । नाभि सेत नल मध के ठाईं ॥

---

(१) भँवर गुफा के चौपाई की कड़ी ४ में "पर धूना" की जगह "रग धूना" दिया है। इसी तरह त्रिकुटी के नाम की चौपाई की पहिली कड़ी में पहिली त्रिकुटी का नाम "रुकमाद्दे" और तीसरी कड़ी में तीसरी त्रिकुटी का "मुक्तिमन" लिखा है।

नल नागिनि करि बैठो भेषा। जीव भखन वो करै अनेका ॥
पुनि सरवर तेहि पास बिराजै। ता पर बैठि सभा बहु गाजै ॥
तेहि सरवर जल नीर अपारा। जीव उतरि कोइ जाइ न पारा ॥
कौन दिसा नागिनि रस रूखा। कौन दिसा सरवर रहै सूखा ॥
अभि अंतर सुकिरत सत बासा। करिया कँवल मैं काल निवासा ॥
अष्ट कँवल नागिनि रस रूखा। सरवर बिरह कँवल मैं सूखा ॥
यह सत रीति द्वार दरसाई। अब मैं कहौं सुनो तुम भाई ॥
आगे तरवर भेद अपारा। चारि बिरछ पर सुरति सम्हारा॥
जीव पैठि सोइ मारग पावै। गगन कँवल भीतर चलि आवै ॥
उलटै चक्र सुन्न मैं धावै। सिध साधक जहँ ध्यान लगावै ॥
बिरछ चारि सोइ कहौं बुझाई। जाकर नाम ठाम गति गाई ॥
जहँवाँ कागभसुंड कहु काला। बट पीपर पाकरी रसाला ॥
कागभसुंड काया के माहीं। तन मन बिरछ संत समझाई ॥
बिरछा ऊपर ताल बिराजै। निरखत काल कला सब भाजै ॥

॥ सोरठा ॥

बिरछा ऊपर ताल, जहाँ काल करकै नहीं।
तुलसी संत दयाल, दिया भेद भिनि भिनि लखा ॥

॥ कहेरा ॥

सखी री बिरछ पै ताला, जहँ करकै न काल।
बिरछा के जड़ नहिं पाती, वा की ढुरी ढुरी[1] डाल ॥टेक॥
सर मैं सुरति न्हवावई, कागा किये हैं मराल।
संतो पंथ पिया पाये, गुरु भये हैं दयाल ॥ १ ॥
अठमैं अटारी माहीं, परे सुनि पिया हाल।
हरखा बंक सुर नाला, चढ़ी चट चट चाल ॥ २ ॥

(१) झुकी हुई।

सुरति गगन घन छाई, पिया परे परे ख्याल ।
तुलसी तरक तत तारी, भारी काटी भ्रम जाल ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

कहौं अब बिधि बरतंत, संत कहनि मन मत गही ।
लही जो तुलसी अंत, ज्ञान चक्र चित चेति कै ॥

॥ चैापाई ॥

अब सोई बिधि बरतंत सुनाऊँ । राह रीति मन मत दरसाऊँ ॥
मन मत चक्र घेर के मारा । ज्ञान चक्र जब जीव सम्हारा ॥
काल मारि मुख फेरि चलावै । काल भागि त्रिकुटी मैँ आवै ॥
जीव सब्द गहि खेदि चलाई । अधर कँवल बिच काल छिपाई ॥
भर्म चक्र जब काल चलावा । भरमित जीव भरम जब आवा ॥
संसय सोग जीव उपजाई । साहिब सब्द बिसरि गयो भाई ॥
भगिया जीव गगन मग माहीं । यहँ होइ काल गहैगो नाहीं ॥
जीव वहाँ से निसरि पराई । नाल बंक मैँ जाइ समाई ॥
बंकै नाल काल गति लइया । जीव भागि आगे चलि गइया ॥
परम कँवल मैँ जीव छिपाना । वहाँ काल जो जाइ समाना ॥
सोला गगन जीव फिरि आई । तहाँ काल पुनि खेदत धाई ॥

॥ सोरठा ॥

सोला गगन मँझार, जीव काल खेदत फिरै ।
बूझै बूझनहार, घट निहारि अंदर लखै ॥

॥ चैापाई ॥

वहाँ जीव कोइ बचन न पावै । रहस नाल जिव पैठि समावै ॥
वहँ कहुँ काल सुनन जब पावै । समाधान होइ काल सिधावै ॥
रहस नाल से भागि पराई । भँवर गुफा मैँ जाइ छिपाई ॥
आपै काल ध्यान धर कीन्हा । अपनी सुरति गुफा मैँ दीन्हा ॥
सूरति जीव काल पर आवै । काल आप धर ध्यान लगावै ॥
अपनी सुरति गुफा मैँ लावै । भीतर सूरति जीव समावै ॥

अपना घर बिधि काल न पावै । पीछे काल तहाँ लगि धावै ॥
तब लग काल जीव को घेरा । घर सुधि बिन जो फिरै अनेरा ॥
धनि वे जीव आप को जानी । उलटि काल को बाँधै तानी ॥
जानै जीव जो नाम सहाई । नाम निअच्छर जाइ समाई ॥
पुरुष नाम जीव लखि पावै । जीव नाम लखि ब्रह्म कहावै ॥
नाम छाँड़ि जग जीव कहाये । भरम भरम भौसागर आये ॥
अभि अंतर जिव पैठै जाई । राई के दस भाग समाई ॥
अंतर काल बड़ा मग लागा । एक राई का दसवाँ भागा ॥
अंतर बड़ा जीव को सोका । काल की आँखी तीनों लोका ॥
जीव की आँखि पुरुष को देखा । काल दृष्टि जब होय बिसेषा ॥
आँखी जीव चकोर समाना । पाँचो करै दृष्टि जस बाना ॥
धरती दृष्टि प्रकिरती उद्रा । दृष्टि अकास करै नर मुद्रा ॥
तत्त पाँच पाचौ हैं नारी । बचै नाम निज सुरति बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

काल करै जिव हानि, तुलसीदास तत सम रहौ ।
घट रामायन सार[१], मथि काया बिच घट कह्यो ॥

॥ सोरठा ॥

भिनि भिनि कहौं बखान, आदि अंत घट भेद बिधि ।
तुलसी तनहिं बिचार, घट निरखो निज नैन से ॥

॥ चौपाई ॥

आगे घट का भेद बखाना । बतिस नाल घट भीतर जाना ॥
नाल भेद बिधि कहौं बुझाई । जिन जानी घट परचे पाई ॥

॥ नाल के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम नाल की बिधो बताऊँ । अभया तेज ताहि कर नाऊँ ॥
दूसर रहस नाल जो गावा । चौदल कँवल फूल तेहि ठाँवा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "सार" की जगह "माहिं" है ।

कँवल चार दल भँवर उड़ाना। चढ़ि अकास बिधि जाइ समाना ॥
कनक नाल तीसर कर नामा। चौंसठ जोगिनि बसै तेहि ठामा ॥
चौथी नाल बिकट थिर थाना। कोठा नाल बहत्तर जाना ॥
घुंघर नाल पाँचवीं होई। काल सिंहासन बैठा सोई ॥
छठवीं नाल रूपरम नामा। निरगुन रूप बसै तेहि ठामा ॥
नाल सातवीं सेत बताई। मन की कला बसै तेहि माईं ॥
नाल आठ अभया मत नाऊँ। कामिनि चारि बसै तेहि ठाऊं ॥
नाल मुकरमा नौवीं नामा। द्वादस दूत बसै तेहि ठामा ॥
हरि संग्रह दसवीं दरसाई। लछमन राम बसै जेहि माईं ॥
मुक्तामनि एकादस सोई। कलसर दूत बैठ बल जोई ॥
द्वादस नाल पोहप पट माईं। नभ नल द्वार सब्द गोहराई ॥
तेरहीं नाल निकट नट नौली। बचन बिदेह बाक बिन बोली ॥
चतुरदसि नाल नटवर नामा। मेधा छपन कोटि बिसरामा ॥
पंद्रा गगन नाल निरबानी। झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
सोला सुखमनि नाल कहाई। सुकिरत सेत बसै तेहि ठाईं ॥
सत्रह नाल अनूप अचीन्हा। अंडा बिदित बिस्व रचि लीन्हा॥
अठारा नाल बिमल सुर जानी। तैंतिस कोटि देव दरबानी ॥
उन्निस नाल भँवर मन्दाकी। अंडा कुम्भ रहै मन छाकी ॥
बिसवीं नाल अजोरक माली। सूरत सब्द सेत चढ़ि चाली ॥
इक्किस नाल हंसदे नाऊँ। मुक्ता मानसरोवर ठाऊँ ॥
बाइस नाल सत अंकित[1] होई। बन असोक सीता जहँ होई ॥
तेइस नाल नगर एक बाटा। जहँ को जम रोकै नहिं घाटा ॥
चौबिस बिषम नाल निज धामा। गुंजै भँवर कंज के ठामा ॥
पच्चिस नाल पदम सुर सोई। पचरँग रूप जहाँ नहिं होई ॥
छबिस नाल गढ़ गोधर नाईं। अटक पार चढ़ फटक समाई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अंकित" की जगह "सुकृत" है।

सताइस नाल त्रिकुट पर लंका। जहँ रावन बसै ब्रह्म निसंका॥
अठाइस सेत द्वार दुरबीना। समुँदर सात पार कोइ चीन्हा॥
उंतिस नाल सिखर पर सैला। अच्छर अंदर अगम दुहेला॥
तिसवीं नाल अधर रस रोकी। जहाँ निरंजन बैठे चौकी॥
इकतिस सुरति कँवल अस्थाना। कोइ सज्जन सत साध बखाना॥
बत्तिस नाल सब्द सुन माईं। मुकर द्वार चढ़ि छूटै झाईं॥
बत्तिस नाली बरन अनूपा। सुर नर मुनि नहिं पावै भूपा॥
ये सब नाल चाल दरसाई। सो सब देखे घट के माईं॥
जिनके नाम ठाम गुन बरना। कहै तुलसी संतन के सरना॥
बत्तिस नाल बरनि समझाई। बाकी मुनि हर एक रहाई॥
बंक नाल है वा को नाँवा। तीनो भवन भेद नहिं पावा॥
घट में बत्तिस नाल बखाना। काया सोध साध कोइ जाना॥

॥ दोहा ॥

बत्तिस नाल निहारि कै, तुलसी कहा बिचारि।
घट घट अंदर देखि कै, साध करै निरवार॥

॥ चौपाई ॥

सत्त बचन साधू परमाना। भीतर भेद सत्त पहिचाना॥
काया खोज नहीं जिन पाया। जाके सदा हिये तम छाया॥
काया खोज किया नहिं भाई। सुकदेव रहे भूल के माईं॥
ब्यास जनक नारद नहिं पाई। कथि पुरान आतम गति गाई॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानी भूले भर्म में, परम हंस ब्रह्मचार।
सास्तर संध बिचारिया, बहे कर्म की धार॥

॥ सुन्न भेद ॥

॥ चौपाई ॥

आगे कहौं सुन्न बिस्वासा। बिना सुन्न गये जीव निरासा॥
अब निज कहौं सुन्न मैं स्वाँसा। बिना सुन्न जिव काल निवासा॥

सुन्न दिसा बिधि कहौं बुझाई। बूझै साध सुन्न जिन पाई ॥
बिरला सुन्न भेद को पावै। सुन्न दीप सोइ सब्द कहावै ॥
सुन्न की सोत धुन्न में लागी। धुन की सोत गगन में जागी ॥
गगन के ऊपर पवन रहाई। निरगुन पवन भवन के माहीँ ॥
निरखि कँवल साधै कोइ साधू। मिटि जाइ काल कष्ट की ब्याधू॥
मूल कँवल के ऊपर देखो। घट में सत्त सब्द ले पेखो ॥
अष्ट कँवल ओंकार का बासा। सो निज बूझो काल तमासा ॥
षोड़स कँवल को ध्यान लगावै। जोगी करै भेद सोइ पावै ॥
पवन जोग जोगी गति गाई। त्रिकुटी निज धुनि कँवल कहाई॥
मन थिर होइ सुरति ठहरावै। त्रिकुटी कँवल पवन ले आवै ॥
देखै अवर पवन हिये माहीँ। चमकै जोति दृष्टि में आई ॥
जीव पवन जब चलै अघाई। सेत पवन से मारि चलाई ॥
करिया पवन भई बलहीना। नाखो पवन जीव जब चीन्हा ॥
नाखो पवन भरोसा मोरा। सेत कँवल से बाँधो डोरा ॥
सेत कँवल सुकिरत की होई। सत मत द्वार जानिये सोई ॥
सत्त सुकृत की एकै बानी। ताकी गति बिरले पहिचानी ॥
कदली सब्द लाभ जिन देखा। मुक्ति अमी तहँ पियै अलेखा ॥
जहाँ निरंजन बसै निदाना। सहस कँवल जोगी बिधि जाना॥
द्वादस आगे इमृत बासा। निगुरा नर सो मरै पियासा ॥
सगुरा होइ सोई निज पावै। भर भर मुख इमृत भल खावै ॥
पीवै अमी लोक को जाई। घट भीतर जिन खोज लगाई ॥
पाँजी खोज हाथ अनुसरई। सो जिव सहजै से भौ तरई ॥
झिलमिलि झरै सुन्न के माहीं। गंगा जमुना सरसुति राही ॥
गंगा जमुना सरसुति होई। तिरबेनी संगम है सोई ॥
त्रिकुटी संगम बेनी घाटा। बसै जीव सत पावै बाटा ॥

बंक नाल होइ गंगा जाई । जमुना सुन्न गुफा से धाई ॥
सरसुति सेत कँवल से आई । मन जोगी बिधि बास कराई ॥
गंगा गहै करै असनाना । जमुना दूरि मुक्ति कर थाना ॥
तीनौं नदी तीनि हैं धारा । आप आप मैं देखि निहारा ॥
यह तीनौं हैं अगम अपारा । बिरले साधू उतरैं पारा ॥
तिन मैं रहै त्रिभवनी घाटा । ब्रह्मा बिस्नु न पावैं बाटा ॥
संकर जोगी सिद्ध अनूपा । उनहूँ न पायौ आपन रूपा ॥
निराकार अभि अंतर भाई । ता का भेद कहूँ समझाई ॥
सुरति निरति करि खोजै आपू । सुन्न सिखिर चढ़ि खैंचै चाँपू[1] ॥
माहि ऊपर ब्रह्मंड की तारी । द्वै[2] पट भीतर सुरति सम्हारी ॥
दहिने बाँयैं सिला पहारा । जहँ की बाट न कोइ निहारा ॥
जहँ सत द्वार बैठ सत यारा । अगम अगाध अजर का द्वारा ॥
इमृत पीवै जीव बिचारा । जा से कटै काल की जारा ॥

॥ दोहा ॥

जोग बिधी बेनी कही, सुन्न जोग बिधि गाइ ।
काल कला परचंड यौं, ठग ठग सब को खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

अब बेनी संतन की गाऊँ । या से भिन्न भेद दरसाऊँ ॥
संतन की बेनी बिधि न्यारी । तुलसी भाखी देख निहारी ॥
अगम द्वार बेनी असनाना । सो बेनी संतन की जाना ॥
मंजै जोइ अगम गति जानी । वह प्रयाग सब संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अपार, जहँ बेनी मंजन कियौ ।
सतगुरु पदम प्रयाग, करि अगाध गति जिन कही ॥

---

(१) धनुष । (२) मुन्शी दे० प्र० की पुस्तक के पाठ में "दे" है ।

॥ चौपाई ॥

अब तेहि राह रीति दरसाऊँ । भिनि भिनि पंथ मता गति गाऊँ॥
सरगुन से निरगुन बिधि बानी । भिनिभिनिराहरीति सबछानो ॥
परथम दृग दुरबीन लगावै । मन चित सुरति ताहि पर छावै ॥
देखै ता के बीच मँझारा । जगमग जोति होत उजियारा ॥
निरखा निरगुन पुरुष निहारा । जहवाँ सुनै सब्द झनकारा ॥
सेत दीप जिव पहुँचै पारा । कोटिन काल भये जरि छारा ॥

॥ दोहा ॥

निरगुन ज्ञान बिचारिया, सुरति राखिये पास ।
तुलसीदास जहँ बास कर, जीव न जाइ निरास ॥

॥ दोहा ॥

घट रामायन सार, यह घट माहिं घटाइया ।
घट का मथन बिचार, भिन्न भिन्न करि डारिया ॥

॥ सोरठा ॥

निरगुन निरखि निहारि, ता से गुरुपद भिन्न है ।
चौथे पद जद जाइ[1], पद प्रयाग सतगुरु लखै ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक के माहिं, निरगुन सरगुन रचि रह्यौ ।
सतगुरु इनके पार, सो तुलसी घट लखि पर्यौ ॥

॥ छंद ॥

घट भीतर जानी आदि बखानी । सुरति समानी सब्द मई ॥
देखा निज नैना कहौं मुख बैना । सत्त नाम का मर्म यही ॥१
नहिं राम अरु रावन यह गति पावन । अगुन सगुन गुन नाहिं कही ॥
कहि अकथ कहानी अगमकी बानी । बेद भेद गति नाहिं लई ॥२
सुर नर मुनि ज्ञानी उनहुँ न जानी । पँडित भेष सब कहैं कही ॥
तुलसी मत भारी यह गति न्यारी । बूझैंगे कोइ संत सही ॥३॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जद जाइ" की जगह "मझार" है ।

॥ सोरठा ॥

आदि अंत का भेद, तुलसी तन भीतर लखा।
सुरति सब्द परकास[1], ज्यौं[1] अकास सर सैल करि ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भेद कहौं अनुसारा। लेकर ज्ञान बान भ्रम जारा ॥
ज्ञान रतन की आँखी होई। जब जम जाल देखिये सोई ॥
सत मत गत अभि अंतर देखै। तत मत अष्ट कँवल मेँ पेखै ॥
सुरति सुहागिन होइ अगमानी। तुरतै मिली सत्त की बानी[2] ॥
अरध उरध बिच बैठे माधो। तत उनमुनी लगाइ समाधो ॥
तारी उलटि तत्त मेँ लावै। रहस नाल मधि जाइ समावै ॥
तुलसी मुद्रा जोग समाधा। आगे भाखोँ भेद अगाधा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी तन के माहिँ, पंथ भेद साधू सही।
तत मत तोल अँकाइ, अधर जाइ जिन जिन कही ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब काल जाल रस रीती। भैाकृत खान जानि जम प्रीती ॥
गगन के मँडल काल अस्थाना। पाँच भूत बिधि जाइ समाना ॥
पाँच पचीस तीन मन मैला। सब जानौ वा को निज खेला ॥
काल जाल जग खाइ बढ़ाया। रिखी मुनी कोइ भेद न पाया ॥
उलटा चलै गगन को धाई। ता से काल रहै मुरझाई ॥
सतगुरु साहिब संत लखावैँ। तब घट भीतर परचा पावै ॥
जो जेइ मूल भेद दरसावै। तब घट मेँ अबिनासी पावै ॥
सतसँग भक्ति हृदे बिच आवै। जब सतद्वार अगम लखि पावै ॥
हिरदै सत्त रहै लै लाई। सब्द द्वार चढ़ि काल गिराई ॥
मुक्ति ज्ञान पावै अबिनासी। अगम ज्ञान सँग मूल निवासी ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मेँ "परकास" की जगह "उम्मेद" व "ज्यौं" की जगह "जो" छपा है। (२) दूसरा पाठ योँ है—"धीरज तत्त सत्त की बानी"।

यह कोइ बिरला साधू पावै । अबिनासी गति अगम लखावै ॥
सतगुरु कृपासिंध कोइ जागै । आवा गवन भर्म भै भागै ॥
कीन्ही अगम नाम स्रुति सैला । चीन्हा अगम निगम नित खेला ॥
अधर सिखर पर तंबू तानै । जहँ से देखै सकल जहानै ॥
ब्रह्मँड द्वार एक है नाका । गहि दुरबीन सुरति से ताका ॥
मकर तार पावै वह द्वारा । ता पर सुरति होय असवारा ॥
सुरति जात लागै नहिं बारा । चली सुरति भइ नाम अधारा ॥
तब पहुँचै इक्किसवँ द्वारा । सुन्न से परे सब्द है न्यारा ॥
सुरति सब्द में जाइ समानी । निर सब्दी गति अगम लखानी ॥
जहँ नहिं पहुँचै मुक्ति पसारा । सोइ है आदि पुरुष दरबारा ॥
मुनि अचारि पावै नहिं कोई । सब भौ भर्म रहा जग सोई ॥
भँवर गुफा मारग चढ़ि देखा । जहँ जिव सत्त सुरत का लेखा[1] ॥
सुन्न सुन्न सब करत बखाना । सुन्न भेद कोइ बिरले जाना ॥
कहौं बिस्तार सुन्न की जोई । ज्यौं गूलर फल कीट समोई ॥
फल जेते तेते ब्रह्मंडा । दीप दीप फल फल नौ खंडा ॥
सुन्न अंड की करी बखाना । कहै तुलसी कोइ साधू जाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सुन्न निवास, सब्द बास जिन घर किया ।
जिमि गूलर फल तासु[2], जग भिनि भिनि जेहि लखि परा ॥

॥ छंद ॥

भये सुन्न निवासी सब सुख रासी । सुरति बिलासी सब्द मई ॥
अनहद हद पारा अगम अपारा । अमी सिंधु स्रुति जाइ लई ॥१
देखा उँजियारा घट घट प्यारा । निरखि निहारा पार कही ॥
तुलसी तुल जावै दस दिस पावै । सिंध फोड़ि असमान गई ॥२

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में पाठ इस तरह है- "जहाँ जीव सत पुरुष को पेखा" और (२) सोरठा में "तासु" की जगह "नास" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

॥ दोहा ॥

सुन्न महल अजपा जपै, समुँद सिखरि के पार ।
टूटी गगन गिरा भई, सत्त सब्द झनकार ॥
त्रिकुटी टाटी टूटि कै, सुन्न अंड भिनि बास ।
घट भीतर परिचय भई, देखा अजर निवास ॥

॥ कँवल भेद ॥

॥ चौपाई ॥

घट में सोधि कँवल जिन गाई । लखै कँवल बिरला कोइ भाई ॥
अंकुर उतपति कँवल मँझारा । सत्त नाम पद तिनके पारा ॥
ऊँच नीच परबत बिच बाटा । काल जहाँ रोकै नहिं घाटा ॥
ता के दहिने मारग माईं । दामिनि पाँच छेकि नियराई ॥
देवै दानी दान चुकाही । पावै जीव अगम की राही ॥
दानी कहै जीव सुनि बाता । बिना दान करिहौं मैं घाता ॥
जब जिव कहै समझ सुन भाई । करौ घात केहि कारन जाई ॥
अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ । जहँ साहिब के दरसन पाऊँ ॥
पाँचौ नाम जीव जब भाखा । छठवाँ नाम गुप्त करि राखा ॥
पाँचौ नाम काल के जानौ । तब दानी मन संका आनौ ॥
निरगुन निराकार निरबानी । धर्मराय यौँ पाँच बखानी ॥
जीव नाम निज कहै बिचारी । जानि बूझि दानी झख मारी ॥
जाव जीव यह राह तुम्हारी । हम नहिं रोकैं बात बिचारी ॥
बोल पाँच हमहूँ सुनि पाई । हम नहिं निकट तुम्हारे आई ॥
पाँचौ चोर रहे अलगाई । होइ निरभै जिव आगे जाई ॥
आगे सात सुमेर उँचाई । नौ नाटक तापर रहैं भाई ॥
नौ नाटक पूछन चले आगे । कहौ जीव केहि मारग लागे ॥
हम यहि घाट बाट रखवारी । यहाँ न अदली चलै तुम्हारी ॥

कहै जीव दुग[1] दानी भाई। हम चलि जाइ नाम चित लाई॥
दानी दान चुकावौ आई। जब यहि बाट निभन तुम पाई॥
केहि कर अंस कहाँ तुम जाई। बात आपनी कहौ बुझाई॥
कहै जीव सतलोक निवासा। मैं चल जावँ पुरुष के पासा॥
दानी कहै दूरि है भाई। अगम पंथ कैसे निभ जाई॥
कैान नाम मारग को जाई। कैान नाम से उवरै आई॥
इतना भेद कहौ समझावा। बाट जीव जब घर की पावा॥

॥ जीव बचन ॥

॥ चैापाई ॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी। हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ। आदि नाम लै काल गिराऊँ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी। अस चल जाउँ पुरुष दरबारी॥
इतना बचन कही दिल सूना। बहुत त्रास लै मन मैं गूना॥
तुम मारग जावो जिव अपने। हम तुमको रोकैं नहिं सुपने॥
चले जीव आगे पग दीन्हा। करिया सरवर मारग लीन्हा॥
तहँ तौ पंछी एक रहाई। निस बासर वो बैठ उँचाई॥
तेहि मारग जिव चला अघाई। चोंचि पसार खान को चाही॥
मुख पंछी बहु भाँति पसारा। जिवरा तो को करौं अहारा॥
अपना नाम कहौ टकसारा[2]। तब चलि जैहौ वहि दरबारा॥
नहिं हम से तुम बचने पैहौ। तो को जिवरा घर घर खैहौं॥
जिवरा सुरति नाम से लाया। करिया मारि पाँव तर नाया॥
जीव चला झरने के पारा। दस दिस देखि परा उँजियारा॥
अमी द्वार इमरत कर बासा। मिटा जीव का संसय सासा॥
अधर जीव इमरत को पीवै। सब्द बुंद इमरत जुग जीवै॥
बस्तु पाइ साधै कोइ साधू। चाखै इमरत सुरति समाधू॥

(१) दुर्ग? (देखो नोट पृष्ठ १४)। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "टुक सारा" है।

चटिचटि सूरति चढ़ी अटारी। इमरत अजर नाम की लारी ॥
साहिब अजर सब्द घर पावै। आवागवन बहुरि नहिं आवै ॥
डोरी पुरुष अकास अकेला। किया सुरति घट भीतर मेला ॥
इमरत कँवल भरा भंडारा। पीवै जिव सो उतरै पारा ॥
नाम अगाध कहौं समझाई। सूरति सब्द अगाध सुनाई ॥
जो जिव चाहै अगम निवासा। सूरति करै सब्द में बासा ॥
जिनजिन सूरति सब्द सँवारा। सो चलि गये अगम पद पारा ॥
पावै भेद बस्तु लखि पावै। सो सतलोक सोक नसि जावै ॥
सुरति सब्द में भई अधीना। ताकर भेद काल नहिं चीन्हा ॥
सत्त नाम से काल नसाना। कोइ साधू काया मथि जाना ॥
काया दरपन सुरति समानी। सो साधू साहिब सम जानी ॥

॥ साखी ॥

कँवला काल निरंजना, तिन बस कीन्हा घाट।
भिन्न भिन्न दरसाइ कै, सतगुरु दीन्ही बाट ॥

॥ दोहा ॥

जीव चला घर आपने, काल छेकि जम जार।
नाम सुरति जब लख परा, भागे ठग बटमार ॥
सुरत सब्द मिल लोक मैं, चढ़ि सतनाम जहाज।
तुलसीदास पिया मिले, कीन्हा सेज बिलास[1] ॥

॥ छंद ॥

तुलसी लख जागे काल से भागे। लख द्रुग[2] दानी दूर किये ॥
इमरत रस चाखा सो सब भाखा। जीव अघाइ अनाद पिये ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह दोहा बिल्कुल निराला है—
सुरति शब्द मिलि लोक मैं, चढ़ी नाम की लार।
निज घर अपना पाइ कै, तुलसी कहै बिचार ॥
(२) दुर्ग ? (देखो नोट पृष्ठ १४)।

सतनामहिजानापद पहिचाना। सुरति सब्द जो जाइ लिये ॥
जिन जो सुति सैना देखा नैना। अगम अपनपैा पाइ पिये ॥२॥
हिये खुल गइ आँखी सब बिधि भाखी। काल बरन बिधि बूझि[१] कही ॥३॥

॥ सोरठा ॥

बानी काल बिचार, तीनि बरन तोली सबै।
कहोँ बरन निरधार, सो कोइ साधू परखिहै ॥

॥ चैापाई ॥

काल बैन बिधि भाखि सुनाई। ता की अब मैं करोँ लखाई ॥
बानी तीनि तीनि बिधि जानी। कँवल मध्य मैं कहोँ बखानी ॥
कैान बरन वे कँवल रहाई। जाकी बिधि बिधि कहोँ बुझाई ॥
कैाने बरन निरंजन देवा। तिन का बरन बताआँ भेवा ॥
करिया बरन काल को भाई। सेत रक्त वे कँवल रहाई ॥
सुन्नि के बरन निरंजन देवा। तिन कर कहोँ निरख सब भेवा॥
अब बानी का कहोँ बिचारा। बूझै साध करै निरवारा ॥
बानी कैान निरंजन होई। बानी कैान काल की सोई ॥
बानी कैान कँवल की लीन्हा। सो सब निरखि बताआँ चीन्हा॥
बानी अधर निरंजन सोई। बानी क्रोध काल की होई ॥
बानी मेल कँवल कर लीन्हा। येहि बिधि से तीनो हम चीन्हा ॥

॥ साखी ॥

निरगुन सरगुन लखि परै, काया काल बिचार।
आदि पुरुष सत लोक मैं, सो घर अधर हमार ॥१॥
घट घट मैं सब लखि परा, भिनि भिनि अगम पसार।
तन बिच सोला द्वार की, तुलसी कहत पुकार ॥२॥

॥ चैापाई ॥

सोला द्वार भेद कहोँ भाखी। जा की बरन बिधी कहूँ साखी ॥
प्रथम द्वार का भेद बताऊँ। जा की बिधि बरतंत सुनाऊँ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "बूझि" की जगह "भूल" है।

प्रथम मूल दीप गति गाऊँ । जा की नाम ठाम समझाऊँ ॥
सतगुरु गुप्त भेद लखवावै । सोला द्वार भेद जब पावै ॥

॥ द्वार भेद ॥

परथम सहस कँवल में द्वारा । दूसर अकह कँवल के पारा ॥
तीसर द्वार गगन के नीचे । चौथा द्वार अधर के बीचे ॥
जहँवाँ बैठा कंदर[१] काला । जिनहिं बिछाया जग जम जाला ॥
पंचम द्वार दसौ दिस बाहिर । मन रस बैठा जग मँ जाहिर ॥
भँवर गुफा बिच छठवाँ द्वारा । कँवल भँवर तहँ बसै नियारा ॥
सतवाँ द्वार दसो के दहिना । पाँचौ भूत सूत बिन सैना ॥
अठवाँ मूल चक्र के माहीं । बैठा मूल मोह रस राही ॥
नौवाँ द्वार ताल मँ होई । स्वाँसा पवन चलावै सोई ॥
ये नौ द्वार काल के जाना । दसवाँ द्वारा अधर बखाना ॥
द्वारा चारि गुप्त गुहराई । जानै साध संत जिन पाई ॥
ऐसे चौधा भेद पुकारा । पंद्रा द्वार सत्त के पारा ॥
सोला खिरकी अगम निसानी । जा मँ सत साहिब की बानी ॥
ता के परे द्वार नहिं देसा । जहँ इक साहिब नाम न भेसा ॥
संत सैल वह अगम निसानी । बसै संत वोहि धाम अनामी ॥
काया मद्धे काल बिचारो । निरंकार से पुरुष नियारो ॥
वा का भेद साध कोइ पावै । अगम निगम सोइ संध लखावै ॥
जोगी रमक राह नहिँ जाना । जोग ज्ञान मत भेद भुलाना ॥
प्रानायाम जोग कोइ कीन्हा । कोइकोइ कँवल उलट कर लीन्हा ॥
कोइ अष्टांग जोग जस कीन्हा । परम जोग रस रहे अधीना ॥
यह सब जोगी जोग कराया । कठिन काल सब घरघर खाया ॥

---

(१) गुफा ।

जोगी राह रीत दरसाऊँ। भिनि भिनि जोग बिधी बिधि गाऊ ॥
जोग सब्द बिधि कहौं बखानी। बूझै जोग कीन्ह सोइ जानी।

॥ कहेरा ॥

जोगी राह रमक तत तारी, करत जोग जुग चारी हो।
ज्ञान जोग मिसिरित[१] मन मैला, चढ़ि अकास नित खेला हो ॥१॥
अब तेहि राह रीति दरसाऊँ, बिधि भिनि भिनि गति गाऊँ हो।
बस तन मन रस निरमल होई, इंद्री इस्क खुद खोई हो ॥२॥
ता पर तीन तलब पच्चीसा, खड़ग ज्ञान दल पीसा हो।
उनके निकट नेक नहिँ जावै, थिर होइ पवन चढ़ावै हो ॥३॥
दीदा फूल झूल दिन राती, त्रिकुटी चढ़ि येहि भाँती हो।
बिधि बायेँ[२] पिँगला गति केरी, इँगला दहिने फेरी हो ॥४॥
चंद सूर दम दम बस आवा, सुखमनि चटक चढ़ावा हो।
बंक नाल पल पल नल खोली, अति अजपा नहिँ बोली हो ॥५॥
ओहँग तत सोहँग मत जानी, पवन सब्द सँध आनी हो।
थिर मन मेरडंड चढ़ तारी, झलक जोति उँजियारी हो ॥६॥
तत अकास आतम बिधि जानी, लख चर अचर बखानी हो।
अंडा तत्त द्वार दरसानी, जोग ज्ञान गति बानी हो ॥७॥
यह सब काल खेल भरमाये, सास्तर बेद भुलाये हो।
यह सब जोगि जोग बस कीन्हा, काल राह रस पीना हो ॥८॥
वे दयाल बिधि भेद अपारा, संत चीन्ह भये न्यारा हो।
जोग ज्ञान पंडित सुनि मानै, सास्तर पढ़त पुरानै हो ॥९॥
जैसे नीर घड़ा जल माईँ, रबि प्रतिबिंब दिखाई हो।
जब लग घड़ा अकास समाना, तब लग तत दरसाना हो ॥१०
फूटा घड़ा अकास नसाना, रबि सूरज बिनसाना हो।
तत भयौ नास भास भइ जोती, अंध कूप हिये होती हो ॥११

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "मिसिरित" की जगह "निसिरित" और (२) "बिधि बायेँ" की जगह "बिधिवा यह" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

अंध अकास भास नहिँ पावै, भूल भटक मन आवै हो।
घट बिनसै तन दैँही पावै, पुनि भव माहिँ समावै हो ॥१२
ज्ञान जोग ब्रत संजम कीन्हा, तीनि ज्ञान गति चीन्हा हो।
अंत काल जम जाल फँसाना, बहु बिधि काल चबाना हो ॥१३
तुलसी जोग जुगति कहि भारी, संत अगम गति न्यारी हो।
संत राह रस अगम ठिकाना, जोगी भेद न जाना हो ॥१४

॥ सोरठा ॥

जोगी जुगति बिचार, संत भेद न्यारा कहै।
अगम अगत गति पार, जोग ज्ञान पहुँचै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कँवल षट गाऊँ। बसै तासु पर भेद बताऊँ ॥
चढ़ै चक्र षट जोगी गावै। तुलसी सब्द माहिँ समझावै ॥
काया माहिँ कँवल का बासा। कँवल कँवल कहूँ भूमि निवासा ॥

॥ कहेरा ॥

काया कलस कँवल बिधि भाखी, परख लखी हिये आँखी हो।
भिनि भिनि जोग कँवल बिधि गाई, खुल षट भेद बताई हो ॥१॥
गुदा कर कँवल कहौँ दल चारी, गनपति बास बिचारी हो।
छै पखड़ी दल कँवल कहाई, बसै ब्रह्मा तेहि ठाँई हो ॥२॥
अष्ट कँवल दल नाभ बसेरा, बसै बिस्नु तेहि तीरा हो।
दल बारा बिधि सिधि हिये माहीं, सिव कैलास कहाई हो ॥३॥
सोला कंठ कँवल बिधि जानी, जगदंबा जग रानी हो।
सहस कँवल दल दीद निरंजन, घाट रोकि गल गंजन हो ॥४॥
ये सब काल जोग रस माया, सिध जोगी सब खाया हो।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, तीनि ज्ञान गति धारी हो ॥५॥
जोगी काल कलेवर कीन्हा, तप संजम ब्रत धारी हो।
कष्ट भोग फल काया पाया, चारि खानि गति चारी हो ॥६॥

कँवल जोग जोगी गति गाया, भर्म भोगि भौ आया हो।
अब कहौं संत भेद बिधि सारी, जोग कँवल से न्यारी हो ॥७॥
नौलख कँवल पार दल दोई[१], परे चारि दल सोई हो।
ता के परे अगमगढ़ घाटी, नीर तीर गहि बाटी हो ॥८॥
ता के परे परम गुरु स्वामी, जीव अधर घर धामी हो।
ता के परे परम पद माहीं, साहिब सिंध कहाई हो ॥९॥
ता के परे संत घर न्यारा, अगम अगाध अपारा हो।
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा, अगम राह रस पीना हो ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

जोग आत्मा ज्ञान, आगे मत जानै नहीं।
करि करि जोग बयान, काल खानि भौ रस रहै ॥

॥ चौपाई ॥

जोग निरंजन कीन्ह पसारा। यह सब काल जाल भ्रम डारा ॥
कँवल सहस्र समाधि लगावै। मन सोइ काल निरंजन पावै ॥
अंड खंड ब्रह्मंड पसारा। ये सब जानौ मन[२] की लारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाये। ये सब मनमत गति उपजाये ॥
मन सोइ निरंकाल है भाई। ता कर बास अकास के ठाईं ॥
वा का सुनौ बास बिधि मूला। अगिनि अकास कँवल जहँ फूला॥
तुलसी ता की बिधी बताऊँ। सब्द राह रस भेद सुनाऊँ ॥

॥ कहेरा ॥

अगिनि अकास जरत जल जाना, ता बिच कँवल फुलाना हो।
डंडी कँवल फूल नभ नारी, रज ब्रह्मा बिस्तारी हो ॥१॥
नाल वोही तम संकर तारी, बिस्नु बिपति जग भारी हो।
मिलि तीनौ मन मरम न जाना, कीन्हे बेद पुराना हो ॥२॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ८ में "दोई" की जगह "होई" है और
(२) आगे की चौपाई की कड़ी ३ में "मन" की जगह "काल" है।

निरंकाल काल अस फाँदा, जीव जोति जग बाँधा हो।
आदि अनादि पंथ नहिं जानी, करि कुपंथ ठग ठानी हो ॥३॥
तीरथ बरत नेम बिधि[1] पाला, आस खानि फल डाला हो।
नर तन भटक भटक भटभेरा, बाँधा न भौजल[2] बेड़ा हो ॥४॥
तन सराय छूटत छिन माहीं, सेमरि सुवा पछिताई हो।
तुलसीदास चेत नर अंधा, परखि लखौ दुख दंदा हो ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये सब मन का भेद बताया। मन रचि कीन्हा खेल बनाया ॥
धरती गगन चंद औ सूरा। निरंकाल रच मन मत मूरा ॥
सोइ मन अस बस बिष रस माईं। भूला भरम खानि गति जाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तरक बिचार, सार पार गति ना लखै।
यह मन बिषम बिकार, ता की गति मति सब कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी मति न्यारी कहत बिचारी। जगत भिखारी जाल मई ॥
सुर नर मुनि नाचे कोइ न बाचे। आदि अंत सब छार छई ॥१
संतन सोइ जाने सुरति समाने। जिन वा घर की राह लई ॥
मैं उनका चेरा किया निबेरा। सुरति सैल अज अधर गई ॥२
मन की गति पाई सुरति छुड़ाई। रामायन घट माहिं कही ॥
ले लेख अलेखा सब बिधि देखा। संत चरन सत सार सही ॥३
चीन्हा वह द्वारा सुरति सम्हारा। नैन निहारा पार गई ॥
तुलसी बिधि गाई सबै सुनाई। संत सहाई राह दई ॥४॥
कुंजी अरु तारा खोल किवारा। निरखि निहारा सूर भई ॥
जाना सत नामा अगम ठिकाना। लखि असमाना तिमर गई ॥५
तुलसी रस ज्ञाना माहिं बखाना। धसि असमाना अगम लई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ४ में "बिधि" की जगह "नित" और (२) "बाँधा न भौजल" की जगह "बाँधौ नभ जल" है।

॥ सोरठा ॥

यह बिधि निरमल ज्ञान, सत मत सुरति लखाइया ।
जब पाया वह ठाम, आदि अंत सोइ सुधि भई ॥

॥ सोरठा ॥

कीन्हा ग्रंथ बनाइ, पाइ गाइ गति अस कही ।
भई गुरन पद पार, सार पदम पद लखि रही ॥

॥ चौपाई ॥

आगे अगम लोक गति गाऊँ । सत्त नाम सत धाम लखाऊँ ॥
जब नहिँ निराकार और जोती । आदि अंत कछहू नहिँ होती ॥
जब दयाल सत साहिब दाता । जबकी सुनौ सकल बिख्याता ॥
मैँ अजान कछु मरम न जानौँ । संत कृपा सत साखि बखानौँ ॥
सतगुरु संध संत दरसाई । उन रज कही महूँ पुनि गाई ॥
मैँ बुधिहीन अचीन्ह अनारी । कीन्ही कृपा सुरति मतवारी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मनहिँ बिचारि, संत अंत गति लखि परी ।
भाख्यौँ सरनि सिहार, सार पार जस जस भई ॥

॥ सोरठा ॥

सत्त लोक सत नाम, और अनाम आगे कही ।
सबहि संत ब्रत मान, मैँ निकाम सरनै लई ॥

॥ चौपाई ॥

अब कहूँ आदि अगाध अनामी । ताकी गति मति संत बखानी ॥
जो कछु सत्त सीत उन केरी । महूँ पाइ मति निरखि निबेरी ॥
तुलसी जब जोइ जस जस भाखा । आदौ बिरछ पेड़ पत साखा ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया । जास हिलोर भई सत माया ॥
माया नाम भया इक ठौरा । सत मत नाम बँधा इक डोरा ॥
सत्त लोक सत साहिब साँईं । सत्त मिले सत नाम कहाई ॥
चौथा पद संतन सोइ भाखा । सो सत नाम कीन्ह अभिलाखा ॥

सत्त नाम से निरगुन आया। ता को बेद ब्रह्म बतलाया॥
ता की अब मैं कहौं लखाई। त्रिकुटी रावन ब्रह्म कहाई॥
माया कुमति ब्रह्म इक ठौरा। भया राम मन चहुँ दिसि दौरा॥
पाँचौ इंद्री प्रकृति पचीसा। तीनि गुनन मिलि सरगुन ईसा॥
इंद्री पिता भरत है भाई। गुन तन कुमति संग मन माहीं॥
इच्छा सँग रँग मन मति भूला। खस परा बुंद भया अस्थूला॥
ता को सब जग राम बखाना। ईस कर्म मन भर्म भुलाना॥
निराकार मन भया अकारा। जोति मिली गुन तीनि पसारा॥
ब्रह्मा बिस्नु भये महादेवा। इनकी उतपति मन मत भेवा॥
सास्तर बेद संस्कृत बानी। ये सब मनमत गति उतपानी॥
दस औतार जगत जग माया। यह मन और अनेक उपाया॥
ऋषी मुनी जोगीसुर ज्ञानी। मन करता कर सब मिलि मानी॥
तीरथ बरत बेद ब्यौहारा। जग भूला मन जाल पसारा॥
जा से नाम भेद नहिँ जानै। मनहि राम को नाम बखानै॥
नाम गती है अगम अपारा। ब्रह्म राम दोउ पावैं न पारा॥
निरगुन ब्रह्म राम मन होई। नाम अगम गत अगत अघोई॥
ता का पटतर मन पर लावै। ता से नाम भेद नहिँ पावै॥

॥ दोहा ॥

येहि बिधि आदि अनादि, लखा भेद भिनि सब कह्यौ।
सुति निःनाम अधार, जाना जिन अंदर कह्यौ॥

॥ छंद ॥

है निःनामी अकथ अनामी। दस दिसि लसि सर सैल कही॥
भाखा सतनामा ब्रह्म अकामा। माया मिलि मन जार लई॥१॥
काया अस्थूला मन सहै सूला। इंद्री बस भै खानि मई॥
काया गति धारी कर्म बिचारी। भूल भटक भै भार सही॥२॥

॥ सोरठा ॥

क़ाया रचन बिचार, जाही से ये जग भया ।
सो बिधि कहौं सँवार, बूझै जो जिन घट लखा ॥

॥ चौपाई ॥

उतपति जोनि खानि मन दीन्हा । गर्भ भीतर बालक को चीन्हा ॥
उतपति कारज बीरज डीठा । यह मन बात लागि मद मीठा ॥
या कर लेखा कहौं बनाई । तब जग हिरदे सत्त समाई ॥
सुनौ गर्भ की बात बिचारा । मात पिता रज बीर्ज सँवारा ॥
उलटा उरधमुखी दुख पावै । तन भीतर का को गोहरावै ॥
भया बिकल मुख नरक समाना । जठर अगिन तन तपन जराना ॥
आजिज भया बिकल बहु भारी । अति दुख मैं रहा बिकल दुखारी ॥
तब साहिब से अरज पुकारी । बंदीछोर मोहिं लेव उबारी ॥
निस दिन बँदगी करौं तुम्हारी । अब मोहिं काढ़ौ महा दुखारी ॥
अब तोहिं नेक न बिसरौं साँई । बार बार सुमिरौं चित लाई ॥
दीन दुनी से मन नहिं लाऊँ । आठ पहर तुम्हरा गुन गाऊँ ॥

॥ सोरठा ॥

इतना किया करार, जब गर्भ से बाहिर भया ।
भूला सिरजनहार, तुलसी भौ जग जाल मैं ॥

॥ चौपाई ॥

अब बाहिर का लागा रंगा । माता मोह पिता के संगा ॥
लरिकाई लट पट जग खेला । तोतरि बात मात सँग बोला ॥
भाई बंद सकल परिवारा । ठुमठुम पाँव चलै तेहि लारा ॥
लरिकाई ऐसी बिधि खोई । तरुन भये तरुनी सँग मोही ॥
मन की मौज करै रस रंगा । भूला ज्ञान भया चित भंगा ॥
अब साहिब की याद बिसारी । माया मोह बँधा संसारी ॥
मद मैं मस्त कछू नहिं सूझै । साध संत को कछू न बूझै ॥
खान पान निस दिन मदमाता । कामिन संग रहै रँगराता ॥

जिन यह घट का साज बनाया। ताहि बिसारि जगत मन लाया॥
यह जग झूँठ सराय बसेरा। भोर भये उठि सूना डेरा॥
ऐसे या जग का ब्योहारा। जनम जुवा जस बाजी हारा॥
नेक न साहिब से मन लाया। बिरध भया तब अति दुख पाया॥
ऐसे सकल जनम गयो बीती। नेक न जानी साहिब रीती॥
अंत समय जम आनि सतावा। मुसकिल कष्ट महा दुख पावा॥
मार परै जब कौन बचावै। कठिन काल बिकराल[१] सतावै॥

॥ दोहा ॥

ऐसा नर तन पाइ कै, बादइ जनम गमाइ।
सो अस अंधा जग भया, परै नरक मैँ जाइ॥

॥ छंद ॥

ऐसा जग भूला सहै जम सूला। धर्मराय तन त्रास दई॥
निज नाम न जाना बहु पछिताना। जिन नित काल की मार सही॥१
ता से नर चेतौ छाँड़ि अचेतौ। नर तन गति ये जाति बही॥
तुलसी कही साची कोउ न बाची। बिन सतसंगति पार नहीं २

॥ सोरठा ॥

तुलसी देखि बिचार, यह तन मन को सुपन है।
बहि मत जाइ गँवार, यह जग जल भौ पेखना॥

॥ चैापाई ॥

निःनामी निःअच्छर भाखौँ। अब निज सुरति नाम से राखौँ॥
ता से जीव होइ निरवारा। भवसागर से उतरै पारा॥
संत कृपा सत संगति होई। सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही॥
अब मैँ कहौँ आदि गति न्यारी। घट देखै सो लेइ बिचारी॥
सब गति भिन्न भिन्न कहौँ भाखा। जानै जीव मिटै अभिलाखा॥
पिंड माहिँ ब्रह्मंड बताऊँ। भिन्न भिन्न ता को दरसाऊँ॥
जो बाहिर सोइ पिंड दिखाई। देखा जाइ पिंड के माहीँ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैँ "बिकराल" की जगह "जब आइ" है।

तुलसी ताहि पाइ घसि देखा। घट भीतर भिनि भिन्न बिबेका ॥
जस जस संत कहा घट लेखा[१]। तस तस तुलसी नैनन देखा ॥
अब मैं या की कहाँ लखाई। जो घट भीतर दीन्ह दिखाई ॥
तुलसि निकाम संत कर बंदा। जित जित जोओं जग सब अंधा॥[२]
कोइ न मानै बात सत मेरी। फिरि फिरि कर्म बँधे भै बेरी ॥
भिन्न भिन्न संतन गोहरावा। काहू हिरदे चेत न आवा ॥
घट मैं सुरति सैल जस कीन्हा। कागभसुंड भाखि तस दीन्हा ॥
कागभसुंड कितहुँ नाहिँ भयेऊ। तुलसी सुरति सैल तन कहेऊ ॥
कागभसुंड काया के माहीं। राम रमा मुख पैठा जाई ॥
तुलसी ता की गति मति जानी। रामायन मैं कीन्ह बखानी ॥
यह सब घट मैं भाखि सुनाई। अंधे जिव भ्रंतै लै जाई ॥
भरत चत्रगुन लछिमन भाई। यह घट माहिँ कहेउ समझाई ॥
सुमितरा केकइ कौसिल्या। ये तन भीतर घट मैं मिलिया ॥
सीता दसरथ राम कहाये। ये सब घट भीतर दरसाये ॥
सरजू सुरति अवध दस द्वारा। ये घट भीतर देखि निहारा ॥
रावन कुंभ लंकपति राई। त्रिकुटी ब्रह्म बसे तेहि माहीं ॥
रावन ब्रह्म कहा हम जोई। त्रिकुटी लंक ब्रह्म है सोई ॥
मन्दोदरी भभीषन भाई। इंद्रजीत सुत त्रिकुटी माहीं ॥
ये संबाद कहा घट माहीं। रामायन घट माहिँ बनाई ॥
जो कोइ अंध जीव नहिं मानै। पुनि पुनि परै नरक की खानै ॥
संतन की गति कोइ न जानै। पिंड माहिँ ब्रह्मंड बखानै ॥
उनकी गति मति कोइ कोइ जानै। बिन सतसंग नहीं पहिचानै ॥
उनकी कृपा दृष्टि जब होई। तब अदृष्ट को बूझै सोई ॥
पिंड ब्रह्मंड सैल कोइ पावै। तब सतगुरु सत दया लखावै ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं यह कड़ी ऐसे है–"आगै जस जस संतन लेखा"।
(२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं यह चौपाई और आगे की दो छूट गई हैं।

अब ब्रह्मंड की कहौं लखाई । कोइ कोइ साधू बिरले पाई ॥
जो कोइ भये अधर मैं लीना । जिन को आया संत अकीना ॥
जिन जिन सुरति सैल घट कीन्हा । ता की गतिमति बिरले चीन्हा ॥
अब मैं अपनी कहौं ढुढ़ाई । सुरति सैल घट माहिं लखाई ॥
रावन राम सकल परिवारा । ये घट भीतर चुनि चुनि मारा ॥
और अनेक कहे बहु भाँती । ये सब माया की उतपाती ॥
ये मत सत्त सत्त जिन माना । उनका आवागवन नसाना ॥
या मैं कोई भर्म जो लावै । बार बार चौरासी पावै ॥
मैं अपने अस देख बखानी । संत कृपा से महुँ पुनि जानी ॥
अब ब्रह्मंड पिंड कर लेखा । भाखा जोइ निज नैनन देखा ॥

॥ दोहा ॥

पिंड सैल ब्रह्मंड की, जस जस गति मति मोर ।
जो सत मत संतन कही, देखा घट गढ़ तोर ॥

॥ छंद ॥

गाया घट लेखा अगम अलेखा । जिन जिन देखा सार सही ॥
महुँ पुनि भाखी देखा आँखी । सूरति धसि दस द्वार गई ॥१॥
संतन जोइ गाई महुँ पुनि पाई । आदि अंत गति कहनि कही ॥
जो जो घट माहीं सब दरसाई । जो रचना ब्रह्मंड मई ॥२॥
जिनजिननिजजानीदेखबखानी । जिन नहिं मानी भर्म सही ॥
पंडित गति ज्ञानी भर्म भुलानी । भेष भेद भौ माहिं कही ॥३॥
छत्री और ब्राह्मन बैस अपावन । सूद्र मती छर छार भई ॥
का को गोहराई आदि न पाई । तुलसी सब देखा भर्म मई ॥४॥

॥ सोरठा[१] ॥

ब्राह्मन अरु पुनि सूद्र, ये बूड़े सब उद्र को ।
बैस्य बसा भौ बास, कस अकास डोरी गहै ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सोरठा ऐसे है—
"ब्राह्मन ऊद्र समांइ । छत्री बूड़े लड़न मैं ।
बैस शूद्र भर्म मांइ । को अकाश डोरी गहै ॥"

॥ चौपाई ॥

सब ये घट की सैल बखाना। पिंड माहिँ ब्रह्मंड दिखाना॥
आगे घट का भेद बताई। अब जो सुनो कहोँ समझाई॥
तिल परमाने लगे कपाटा। मकर तार जहँ जिव की बाटा॥
इतना भेद जानि जिन कोई। तुलसीदास साध है सोई॥
आगे अदबुद ज्ञान अपारा। पिरथम घट का कहोँ बिचारा॥

॥ अथ घट का भेद और ठिकाना ॥

(सवाल)

१ पृथ्वी का माथा कहाँ है?		१८ तिल भर हाड़ काया मेँ कहाँ है?	
२ सूर का तेज	,,	१९ गगन का कलेजा	,,
३ चंद्र की जोति	,,	२० मन का मुख	,,
४ पानी का मूल	,,	२१ काम की आदि	,,
५ कँवल का फूल	,,	२२ देही का नूर	,,
६ वायु की नाभी	,,	२३ बदन का पिंजर	,,
७ गनेस की स्वाबी	,,	२४ सिव का ध्यान	,,
८ समुद्र का सोत	,,	२५ बेद का भेद	,,
९ आकास का पोत	,,	२६ गुनी का गुन	,,
१० सुरति सहदानी	,,	२७ राग का रस	,,
११ जीव की बानी	,,	२८ सुर का आकार	,,
१२ जीव का नाम	,,	२९ आकार की आदि	,,
१३ सुरति का ठाम	,,	३० अंत की समाधि	,,
१४ ध्यान की सुरति	,,	३१ माया की धुनि	,,
१५ ज्ञान की मूरति	,,	३२ धुनि की सुन्न	,,
१६ सुरति की निरति	,,	३३ सुन्न का सब्द	,,
१७ सुमेर की जड़	,,	३४ ज्ञान का मूल	,,

॥ सोरठा ॥

इतना देहु बताइ, जीव कहौँ समझाइ कै।
अगम निगम घर पाइ, तब तुलसी सब बिधि लखै॥

(जवाब)

॥ चैापाई ॥

आगे उलटा भेद बताऊँ। अगम निगम घट भेद सुनाऊँ॥
अब या का अरथंत सुनाऊँ। घट मैँ ठीका ठौर बताऊँ॥
जो कोइ साध सैल घट कीन्हा। सुन करि अर्थ होइ लै लीना॥

अर्थ–१ पृथ्वी का माथा मैनागिरि देस मेँ है।
२ सूर का तेज उदयागिरि परबत मैँ है।
३ चंद्र की जोति चंदागिरि परबत मैँ है।
४ पानी का मूल निरंजन के दोदे मैँ है।
५ कँवल का फूल अछै दीप मैँ है।
६ वायु की नाभी रंभा के पेड़ मैँ है।
७ गनेस की स्वाबी मान सरोवर मैँ है।
८ समुद्र का सोत समीरूख मैँ है।
९ आकास का पोत बाराह के माथे पर है।
१० सुरति सहदानी सब्द मैँ है।
११ जीव (हंस) की बानी अष्टकँवल मैँ है–जीव अरूपी द्वादस कँवल मैँ है।
१२ जीव का नाम सुन्न कँवल मैँ है।
१३ सुरति का ठाम दोइ दल कँवल मैँ है।
१४ ध्यान की सुरति गगन के ऊपर नयन नासिका के अग्र बीच मैँ है।
१५ ज्ञान की मूरत ब्रह्मंड कँवल मैँ है।
१६ सुरति की निरति साहिब के सब्द मेँ है।
१७ सुमेर की जड़ नाग के कलेजे मेँ है।

१८ तिल भर हाड़ पाँच इंद्रियोँ में है ।
१९ गगन का कलेजा राग के आकार में है ।
२० मन का मुख षटदल कँवल में है ।
२१ काम की आदि संकर की सुरति में है ।
२२ दँहो का नूर हरि के पास है ।
२३ बदन का पिंजर पृथवी के भीतर है ।
२४ सिव का ध्यान हरि के सब्द कँवल में है ।
२५ बेद का भेद चार दल कँवल में है ।
२६ गुनी का गुन षटदल कँवल में है ।
२७ राग का रस पुरुष के सब्द में है ।
२८ सुर का आकार सुन्न में है ।
२९ आकार की आदि अनहद में है ।
३० अंत की समाध साहिब के लोक में है ।
३१ माया की धुन चतुरदल कँवल में है ।
३२ धुन की सुन्न बेद के मूल में है ।
३३ सुन्न का सब्द निरंतर में है ।
३४ ज्ञान का मूल नाम में है ।

॥ दोहा ॥

ये अस्थान बताइया, साधू सुनौ बखान ।
कहै तुलसी घट भीतरे, सूरति से पहिचान ॥

॥ सोरठा ॥

रामायन घट सार, सुरति सब्द से लखि परै ।
गगन कंज कर बास, ऊपर चढ़ि जिन देखिया ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनियौ ब्रह्मंडी लेखा । कोटिन परलै घट बिच देखा ॥
भीतर गुफा एक जो कीन्हा । कोटि प्रलै उबार जिव लीन्हा[१] ॥
सब्द निरंतर सत है भाई । गहै जीव पहुँचै जब जाई ॥
घट का मथन सुरति से[१] साधै । वा को काल कभो नहिं बाँधै ॥
कोटिन सूर ब्रह्मंड के माहीं । कोटिन कोटि देखि सब ठाहीं ॥
घट बिचार घट ही के माहीं । ता मैं ब्रह्मा बिस्नु रहाई ॥
सिव संकर सब घट में फंदा । घट में नदी अठारा गंडा ॥
घट मैं देखे सात समुंदर । जिन से जल पहुँचै नभ अंदर ॥
घट मैं तीरथ बरत मँझारी । घट मैं देखा कृष्न मुरारी ॥
घट मैं जोधा सामँत होई । घट मैं राजा परजा सोई ॥
घट में हिंदू तुर्क दोइ जाती । घट मैं कुला कर्म की पाती ॥
घट में नेम दया अरु धर्मा । घट में पाप पुन्य बहु कर्मा ॥
घट में डंड बंध दोउ भाई । जो कछु बाहिर सो घट माईं ॥
घट मैं बास बसन जगलागा । घट मैं कामिनि खेलै फागा ॥
घट मैं षट पलास सोइ फूला । घट मैं लोग प्रजा भकभूला ॥
घट मैं स्वर्ग नर्क हैं दोई । घट मैं जनम मरन पुनि होई ॥
घट में कथा पुरान सुनावै । घट में माया करम करावै ॥
घट मैं चोरी चोर अपारा । घट में करता सिरजनहारा ॥
घट मैं राजा राज कराई । घट में चौकी पहरा भाई ॥
घटही मैं सब न्याव चुकावै । घट मैं रागी तान सुनावै ॥
घट मैं नाच कूद रे भाई । घट मैं राग अलाप सुनाई ॥
घट मैं साह महाजन होई । घट मैं सब्द सुन्न है सोई ॥
घट मैं राजा है बलि बावन । घट मैं सीता रघुपति रावन ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं दूसरी चौपाई इस तरह है--"भीतर गुफा एक है भाई । उबरे जीव पार जब जाई"; और चौथी चौपाई में "सुरति से" की जगह "जीव कोइ" है ।

घट मैँ लंका सा गढ़ भाई । घट में छानवे मेघा छाई ॥
घट में बैठे पाँचौ नादा । घट में लागी सहज समाधा ॥
घट में चारौ बेद रहाई । घट में असंख्य ब्रह्म समाई ॥
घट में सात स्वर्ग पाताला । घट में बैठा काल कराला ॥
जो कछु बाहिर सो कछु अंतर । घट का भेद घटहि में मंतर ॥
घट में अरसठ तीरथ भाई । घट में गंगा धार बहाई ॥
घट में लोग करैँ अस्नाना । घट में तीनो लोक समाना ॥
घट की थाह कोई नहिं जाना । घट में पिंड ब्रह्मंड समाना ॥
घट में हाट बजार लगाया । घट में दामिनि मिलपति पाया ॥
घट में परबत बृच्छ पहारा । घट में बैठे दस औतारा ॥
घट मैँ हाथी घोड़ा होई । घट मैँ हिरन रोझ[1] सब कोई ॥
ऊँच नीच परबत झक झाई । निस दिन झरना बहत रहाई ॥
मगर मच्छ घट माहिं मँझारा । घट में बस्ती और उजारा ॥
घट में सुकदेव ब्यास अरु नारद । घट में ऋषी मुनी अरु सारद ॥
घट में राजा बरन कुबेरू । घट में माँडे आठ सुमेरू ॥
कहँ लगि घट का कहौँ पसारा । घट में अनेक बिधान सँवारा ॥
जो सब घट कहि बरनि सुनाई । तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥

॥ दोहा ॥

घट भीतर जो देखिया, सो भाखा बिस्तार ।
भेदी भेद जनाइया, तुलसी देखि निहार ॥

॥ छंद ॥

सब ठीक बखाना घट परमाना । घट घट में सब ठाम ठई ॥
बाहिर सोइ अंदर सब घट मंदर । देखि हिये बस बास कही ॥
बूझै कोइ ज्ञानी अंतरजामी । मूरख मूढ़ न चेत भई ॥
आगे पुनि गाऊँ बरनि सुनाऊँ । इन सब के अस्थान मई ॥
तुलसी तन तारा खोलि किवारा । पैठि मँझारा सार लई ॥

---

(१) हिरन की एक जाति ।

॥ सोरठा ॥

या बिधि तन मन ज्ञान, भीतर देखा जोइ कै।
साधू करै प्रमान, भिन्नभिन्न तत मत कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अब उनके अस्थान बताऊँ। भिनि भिनि ग्रंथन मैं समझाऊँ ॥

॥ कोठौं के नाम ॥

कोठा प्रथम उतेसुर नाईं। बैठे ब्रह्मा बेद पढ़ाईं ॥
दूसर धरम-गंध दरसाईं। बैठे बिस्नू ज्ञान सुनाईं ॥
तीसर कोठा धुन-घर भाईं। बैठे संकर जोग कराईं ॥
चौथा कोठा रक्तमनि गाईं। बरुन बैठि जहँ राज कराईं ॥
हरि संग्रह पंचम बतलाऊँ। आठ सुमेर बसैं तेहि ठाऊँ ॥
बिजै-धुंध षष्टम कहलाईं। मन की कला फिरै तेहि ठाईं ॥
कोठा सतवाँ नगरा नाऊँ। अन्नदेव बैठे तेहि ठाऊँ ॥
कोठा अठवाँ रुकमन ताला। जहँवाँ बैठे मदन गोपाला ॥
नौवाँ कोठा गौड़ मन माली। दुरमति माया करै बिहाली ॥
दसवाँ कोठा उघट्ट नावाँ। सहस कोटि ऊगैं तेहि ठावाँ ॥
करभौनी एकादस नाऊँ। तीनि लोक में जोति समाऊँ ॥
द्वादस कोठा बिषमदे गावा। सुरनर मुनि जहँ ध्यान लगावा॥
कोठा त्रयोदस मलट्ठू द्वारे। जोगिनि चौंसठ लाख निहारे ॥
चौधा कोठा गगनधर नाऊँ। लच्छ अलच्छ बैठि तेहि ठाऊँ ॥
हमसुन्दर पंद्रा कर नावाँ। बास सुगंध बसै तेहि ठावाँ ॥
कोठा सोला अतिसुर नाऊँ। पाँच बजार बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा सत्रा सिषरचल नाऊँ। अठरा गंडा नदी तेहि ठाऊँ ॥
अठरा कोठा कड़ेसुर नाऊँ। जीव को तेज बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा उनीस बंकचल नाऊँ। मुरली सुहावन बजै तेहि ठाऊँ ॥

बिसवाँ कोठा कुलँग कहाई । सुकृत बाजा बजै सुहाई ॥
इकइस कोठा भानसुर नाऊँ । अलख निरंजन है तेहि ठाऊँ ॥
बाइस कोठा धुँधेसुर नाऊँ । मन को ध्यान बसै तेहि ठाऊँ ॥
तेइस कोठा तरंगी ताला । बिछई जे जग में जमजाला ॥
चौबिस कोठा कंठसुर नाऊँ । सुमति बिचार बसै तेहि ठाऊँ ॥
पच्चिस कोठा प्रकुती[1] नाऊँ । मल को पती बसै तेहि ठाऊँ ॥
छब्बिस कोठा मुदापल नाऊँ । पवन प्रधान बसै तेहि ठाऊँ ॥
सताइस कोठा सुताचल नाऊँ । मन अलीप बैठे तेहि ठाऊँ ॥
अठाइस कोठा धरनीधर नाऊँ । माया मोह बसै तेहि ठाऊँ ॥
उंतिस कोठा कमंची नाऊँ । बादल मेघ उठै तेहि ठाऊँ ॥
तिसवाँ कोठा निरमल नामूँ । साहिब पलँग बिछा तेहि ठामूँ ॥
इकतिस कोठा करोमल नामूँ । नवो नाथ बसते तेहि ठामूँ ॥
बत्तिस कोठा बनासुर नामा । नौ कुत्ते बैठे तेहि ठामा ॥
तैंतिस कोठा अनंधू नामूँ । जम का तेज बसै तेहि ठामूँ ॥
चौंतिस कोठा जमाउत नामा । जमुना नदी बसै तेहि ठामा ॥
पैंतिस कोठा सकरदू[2] सेता । कामदेव जहँ झरि झरि बहता ॥
छत्तिस कोठा गनकू नामूँ । क्रोध कलेस बसै तेहि ठामूँ ॥
सैंतिस कोठा अवर धुर धुंधा । बैठ कृष्न जहँ डारै फंदा ॥
अरतिस कोठा बंसबल नाऊँ । चौथा कामिनि हैं तेहि ठाऊँ ॥
उन्तालिस करियाधर नाऊँ । बैठे दया धरम तेहि ठाऊँ ॥
चालिस कोठा किरिकोता नामूँ । सात समुद्र बसैं तेहि ठामूँ ॥
इकतालिस भैरादे नामा । नवौ कुली नाग तेहि ठामा ॥
बयालीस कुंभेसुर नाऊँ । बारह कुंभ बसैं तेहि ठाऊँ ॥
तैंतालिस भगताधर नावाँ । भय और त्रास बसै तेहि ठावाँ ॥

---

(१) मुं॰ दे॰ प्र॰ के पाठ में "परकुटी" है। (२) एक लिपि में "सरंदू" नाम लिखा है।

चवालीस कुसमाधर नाऊँ। चारौ बेद बसैँ तेहि ठाऊँ॥
पैँतालिस मायारट नाऊँ। रोग अरु दोष बसै तेहि ठाऊँ॥
छेयालीस मलया गिरि नावाँ। हंस बिहंग बसै तेहि ठावाँ॥
सैँतालीस हलासुर[1] नामा। तीरथ अरसठ हैँ तेहि ठामा॥
अरतालिस कुकरंदर न्यारा। जहँ है सत्त सुकृत[2] का द्वारा॥
कोठा उंचास मरमी नाऊँ। पवन अकास उठै तेहि ठाऊँ॥
कोठा पचास घूधर नामूँ। हरि को तेज बसै तेहि ठामूँ॥
कोठा इक्यावन मजकुर नामा। सहस कँवल फूला तेहि ठामा॥
बावन कोठा जरादे नामूँ। अगिनी जरै ऊँच तेहि ठामूँ॥
त्रेपन कोठा तेराधर नामूँ। धीर गँभीर बसै तेहि ठामूँ॥
चौवन कोठा सिसंधर नावाँ। सत संतोष बसै तेहि ठावाँ॥
पचपन कोठा हिंडोला नामूँ। नारी नवो बसै तेहि ठामूँ॥
छप्पन कोठा निरधर नाऊँ। अठारा भार बसै तेहि ठाऊँ॥
सतावन कोठा कफादे नावाँ। जीव की मीच बसै तेहि ठावाँ॥
अट्ठावन सुमेरबल नावाँ। मंगल पुरुष चरित्तर गावाँ॥
उनसठ कोठा छैसुंदर नाँमा। आतम रूप बसै तेहि ठामाँ॥
साठ कोठा धौलाधर नाऊँ। तीनो लोक मही तेहि ठाऊँ॥
इकसठ कोठा जैसुंदर नामूँ। बलधर पुरुष बसै तेहि ठामूँ॥
बासठ कोठा हीरापुर नामूँ। नीर चुवै झरि झरि तेहि ठामूँ॥
त्रेसठ कोठा कलाकर नावाँ। चौथा भवन बसै तेहि ठावाँ॥
चौँसठ तिल बिक्रम कहलावै। जल थल कुंभ बसै तेहि ठाँवै॥
पैँसठ कोठा सुरतसर नामूँ। जप तप जज्ञ करै तेहि ठामूँ॥
छासठ कोठा सिखरिचल नाऊँ। जोगी असंखन जोग कराऊँ॥
सरसठ कोठा अनंदी भाई। जहँवाँ काल बसन नहिँ पाई॥

(१) एक लिपि मेँ "कोलाहर" नाम दिया है। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "सुकृत" की जगह "मुक्त" है।

अरसठ कोठा चितादे नाऊँ। चित का चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
उन्हत्तर कोठा सनीता नाऊँ। ज्ञानी बुद्ध बसै तेहि ठाऊँ ॥
सत्तर कोठा सलीका नाऊँ। सुन्न कौ धुन्न उठै तेहि ठाऊँ ॥
इखत्तर कोठा उदाधर नाईँ। जहँ जग पालक बैठि रहाई ॥
बहत्तर कोठा गंजधर नाऊँ। करनी मूल बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा बहत्तर कहेउ बखानी। ले लख भीतर जो पहिचानी ॥
यह घट देखि देखि सोइ भाखा। बूझि बूझि साधू मन राखा ॥
रामायन घट कहि समझाई। काया भीतर कथि दरसाई ॥
काया खोज मुक्ति जब होई। बिन खोजे सब गये बिगोई ॥
काया भीतर सब की पूजा। सिव सनकादि आदि नहिं सूझा ॥
बाहिर कथि कथि रहे भुलाई। काया भीतर बस्तु न पाई ॥
कोठा बहत्तरि हम कहि दीन्हा। कोऊ न काया भीतर चीन्हा ॥
सास्तर संसकिरत में फूले। ऋषी मुनी जोगेसुर भूले ॥
या से राह घाट नहिं पाई। बहे कर्म भौजल के माईं ॥

॥ दोहा ॥

सत्त नाम सूरति गहै, सतगुरु सरन निवास।
तुलसी तरँग तरास ज्यौं, लखि पहुँचै तेहि पास ॥

॥ छंद ॥

घट की गति गाई भाखि सुनाई। लखि पाई पद पार कही ॥
जो जो परमाना घट मठ जाना। ठाम ठिकाना ठौर मई ॥१॥
तुलसी तस देखा घट बिच लेखा। पेखा तत मत पूर जही ॥
आगे जस होई भाखौं सोई। जो जो सिद्ध[1] समाधि लई ॥२॥

॥ सोरठा ॥

सिध चौरासी नाम, घट भीतर सब देखिया।
ता कर कहौं बखान, जस जस ठीका नाम गुन ॥

---

(१) मु० दे० प्र० के पाठ में "सिंध" है जो छापे की भूल मालूम होती है।

॥ चौपाई ॥

सिध चौरासी घट मेँ होई । ता को देखा सुरति बिलोई ॥
ता कर ठौर ठिकाना भाखौँ । आदि अंत ठीक कर ताकौँ ॥
सिद्ध सिद्ध के नाम बताऔँ । छानि भेद सूच्छम दरसाऔँ ॥

॥ सिद्धौँ के नाम[1] ॥

१ अजोनी	सिद्ध	१९ जैपाल	सिद्ध
२ अजर दया	,,	२० अजया काल	,,
३ पवनगिरी	,,	२१ केदारलो	,,
४ उच्चंद कँवल	,,	२२ रतनागिरि	,,
५ उदद कँवल	,,	२३ मेलमहंत	,,
६ पेषनादार	,,	२४ उदया	,,
७ नालीवर	,,	२५ झकझेला	,,
८ कोमार	,,	२६ उषमजार	,,
९ बालागिर	,,	२७ मनउतगिरि	,,
१० जैदेव	,,	२८ सरपसोष	,,
११ नलमोवर	,,	२९ जंभीर नागर	,,
१२ परसोतम	,,	३० हंस मोह	,,
१३ त्रिकुीमल	,,	३१ बिराज	,,
१४ पुरुषोपत	,,	३२ ललित दया	,,
१५ नलवोती	,,	३३ करुनामय	,,
१६ बाइभक्ष	,,	३४ बाष जार	,,
१७ नाल पाजरी	,,	३५ जीव भूषन	,,
१८ पायापाल	,,	३६ उदीत साह	,,

(१) एक लिपि मेँ यह नाम-भेद है—११-नल कमोद, १५-बिनवो, १६-मलकूत, २५-कमाल, २६-उष्मज, २८-बालपोष ।

३७ जगतधार	सिद्ध
३८ साह पाल	,,
३९ परन पोष	,,
४० नौनागर	,,
४१ ज्ञानपती	,,
४२ साधगिरि	,,
४३ नलदेव	,,
४४ सहस अपढ़	,,
४५ सुकृत जीव	,,
४६ ऊच माया	,,
४७ सिंह नाद	,,
४८ सहज तेज	,,
४९ बेरंग नाद	,,
५० फूल काज	,,
५१ केदार कोठ	,,
५२ सुचलेन	,,
५३ मजा गुनी[१]	,,
५४ तानी गंभीर	,,
५५ जगपती	,,
५६ गंधर्ब सूत[१]	,,
५७ रतना गिरी[१]	,,
५८ सरोज मल	,,
५९ कुल कुंभ	,,
६० पिगोभ	,,
६१ गौड़ आसन	सिद्ध
६२ पक्ष पती	,,
६३ भाउ नाद	,,
६४ पोहप माल	,,
६५ नरदया	,,
६६ इंद्र मनी	,,
६७ डंभीर	,,
६८ कहूकितोहल	,,
६९ जंभीर नाद	,,
७० द्याल पती	,,
७१ तेनौगार	,,
७२ काल मुनी	,,
७३ प्रेम मुनी	,,
७४ हंस करनाग	,,
७५ मल मोद	,,
७६ कूर नाकर	,,
७७ सुषन सरीष	,,
७८ सुरति लोक	,,
७९ साध बाच	,,
८० सुख बाच	,,
८१ नेह नाम	,,
८२ बस करन	,,
८३ भय मेटन	,,
८४ सुच भाव	,,

(१) एक लिपि में यह नाम-भेद है—५३-नाजगुनी, ५६-मदार, ५७-अलप सार

॥ चौपाई ॥

चौरासी सिधि कथि बतलाई । सिधि इतने घट भीतर छाई ॥
साधू कोइ करै परमाना । जिन घट के अंदर पहिचाना ॥

॥ सोरठा ॥

चौरासी सिधि देखि, घट रामायन मैं कहे ।
अंतर काया पेखि, भिन्न भिन्न दरसाइया ॥

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस कहौं अनुसारी । ये सब घट के माहिँ बिचारी ॥
काया भेद देखि हम चीन्हा । ता कर लच्छ भाखि सब दीन्हा ॥

॥ सोरठा ॥

प्रकृती भेद बिचार, नाम नोक सबकी कही ।
तुलसी तनहिँ निहार, मन इस्थिर जब होइ जेहि ॥

॥ चौपाई ॥

कौन कौन प्रकृती रे भाई । ता कर घर मैं दँव बताई ॥

॥ प्रकृतियाँ के नाम ॥

१ भाव	प्रकृति	१२ उदासमुद्र	प्रकृति
२ क्रता	,,	१३ चंचलराज	,,
३ दँहधर	,,	१४ मजा गुन	,,
४ उषमजार	,,	१५ मजा नंद	,,
५ इंद्रजै	,,	१६ अभयानंद	,,
६ मोहदधि	,,	१७ चतुरदया	,,
७ सुषम जार	,,	१८ कजाकोग	,,
८ मोह धन	,,	१९ उचालम्भ	,,
९ केदारखंड	,,	२० दया भवन	,,
१० सफाकंद	,,	२१ ईस भोग	,,
११ नलदया	,,	२२ कामिनि जोग	,,

२३ मोहजार प्रकृति
२४ नौ जोग ,,
२५ भँवर सोग[१] प्रकृति

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस यही हैँ साधौ । सब जीवन को इनहीं बाँधौ ॥
सत्य सत्य मैँ भाखौँ भाई । इनकर भेद कहैाँ समझाई ॥
पच्चीसैाँ का घर हम भाखा । सत्य सब्द हिरदे मैँ राखा ॥
प्रकृति पचीस कहैाँ समझाई । मूढ़ जीव ज्ञानी होइ जाई ॥

॥ प्रकृतियाँ के सुभाव ॥

१ भाव को सुभाव—आलस निद्रा जम्हाई ।
२ क्रता को ,, काम क्रोध बिकार ।
३ दैँहधर को ,, खावै पीवै सुख बिनोद ।
४ उषमजार को ,, मोर तोर निंदा
५ इंद्रजै को ,, हँसै खेलै रोवै ।
६ मोहदधि को ,, मान गुमान बड़ाई प्रभुता ।
७ सुषमजार को ,, उच्चाट भय त्रास और डंड ।
८ मोह धन को ,, सिकार उदासी जारै बारै जीव जंत्र मंत्र सेवा करै ।
९ केदार खंड को ,, एककाम चित्त रहै कामिनि सुख ।
१० सफाकंद को ,, चोरी राति बिराति आवै जावै ।
११ नलदया को ,, होम बहुत करै और आसा लगावै ।
१२ उदासमुद्र को ,, चित चंचल छगुनिया टेढ़ा चलै कर मोड़े ।
१३ चंचलराज को ,, खरा लेवै खरा देवै खरी बात खरा रहै
१४ मजा गुन को ,, निडर निरभय निरमोह ।
१५ मजा नंद को ,, दया धर्म पुन्य षट कर्म

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "भँवर जोग" है ।

१६ अभयानंद को सुभाव—तीरथ बरत मठ बनावै ।
१७ चतुरदया को „ बहुत गावै बजावै नाचै मैन उलारै ।
१८ कजाकोग को „ झूठ बोलै मीठा रहै स्वारथ रत ।
१९ उचालंभ को „ ज्ञान ध्यान गुरू सब्द कुछ न रक्खै ।
२० दया-भवन को „ नीके कपरा खाना बिछौना नीक बसिबो ।
२१ ईस-भोग को „ देव पूजै फूल पत्र चढ़ावै पीछे द्रब्य माँगै ।
२२ कामिनि-जोग को „ भले मनुष्यन मैं रहै ऊँचे संग बैठै नीचे संग न करै अच्छी बात कहै और प्रीति न तोरै ।
२३ मोहजार को „ कुबचन भाखै पहिले दे पीछे माँगै माया तकै ।
२४ नौजोग को „ तरंग बाहिर मन भरमै शोक मैं रहै ।
२५ भँवर-जोग को „ मीठा बोलै कौड़ी जाते प्रान जाय ।

॥ चौपाई ॥

देखो संतो प्रकृति सुभाऊ । ये सुभाव घट माहिं रहाऊ ।

॥ सोरठा ॥

यह सुभाव घट माइँ, भिन्न भिन्न करि भाखिया ।
लेखा अजब बनाइ, चीन्हे सुरति सँवारि कै ॥

॥ चौपाई ॥

घट भीतर नौ नारी भाखी । सो तुलसी ने देखा आँखी ॥

॥ नाड़ियन के नाम ॥

१ इड़ा नाड़ी ३ सुषमना नाड़ी
२ पिंगला „ ४ भामिनी „

५ रमना	नाड़ी	८ हरि कामिनि	नाड़ी
६ करजाप	,,	९ बरना	,,
७ हंस-बदनी	,,		

॥ पाँच इंद्रियन के नाम ॥

१ अपान	इंद्री	४ उदान	इंद्री
२ प्रान	,,	५ ब्यान	,,
३ समान	,,		

॥ इंद्रियन के बास ॥

१ अपान का बास–नाभी मेँ है ।
२ प्रान का बास–मान सरोवर तट वार है ।
३ समान का बास–कलेजे मेँ है ।
४ उदान का बास–कंठ मेँ है ।
५ ब्यान का बास–सब शरीर मेँ है ।

॥ सोरठा ॥

इंद्री अर्थ बिचार, नाम भेद सब भाखिया ।
ठीका ठौर निहार, यह पुकार तुलसी कहा ॥

॥ चौपाई ॥

यह इंद्री का किया निषेदा । मन चीन्है सोइ जाने भेदा ॥
या की साखि सोत सब गाई । अब सुन्नन की कहौं लखाई ॥
बाइस सुन्न सोध हम लीन्हा । ताकर भिन्न भिन्न कहुँ चीन्हा ॥

॥ सुन्नन के नाम ॥

१ धुंधार	सुन्न	३ नौनार	सुन्न
२ सब्दार	,,	४ अजसार	,,

५ बिलंद	सुन्न	१४ पलक	सुन्न
६ सुखनंद	,,	१५ खलक	,,
७ अछरंद	,,	१६ झलक	,,
८ सबसंध	,,	१७ सरवाट	,,
९ ब्रह्मंड	,,	१८ दसघाट	,,
१० सबअंड	,,	१९ खिरकाट	,,
११ भैाभंड	,,	२० अजआठ	,,
१२ नौखंड	,,	२१ सतलोक	,,
१३ अलख	,,	२२ परमोख	,,

॥ सोरठा ॥

बाइस सुन बर्तमान, जानि संत कोइ परखिहै ।
गगन गगन परमान, सुन्न सुन्न भिनि भिनि लखै ॥

॥ चैापाई ॥

सुन बाइस कै भाखैँ लेखा । सो कोइ साधू करै बिबेका[1] ॥
भिन्न भिन्न ग्रंथन मैँ गाई । बूझै वोही भेद जिन पाई ॥
सुन्न सुन्न निज निरनै भाखा । तुलसी निरखि देखि निज आँखा ॥

॥ सोरठा ॥

कह निरनै निरधार, सुन्न सुन्न बिधि योँ कही ।
सुरति उतर गई पार, सुन बाइस वर भाखिया ॥

॥ चौपाई ॥

बाइस सुन का कहैाँ बखाना । सुन्न सुन्न का ठैार ठिकाना ॥
जो जेहि सुन्न जैान अस्थाना । भाखैाँ जोई सुन्न जेहि नामा ॥
सत्तलोक सत के तहँ राजा । रामायन मैँ भाख समाजा ॥
सत्त केत सत नाम कहइया । तासे निरगुन ब्रह्म जो भइया ॥
सोला निरगुन कहि कै भाखा । भिनि भिनि भेद कहैाँ मैँ ता का ॥
एक सुन्न इक निरगुन होई । निरगुन सुन्न एक है सोई ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैँ "करि है पेषा" है ।

निरगुन चौधा चौधा सुन्नी । पंद्रा धर्म सुन्न है भिन्नी ॥
सोला सुन्न निरंजन नामा । रचा ताहि ब्रह्मंड समाना ॥
सत्तनाम से उपजा सोई । ऐसे सोला निरगुन होई ॥
यह सब पिंड ब्रह्मँड के माईं । सोला निरगुन सुन्न समाईं ॥

॥ सोरठा ॥

छै सुन बाइस माहिँ, रहा भेद आगे कहौँ ।
तुलसी निरखि निहार, सुन बाइस चढ़ि देखिया ॥

॥ मंगल ॥

सुन सुन री सखि, सैन बैन पिय के कहौँ ।
बोलै मधुरे बोल, चोल चित्त मेँ सहौँ ॥१॥
छिन छिन रहौँ पिय पास, स्वाँस कहुँ ना रुचै ।
जैसे जल बिन मीन, तलफ मन[१] के बिचै ॥२॥
सुन सखि चैन चिताव, भाव बिधि मेँ मिली ।
छूटी तन मन आस, पास पिय के चली ॥३॥
चौधा भवन भौ पार, सार सुन मेँ गई ।
पुनि पंद्रा के पार, सार सोला सही ॥४॥
सोला लोक मँझार, तार सुति से चखी[२] ।
निराकार जहँ जोति, होत हिये मेँ लखी ॥५॥
सत्रा सुरति चलि चाल, ताल तट देखिया ।
मान सरोवर घाट, हंस तहँ पेखिया ॥६॥
एक हंस छबि तेज, कोटि रबि राजही ।
सोभा भूमि अपार, सो हंस बिराजही ॥७॥
करि हंसन सँग केल, सैल आगे चली ।
आली अगम की सास्त्र, आँख हिये की खुली ॥८॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मेँ "मन" की जगह "जल" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।
(२) एक लिपि मेँ "चखी" की जगह "पकी" है ।

सुन अठरा के माहिँ, जाइ निर्ख देखिया।
आतम से परे भिन्न, परमातम पेखिया ॥९॥
सुन्न उलट उन्नीस, चेति आगे चली।
खिरकी अजब अनूप, पुरुष ता मैं मिली ॥१०॥
परे पुरुष पद चीन्ह, गई सुन बीस मैं।
सत्त पुरुष सुख धाम, सुन्न इक्कीस में ॥११॥
गैब नगर पिय पार, सखी सतलोक ही।
चढ़ी अगमपुर धाइ, पाइ पति पै गई ॥१२॥
सत्त पुरुष की पैज, सेज पति की लई।
गई भवन के माहिँ, पाइ जस जो कही ॥१३॥
बाइस सुन बर्तमान, जान कोइ लेइँगे।
कीनी जिन जिन सैल, संत सोइ कहैँगे ॥१४॥
तुलसी निज तन तूल, मूल मन मेँ बसी।
जिन बूझा नहिँ भेद, बेद भौ मेँ फँसी ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

स्रुति पद परम निवास, चढ़ि अकास पति पै गई।
पिय पद सुरति बिलास, सेज बास जस जस कही ॥१॥
पिय मोरे दीनदयाल, काटि जाल न्यारी करी।
अमर बुटी अज माल, सो पियाइ मो कौ दई ॥२॥
पिय पद पूर पिआस, अमी पियाइ अमर करी।
सूरति अगम निवास, महल बास अपने करी ॥३॥

॥ दोहा ॥

पिय प्रभुता निज धाम, काम टहल मो कौ कही।
रहो भवन के माहिँ, अमल बास मो पै नहीँ ॥

॥ सोरठा ॥

पृथ्वी पवन अकास, नीर नास सब होइँगे।
अगिन सूर अरु चंद, बंद बास पुनि पुनि नसै ॥

॥ चौपाई ॥

पिय सँग अजर अमर भया बासा। आदि अंत हमरा नहिं नासा ॥

॥ मंगल ॥

अमर बूटी मोरे यार, प्यार पिया ने दई ।
काटी जम की जाल, काल डर ना रही ॥१॥
मैं पिय मोर अनूप, रूप पिय में गई ।
दरसै एकै नूर, सूर स्रुति से भई ॥२॥
जुगजुग अमर अहवात[१], साथ पिय के सखी ।
जावँ न आवौं हाथ, साथ पिय के पकी ॥३॥
नैातम निरखि निहारि, सार दसवँ वही ।
आगे अजब अजूब, खूब खुलि कै कही ॥४॥
पिय मोरे दीन-दयाल, चाल चीन्हा सही ।
सुख सागर सुख चौज, मौज मुख से दई ॥५॥
अंड खंड ब्रह्मंड, कोई करता नहीं ।
हमरा सकल पसार, सार हम से भई ॥६॥
धरती गगन अकास, नास सब होइँगे ।
अगिनि पवन जल नास, हमौं हम रहैंगे ॥७॥
ब्रह्मा बेद नसाय, बिस्नु सिव ना बचैं ।
बचै नहीं वैराट, कहनि कहै को पचै ॥८॥
कोई न पावै अंत, संत हम को लखै ।
तुलसी बिधि बेअंत, अंत कहि को सकै ॥९॥

॥ सोरठा ॥

बाइस सुन बर्त्तमान, सुरति छान भिनि भिनि कही ।
जानै संत सुजान, जिन चढ़ि देखा भेद सब ॥

[१] "अहवात" सोहाग को कहते हैं-मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "रहाथ" लिखा है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी संत चरन बलिहारी। चढ़े अगम जिन सुरति सम्हारी॥
लखलख जसजस भेद सुनाई। साखी सब्द ग्रंथ मेँ गाई॥
महुँ पुनि चरन लागि लख बोला। जसजस कृपा संत कर खोला॥
संत चरन सूरति भइ चेरी। मति उन सबबिधि भाँति निबेरी॥
मैँ उन की चरनन बलिहारी। मोहि सोँ अजान जान कियो लारी॥
सुन्न सुन्न बाइस कर लेखा। खुलि हिये नैन सुरति से देखा॥
और सुन्न का भाखैँ लेखा। कोइ निज संत सुरति से देखा॥
तुलसी बूझी मोर अबूझी। जो कोइ संत सैल कर सूझी॥
मैँ अपनी गति कसकस भाखी। कहँ संत जिन देखी आँखी॥
मैँ किंकर उन कर निज दासा। जिन जिन देखा अगम तमासा॥
सोइ सोइ देखि देखि कै भाखी। नैन से देखि पेखि उर आँखी॥
छे सुन का पुनि भेद बताऊँ। न्यारा भिन्न भिन्न दरसाऊँ॥
कौन सुन्न मैँ कौन निवासा। ता कर भेद कहौँ परकासा॥
प्रथम सुन्न मैँ है निःनामी। ता की गति मति संतन जानी॥
दूजी सुन का भाखैँ लेखा। जहँवाँ सत्तनाम को देखा॥
तीजी सुन्न सब्द एक होई। सुरति सैल कोइ संत बिलोई॥
चौथी सुन्न कहैँ समझाई। पारब्रह्म तहँ रह्यो समाई॥
संत ताहि परमातम भाखी। सो पुनि देखा हिये की आँखी॥
पंचम सुन का भेद बताऊँ। पूरन ब्रह्म जीव तेहि नाऊँ॥
ता को आतम बेद बखाना। जीव नाम आतम कर जाना॥
षटवीँ सुनि मन तन के माहीँ। इंद्री संग तास लिपटाई॥
परमहंस तेहि ब्रह्म बतावैँ। नेतहि नेत बेद गोहरावैँ[१]॥
सुन तेहि मन को ब्रह्म बखाना। ता को नाम निरंजन जाना॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ इस चौपाई की दूसरी कड़ी योँ है—"ब्रह्मब्रह्म करि कै गोहरावैँ"।

येही निरंजन जोति कहाई । ब्रह्मा बिस्नु सिव सुत है ताही ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सातौ दीप और नौखंडा ॥
जोति निरंजन इनको जानी । ता को संतन काल बखानी ॥
यह जम काल जाल जग डारा । ज्यौं धीमर मछरी गहि मारा ॥
दस औतार निरंजन काला । बाँधे जीव कर्म जग जाला ॥
तीरथ बरत नेम अरु धरमा । कर्म भाव कहियत है रामा ॥
ता को जगत जपै मन लाई । बार बार भरमै भव माहीं ॥
जग सब अंध फंद नहिं बूझै । अंधा भया हिये नहिं सूझै ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत का भेद, कह तुलसी देखा सही ।
लेखा अगम अलेख, लखि अगाध अद्बुद कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई अगम सुनाई । सुन्न सुन्न भिन भिन्न कही ॥
जस जस जेहि लेखा निज निज देखा । आदि अंत गति सार मई ॥
संतन गति गाई महुँ पुनि पाई । जो उतपति सब आदि भई ॥
जिनही जिन जानी सबहि बखानी । तुलसी उनके लार लई ॥

॥ सोरठा ॥

सब ये कहा बिचार, सार पार गति गाइकै ।
बूझै बूझनहार, जिन ये चाखा अगम रस ॥१॥
तुलसी तिरन[१] समान, अगम भान घटि लखि परा ।
सूझा निज घर धाम, यह अनाम गति यों कही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नभ घट भूमी भान दिखाना । लखि लखि लखा भेद जिन जाना ॥

॥ सोरठा ॥

घट भूमी बिच भान, जानि भेद भिन जिन कहो ।
सखि सुन देस बयान, रमक रीति उलटी लखो ॥

(१) तृन, तिनका ।

॥ कहेरा ॥

सुन हो सखी इक दिसवा । भूमी ऊगै भान ।
दिसवा की उलटी रीती । साधू पालै प्रीति ॥टेक॥
मछरी गगन पर गाजा । चंदा चुनै नाम ।
दिसवा उरध-मुख कुइया । गइया चुगै चाम ॥१॥
गगन उठै धधकारी । धरै सुरति ध्यान ।
खंभा न महल अटारी । प्यारी पिव धाम ॥२॥
तारा अवर नहिं पानी । बानी उठै बिन तान ।
खिरकी खुली बिन द्वारे । पारे परे ठाम ॥४॥
नइया कुटी भै पारा । उतरै बिन दाम ।
तुलसी अगम गम जानी । स्रुति पाये निज नाम ॥५॥

॥ सोरठा ॥

साहिब एक अनाम, अगम धाम संतन लखा ।
भखा भेद जिन जान, तिन तिन बरनि सुनाइया ॥

॥ चैापाई ॥

अब अनाम इक साहिब न्यारा । सुन्न औ महासुन्न के पारा ॥
वो साहिब संतन कर प्यारा । सोइ घर संत करैं दरबारा ॥
वा घर का कोइ मरम न जाने । नानक दासकबीर बखाने ॥
दादू और दरिया रैदासा । नाभा मीरा अगम बिलासा ॥
और अनेक संत कहि गाये । जे जे अगम पंथ पद पाये ॥
तुलसी मैं चरनन चित चेरा । उन रज चरनन कीन्ह निबेरा ॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन निज दास, तुलसी ताहि बिचारिया ।
पायै निज घर बास, आदि अनामी लखि कह्यो ॥

बरनन चार गति बैराग

॥ चैापाई ॥

अब बैराग जोग गति गाऊँ । ज्ञान भक्ति भिनि भिनि दरसाऊँ ॥
चारि गती बैराग बताऊँ । जोगी चारि गती गति गाऊँ ॥

तीनि ज्ञान का भेद बताई । चौथा ज्ञाम जगत जग माईं ॥
तेरा भक्ति भेद बतलाऊँ । भिन्न भिन्न कर कहि समुझाऊँ ॥
न्यारा भेद भाव सब केरा । जो जस जिन का भया निबेरा ॥
जो जिन की करनी जस भाँती । सो सब संतन कही सनाथी ॥
मैं रज पावन उन कर चेरा । निरनय कहैाँ छानि इन केरा ॥

॥ सोरठा ॥

भक्ति ज्ञान और जोग, भोग भाव सब बिधि कहैाँ ।
जो जेहि गति जस भोग, सो तस कहैाँ बिचारि कै ॥

॥ प्रथम बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

अब बैराग तीनि गति गाऊँ । भाखौं भेद भिन्न दरसाऊँ ॥
बेरक्ती[1] बैराग सुनाऊँ । ता कर चिन्ह भिन्न बतलाऊँ ॥
माया मोह जगत नहिं भावै । काम रु क्रोध लोभ नहिं लावै ॥
और जगत सँग रहै उदासी । जग संसार करत सब हाँसी ॥
त्यागी अति संतोष समावा । भूख प्यास निद्रा न सतावा ॥
और अनेक भाँति रस त्यागी । बन बसि रहै नाम अनुरागी ॥
बिन सतगुरू धूरि सब जाना । संत सुरति बिन भरमै खाना ॥
जो कोइ त्याग लाग मन कीन्हा । संगल दीप भोग तेहि दीन्हा ॥
जो जेहि त्याग भाग जस पावा । सुरति सब्द बिन भौ मैं आवा ॥

॥ द्वितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

परम जोग बैराग बताऊँ । रहनी चाल ताहि दरसाऊँ ॥
अष्टकँवल उलटै हिये माईं । उलटै कँवल तत्त मन लाई ॥
निस दिन तत्त मती गति राखै । पाँचौ तत्त गती सोइ भाखै ॥

---

(१) विरक्ति ।

तब तन छूटै तत्त समाई। चारि तत्त जिव उपजै जाई॥
फिर तन छूटै खानि समाना। सो पुनि करै जो लेइ निदाना॥

॥ त्रितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

त्याग बैराग को बरनि सुनाई। छूटै देंह खानि गति पाई॥
जो जस त्याग भोग तन तैसा। खान पान तन पावै जैसा॥

॥ चतुर्थ बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

तन त्यागी बैरागी भाई। जो जेहि लिया देन सोइ जाई॥
बार बार छूटै तन जाई। छूटै तन तहँ गर्भ समाई॥
वहि वहि देइ खाइ पुनि जाई। ऐसे भर्म खानि भरमाई॥
बिना सुरति नहिँ पावै पारा। भरमै भोग परै भौ धारा॥

॥ सोरठा ॥

चारौ गति बैराग, सुरति लाग न्यारी रही।
सत मत गति कोइ जाग, संत सरनि उबरा सोई॥

बरनन जोग

॥ प्रथम जोग ॥

॥ चौपाई ॥

चारौ गति बैराग बखाना। आगे कहौं जोग संधाना॥
पिरथम परम जोग गति गाऊँ। भिन्न भिन्न तेहि को दरसाऊँ॥
मुद्रा पाँच अवस्था चारी। तीनि ज्ञान पुनि बानी चारी॥
सहस कँवलदल सुरति लगावै। आतम तत्त अकास समावै॥
पुनि तन छुटि पावै नर देही। भोग भुगति पुनि भव रस लेही॥
पावै मुक्ति बास कर चीन्हा। मुक्ति भोग पुनि होइ अधीना॥

॥ द्वितीय जोग ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कहौं समझाई । इड़ा पिंगला सुषमनि माईं ॥
बंक नाल पट मारग जाई । मन भया भिन्न सुन्न के माईं ॥
देखै जोति निरखि निज नैना। तन छूटै सुपने की सैना ॥
जो कछु कर्म भाव जग कीन्हा। छूटै दैंह भोग फल लीन्हा ॥
सुरति सब्द बिन भये अचीन्हा । ता सौं हो गये जोग अधीना ॥
बिन सतसंग भेद नहिँ पावै । ता ते कर्म भोग भव आवै ॥

॥ सोरठा ॥

जोग जुगति गति गाइ, नहिँ अकाय गति पायऊ[१] ।
बिन सतसंग नसाइ, सुरति सब्द चीन्हे बिना ॥१॥
ज्ञान गती कथि गाइ, जो अघाइ आगे कही ।
ताहि पाइ मति माइँ, सो तुलसी सब बिधि कही ॥

बरनन ज्ञान

॥ प्रथम ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु ज्ञान ठान गति गाऊँ । ता का भेद भाव बतलाऊँ ॥
रेचक पूरक कुंभक कहिये । ता का भेद सबै सुनि लैये ॥
चारि अवस्था तन मैं भाखो । तुरिया तत्त चारि अभिलाखो॥
परमहंस ता की मति जाना । मन करता को ब्रह्म बखाना ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति कहाई । तुरिया चौथी भेद न पाई ॥
तुरियातीत बसै वोहि पारा । सुनि पुनि है मन का ब्योहारा ॥
मनमत चलै मान मद माईं । मन करता को ब्रह्म बताई ॥
ता ते भौ गति मति नहिँ पावै । बार बार भौ माहिँ समावै ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "पायऊ" की जगह "गायऊ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

सतगुरु सब्द भेद नहिँ जानै। आपो आप ब्रह्म मन मानै॥
सास्तर सिंध सार बतलावै। ता ते भौजल पार न पावै॥
चीन्है संत सुरति गति न्यारी। तौ पुनि उतरै भौजल पारी॥
आपा आप पाप गति खोवै। तब सतसंग संत गति जोवै॥

॥ द्वितीय ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

औरहि ज्ञान सुनौ जग केरी। बेद पुरान जाल भौ बेरी॥
पंडित पढ़ पढ़ ज्ञान सुनावै। आदि गती गम भेद न पावै॥
झूठी आस बास सब केरी। फिरिफिरि स्वाँस आस भौ बेरी॥
जो जो कर्म करै सोइ पावै। बार बार भौ भटका खावै॥
मन मैँ मान मोट कर जानै। ता ते परै नरक की खानै॥
भक्तो भाव भेद नहिँ पावै। ऊँची जाति मान मन लावै॥
साध संत मन मैँ नहिँ आवै। ऊँचा ज्ञान आप ठहरावै॥
नीचा होइ संत को जानै। संत कृपा कछु जानै आनै॥
संतन भेद बेद से न्यारा। नीच होइ पुनि पावै सारा॥
ऊँचा मान सदा मन राखै। सोइ सब जगत जीव कह भाखै॥
पूजन अपनी चाल बतावै। ऐसे सकल जीव भरमावै॥

॥ सोरठा ॥

यहि बिधि जग मत ज्ञान, पंडित भूले भरम मैँ।
बाक ज्ञान परमान, संत भेद चीन्है नहीँ॥

बरनन भक्ति

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भक्ति भाव कर लेखा। रामायन मैँ कीन्ह बिबेका॥
भक्ति भाव नौ बरनि सुनाई। ता से भिन्न चारि पुनि भाई॥
नौ फल भाव बेद[1] बतलावै। जो जस करै भोग तस पावै॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैँ "बेद" की जगह "भेद" चौपाई ३ मैँ और

नौ की राह मुक्ति नहिं पावै। दसवौं अबिरल भक्ति[1] लखावै॥
एकादस अनुपावन लेई। बार बार मुक्ती बर देई॥
भेद भक्ति कर भाखौं लेखा। इष्ट भाव मन बसै बिबेका॥
अब अभेद का भेद अभेदा। ता को मरम न पावै बेदा॥
कोइ कोइ साध संत गति पाई। जिन की सूरति सब्द समाई॥
सूरति सैल करै असमाना। जोगी पंडित मरम न जाना॥
परमहंस सन्यासी भाई। उन का मरम नहीं उन पाई॥
जगत जाल संसार बिचारा। उन की गति कोइ पावै न पारा॥

॥ सोरठा ॥

तेरा भक्ति बयान, सो प्रमान संतन कही।
तुलसी तनहिं बिचारि, सुरति भेद समझै कोई॥१॥
नौ जग माहिं पसार, दसवौं कछु कछु भिन्न है।
एकादस मुक्ति मँझार, द्वादस गति मति मुक्ति मय[2]॥२॥
अब अभेद गति गाइ, तेरह येहि बिधि यों कही।
ये साधन के माइँ, सुरति सब्द जा ने लखी॥३॥

॥ छंद ॥

चारौ बैरागा जोग समाधा। तीनि ज्ञान गति गाइ दई॥
नौ चारौ भक्ती जो निज उक्ती। भाषि भेद सब गाइ कही॥
जोई जिन जानी संत बखानी। चरन चेत चित लाइ लई॥१॥
सूरति सर चेती छाँड़ि अचेती। सुरति सैल नभ माहिं लई॥
फोड़ा असमाना निरखि ठिकाना। पछिम किवारी द्वार गई॥२॥
परमातम पाया जीव छुड़ाया। पारब्रह्म पद कँवल मई॥
कँवला निज फूला मिटि गया सूला। जीव गती तजि ब्रह्म भई॥३॥
आगे इक द्वारा अगम पसारा। सत्तलोक वोहि नाम कही॥
वहँ है सतनामा ब्रह्म न जाना। वे सत साहिब अगम सही॥४॥

"भक्ति" की जगह "मुक्ति" चौपाई ४ में दिया है जो आगे के वर्णन से अशुद्ध जान पड़ता है। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "मय" की जगह "मन" है।

तीनों से न्यारा लोक पसारा। चौथे पद के पार वही ॥
जहँ है निःनामी कोउ न जानी। तीनों पट के पार रही ॥५॥
कहैं अगम अनामी ठीक न ठामी। संतन जानी सार सही ॥
अंबर असमाना मही न भाना। चाँद सुरज तत तारे नहीं ॥६॥
पानी नहिं पवना अगिनि न भवना। बेद भेद गति नाहिं लई ॥
ब्रह्मा नहिं बिस्ना राम न किस्ना। सिव सिद्धी नहिं पार लई ॥७॥
निर्गुन नहिं सर्गुन नहिं अपबर्गुन। पिंड ब्रह्मंड दोउ नाहिं कही ॥
जोती नहिं सोती अगम न होती। पारब्रह्म की आदि नहीं ॥८॥
नहिं कार अकारा नहिं निरकारा। सत्त नाम सत सत्त सही ॥
नहिं नाम अनामी तुलसी जानी। जाइ समानी सार मई ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अनाम, अगत भेद को से कहैं।
कोउ न मानै बात, संत अंत कोउ ना लखै ॥१॥
निगम न पावै बेद, नेति नेति गोहरावही।
ब्रह्म न जानै भेद, सत्त नाम निज भिन्न है ॥२॥
एक अनीह[1] अनाम, संत सुरति जानै यही[2]।
वे पहुँचे वोहि धाम, सो अनाम गति जिन कही ॥३॥
तुलसी अगम बिचार, सार पार गति पद लखा।
वह अलेख का ठाम, तुलसी तरक बिचारिया ॥४॥
सुरति अटा के पार, आठ अटारी अधर में।
तुलसिदास लियो सार, सुरति सिंध से भिनि भई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

आठ अटारी सुरति समानी। मंगल ठुमरी करी बखानी।
जस जस सूरति चढ़ी अटारी। तस तस बिधि में भाखी सारी ॥

(१) बेफ़िकर। (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जानै यही" की जगह "वहाँ जावही" है।

॥ मंगल ॥

आठ अटारी महल, सुरति चढ़ि चाखिया ।
ठुमरी माहीं भेद, भाव सब भाखिया ॥१॥
संत पंथ का अंत, साध कोइ बूझिहै ।
प्यारी पुरुष मिलाप, साफ स्रुति सूझिहै ॥२॥
जस जस मारग रीति, राह समझाइया ।
प्यारी अटारी माहिं, जाइ सोइ गाइया ॥३॥
मन मथ कीन्हा चूर, सूर स्रुति ले चढ़ी ।
गुरु पद पदम मँझार, पुरुष पै जा खड़ी ॥४॥
बिधि बिधि ठुमरी माहिं, गाइ तुलसी कही ।
जो कोइ चीन्है भेद, संत सोई सही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

ठीका ठुमरी माहिं, आठ अटारी अधर की ।
सूरति पदम बिलास, बिधी बयालिस पद मिली ॥

॥ ठुमरी १ ॥

अली अटकी सुरति अटारी । मन हटकर हारा री ॥टेक॥
यह अँग संग भंग ले लटकी । सूली स्वर्ग नर्क भौ भटकी ॥
दीन्ही सतगुरु घट की तारी । चटकी मति फटक फटा री ॥१॥
ये ले लार पार स्रुति सटकी । निरखी अलख आदि घट घट की ॥
हक लख[1] लागी बिरह करारी । हिये खटकी कसक कटारी ॥२॥
नौलख खेल कला ज्यों नटकी । सूरति सहसकँवल झर झटकी ॥
लीला सिखर निकर नित न्यारी । दधि मटुकी घिरत मठा री ॥३॥
तुलसी तोल कही तिल तट की । भइ धुनि ररकार रस रट की ॥
ये दस रस बस सुरति सँवारी । पिउ पट की खोलि किवारी ॥४॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "लक़" है जिस का अर्थ कहीं नहीं मिलता, अलबत्ते "लक" शब्द के अर्थ संस्कृत में 'चखने' और 'पाने' के हैं।

॥ ठुमरी २ ॥

झँझरी पिय झाँकि निहारी। सखि सतगुरु की बलिहारी ॥
दीन्हे दृग सुरति सँवारी। चीन्हा पद पुरुष अपारी ॥१॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी। जहँ चंद न सूर सिहारी ॥
तुलसी पिय सेज सँवारी। पौढ़ी पलँगा सुख भारी ॥२॥

॥ ठुमरी ३ ॥

सलिता जिमि सिंध सिधारी। सूरति रत सब्द बिचारी ॥
जहँ सुन्न न सुन्नी न्यारी। मत मौन महासुन पारी ॥१॥
नहिं गुन निरगुन मत झारी। निज नाम निअच्छर भारी ॥
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी। तुलसी जहँ सुरति हमारी ॥२॥

॥ ठुमरी ४ ॥

ए अली आदि अंत अधिकारी। पिय प्यारी प्रीति दुलारी ॥
हम कीन्हा खेल पसारी। सब रचना रीति हमारी ॥१॥
करला नहिं काल पसारी। हम अगम पुरुष की नारी॥
ठुमरी सोइ संत बिचारी। तुलसी नित नीच निहारी ॥२॥

॥ ठुमरी ५ ॥

ए गुइयाँ पिय हम हम पिय एकी। कोइ फरक न जानौ नेकी ॥
कोइ बूझै संत बिबेकी। जोइ अगम निगम नहिं लेखी ॥१॥
जिन अटल अटारी पेखी। पिय रूप न रेख अदेखी ॥
कोइ कंथ न पंथ न भेषी। तुलसी सब मारग छेकी ॥२॥

॥ सोरठा ॥

ठुमरी ठौर ठिकान, अगम भान स्रुति पद लखा।
चखा अमर रस ज्ञान, पार पुरुष पद मैं मिली ॥१॥
पिया भवन के माइँ, जाइ जोइ जस जस कही।
रही पुरुष पद छाइ, लई आदि अपने गई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पुरुष पदम सम सोइ, तुलसी सूरति लखि चली।
ज्यौं सलिता जल धार, लार सुरति सब्दै मिली ॥

॥ सोरठा ॥

हम पिय पिय हम एक, लखि बिबेक संतन कही ।
भई अगम रस भेष, देखा दृग पिय एक होइ ॥१॥
हमरा सकल पसार, वार पार हमहीं कही ।
संत चरन की लार, आदि अंत तुलसी भई ॥२॥

॥ दोहा ॥

निरखा आदि अनादि, साधि सुरति हिये नैन से ।
करै कोइ संत बिचार, लखि दुर्बीन स्रुति सैल से ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी निरखि देखि निज नैना । कोइ कोइ संत परखिहै बैना ॥
जो कोइ संत अगम गति गाई । चरन टेकि पुनि महूँ सुनाई ॥
अब जीवन का कहौं निबेरा । जा से मिटै भरम बस बेरा ॥
जब या मुक्ति जीव की होई । मुक्ति जानि सतगुरु पद सेई ॥
सतगुरु संत कंज मैं बासा । सुरति लाइ जो चढ़ै अकासा ॥
स्याम कंज लीला गिरि सोई । तिल परिमान जानि जन कोई ॥
छिन छिन मन को तहाँ लगावै । एक पलक छूटन नहिं पावै ॥
स्रुति ठहरानी रहै अकासा । तिल खिरकी मैं निस दिन बासा ॥
गगन द्वार दीसै इक तारा । अनहद नाद सुनै झनकारा ॥
अनहद सुनै गुनै नहिं भाई । सूरति ठीक ठहर जब जाई ॥
चूवै अमृत पिवै अघाई । पीवत पीवत मन छकि जाई ॥
सूरति साथ संध[1] ठहराई । तब मन थिरता सूरति पाई ॥
सूरति ठहरि द्वार जिन पकरा । मन अपंग होइ मानो जकरा ॥
चमकै बीज गगन के माहीं । जबहि उजास पास रहै छाई ॥
जस जस सुरति सरकि सत द्वारा । तस तस बढ़त जात उँजियारा ॥
सेत स्याम स्रुति सैल समानी । झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
मन इस्थिर अस अमी अघाना । तत्त पाँच रँग बिधी बखाना ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "संध" की जगह "संग" है ।

स्याही सुरख सपेदी होई। जरद जाति जंगाली सोई॥
झिल्ली ताल तरंग बखानी। मोहन मुरली बजै सुहानी॥
मुरली नाद साध मन सोवा। बिष रस बादि ब्रिथी सब खोवा॥
खिरकी तिलभरि सुरति समाई। मन तत देखि रहै टक लाई[1]॥
जब उजास घट भीतर आवा। तत्त तेज और जोति दिखावा॥
जैसे मंदिर दीप किवारा। ऐसे जोति होत उँजियारा॥
जोतिउजासफाटि पुनि गयऊ। अंदर चंद तेज अस भयऊ॥
देखै तत सोइ मनहि रहाई। पुनि चंदा देखै घट माँई॥
चंद्र उजास तेज भया भाई। फूला चंद्र चाँदनी छाई॥
सूरति देखि रहै ठहराई। ज्यौं उजियास बढ़त जिमि जाई॥
ज्यौंज्यौं सूरति चढ़ि चलि गयऊ। सेता ठौर ठाम लखि लयऊ॥
देख सैल ब्रह्मंड समाई। तारा अनेक अकास दिखाई॥
महि अरु गगन देखि उर माँई। और अनेकन बात दिखाई॥
कछुकछुदिवससैलअस कीन्हा। ऊगा भान तेज को चीन्हा॥
तारा चंद्र तेज मिटि गयऊ। जिमि मध्यान भान घट भयऊ॥
ज्यौं दोपहर गगन रबि छाई। तैसे उजास भया घट माँई॥
ता के मधि मैं निरखि निहारा। घट मैं देखा अगम पसारा॥
सात दीप पिरथी नौ खंडा। गगन अकास सकल ब्रह्मंडा॥
समुँदर सात प्राग पद बेनी। गंगा जमुना सरसुती बहिनी॥
औरै नदी अठारा गंडा। ये सब निरखि परा ब्रह्मंडा॥
चारौ खानि जीव निज होई। अंडज पिंडज उषमज सोई॥
अस्थावर चर अचर दिखाई। यह सब देखा घट के माँई॥
भिनि भिनि जीवन कर बिस्तारा। चारि लाख चौरासी धारा॥
और पहार नार बहुतेरा। जो ब्रह्मंड मैं जीव बसेरा॥
कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा। तीनि लोक भीतर मैं चीन्हा॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ मैं "टक लाई" की जगह "टकराई" है।

जो जग घट घट माहिँ समाना । घट घट जग जिव माहिँ जहाना ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने । एक दिवस गये अधर ठिकाने ॥
परदा दूसर फोड़ि उड़ानी । सुरति सुहागिनि भइ अगमानी॥
सब्द सिंध मेँ जाइ सिरानी । अगम द्वार खिरकी नियरानी ॥
चढ़ि गइ सूरति अगम ठिकाना। हिये लखि नैना पुरुष पुराना ॥
ता मेँ पैठि अधर मेँ देखा । रोम रोम ब्रह्मंड का लेखा ॥
अंड अनेक अंत कछु नाहीं । पिंड ब्रह्मंड देखि हिये माहीं ॥
जहँ सतगुरु पूरन पद बासी । पदम माहिँ सतलोक निवासी ॥
सेत बरन वह सेतइ साँईं । वहँ संतन ने सुरति समाईं ॥
सत्तहि लोक अलोक सुहेला । जहँवाँ सुरति करै निज केला ॥
सूरति संत करै कोइ सैला । चौथा पद सत नाम दुहेला ॥
परदा तीसर फोड़ि समानी । पिंड ब्रह्मंड नहीं अस्थानी ॥
जहँवाँ अगम अगाधि अघाई। जहँ की सत गति संतन पाई ॥
महुँ उन लार लार लरकाई । उन सँग टहल करन नित जाई ॥
महुँ पुनि चीन्ह लीन्ह वह धामा । बरनि न जाइ अगमपुर ठामा ॥
निःनामी वह स्वामी अनामी। तुलसी सुरति सैल तहँ थामी ॥
जो कोइ पूछै तेहि कर लेखा । कस कस भाखौं रूप न रेखा ॥
तुलसी नैन सैन हिये हेरा । संत बिना नहिँ होइ निबेरा ॥
निज नैना देखा हिये आँखी । जस जस तुलसी कहि कहि भाखी ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिँ ब्रह्मंड, ताहि पार पद तेहि लखा ।
तुलसी तेहि की लार, खोलि तीनि पट भिनि भई ॥१॥
तुलसि संत अनुकूल, कँवल फूल ता मेँ धसी ।
लसी जाइ सत मूल, फँसी पाइ सतगुरु सरन ॥२॥
खुलि गये अगम किवार, लील सिखर के पार होइ ।
गिरा गगन के पार, पाइ सैल अस बिधि कही ॥३॥

अंडा फूट अकास, होइ निरास सूरति चली ।
अगम गली निज पाइ, तहँ आसन तुलसी कियौ ॥४॥
हिरदे हरष समाइ, पाइ ताहि गति कस कही ।
कोइ कोइ संत समाय, ताही तेँ गति तस भई ॥५॥

॥ छंद ॥

तीनोँ पट बाहिर कहुँ नहिँ जाहिर। अगम अगत की राह लई ॥
खोला वह द्वारा अगम पसारा । सतगुरु पुर के पार गई ॥१॥
सतलोक दुहेला कीन्ही सैला । अगम अकेला लार भई ॥
ता से पद न्यारा निरखि निहारा । तासु अनामी नाम नहीँ॥२॥
फूला निज कँवला सूरति सम्हला । नील सिखर तन तार लई ॥
अंडा निज फूटा दस दिस टूटा ।छूटि सुरति असमान गई॥३॥
तुलसी तन सैला घट बिच खेला । संतकृपा से राह लई ॥
ब्रह्मंड न पिंडा नहिँ नौ खंडा । रवि चंदा तहँ तार[1] नहीँ ॥४॥
पानी नहिँ पवना अगिन न भवना । गगन गिरा के पार भई ॥
देखा सत्त सैला अगम अकेला । सूरति केला सब्द मई ॥५॥
तुलसी मत पाई संत लखाई । पास समाई गाइ कही ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी निरखि निहारि, नैन पार निज देखि कै ।
यह अदेख की बात, जिन अदृष्टि हिरदे लखा ॥१॥
तुलसी तुच्छ अबूझ, जबै सूझ सूरति लखी ।
अलख खलक के पार, निःअच्छर वो है सही ॥२॥
संत चरन पद धूर, तुलसी कूर कारज कियौ ।
लिया अगम पद मूर, सूर संत अपना कियौ ॥३॥
मैँ उनकी बलिहार, लार लागि पारै कियौ ।
चौथा पद निज सार, सो लखाइ संतन दियौ ॥४॥

(१) तारा ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी मैं अति नीच निकामा। मैं अनाथ गति बूझि न जाना ॥
मैं अति कुटिल कूर कुबिचारी। सत मत संत सरनि निरबारी ॥
अब मैं अपना औगुन भाखी। निरनय जी[1] की कोइ नहिं राखी॥
अपनी चाल गती गुन गाऊं। मोहिं सोँ अधम और नहिं नाऊँ ॥
संत दयाल दीन-हितकारी। मोरे औगुन नाहिं बिचारी ॥
संत सरल चित सब सुखकारी। मो को पकरि हाथ निरबारी ॥
कहँ लगि उन के गुन गति गाऊँ। मोर अचेत लखो नहिं काहू ॥
मोरी तपन ताप निज हेरा। तुलसी नीच का कीन्ह निबेरा ॥
कोटिन जिभ्या जो मुख होई। तौ मैं बरनि सकौं नहिं सोई ॥
कोटिन कल्प-बृच्छ जो होई। तौ सरवर पावै नहिं कोई ॥
तिन की तीनिलोक रजपावन। कस बरनौं मोरे मन भावन ॥
तिन कौ भेद बेद नहिं पावै। वोहू नेति नेति गोहरावै ॥
दस औतार और तिरदेवा। वोहु न उनको पावै भेवा ॥
कहँ लग कहौं संत गति न्यारी। मोरी मति गति नाहिं बिचारी ॥
तीनि लोक का पटतर लाऊँ। उन सम तुलसी कहा दिखाऊँ ॥
मैं मत त्राहि त्राहि करि भाखी। ऐसी कौन बताऊँ साखी ॥
संतन की गति कस कस गाऊँ। अस कोइ देखि परै नहिं ठाऊँ ॥

॥ छंद ॥

मोरी मति नीची माहुर सींची। संत चरन के लार भई ॥
करमन कर मैली बिष रस पेली। संत चरन चितजाइ बसी[2]॥१
मति महा अति रंका मन निःसंका। बिष रस कस की धार मई॥
कहँ लग गोहराऊँ अंत न पाऊँ। संत चरन की लार लसी॥३॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "निरनय जी" के बदले "नेरे नज़ीक" दिया है जो ठीक नहीँ मालूम होता। (२) मुं० दे० प्र० के पाठ मेँ "जाइ बसी" की जगह "चाहि लई" है।

दरसन पाये करम नसाये । पाप पुन्य सब छार भई ॥
मोहिं निरमल कीन्हा दयानिधि चीन्हा । ऐसे सिंध दरियाव मई ॥४
तिनकी रज पावन तुलसी अपावन । मो से अधम को धाम दई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी नीच निहार, संत सरन न्यारा किया ।
महुँ पुनि उतरौं पार, संत चरन रज धूरि धर ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मन निरमल भयो, सूरति सार सुधार ।
संत चरन किरपा भई, उतरौ भौजल पार ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, ये अगार गति यौं कही ॥
बूझै बूझनहार, बिन सतगुरु पावै नहीं ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु चरन निवास, निस दिन सूरति बसि रही ।
संत चरन अभिलाष, पल छिन छिन छूटै नहीं ॥१॥
घट रामायन माहिं, अर्थ भेद अंदर सही ।
रावन लंका राम, यह अकाम गति ना कही ॥२॥

॥ सोरठा ॥

दसरथ सीता नाहिं, भरत चत्रगुन ना कह्यो ।
ये निरखौ घट माहिं, बाहिर गति मति भरम है ॥१॥
घट रामायन माहिं, घट बिधि गति मति सब कही ।
परखै परम निवास, यह अकास अंदर मई ॥२॥

॥ चौपाई ॥

रावन राम भेद समझाई । रामायन सब घट बिधि गाई ॥
संतन की गति अगत अगोई। अगम निगम घर सुरति समोई ॥
संत गती गति बेद न जाना। सिम्रित सास्तर और पुराना ॥
पंडित भेष भक्त और ज्ञानी। जोगी परमहंस नहिं जानी ॥
स्रावग तुरक तोल नहिं पाया। भरमे सबहि काल गोहराया ॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष, यह अदेख गति ना लखो ।
स्रावग तुरक न देख, संत सार अंदर चखो ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब भूल भाव गति गाई । तन भीतर काहू नहिँ पाई ॥
ये तन भीतर संतन देखा । यह अदेख गति कहौँ अलेखा ॥
गंगा जमुना और त्रिबेनी । तन भीतर ब्रह्मंड की सैनी ॥
पृथ्वी पवन गगन आकासा । यह सब देखै घटहि निवासा ॥
पाँच तत्त जल अगिनि समाना । पिंड माहिँ ब्रह्मंड बखाना ॥
रबि चंदा तारागन होई । और अनेक बिधान समोई ॥
बाहिर भर्म भेद गति गावैँ । पाहन पानी से लौ लावैँ ॥
तीरथ बरत जो चारौ धामा । यह सब पाप पुन्य निज कामा ॥
पूरब पच्छिम फिर फिरि धावैँ । सत्त पुरुष की राह न पावैँ ॥
सत्त पुरुष सत नाम कहाई । वह अनाम गति संतन पाई ॥
सत्त नाम से निरगुन आया । यह सब भेद संत बतलाया ॥
पाँच नाम निरगुन के जाना । निरगुन निराकार निरबाना ॥
और निरंजन है धर्मराई । ऐसे पाँच नाम गति गाई ॥
सोई ब्रह्म परचंड कहाई । ता को जपै जगत मन लाई ॥
दस औतार ब्रह्म कर होई । ता को कहिये निरगुन सोई ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सात दीप पृथ्वी नौ खंडा ॥
सब जग ब्रह्म ब्रह्म करि गाई । आदि अंत की राह न पाई ॥
यह गतिमति बिधि मैँ पुनि भाखा । कोई जगत न सूझी आँखा ॥
यह बिधि सत मति भेद बताई । काहू के परतीत न आई ॥
कासी पंडित और अचारी । जोगी परमहंस ब्रह्मचारी ॥
कहै तुलसी कोइ भेद न पाया । यह सब भाव भेद भरमाया ॥

हाल काशी का

॥ दोहा ॥

तुलसी ग्रंथ पसार, कासी नगर सगरे भई ।
पंडित ज्ञानी भेष, जैन तुरक सब मिलि कही ॥१॥
तुलसी बाम्हन साध, गंगाजी पर रहतु है ।
निंदत सिम्रित बेद, यह अभेद गति कहतु है ॥२॥

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि मता उठाई । या को करिये कौन उपाई ॥
नैनू नाम इक पंडित भारी । तेहि पंडित मिलि सोच बिचारी ॥
तुलसी नाम इक साध कहाये । जिन सब नेम अचार उठाये ॥
ग्रंथ बनाइ कीन्ह एक भाषा । तीरथ बरत एक नहिं राखा ॥
वा कै भेद भाव सब लीजै । केहि बिधि ज्ञान समझ तेहि कीजै ॥
स्यामा समझ एक बतलाई । रहत पास कोइ ताहि बुलाई ॥
पंडित एक कही समझाई । रहत अहीर सोइ भाखि सुनाई ॥
नाम जाति इक हिृदे अहीरा । निसि दिन आवै हमरे तोरा[1] ॥
सुनै कथा पुनि सेवा करई । रात दिवस बस पासै परई[1] ॥
नैनू मिलि सब बाम्हन भाई । तिनि पुनि हिृदे अहीर बुलाई ॥
सब पंडित अस पूछन लाई । कौन ज्ञान यह कहत गुसाँई ॥
बेद भेद मरजाद उठावै । सिम्रित सास्तर ना ठहरावै ॥
गंगा जमुना अंतर मानै । है परतच्छ ताहि नहिं जानै ॥
पूजा पत्री और अचारा । तिरथ बरत कहै झूठ पसारा ॥
राम रहीम एक नहिं मानै । यह कछु ठौर और कछु ठानै ॥

॥ दोहा ॥

दीन्हा हिृदे जवाब, साफ बात बिधि यों कही ।
गति सत संत अपार, पंडित त्रिधि जानै नहीं ॥

---

(१) यह दोनों कड़ियाँ मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं ।

॥ चौपाई ॥

हिरदे अहीर ज्वाब अस दीन्हा । संत गती कोइ बिरले चीन्हा ॥
मैं तौ अपढ़ जाति अज्ञाना । तुम पंडित पढ़े बेद पुराना ॥
संतन की गति कहौं बुझाई । तुमहुं न बेद भेद नहिं पाई ॥
पढ़िपढ़ि पंडित पचिपचि हारी । बेद न भेद संत गति न्यारी ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू कहै बिचार, यह निकाम कस भाखेऊ ।
यह जड़ जाति गँवार, बेदन सौं न्यारी कहै ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू सुनि पुनि मारनि धाये । पंडित और अनेक बुलाये ॥
सब से कहै सुनौ तुम ज्ञाना । यह अहीर कस करत बखाना ॥
सब पंडित मिलि यह बिधि ठानो । या की करौ प्रान की हानी ॥
यह सब मिलि कर मता उठाई । हिरदे ऊपर लात चलाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुरक तकी इक स्वार, जात हते दरबार को ।
घोड़ा फेरि निहार, यह बिबाद कैसे भई ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी इक तुरुक सवारा । ते पुनि जात हते दरबारा ॥
सुन करि बात बाग उन मोड़ा । फेरि लगाम कीन्ह उन घोड़ा ॥
सेख तकी पूछो पुनि बाता । तैं कहु कौन कौन सी जाता ॥
केहि कारन यह झगरा होई । सो सब भेद कहौ बिधि सोई ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू निरखि पुकार, सेख तकी को देखि कर ।
ये का कहत गँवार, बिधि कुरान मानै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै सुनौ मेहरबाना । बेद कितेब न मानै पुराना ॥
राम रहीम एक नहिं मानै । पंडित काजी झूठ बखानै ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कही बिचारि, सेख तकी जो तुरक से ।
तुम बूझौ दिल माहिँ, खुदा एक सब मैँ कहै। ॥

॥ चैापाई ॥

हिरदे कहै तकी सुनु सेखा । सब मैँ कहै। खुदा है एका ॥
गाय मार बकरी तुम खइया । येहि किताब मैँ कह्यो गुसँइयाँ ॥
सब मैँ नूर मुहम्मद केरा । काटि गला पुनि पैहै। बैरा ॥
येही कितेब कुरान बखाना । जिन्दा को मुरदा करि जाना ॥
सोई मुसलमान है भाई । नबी नाम हर दम लै। लाई ॥
रोजा कर कर खून बिचारा । ये गुनाह नहिँ बक्सनहारा ॥
झूठा रोजा झूठ निवाजा । झूठा अल्ला करै अवाजा ॥
वा साहिब की राह न पाई । सब जहान मेँ रहा समाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेख तकी सुनि बात, ज्वाब स्वाल बोले नहीँ ।
धर्मा जैनी जाति, संग बात कीन्ही सही ॥

॥ चैापाई ॥

धर्मा नाम जाति इक जैनी । उन सब सुनी हमारी कहनी ॥
धर्मा स्रावग कहै बिचारी । जैन मता है सब से भारी ॥
येमति आदि साध नहिँ जानै। तैँ मत झूठा बाद बखानैँ ॥
चैाबीसो तीर्थंकर जानी । आदि नाथ हैँ हमरे स्वामी ॥
तिनकी आदि कहा तुम जानौ। नाहक बेगुन बादि बखानौ ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै सुनु बात, जैन मता पुनि सब कहैाँ ।
सुनौ भेद बिख्यात, आदि अंत सब समझि कै ॥

॥ चैापाई ॥

हिरदे कहै सुनो हो भाई । आदि नाथ की आदि सुनाई ॥
जो तुम सुनौ कहैाँ बिधि नाना। हम सब कहैँ सुनौ दै काना ॥

प्रथम जुगल्या धर्म बिचारी। आई छींक भये सुत नारी ॥
होते छींक प्रान तेहि जाई। कन्या पुत्र भये तेहि ठाईं ॥
ता पीछे कुलकर की बाता। चित दे सुनौ कहौँ बिख्याता ॥
चौथा कुलकर भेद बखाना। ता मैँ नभ राजा इक जाना ॥
मुरा देबि तेहि भाखौं भेवा। जाकर ऋषबराय भये देवा ॥
भागवत कहै ताहि अवतारा। तिन का सुनौ आदि निरबारा ॥
ता ने तप कीन्हो निरबाना। मुक्ति पाइ पुनि काल समाना ॥
ऐसे भये और चौबीसा। पुनि पुनि आये मुक्ति पद ईसा ॥
ता मैँ प्रथम ऋषबदेव होई। भाखा तिन जग थापा सोई ॥
आगे भेद न उनहूँ जाना। यह सुन सार भेद निरबाना ॥
जग थापा पुनि धर्म चलाई। आदि पुरान मैँ देखो भाई ॥
कह नौकार जाप बतलाई। जाकी बिधी कहौँ समझाई ॥
जाप भेद मैँ कहौँ पुकारी। दिल अपने मैँ लेउ बिचारी ॥
अरिहँत सिद्ध भाखि बिधि नामा। अरियानं उज्झानं जाना ॥
लोये सर्ब साध को कीन्हा। ये नौकार मंत्र उन लीन्हा ॥
सुनि धरमा तब चकृत भयऊ। सब बरतंत जैन कौ कहेऊ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि धर्मा यह भेद, ये अभेद कछु भिन्नि कहै।
जैन मता समझाइ, ये अकाय कछु अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी पंडित भये एका। धर्मा धर्म कि बाँधी टेका ॥
ये तीनौं तुलसी पै आये। हिरदे ऊपर बाँह चढ़ाये ॥
और अनेक मूरख बहुतेरे। कोइ सूधे कोइ चलैं अनेरे ॥
हिरदे अहीर चले सब झारी। जहँ तुलसी ने कुटी सँवारी ॥
हिरदे अहीर साथ झख भारी। तब तुलसी ने मता बिचारी ॥
सब चलि आये कुटी के पासा। जब तुलसी मन कियौ हुलासा ॥

उठि के चरन गहे सब केरे। कीन्ही दया दीन तन हेरे॥
बाम्हन पंडित धर्मा जैनी। सेख तकी से कीन्ही सैनी॥
नैनू पंडित सैन सँवारा। धर्मा हिये उठै जस झारा॥
यह दोनौं मिलि मता बिचारी। सेख तकी को आगे डारी॥
नैनू नोक टोक इक झारा। यह इनके हैं गुरू बिचारा॥
पूछो भेद कहैं निरबारा। इन कस भाखा झूठ पसारा॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै निहोर, स्वामी तुलसी बिधि सुनौ।
मैं कछु कही न और, ये अबूझ बूझो नहीं॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो स्वामी। मैं कछु कही रीति गति ज्ञानी॥
नैनू पंडित कहै बिचारी। इन सब ज्ञान कही गति न्यारी॥
इन सब धर्म कर्म जग पेला। अस कस ज्ञान कहै यह चेला॥
इन सब बेद कितेब उठावा। जोगी जैन नहीं ठहरावा॥
और अनेक बात नहिं मानै। अस कह मंत्र सुनायौ कानै॥
तब तुलसी सुनि आदर कीन्हा। प्रीति भाव उठि आसन दीन्हा॥
दीन बिधी सब अपनी गाई। चरन परसि कै सीस चढ़ाई॥
मैं अनाथ हौं तुम्हरौ बारा। छिमा करौ मैं दास तुम्हारा॥
मैं औगुन की खानि अपारा। तुम गुन सीतल अपरम्पारा॥
तुम पंडित मैं अपढ़ अयाना। करौ दया तुम कृपानिधाना॥
ये हिरदे कछु ज्ञान न पावा। औगुन ज्ञान जो तुम्हैं सुनावा॥
सीतल भये धीर तब आई। सुनि अस बचन बैठि भुँइ माई॥

॥ सोरठा ॥

तकी तुरक कह बात, तुलसी सुनियौ भेद अब।
सब हिरदे बिख्यात, जो गुनाह इन ने किया॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी जब बचन सुनाई। तुलसी सुनियौ चित्त लगाई॥

हिरदे कुफर बात सब कीन्हा । रोजा निमाज मेटि सब दीन्हा॥
और कितेब कुरान उठाये । खुदा नबी कर खोज मिटाये ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी बिचार, सब सँवारि बिधि मैं कहौं ।
कहुँ कुरान निरधार, जो क़िताब भाखो सबै ॥

सम्बाद साथ तक़ी मियाँ के

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सों बाता । या का तकी सुनौ बिख्याता ॥
चौधा तबक कुरान बतावा । और चौबीस पीर पुनि गावा ॥
फजल मुहम्मद कीन्ह जहाना । आब ताब पट अग्नर निदाना ॥
तबक भिन्न चौधा बतलावौ । भिनि चौबीस पीर दरसावौ ॥
कौन तबक मैं कौन बयाना । सो तकी कहिये हक्क इमाना ॥
कौन तबक मैं नबी का बासा । तबक तबक का कहौ खुलासा ॥
सुनकर तकी ज्वाब अस दीन्हा॥ कहौं हक्क जो करौ यक़ीना ॥
अल्ला ने मुख कही जुबाना । जा से भये कितेब कुराना ॥
जाहिर किये पैगम्बर भाई । सब जहान खिलकत के माईं ॥
कर सरियत सब राह चलाई । तकी कहै म्याँ तुलसी साँई ॥
खिलकत खबर जहान जनावा । पैगम्बर पर हुकम चलावा ॥
सरा[१] राह सरियत[१] की बाँधौ । अल्ला हुकम राह को साधौ ॥
मुसलमान जो नाम कहावै । हक्क इमान कुरान बतावै ॥

॥ तुलसी साहिब बाच ॥

॥ दोहा ॥

तकी तोल जाना नहीं, कहौ कुरान की बात ।
दिल दरियाफ़ अपने करो, जो कुरान बिख्यात ॥१॥
खुदा चून बेचून[२] है, अस अस कहत कुरान ।
बिन जुबान अल्ला मियाँ, कस कस किया बखान ॥२॥

---

(१) शरअ और शरीअत । (२) बेमिसाल ।

अल्ला अलिफ जुबान, बिना बदन जाहिर नहीं ।
जुबाँ बदन के माहिं, तो बेचूँ कहना नहीं ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तकी मियाँ हक बोल सुनावो । अल्ला तो बेचून बतावो ॥
उनके बदन जुबाँ नहिं भाई । कैसे कितेब कुरान बनाई ॥
कागद स्याही कस लिख मारा । बिन जुबान कैसे बिस्तारा ॥
अल्ला मियाँ कितेब बनाई । कहो जुबाँ बिन कैसे गाई ॥
ये तो दिल बिच साँच न आवै । तुलसी तकी बोल नहिं भावै ॥
बिन जुबान मुख कहा कुराना । अल्ला के नहिं बदन जुबाना ॥
चूँ बेचून नमून न ज्वाबा[१] । सुनो तकी म्याँ कहै किताबा ॥
वहि कितेब कह खुदा जुबाना । अल्ला मुख से भये कुराना ॥
जो जुबान नहिं उनके भाई । तो कस कहे कुरान बनाई ॥
या की तकी तोल बतलावो । दिल में समझ बूझ समझावो ॥
दिल और रूह राह बतलैये । तब कुरान का गाना गैये ॥
रूह रकान असमान ठिकाना । केहि बिधि गई राह पहिचाना ॥
सो घर का म्याँ भेद बतावो । चौथा तबक तोल समझावो ॥
सुनकर तकी तका नहिं बोला । मुख भया बंद जुबाँ नहिं खोला ॥
तुलसी कहै कहो कस भाई । जा से दिल बिच होइ निसाई ॥
सुनकर तकी ज्वाब अस दीन्हा । मुरसिद मियाँ मरम हम चीन्हा ॥
तुलसी तकी दीन जब देखा । तब भाखा बिधि भेद बिसेखा ॥
साँची महजित तन को जाना । जा में चौथा तबक समाना ॥
मक्का भिस्त हज्ज येहि माहीं । मुल्ला काजी राह न पाई ॥
मुहम्मद नूर जानि सब केरा । दोजख भिस्त में किया बसेरा ॥
नूर नबी ने सब का कीन्हा । तुम हलाल बकरी कस कीन्हा ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "न ज्वाबा" की जगह "जवाबा" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

गुनहगार दोजख की रीती । करौ खून ये बहुत अनीती ॥
जो महजित उन आप बनाई । सो हलाल करि कै तुम खाई ॥
मिट्टी महजित कबर बनाई । झूठी हक्के ईमान बताई ॥
साँची महजित तन मन साँई । खिलकत खुदा खलक के माँई ॥
नूर नबी सब माहिं बिराजा । जाकी हर दम उठै अवाजा ॥
नूर नबी सब माहिं बिचारा । तब दोजख से होइहै न्यारा ॥
नासुत मलकुत जबरुत भाई । लाहुत राह नबी की पाई ॥
लामुकाम रब साहिब साँई । वाको खोज भिस्त तब पाई ॥
सेख तकी तक थक रहे भाई । ज्वाब स्वाल मुख से नहिं आई ॥

॥ चौपाई ॥

सुनौ तकी कहुँ खोज न पावै । कहा किताब ज्वाब नहिं आवै ॥
काजी मुल्ला पढ़े कुराना । खुदा खुदा कहे खोज न जाना ॥
खोलि किताब देखिये भाई । खुदा आदि कहौ कहँ से आई ॥
खुद खुदाइ कर कहै कुराना । खुद खुदाइ का मरम न जाना ॥
ये खुदाइ ना कहिये भाई । ये तौ खुद खुदाइ की छाँहीं ॥
जहँ खुदाइ रहता है साँई । उस खुदाइ का अंत न पाई ॥
तकी खुदा तुम एक बतावो । खुद खुदाइ का खोज लगावो ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी तलास, खुदा बास कहु कहँ हता ।
नहिं जब जिमीं अकास, कोइ किताब स्वाँसा नहीं ॥

॥ दोहा ॥

मंसूर मियाँ पस्तो कहै, तकी बूझ दिल माइँ ।
खुद खुदाइ की राह का, खुदा खोज नहिं पाइ ।

॥ पश्तो १ ॥

खोल देखो रे किताबैं, आद अव्वल कौन था (म्याँ) ।
नहिं ज़मीं असमान खिलक़त, खुद खुदा तब था कहाँ ॥१॥
क़ुफ़ल खोले रे कुराना, मूल म्याना भेद का ।
था क़लम स्याही न कागज़, और न था आदम मियाँ ॥२॥

नहिं मुहम्मद रब न रे जब, नहिं पैयम्बर पीर थे।
नहिं नबी का नाम निसबत, भिश्त दोज़ख़ नहिं रचे ॥३॥
क़ाज़ी मुल्ला रे बेहोशो, खोज करो दिल्दार का।
मन मुआ मनसूर जब से, आशिक़ जो चश्मे यार का ॥४॥

॥ पश्तो २ ॥

यह खुदा ना है रे क़ुदरत, खुद खुदा कोइ और है (म्याँ)।
जिन खुदा को तख़्त बख़्शा, वह सकस कहो कौन है ॥१॥
दिल दिया और रूह रोशन, है हस्न तन हुस्न को।
जब तबक़ चौधा दिये हैं, आदि खुदा को जानिये ॥२॥
कुल जहाँ आलम है कुन से, पट अबर अल्ला से है।
यह हर इक ना कोइ किसी पै, भेद दोस्तो दिल मिले ॥३॥
महरम मियाँ मनसूर आशिक़, वह है बेचूँ बेनमूँ।
यह किताबों में नहीं है, खुद खुदा का राज़ है ॥४॥

॥ पश्तो ३ ॥

ऐन अन्दर चश्म को रे, खोल देखो कौन है (म्याँ)।
कुल ख़लक़ आलम इसम बिच, दिल हिये में खसम है ॥१॥
नहिं किताबों में रे है कुछ, कुल कुरानै छूँछ है।
वह पिया आलम की आँखियाँ, और कहीं नहिं पूछ ले ॥२॥
हस्न है रे हंस जा से, हुस्न तन बिच में रहा।
भूल अपनी आद अव्वल, कट मरे मन मौज में ॥३॥
होश ग़ाफ़िल है रे दोज़ख़, दिल दिया नहिं यार को।
बूझ बिल-आख़िर[1] ख़राबी, इश्क़ ज्यों मनसूर हो ॥४॥

॥ पश्तो ४ ॥

देख कुछ नहिं इस जहाँ में, सब फ़ना हो जायँगे (म्याँ)।
रहै रब का नाम मरदो, लोग लशकर कूँच है ॥१॥

(१) अंत को।

चार दिन खूबी खलक़ मैं, अन्त मरना हक़ है (म्याँ) ।
ज्यों धुएँ का मेघडम्बर, कुल मिटै इक पलक मैं ॥२॥
तन को देखो आशिक़ो, बस ख़ून चमड़ी हाड़ है ।
जब निकल जावै पवन, तब गाड़ मिट्टी मैं मियाँ ॥३॥
यार अज़ीज़ों ने कफ़न मैं, बाँध धरा ताबूत पर ।
जोरू अम्मा कुल कुटम सब, मनसूर तन मन झूठ है (म्याँ) ॥४॥

॥ पश्तो ५ ॥

खोज मुरशिद रे मुरीदो, राह रोशन यार को (म्याँ) ।
रूह मेहर मुरशिद के दसतों, दिल फ़ज़ल दिलदार मैं ॥१॥
रूह चढ़ावो रे अबर को, हो ख़बर उस यार को ।
ला पै जब रब राह चीन्है, पल मैं लखै इसरार को ॥२॥
क़ुफ़ल खोले रे अधर के, रूह से फोड़ असमान म्याँ ।
जान मलकूत नासूत को, जबरूत की कर क़दर म्याँ ॥३॥
जा मिलै लाहूत रे जब, होश हो हाहूत का ।
लौ लगी जो ला के अन्दर, रब मिले मनसूर को ॥४॥

॥ दोहा ॥

रब्ब राह लौ लाह मैं, खुदा खोज दिल माहँ ।
रब खोदाइ से अलग है, खुद खुदाय तेहि नावँ ॥१॥
बूझो खोज किताब मैं, सब कुरान कुल झार ।
कर तलास काजी सुनौ, कहि मनसूर पुकार ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी निहार, कहि पुकार मनसूर ने ।
मुरसिद खोज बिचार, बन मुरीद मुरसिद मिलै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सुन बाता । खुद खुदाइ मालिक है दाता ॥
उनका खोज खुदा नहिं पाया। नहिं कितेब लिखने मैं आया ॥
काजी मुल्ला खोज न पावै । दे दे बाँग खुदा गोहरावै ॥

अब खुदाइ का खोज बताओँ। खुदा राह और भिस्त लखाओँ॥

॥ रेख़ता ॥

अजब अनार दो भिस्त के द्वार पै।
लखै दुरवेस फक़ीर प्यारा ॥१॥
ऐन के अधर दोउ चस्म के बीच मैं।
खसम को खोज जहँ झलक तारा ॥२॥
उसी बिच फकत खुद खुदा का तखत है।
सिस्त से देख जहँ भिस्त सारा ॥३॥
तुलसी तत मत मुरसिद के हाथ है।
मुरीद दिल रूह दोजख नियारा ॥४॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भिस्त मिलाप, खुदा खोज येहि विधि मिलै।
चौथा तबक निवास, कहौ कुरान किस बिधि कहै॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तबक तरक पहिचानौ। तब मियाँ तकी भिस्त को जानौ॥
बिन मुरसिद पावै नहिँ घाटा। ये सब समझ खोज ले बाटा॥
सुनकर तकी बहुत भये दीना। बन्दा गुनहगार नहिँ चीन्हा॥
चरन पकड़ पुनि सीस गिरावा। तुम फकीर हम मरम न पावा॥
तुम खुदाइ की जाति अजाती। हम इनके सँग भये सँगाती॥

॥ दोहा ॥

तकी कहै तुलसी मियाँ, तुम गुरु पीर हमार।
गुनह बक्स अपना करौ, बंदा तकी तुम्हार ॥१॥
तकी दीन तुलसी लखा, पका दीन मत माइँ।
झका तका अपनी तरफ, गुनहगार तुम पाइँ ॥२॥
तकी तबक जाना नहीं, नबी नूर नहिँ पाइ।
भिस्त दोजख मैं तुम रहे, कैसे मिलै खुदाइ ॥३॥

॥ रेख़ता नसीहत ॥

तुलसी तबक जाना नहीं, बेहोस गाफिल हो रहा ।
जिस ने तुझे पैदा किया, उस यार को चीन्हा नहीं ॥१॥
नाहक अदम दम खोवता, मुरसिद पकड़ नहिं डूबही ।
तुलसी खलक कुल ख्याल है, आसिक मुहब्बत कर सही ॥२॥
खोजो मुहम्मद दिल-रहम, जिस इस्म से आलम हुआ ।
तुलसी नबी निरखै नहीं, जहँ लग मुसल्लम है नहीं ॥३॥
रब रूह मरहम ना हुआ, रब देख अंदर है सही ।
तुलसी तकी बूझा नहीं, जग में जिया तो क्या हुआ ॥४॥
गन्दा नजिस क्यों हो रहा, इस जक्त में रहना नहीं ।
अरे ऐ तकी तल्लास कर, तुलसी फना होना सही ॥५॥
चारो चसम[1] को खोल कर, देखो जुलम जालिम वही ।
जबरील को तैं ना लखा, तुलसी खबर खोजा नहीं ॥६॥
रोजा निमाज हर दम किया, उस यार को दिल ना दिया ।
खोजा नहीं अपना पिया, तुलसी तकी दोजख लिया ॥७॥
नासूत मलकूत जबरूत हैं, लाहूत लौ तैं ना लिया ।
हाहूत हिये खोजा नहीं, ला में रबी जीता पिया ॥८॥
तुलसी तकी तालिम[2] दिया, हर दम गुनह बंदा हुआ ।
मुरसिद मुरीदी दस्त है, पावै तकी अपना किया ॥९॥
तुलसी रहम राजी हुआ, तोला तकी अपना किया ।
दिया दस्त दरदी जान कै, तुलसी तकी मुरसिद हुआ ॥१०॥

॥ दोहा ॥

तकी दीन तुलसी लखा, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति सैल असमान कर, चढ़े गगन को धाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तकी दीन गति गाइ सुनाई । दीन्हा सूरति पंथ लखाई ।

---

(१) अंतर और बाहर की दृष्टि । (२) शिक्षा ।

॥ सरन में आना तकी मियाँ का ॥

॥ दोहा ॥

तकी दस्त दोउ जोड़ि कै, करि सलाम सिर टेक ।
नेक नजर अपनी करौ, बंदा तकी निहाल[1] ॥

॥ चौपाई ॥

नेक निहाली नजर निहारौ । तुलसी बंदा तकी सम्हारौ ॥
हमरा गुनह माफ सब कीजै । फजल करौ फिर अज्ञा दीजै ॥
चले तकी मारग को जाई । कासी नगरी पहुँचे आई ॥

॥ दोहा ॥

चले तकी मारग गये, बीच बजार मँझार ।
कर्मा पल्लीवाल की, गये दुकान के पास ॥

संबाद जैनियों के साथ

॥ चौपाई ॥

कर्मचंद इक पल्लीवाला । स्रावग जैन धर्म मत पाला ॥
सो करै बनिज बजाजी कोरा । ताहि दुकान बाग तेहि मोरा ॥
कर्मचंद ने कीन्ह सलामा । आदर बहुत कीन्ह सनमाना ॥
सेख तकी कहै सुन रे भाई । कहौं फकीर अक[2] खुदा गुसाईं ॥
ता को सब बरतंत सुनावा । कर्मचंद तुलसी ढिंग आवा ॥
कर्मचंद और धर्मा जैनी । सब पूछी पुनि हमरी कहेनी ॥
कौन धर्म यह साध कहावा । जैन को धर्म मर्म जिन पावा ॥
धर्मचंद और कर्मा जैनी । थापी उन निज अपनी कहेनी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहि तुलसी तुम मर्म बताओ । जैन धर्म का भेद सुनाओ ॥

॥ उत्तर कर्मचंद और धर्मा ॥

कर्मचंद और बोले धर्मा । होइ मुक्ति जब काटै कर्मा ॥
तप कर संजम बन को जावै । हरी त्याग कर जीव बचावै ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "लेवो तको अलेक" है । (२) या कि ।

टाटक ध्यान जपै नौकारा । जब या जीव को होइ उबारा ॥
कोसिस ऐसी कठिन अपारा । काटै कर्म जीव निरबारा ॥
तीर्थंकर चौबोसी जाना । कर्म काटि पहुँचे निरबाना ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कही जनाइ, जैन धर्म संजम बिधी ।
तुलसी सुनौ समाइ, तब पुनि फिरि आगे कहौं ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै ताइ, भेद कहो निरबान को ।
तुम कस पायौ जाइ, सो देखी अपनी कहो ॥

॥ चौपाई ॥

तुम देखी अपनी बतलावौ । करनी और और की गावौ ॥
साँची करनी अपनी भाई । तुम कुछ और और की गाई ॥
तीर्थंकर पहुँचे निरबाना । कर्म काटि वे जाइ समाना ॥
तुम तेहि करनी भाखि सुनाई । हाथ कहा कहो तुम्हरे आई ॥
जीवत मिले देखिये आँखी । ता को करनी कह कर भाखी ॥
खावै भूख जाइ पुनि ताही । ऐसी बात कहो समझाई ॥
अब जो तुरत तलब सो पावै । तब तुलसी की प्यास बुझावै ॥
तुम तो कही जुगन की बानी । देखौं अबै सुनौं जो कानी ॥
देखौं अबै तो मन पतियावै । ऐसो तत्त बात मन भावै ॥
ये सब कही सुनी हम जानी । मुए मुक्ति की करो बखानी ॥
मूए पर कोइ आवै न भाई । जीवत मैं केहु पहुँचि न पाई ॥
ता की खबर साँच कस आई । सो धर्मा तुम कहो सुनाई ॥
ये तो अंध अंध कर लेखा । मानो जो जोइ नैनन देखा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तुरत बताइ, जो निज नैनन लखि परै ।
सरै जीव को काज, परे पार गति देखिये ॥

॥ चौपाई ॥

सो साँची मानैं हम भाई । ऐसी धर्मा कहौ सुनाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ दोहा ॥

कहै धर्मा तुलसी सुनौ, कहौं भेद बिस्वास ।
बिन संजम पावै नहीं, तप जप बिना उपास ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

सुनु धर्मा बिधि बात । संजम तप मुक्ती नहीं ॥
पद पावै निरबान । चढ़ि अकास मुक्ती मिलै ॥१॥
निज निरबान बिधान । कहौं भेद भिन भिन सुनो ॥
पद निर्बान निज पार । संत सार आगे चखै ॥२॥

॥ रेख़ता ॥

निकट निरबान की सान जग मैं लखौ ।
फटिक बिच सिला पर स्याम माईं ॥१॥
काल की जाल दरहाल जा को कहैं ।
भये चौबीस भौ मुक्ति पाई ॥२॥
गुन मिलि गोह चौथा गुनष्ठान हैं ।
चौथा जमराय जहँ बसत भाई ॥३॥
अधर अठबीस लख लोक राजू कहै ।
काल निरबान रत रहत राही ॥४॥
देव मुनि दैत्य गंधर्ब और मानवी ।
केवली[1] काल मुख सकल जाई ॥५॥
दास तुलसी निरबान पद निरखि कै ।
छाँड़ि ये राह घर अधर माईं ॥६॥

---

(१) पूरा ज्ञानी जो मुक्ति का अधिकारी हो गया है उस को जैन मत में "केवली" कहते हैं ।

॥ ग़ज़ल १ ॥

जैनी जो जैन नैन सूझै नाईं।
आतम को छाँड़ि पुजैं पाहन जाईं ॥१॥
कर कर पूजा बिधान अष्टक गावैं।
भादों बिधि मंदिर सब स्रावग आवैं ॥२॥
चावल रँग माँड मँडै मनसैं आप का।
नंदेसुर पूजि दीप करैं बाप का ॥३॥
और अढ़ाई दीप माँडि करते पूजा।
अंदर आतम्म ब्रह्म नाहीं सूझा ॥४॥
करते कल्यान पाँच कामधेनु की।
पूजैं बेहोस फूटि हिये नैन की ॥५॥
जिन ने तन साज किया जानौ भाई।
वा की बिधि भूलि भाव पाहन लाई ॥६॥
तुलसी ये फंद कीन्ह काल पसारा।
धरमन की टेक बाँधि बूड़े सारा ॥७॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

ढूँढत गिरिनार सिखरि आबू जाते।
सतगुरु बिन मेहर नहीं काबू पाते ॥१॥
बूझै सतसंग संग संतन माईं।
अंदर पट खोल बोल देत दिखाई ॥२॥
जिन के बड़े भाग सोई निरखि निहारा।
रहते जग बीच बीच जग से न्यारा ॥३॥
उनकी वोहि चाल हाल घट मैं देखै।
पूछै कोइ चीन्हैं नहिं बात बिसेखै ॥४॥
खोजत पहाड़ सिखर मूरति माईं।
तुलसी नौकार जपैं सूझै नाईं ॥५॥

॥ चौपाई ॥

पद निरबान भूमि बतलाई । केवलि ज्ञान तिथंकर गाई ॥
तप संजम पूजा बिधि बानी । ये गति चारि माहिं भै खानी ॥

॥ दोहा ॥

जप नौकार निकाम सब, आदि सार नहिं जान ।
पद निरबान के पार की, तुलसी करत बखान ॥

॥ शब्द ॥

अद्भुत आज अलेखा री, सखि सइयाँ का भेषा ॥टेक
उदित मुदित दोइ सहर सुहावन, स्याम सेत नित देखा ।
अजर खेत्र नभ फटिक सिला पर, पद निरबान बिसेखा ॥१॥
सिलि पिलि बिजै खेत्र बिंद्राचल, लील सिखर पर ठेका ।
समुँदर सात पार जल खंडा, अंडा अब ले पेखा ॥२॥
निरखत चारि खानि गति चारी, बिधिबिधि जीव बिसेखा ।
केवलि ज्ञान होत गुंकारा, देखे केवली अनेका ॥३॥
ये निरबान भूमि मत मारग, आगे जान न लेखा ।
स्रावग जैन धर्म मत माहीं, इनके वोही टेका ॥४॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावैं, आगे भेद न पावैं ।
सास्तर साखि भाखि बिधि देखैं, खोजत मुए अनेका ॥५॥
या के परे भिन्न गति न्यारी, सुनि बाइस बिधि देखा ।
ता के परे पार सत साहिब, सो पद संतन लेखा ॥६॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीं, जहँ निरबान न पेखा ।
केवलि ज्ञान आतमा नाहीं, धरम करम नहिं एका ॥७॥
सूर चंद नहिं धरनि अकासा, तेज पवन जल छेका ।
ता के परे पार निर्खि न्यारा, तुलसी हिये दृग देखा ॥८॥

॥ दोहा ॥

तुलसि भूमि निरबान की, धर्मा सुनौ बयान ।
केवलि ज्ञान गोंकार का, तुलसी करत बखान ॥१॥

फटिक सिला नभ ऊपरै, केवलि करत बखान ।
तुलसी चढ़ि असमान पर, निरखा भिनि भिनि छान ॥२॥
निरबान निरखि आगे चली, सुनि अँड बाइस पार ।
नहिँ निरबान गति वहँ चलै, तुलसी देखा झार ॥३॥
जीव अचर चर अंड के, जो ब्रह्मंड के माइँ ।
सूरति चढ़ि असमान पर, तुलसी देखा जाइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धर्म बिलोके सारी । तुरक जैन बाम्हन मत झारी ॥
जग थापन जैनी बतलावैँ । ऋषब देव कीन्हा बिधि गावैँ ॥
तीर्थंकर चौबीसौ बानी । तुरक पीर चौबीस बखानी ॥
मुहम्मद थापन कीन्ह जहाना । बाम्हन ब्रह्मा बेद बखाना ॥
मुहम्मद तुरक बाम्हन बतलावैँ । तीसर जैनी अस अस गावैँ ॥
अस अस तीनौँ कहत बखाना । झूठ साँच कहौ केहि को माना ॥

॥ दोहा ॥

गुनष्टान चौथा कहे, जैन मते मेँ जान ।
तुरक तबक चौथा कहे, बाम्हन भवन बखान ॥१॥
चौथा भवन बाम्हन कहैँ, तीनौ मत इक सार ।
आदि पार कोइ ना कहै, लखा न रचनेहार ॥२॥

॥ रेख़ता ॥

चौथा तबक किताब कुरान मेँ ।
पीर चौबीस पुनि वोहू गावा ॥१॥
अल्ला रचि खेल सब जहान आलम किया ।
आब और ताब पट अबर आवा ॥२॥
सरा का खेल मुहम्मद से करि कहैँ ।
येही बिधि तुरक तकरीर लावा ॥३॥

जैन मत माहिं गुनष्टान चौथा कहैं।
बिधी भगवान चौबीस गावा ॥४॥
ऋषबजी रचन संसार की थापना।
आपने मते की बोहू लावा ॥५॥
बेद पुरान संसार ब्राम्हन कहै।
बिधी भगवान चौबीस गावा ॥६॥
चतुरदस लोक लीला बरनन करैं।
रचा बैराट जग बिधि बनावा ॥७॥
झूठ और साँच कहैा कैान को कीजिये।
हिन्दू और तुरक पढ़ भूल पावा ॥८॥
जैन सोइ जिंद बुँद आदि को ना लखा।
तीनि मैं किनहुं नहिं चीन्ह पावा ॥९॥
दास तुलसी कहै अगम घर अधर है।
संत बिन भेद नहिं हाथ आवा ॥१०॥

॥ चैापाई ॥

बाम्हन तुरुक जैन मत माईं। करता की गति केहु न पाई॥
मत अपने अपने की गावैं। तीनैाँ करता तीनि बतावैं॥
थापा जग रचि एक बनाई। ये तीनैाँ मिलि तीनि बताई॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा धर्म पसार, जैन बिधी कस कस कही।
भिनि भिनि कहैा बिचार, तप संजम उपवास बिधि॥

॥ चैापाई ॥

ब्रत संजम जप तप बतलावैा। कहै तुलसी भिनि बिधि दरसावैा॥
कस कस चलन बात बिधि कहिये। स्रावग बिधि पुनि धर्म सुनइये॥
स्रावग कैान बात बिधि पालैं। सोई कहैा कैान बिधि चालैं॥
धर्मा अष्टक बाँचि सुनाई। तुलसी सुनियौ चित्त लगाई॥

॥ उत्तर घर्मा ॥

॥ अष्टक १ ॥

जल नीर निरमल मिष्ट । हिमकर बासनं[1] ॥१॥
धार ते भंडार भै के । चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥
तुम चंद्र - बदनी । चंदा पूरी परमेसुरा ॥५॥
कैलास गिरि पर ऋषब जनवर । चरन कँवल हृदे धरा ॥६॥

॥ अष्टक २ ॥

कुमकुम जो मंजन सगर केसर । मलयागिरि घिसि चंदनं ॥१॥
अकल दुक्ख निरवार भै के । चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ३ ॥

बेल फूल चमेलि चंपा । काम कमोदिनि केतकी ॥१॥
तास परमल बास ऊधो । अगर आगर सेवती ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ४ ॥

खरि खरेला दाख खिरनी । आम स्रीफल लाइया ॥१॥
नारियल नौरंग केला । प्रभुजी के चरन चढ़ाइया ॥२
मोरी इतनी बिनती दयाल कौ । प्रभु नाथ के गुन गाइया ॥३॥
तुम चंद्र बदनी । चंदा पुरी परमेसुरा ॥४॥
कैलास गिरि पर ऋषब जनवर । चरन कँवल हृदे धरा ॥५॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नहिं मकर बासन" दिया है जिसका अर्थ समझ में नहीं आता ।

॥ चौपाई ॥

धर्म पूजा बिधी बताई । सुनि तुलसी संजम समझाई ॥
स्रावग भिन्न भिन्न जेहि जाती। स्रावग धर्म जो भये सँगाती ॥
तिनकी बात कहौँ समझाई । जेहि जेहि बिधी आदि चलि आई ॥
प्रातहिं उठि अस्नानहिं जावै । पानी छानि आपु फिर न्हावै ॥
पूजा बिधी बिधान करावै । पूजा करि फिर आरति लावै ॥
मंदिर बैठि करै पुनि जापा । माला सूत्र लेय सोइ साफा ॥
दरसन करि पुनि घर को आवै। हरी बस्तु कछु नाहीं खावै ॥
दुइज पंचमी पालै सोई । आठैं ग्यारस यह बिधि जोई ॥
चौदसि पाँच बरत नित पालै। स्रावग धर्म येही बिधि चालै ॥
ता कर होय स्वर्ग मैं बासा। देव लोक पुनि करै निवासा ॥
और उपास बिधी बतलाऊँ। स्रावग धर्म कर्म गति गाऊँ ॥
मासिक मन पखवारा कीन्हा। मुख धोवन मुख पानी लीन्हा ॥
अठवाई तेला जिन जाना । और अनेक उपास बिधाना ॥
बेला बिधि और करै घनेरा । साधै कर्म कटै भौ बेरा ॥
ऐसा धर्म कर्म जोइ जाना । सो प्रानी पहुँचे निरबाना ॥
आदि नाथ केवलि अस भाखी। सास्त्र पुरान कहो सब साखी ॥
और जो सुनौ आदि की बानी। जो केवली मुख कही बखानी ॥
आदि पुरान प्रथम यों भाखा। जुगल्या धर्म बखानी साखा ॥
एक पुरुष इक नारी होई । आवत छींक मुए पुनि दोई ॥
नासिका माहिं छींक होइ सोई । कन्या पुत्र भये पुनि दोई ॥
ऐसे कछू दिवस गये बीती । चौधा कुलकर की यह रीति ॥
चौधा माहिं एक नभ जानो । मुरा देबी ताही की रानी ॥
तिनके ऋषभ देव पुनि भयेऊ । काटि कर्म तीर्थंकर कहेऊ ॥
तिन पुनि जगत भाव बिधि थापा । कह्यो नैाकार मंत्र पुनि जापा
ता की साखि सुनौ चित लाई। जाप बिधी मैं कहौं सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेठ सुदरसन एक, सूली चोर मारग दियौ ।
मंत्र सुनायौ कान, तुरत चोर स्वर्गं गयौ ॥

॥ चौपाई ॥

सूली चोर एक जो दीना । सेठि सुदरसन जाप यकीना ॥
अरिहंत सिद्ध दोइ नाम सुनावा । पूरा मंत्र होन नहिं पावा ॥
स्वर्ग बिमान तुरतही आवा । चोर प्रान सुरलोक पठावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहेब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी पूछै बात, धर्मा यह बिधि कस भई ।
जैन बिधी कही झार, सो बृतंत पूछौं तुही ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम भाई । धर्म आपना भाखि सुनाई ॥
ता मैं बहम एक मोहिं आवो । ताकी बिधि भिनि भाखि सुनावो
सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा । सूली चोर स्वर्ग कस पावा ॥
अब तुम को बरतंत सुनाऊँ । तुम्हरे सास्तर से दरसाऊँ ॥
ये पुरान मैं देखो जाई । ता की बात कहौं समझाई ॥
सेठ सुदरसन जाप सुनावा । ता का भर्म भेद मोहिं आवा ॥
तुम पुरान की भाखौ कहनी । सेठ एक रहे स्रावग जैनी ॥
ता की कथा कहौं बिधि नाना। सो बृतंत बिधि सुनियौ काना ॥
उन इक नेम जाप कर लीना। दीपक तेल रहै जाप यकीना ॥
दीपक तेल करै सोइ जापा । खुटै तेल तब सूझै आपा ॥
ऐसी कठिन ठान तेहि ठानी। जाप इष्ट दूजा नहिं मानी ॥
ता के घर इक नार सयानी। उन का इष्ट नेम सोइ जानी ॥
वा के पुत्र एक रहे भाई । ता कर ब्याह कीन्ह बहू आई ॥
सो अजान कछु मरम न जाना । तेल दिया तेहि देखि बिहाना ॥

बैठा ससुर जाप तेहि देखा। तेल खुटै तब डारै पेखा ॥
डारत तेल राति गइ बीती। वो अजान कछु जानै न रीती ॥
प्यास माहिं उन प्रान गँवाया। मैंडक जनम जाइ जल पाया ॥
सासु रही बहू के ढिंग सोई। उन जानी बहू जागत होई ॥
यह बरतंत सत्त है भाई। सो पुरान मैं देखौ जाई ॥
ऐसी टेक जाप तिन कीन्हा। जनम जाइ मैंडक कौ लीन्हा ॥
सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा। कैसे चोर स्वर्ग पहुँचावा ॥
ऐसी जाप टेक जिन कीन्हा। अंत जनम मैंडक कौ लीन्हा ॥
सो तुम हम को भेद बतावो। कैसे भई बहुरि समझावो ॥
कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता। आगे कहौं सुनौ बिख्याता ॥
तुम्हरा सास्तर कहै बखानो। ये पुरान मैं देखौ बानी ॥
जबै सेठानी पानी जाई। मैंडक गगरी बैठा आई ॥
मैंडक अपने घर को लाई। पानी पनैड़े मैं लै जाई ॥
आदिहि नाथ समोसन भयऊ। सैन कराय दरस को गयऊ ॥
मैंडक हाथी पाँव कुचाना। भया देवता कहै पुराना ॥
देव भया कहौ कहँ कौ गइया। केते दिवस देव तन रहिया ॥
सेठ जीव पुनि कहाँ समाना। या कौ आगे करौ बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनौ, लखि पुरान बिख्यान।
देव भोगि मृत लोक मैं, आये उन के प्रान ॥

॥ चौपाई ॥

देव माल पुनि जाय सुखाई। चारौं गति जिव जाइ समाई ॥
पुनिपुनि जीव कर्म बस रहिया। जाप प्रताप यही बिधि भइया॥
आगे या को कहौ बखाना। सेठ जीव पुनि कहाँ समाना ॥
यह पुरान तुम्हरा बिधि गावै। येही मुक्ति भाव दरसावै ॥
कहौं धर्मा यह साँची बाता। तुम्हरे मत का कहा बिख्याता ॥

ऐसे स्वर्ग मुक्ति को भाखै। ये तो कर्म भोग बस राखै ॥
पुनिपुनि आवै पुनिपुनि जाई। बार बार भौ भटका खाई ॥
वा घर को है पंथ नियारा। खोजि जीव भौ उतरै पारा ॥
जो कोइ जिवत आदि घर पावै। सतगुरु पलक माहिं दरसावै ॥
हिया खुलै नैनन से देखै। तुलसी सोई बात परेखै ॥
स्वर्ग नर्क तुम भाखौ भाई। यह तो झूठो मन नहिं आई ॥
वा घर जीव बतावै चैना। ता की तुलसी मानै बैना ॥
कर्म पलक में तोड़ि बिनासै। ऐसे सतगुरु का मत भासै ॥
धर्मा कहो सेठ की भाई। सो जिव कहो कहाँ भरमाई ॥
जप नोकार बिधी अस भाखो। या से परे काल को फाँसी ॥

॥ दोहा ॥

धर्मा यह बिधि यों भई, मन में लेउ बिचार।
स्वर्ग नर्क और मुक्ति कहि, बाँधे कर्म करार ॥१॥
आगे आदि पुरान की, सुनौ साखि बिस्तार।
आदि नाथ केवलि कह्यो, जुगल्या धर्म बिचार ॥२॥
तुलसी कहै धर्मा सुनौ, जुगल्या धर्म बिचार।
कहो उन को किनने कियो, सो बिधि कहो सम्हार ॥३॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम जुगल्या बिधि कहि भाखी। आदि पुरान बतावै साखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, कहो जुगल्या कस भयो।
उन तन कौन सँवार, कुलकर नभ कस कस कहै ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाँईं। कहि पुरान सोइ साखि सुनाई ॥
इनका करता बिधी न भाई। ऐसे सास्तर साखि बताई ॥
अंडा सृष्टी आदि अनादा। फूटै न बनै येही बिधि साधा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बिन करता कौने बिधि भयेऊ। जुगल्या जन्म नाम कस कहेऊ ॥
याकी भिनि भिनि चीन्ह चिन्हावौ। करता बिन कस कस बतलावौ ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सुनो समझ यह जाना। जस जस आदि पुरान बखाना ॥
जुगल्या परे धर्म नहिं गावा। जो बूझा सो बरनि सुनावा ॥

तुलसी साहिब का वाक्य कि जैन मत के अनुसार उतपत्ति जुगल्या और जगत की कैसे हुई

॥ चौपाई ॥

सुनु धर्मा उतपति बतलाऊँ। सार सवैया में समझाऊँ ॥
जस जस भया जैन को लेखा। भिनि भिनि भाखौं भेद बिबेका॥
धर्मा सुनो कान दे भाई। जैन धर्म की आदि बताई ॥

॥ सवैया—नभ रीति जैन मत ॥

जैन को जान कहौं मत छान, सो आदि बखान निरबान की बानी।
आदि पुरान कहौं जो प्रमान, सो ताके बयान मैं जैन की जानी॥
जुगल्या धर्म जो प्रथम कही, सोइ छींकत प्रान तजे नर नारी।
सोइ छींक से होइ कन्या सुत दोइ, सो ऐसी कहै बिधि बात बिचारी॥
अब पीछे केहि की साखि देऊँ, भये चौधा कुलकर तेहि कहाये।
धेनु जो काम कही कल्प बृच्छ, सो ताहि समय मैं रहे अस गाये॥
ताहि के माहिं रहे नभ राइ, सो साखि पुरान मैं भाखि सुनाये।
चौधा मैं एक रहे नभ नेक, सो रानी मुरादेवी नाम धराये॥
ता के भये सुत नाम ऋषब, सो जब से पाँच धनुष की काया।
ता ने कियो तप ध्यान निरबान, सो जाना जोई जा मैं मुक्ति को आया ॥

आगे का भेद न जाने निखेद, सो खेद भये पुनि काल ने खाया।
मुक्ति भये जग जीव रहे, पुनि आतम अंड को खंड बताया।
सो यहि बिधि आदि पुरान सही, सो कही जग जैन मती अस गाया॥
आँवले प्रमान जो अंड लखा, सो भखा तीनो लोक के जीव की जाती।
यहि बिधि आदि पुरान कहै, सो देखि लई बिधि भेद की बाती॥
केवलि ज्ञान कहौँ जो प्रमान, सो गुन गोंकार से सास्त्र बनाये।
गंद्रपसेन से वैन सुने, सो गुने मन माहिँ जो भाखि सुनाये॥
वोही पुरान करै जो प्रमान, सो देव ऋषब ने थापन ठानी।
मंत्र नौकार दियौ येहि कार, सो अरिहंत सिद्ध की कीन्ह बखानी॥
अरिघानं नाउँ उज्झानं भाउ, सो सरबइ साध सो लैाय लगाये।
पाँचोइ पद पैंतीसोइ अच्छर, सो सब जैन मती गति गाये॥
जोइ निरबान को काल बखान, सो केवली खाइ चौबीस नसाये।
वे जो दयाल बिधी बिधि भिन्न, सो चिन्ह चौबीसोइ नेक न पाये॥
ये बिधि भेद कहै तुलसी, तत आतम जोग तीर्थंकर गाये।
आगे का अंत कहैँ सब संत, सो पंथ मते मत नेक न पाये॥

॥ सवैया २ ॥

कोइ स्रावग होइ चरचा मुख सोइ, तो भाखैँ बिधी जाकैा भेद बतावै।
तुम्हरे मत ज्ञान का ब्यान कहैाँ, जो पुरान की पूछैाँ सो भाखि सुनावै॥
जुगल्या जोइ धर्म प्रथम्म कहै, तन छूटि मरै पुनि कहाँ समावै।
नाक की नीक से छौंक कही, सुत कन्या सरीर को कैान बनावै॥
जुगल्या जोइ नाम कह्यौ केहि काम, सो केहि की जुबान से नाम धरावै।
तब केवलि ज्ञान नहीँ भगवान, न भाखो पुरान नाम कस पावै॥
औरहु एक कहैा तुम नेक, सो देइ कुलकर को कैान बनावा।
तिथि थापन नाहिँ बाम्हन जाइ, न पुरान सुनाइ तो कुल कस पावा॥
कहै नभराइ मुरादेवी ताहि, सो ऋषब बनाइ कहैा को कहावा।
कर्महि काटि ऋषब जो गये, सो निरबान ठिकान कहैा केहि ठाँवा॥

आँवले प्रमान जो अंड कह्यौ, सो हथेली के बीच मैं कैसे दिखावा।
केवलि कार कहो गोंकार, सो सीस के पार कौने बिधि आवा॥
टाटक ध्यान कहा जो बखान, सो कहो मन को केहि राह चढ़ावा।
या की बिधी बिधि बात कहै, सुन स्रावग नाम जो ता कौ कहावा॥
पाहन पूजे से सूझा नहीं, हिये नैन से जानि निहारि कै पावै।
नौकार की जाप करै नित आप, सो ताप तीनौं तन साफ सतावै॥
मुए करै आस स्वर्ग की बास, परै जम फाँस को भेद न पावै।
तुलसी तत माहिं निहारि पकै, सो लखै बिधि आतम माहिं समावै॥

॥ सवैया ३ ॥

तुलसी जो बखान कहै सुनि कान, सो भूले पुरान मैं भेद न पायौ।
पहिले भयौ नभ नाम अकास, सो बास कियौ तन आस मैं आयौ॥
सरीर मैं जोइ मुराइ रह्यौ, मुरादेबी ता कौ नाम बतायौ।
जो ये मन जब ऋषब भयौ, सो रह्यो रस धाम ऋषब्ब कहायौ॥
आगे सुनौ सोइ बात गुनौ, जुगल्या मन इच्छा से द्वैत मैं आयौ।
छौंक जो नाक मैं स्वाँस करै, सो मरै जो अकास को तेज नसायौ॥
जब नासिका स्वाँस मैं बास भयौ, सो कह्यौ मन इच्छा के पुत्र बनायौ।
मन इच्छा मिलि कुल भास भई, सो गुन इंद्री कुल प्रकृति कहायौ॥
ता को बैराट कहैं भगवान, चौथा जम कुलकर बास बसायौ।
काल कौ बृच्छ सरीर कह्यौ, सो कामना काम जो धेनु सुनायौ॥
आपने आप कियौ जग थाप, सो मन निरगुन नौकार बतायौ।
जगत भुलाइ जो धर्म चलाइ, सो टेक बँधे चारौ गत्ति मैं आयौ॥
जगत जहान कौ भर्म दियौ, सोइ कर्म बताइ जो आपहु आयौ।
येही बिधि जगत कौ नास कियौ, पुनि आपनी राह कौ भेद न गायौ॥
इंद्री बस कीन्ह ऋषब देव चीन्ह, सो टाटक गुन मैं ध्यान लगायौ
सुनि नासिका ध्यान कियौ जो प्रमान, सो जोग अरंभ से आतम पायौ॥

येहि कार के लार गुंकार भयौ, त्रिकुटी मध बीच अवाज सो आयौ।
येहि तत्त में मन जो लाग रहो, सो अँवले प्रमानै अंड कहायौ ॥
अंड के बीच से जीव सही, सो केहि बिधि मुक्ति की बात को गायौ ।
मुक्ति भई भो खानि भई, पुनि मुक्ति को भोग के जीव कहायौ ।
येहि बिधि तोलि कहै तुलसी, सो आगे को भेद उनहुँ नहिँ पायौ॥

॥ सवैया ४ ॥

स्रावग ख्यात कहैाँ जो बिख्यात, सो आदि अनादि की बात सुनाऊँ ।
जुगल्या जोइ धर्म न कुलकर कर्म, ऋषब्ब न नभ्भ मुरादेबी नाऊँ॥
पानी न पवन जमीं नहिँ भवन, सो अगिनि अकास न तत्त न ठाऊँ ।
चंदा न सूर न आतम मूर, नहीं मन कूर जा को भेद बताऊँ ॥
जब पिंड न अंड नहीं ब्रह्मंड, सो कहे नव खंड बने न बिसाऊ ।
जबै सतपुरुष रहे सुख धाम, सो वा मैँ बसैँ सतलोक कहायौ ॥
ता ने कियौ सब ठाट बैराट, सो सोला निरबान को ता ने बनायौ
सोला मैँ एक को दीन्ह निकार, सोई निराकार ने जगत भुलायौ॥
पुरुष के अंस से जोति भई, सो वही निराकार की कहियै लुगाई ।
ता के पुत्र भये पुनि तीन, सो ब्रम्हा बिस्नु महेस कहाई ॥
कुंभ निरबान के अंग से जान, लिये पाँचौ तत्त बैराट बनाई ।
काल निरबान जो ठाट कियौ, सो बैराट मैँ जोति और काल समाई ॥
ता को कहै भगवान अज्ञान, सो जाही ने जीव चराचर खाई ।
सो ताही को पूजि चलै नर चालि, सो काल निरबान ने जाल बिछाई ॥
अंड के पार कह्यो नहिँ सार, सो जार पसार रहे गति माई ।
मुक्ति बताय दई सो कही, बड़े भाग भये कहि भाखि सुनाई ॥
औरहु फंद कहैाँ दुख दंद, सो अंधेइ जीव को मुक्ति बताई ।
मुक्ति भये जग जीव रहे, बहु पंचम काल मैँ दीन्ह उड़ाई ॥
ये सब काल निरबान की जाल, सो जीव को डालि कै काल चबाई
सास्तर घान किये जो पुरान, सो धर्म की टेक मैँ जीव बुड़ाई ।
तुलसी बिधि बात कहैाँ जो घनी, सो धनी को भुलाइ भ्रमाइ छिपाई ॥

॥ सवैया ५ ॥

तुलसी नर जीव निरबान कहूँ, पति पार पिया घर आदि लखाऊँ।
थिर थोव सुरति से तत्त लखै, सो पकै नभ नाल कँवल के ठाऊँ॥
तेहि के मद्ध मिलै दल द्वार, सो पार चढ़ै दल आठ में आई।
जहँ जोति को बास अकास के पास, सो तत्त के पार से सार दिखाई
पुनि स्रुति सैल से खेल चढ़ै, नव लाख कँवल के दल के माईं।
ता मेँ लखै रबि चंद की संध, सो तारा अनेक अकास सुहाई॥
पुनि ता के परे दल सहस कँवल, सो जल मेँ जानि निरबान के ठाईं।
ता के परे जल कोर के घोर, सो अविगति काल ने जाल बिछाई॥
ता पै फटिक सिला पै मिला, नभ स्याम को बास बसै येहि माईं।
आगे चली सुनि साखि अली, सो आतम ताल के तट मेँ आई॥
ता के परे दल दोइ कँवल, सो सुन्न प्रमातम बास कराई।
ता के परे सत सब्द का बास, सो चढ़ी सत सूरति सब्द मेँ आई॥
ता के परे दल चारि कँवल, सो साहिब सत्त पुरुष कहलाई।
ता के आगे की गैल की सैल कहौँ, खिरकी बिन द्वार मेँ पार है भाई॥
जहाँ निःअच्छर नाम के पार, सो सार अनाम का धाम न ठाँईं।
सूरति सैन की चैन कहौँ, पल माहिँ पिया पद आवै न जाई॥
सुन जोग न ज्ञान बैराग नहीँ, तप संजम ध्यान की कौन चलाई।
सूरति सैल करै असमान, सो फोड़ निसान को पार चढ़ाई॥
जो कहौँ मत संत को अंत नहीँ, सो वही घर संत बसैँ नित जाई।
जहँ काल निरबान की गम्म नहीँ, तहँ केवली काल परे मुख जाई।
कोइ सूरति राह चढ़ै सोइ संत, सो पंथ पिया तुलसी को कहाई॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा धर्म बिचार, जैन सार सगरो कह्यौ।
कुलकर जुगल्या लार, नभ राजा और ऋषब सब ॥१॥
सार सवैया माइँ, गाइ भेद बिधि सब कही।
जस जस जैन जनाइ, जो उत्पति सुनि सब भई ॥२॥

सास्तर संध बिचार, बिधि पुरान मत देखि कै ।
धर्म जैन जस कार, पुनि अगार तुलसी कही ॥३॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा सुनि मन बात बिचारी । तुलसी कही जैन से न्यारी ॥
संत मता है अगम अपारा । स्रावग जैन धर्म से न्यारा ॥
हम ने जुगल्या प्रथम बताया । ता के परे भेद नहिं पाया ॥
और कुलकर नभ राइ बखाना । हम आगे का मर्म न जाना ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जुगल्या प्रथमहिं कौन बनावा । कहौ उन तन कैसे कर पावा ॥
तन बिन देंह कौन बिधि आवा । ता कौ पहिले कौन बनावा ॥
तन तत पाँच कहाँ से अइया । सो धर्मा बिधि बरनि सुनइया ॥
पाँच तत्त बिन कैसे कहिया । तत्त बिना कैसे बिधि भइया ॥
पिंड ब्रह्मंड धरती आकासा । केहि बिधि भया कहौ परकासा
पाँच तत्त जब कहँ से आये । कौन जुगल्या जबै बनाये ॥
कर्म धर्म कछु हते न भाई । तब ये जीव कहाँ से आई ॥
सो घर हम से भाखि सुनावै । तब तुलसी के मन मैं आवै ॥
पद निरबान कहौ तेहि भाई । ता की बिधि कहौ कौन बनाई ॥
या की बिधी कहौ समझाई । पद निरबान कहाँ से आई ॥
नहिं निरबान हता जब अंडा । तब को हता परे ब्रह्मंडा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मानै जान, या के आगे भिनि कहौ ।
हता नहीं निरबान, सो बिधि बरनि सुनाइये ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता। आगे कहौं बिधी बिख्याता ॥
छींक होत उपजे सुत नारी। कन्या पुत्र कहो बिधि सारी ॥
कहँ से आये कहाँ पुनि गइया। इनकी रचना केहि बिधि भइया

॥ सोरठा ॥

कहो धर्मा समझाइ, या के आगे को हता।
उन तन कौन बनाइ, भाखो या की आदि सब ॥

॥ चौपाई ॥

और आगे बिधि पूछौं भाई। पूजा तुम ने भाखि सुनाई ॥
अष्टक जल चंदन तुम कहिया। और नैवेद्य पुष्प बिधि लइया ॥
केवली केवल की कही साखी। कहो का की पूजन उन भाखो ॥
तब केवली प्रतच्छ रहाई। मूरति बिधि जब हती न भाई ॥
उन पूजा कहो किन की कहिया। मूरति खोज तबै नहिं रहिया ॥
तब पूजा कहो केहि की भाखी। या को भेद बतावो साखी ॥
नायक[1] मूल बंदना कीन्हा। तुम पाहन पूजा कस लीन्हा ॥
उन कछु और भेद कहि भाखी। सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
कही धर ध्यान देख उन चाखा। तुम पाहन पूजा कस राखा ॥
अपने घर का भेद न जानी। औरन से कहो ज्ञान बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कहो बखान, पाहन पूजा कस करो।
नायक[1] मूल बिधान, ता की पूजा बिधि कहो ॥

॥ चौपाई ॥

तप संजम उपवास बताई। जो त्यागै सो पावै भाई ॥
तप कर राज मिलै पुनि जाई। राज भोग पुनि नर्क समाई ॥
कष्ट फल पावै पुनि भोगा। परै चारि गति उपजै सोगा ॥
इंद्री दवन उपास कराई। बार बार भौसागर आई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नाइ के" है।

इंद्री भोग करै पुनि सोई । अस बिधि इंद्री संजम होई ॥
जीवन मुक्ति पलक मैं पावै। सो संजम हमरे मन भावै ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी। ऐसी बिधि कोइ कहिये भाखी ॥
एक पहर मैं मुक्ति बतावै। सो सतगुरु मोरे मन भावै ॥
आदि और अंत पलक मैं पावै। सारा भेद नजर मैं आवै ॥
जब देखैं हम अपने नैना । तब मानैं सतगुरु के बैना ॥
कष्ट करै तप बन के जावै। मरे गये का खोज बतावै ॥
ऐसी झूठ बात नहिं मानैं । देखा परै सुनै जो कानै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी धर्मा सोँ कही, कर्मा सुनियो बात ।
दोइ मिलि भेद बतायऊ, कर्मा धर्मा साथ ॥

॥ चैापाई ॥

कर्मा धर्मा भेद बताई । ये बिधि तुम्हरे सास्तर गाई ।
या से हम कछु भिनि दरसाई। ता का भेद कहैा ,समझाई ॥
तुम्हरे मत की पूछैाँ बाता । ता की प्रथम करैा बिख्याता ॥
ये बिधि भिन्न भाँति कहि भाखी। कर्मा कहैा याहि की साखी॥
या की बिधी बिधी बतलावै । सो सब भेद भाव दरसावै॥
हम जोइ पूछि पूछि बिधि बानी। सो सो सब सब कहैा बखानी॥

॥ उत्तर धर्मा और कर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

कर्मा धर्मा योँ कहि बोले । भेद हमार सबै तुम खोले ॥
सास्तर हमरे जो बिधि गाई। सो तुलसी तुम भाखि सुनाई ॥
या सोँ भिनि हम कहा बतावा। भिन्न भिन्न सब तुम दरसावा ॥
कर्मा धर्मा ये बिधि बोला । बुद्धि हमारि खाइ झकझोला ॥
तुलसी तुम तैा अगम बखाना। नहिं सास्तर नहिं जानै पुराना ॥
पुनि इक भर्म भाव दिल आई। स्वामी तुलसी भाखि सुनाई ॥

तुम तौ मुक्ति आज दरसावा । या कौ भर्म बहुत मोहिं आवा ॥
और सबै भाखी तुम खासी । पुनि इतनो मोरे नहिं भासी ॥
मुक्ति गती तुम आज बतावा । सो नहिं जैन मते में गावा ॥
चौथे काल मुक्ति बतलावै । पंचम काल जैन नहिं गावै ॥
स्वामी तुलसी यह बिधि कहिये । ता में मुक्ति आज बिधि पइये ॥
ऐसी कौन जो बिधी कराई । ता सें आज मुक्ति गति पाई ॥
जो जो तुम ने भेद बखाना । सो तो हम सुपने नहिं जाना ॥
जो जो सास्तर कहै पुराना । सो तुम मुख से करी बखाना ॥
सो साँची सब मन में आई । चित में खूब खूब ठहराई ॥
तुम ने आगे भेद बखाना । हम पुनि परे कछू नहिं जाना ॥
ये तो सत्त सत्त कहि भाखी । मुक्ति आज होइ कहिये साखी ॥
हम तुम्हरे चरनन बलिहारी । कहा धर्मा हम सरन तुम्हारी ॥
हम अजान कछु बूझि न बाता । तुम कही आदि अंत बिख्याता ॥
मुक्ति भाव मो को दरसावो । मोरे दिल का भर्म नसावो ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा अस बिधि बोल, स्वामी दीन दया करौ ।
मुक्ति बिधी गति खोल, भाखि अगम गम सब कहौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहत बुझाइ, कर्मा धर्मा सब सुनौ ।
आगे कहौं लखाइ, मुक्ति बिधी दरसाइ कै ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन अगम सँदेसा । आदि अंत दरसाऔं देसा ॥
प्रथम रहे इक पुरुष अनामा । चौथे पद के पार ठिकाना ॥
जब नहिं रहे गगन आकासा । चंदा सूरज नहिं परकासा ॥
धरती अगिन न पवन निवासा । पानी जगत रहे नहिं आसा ॥

पिंड ब्रह्मंड लोक नहिँ होई । और अलोक बिधी नहिँ सोई ॥
चौथा पद रचना नहिँ ठानी । ता के आगे पुरुष अनामी ॥
तासु लहर सत साहिब भयेऊ । सत्त नाम संतन ने कहेऊ ॥
या की बिधी बिधी गति गाई । बिन सतसंग नहीँ दरसाई ॥
होइ सतसंग कहौँ सब लेखा । खुले नैन हिरदे से देखा ॥
तीनौँ लोक पार है चौथा । ता के परे अनामी सो था ॥
तासु लहर उपजा सत नामा । चौथे पद की रचना ठाना ॥
ता से भये सोला निरबाना । जिन मँ एक की करौँ बखाना ॥
सोला निरगुन है निरबानी । निराकार जाही को जानी ॥
जोति निरंजन सोई कहाई । ता को संत काल गोहराई ॥
सास्तर नाम कहै निरबाना । सोई जीव को काल निदाना ॥
जा ने जग जम जाल पसारा । जगत थापना कीन्ह बिचारा ॥
दस औतार जाहि के चीन्हो । ब्रह्मा बिस्नु महेसा तीनो ॥
जिन ने भाखा बेद बिचारा । जग मँ फैला काल पसारा ॥
पूजा पत्री नेम अचारा । देवल पूजा बिधी सँवारा ॥
संजम और उपवास बतावा । ता मँ सकल जीव उरझावा ॥
ये निरबान काम अस कीन्हा । मुक्ति राह का भेद न दीन्हा ॥
मुक्ति काल चौथे बतलाई । पंचम काल जो दीन्ह छिपाई ॥
सास्तर अस पुनि कीन्ह पुराना । धर्म चलाइ जीव उरझाना ॥
ये सब भेद कहा हम जानी । यह बिधि जैन धर्म निरबानी ॥
सोई काल सब जाल बिछाई । सत्त पुरुष की राह न पाई ॥
सत्त पुरुष का भेद नियारा । जहँवाँ संत करैँ दरबारा ॥
संत सरन जो प्रानी जावै । ता को संत राह बतलावै ॥
धर्मा कर्मा चक्रत भयेऊ । ये तो अगम गाइ गति कहेऊ ॥
बिन्न सतसंगति पावै नाहीँ । तुलसी कहै सबै गोहराई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त बिचार, संत भेद न्यारा कहैं ।
सो पहुँचै वहि द्वार, अगम सार तेहि लखि परै ॥१॥
मुक्ति कहैं निरबार, संत चरन लागी रहै ।
फिरै संत की लार, करै संत निरबार जेहि ॥२॥

॥ चौपाई ॥

संत सुरति से चढ़ैं अकासा । गगन फोड़ि वो करैं निवासा ॥
पाँच तत्त का वहाँ न बासा । चंद सूर जल पवन न स्वाँसा ॥
पार परे सत पुरुष अकेला । संत सुरति नित करती सैला ॥
जो कोइ दीन लीन होइ आवै । ता को सतगुरु राह बतावै ॥

॥ दोहा ॥

मुक्ति कहैं समझाइ, संत चरन डोलत फिरै ।
सो आदरैं न ताइ, पाइ लगन लागी रहै ॥

कहै तुलसी सुन मुक्ति बखाना । धर्मा कर्मा सुनियो काना ॥
मुक्ति संत की निस दिन दासी । परी रहै चरनन के पासी ॥
संत जिवत दरसावैं जाई । सतसँग करै बहुत लै लाई ॥
तुम कहो पंचम काल न पावै । चौथे काल मुक्ति को जावै ॥
अब तुम सुनियो चित्त लगाई । तुम्हरे सास्तर संध लखाई ॥
महाबीर तीर्थंकर कहिया । बरस अठारासै तेहि भइया ॥
जेहि तुम कहो मुक्ति को गयऊ । मुक्ति पाइ तीर्थंकर भयऊ ॥
जेहि तुम कहो मुक्ति गति गाई । पंचम काल मुक्ति कस पाई ॥
तुम कहो आज मुक्ति नहिं जाई । तो उन ने कहो कहँ से पाई ॥
सो उन को तीर्थंकर कहिया । पंचम काल मुक्ति कस भइया ॥
या की बिधि मन माहीं पेखो । सास्तर संध जाइ कै देखो ॥
अपनी भूल न बूझो भाई । मुक्ति भई सो कहो सुनाई ॥
आज मुक्ति ततकालहि पावै । संत चरन में जो लै लावै ॥

॥ शरण में आना कर्मा और धर्मा का ॥

॥ छंद ॥

तुलसी यह भाखा सुनि सब साखा, कर्मा धर्मा दीन भये ।
इन कही बुझाई सब बिधि गाई, भिन्न भिन्न दरसाइ दये ॥१॥
हमरा मत भाखा दीन्ही साखा, सास्तर बिधि बिधि साखि दई ।
हमरे मन मानी बहु बिधि जानी, सत्त सत्त सब तत्त कही ॥२॥
झूठा जंजाला सब बिधि काला, हम अपने मन जानि लई ।
तुलसी तुम स्वामी सत्त बखानी, धर्मा कर्मा चरन लई ॥३॥
चरनन लिपटाने तुम को जाने, दीन जानि अब सरन लई ।
स्वामी मति बूझा आँखी सूझा, पूजा दूजा दूर भई ॥४॥
तुलसी प्रतिपाला होउ दयाला, करौ निहाला सरन लई ।
प्रभु दाया कीजै सरनै लीजै, दीजै चरन मति नाहिं बही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी देखि बिहाल, तुरत निहाल ता पर भये ।
सुरति सैल बतलाइ, तब जिव की संसय गई ॥१॥
धर्मा कर्मा जाइ, तुरत सीस चरनन धरे ।
लीन्ही अज्ञा पाइ, उठे धाइ घर को चले ॥२॥

करिया नामी जैन स्त्री का तुलसी साहिब के दर्शन को आना और शरण लेना ।

॥ चौपाई ॥

धर्मा कर्मा मारग जाई । कासी नगर लौटि कै आई ॥
अपना अपना मारग लीन्हा । अपने भवन गवन जिन कीन्हा ॥
कर्मा घर इक नारि सयानी । पूजै साध महातम जानी ॥
जैन धर्म में बहुत मलीना । सुनि कर बात कान उन दीन्हा ॥
भोर भये देखौं कब चरना । दीन होइ जाऔं उन सरना ॥

करिया नाम नारि कर होई । कर्मा कही दीन जिन रोई ॥
बिरह माहिं जिन राति बिताई । भोर भये उठि कै चल धाई ॥
सखि सोइ साथ जात को लीन्ही । पाँच नारि मिलि चलीं अधीनी ॥
पूछत पूछत मारग जाईं । पाँच पचीस मिले मग माहीं ॥
कोइ न सुनै बात दै काना । पूछै तुलसी केर ठिकाना ॥
पूछत पूछत हिरदे भेटी । जिन पुनि जाइ बताई कूटी ॥
कुटी आइ चरनन उन लीन्हा । दीन डंडवत बिनती कीन्हा ॥
मैं तो सरन तुम्हारे स्वामी । चरन देहु मोहिं अंतरजामी ॥

॥ दोहा ॥

नारि दीन तुलसी लखी, बोले बचन रसाल ।
हीन दीन जेहि देखि कर, दरसन दिये बिसाल ॥

॥ चौपाई ॥

करिया देखि तुलसी अस कहिया । कहौ कहाँ सोँ आवन भइया ॥
पुरुष नाम तेहि सखी बताई । कर्मा नारि दरस को आई ॥
तुलसी दीन हीन जेहि जानी । करिया पूछ बचन मन मानी ॥
हाथ जोरि करिया कहै स्वामी । जग संसार भाव भ्रम खानी ॥
जीव गती की राह बतावो । जग मैं आइ महा दुख पायौ ॥
तुलसी कहै जगत सुख भारी । काहे उदास भई तुम नारी ॥
कन्या पुत्र सकल परिवारा । सुख संपति भोगो तुम सारा ॥
करिया कहै इक अरज हमारी । या जग सँग संसार दुखारी ॥
तन बिनसै जैसे जल ओरा[1] । जग जम जाल करत है जोरा ॥
तन सराय दिन चारि बसेरा । या मैं कोऊ न काहू केरा ॥
धन संपति दिन चारि बिलासा । पुनि तन छूटि झूठ सब आसा ॥
ऐसे या जग का ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
जैसे रंग पतंग उड़ाई । हवा जात तन जैसे जाई ॥

---

(१) ओला ।

ये तन मन दिन चारि निवासा । छूटै तन जमपुर मँ बासा ॥
भाई बंद सकल परिवारा । त्रिया पुत्र सब झूठ पसारा ॥
या के सँग बूड़त जग जाना । छूटै तन फिर नर्क समाना ॥
ये जग संग रंग भँग जाना । आदि अंत नहिं मिलै ठिकाना ॥
या से साध संग सुखकारी । ऐसे ज्वाब दीन्ह तेहि नारी ॥

॥ दोहा ॥

करिया कहै स्वामी सुनौ, झूठा जगत पसार ।
लोभ मोह मद फँसि रहे, क्यों कर उतरै पार ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी करिया बहुत भुलाई । ता के मन मँ एक न आई ॥
पहिले जगत भाव दरसावा । ता के मनहिं झूठ सब भावा ॥
ऐसी नारि पोढ़ जब जानो । मन तेहि केर मरम पहिचानो ॥
बुद्धि सुद्ध सीतल चित गाता । हित कर बचन प्रीति की बाता ॥
बिरह भाव बिधि हिरदे भीनो । ऐसो नारि पार रस चीन्ही ॥
ऐसा तोल बोल जब जाना । तब तेहि सगरा भेद बखाना ॥
गुप्त भेद सत सत दरसावा । ता कर हिया उमँगि अस आवा ॥
दीन्ही सुरति संध तेहि हाथा । अज्ञा ले पुनि नायौ माथा ॥
संग सखी सब अचरज लाईं । कौन बस्तु येहि कान सुनाई ॥
घट का चार बसेरा पाई । पुनि सिर नाय पाँय घर आई ॥
कर्मा नारि पूछ बिख्याता । कहौ कहाँ गइ कौने साथा ॥
तब करिया बरतंत सुनावा । तुलसी बरनन बिधी बतावा ॥
सुनि कर्मा मन भयो अनंदा । अब तोर छूट काल कर फंदा ॥
करिया संग सखी इक जैनी । ता कर नाम रहै पुनि सैनी ॥
तुलसी दरस गई दरबारा । पुरुष भेद सुनि पायौ सारा ॥
सुना पुरुष तेहि भर्म समाना । नारि गई घर भया बिराना ॥
पुरुष नाम है कालू जेही । नग्र लोग कहि बरजत तेही ॥

कालूं नारि धाइ धमकाई । ये फकीर ढिंग जान न पाई ॥
कालू कहै मोर दुखदाई । जक्त लोग थूकै मुख माई ॥
मोरी पाग आब[1] तैं खोवा । अस कहि धाइ धाइ कै रोवा ॥
पाड़ पड़ोसन अस समझावै । अब यह कहूँ जान नहिं पावै ॥
सब घर टेरि टेरि कह दीन्हा । घर बाहर इन जान न दीन्हा ॥
निकर सकै नहिं बाहर जाई । घर मैं बैठि हिये दुख पाई ॥
तुलसी ज्ञान तेहि हिये समावा । कर तुलसी तुलसी गोहरावा ॥
पुनि तेहि नारि कार एक कीन्हा । हेमा कहार बुलाइ उन लीन्हा ॥
तेहि सन कहि तुलसी बिधि सारी । दरसन करौं स्वामी दरबारी ॥
वा को दिये टका दुइ चारी । गये तुलसी जहँ कुटी सँवारी ॥
हिरदे अहीर मिल्या तेही बाटी । हेमा ताहि भेंटि चढ़ि घाटी ॥
जिन सैनी बरतंत सुनाया । हिरदे चल ता के घर आया ॥
सैनी हिरदे से लै लाई । स्वामि कुटी मोहिं देव बताई ॥
ता के जाइ मैं परसौं पाँई । दरसन मिलै और नहिं चाही ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै सुन बात, सैनी साबित धीर धर ।
ये सब जगत लबार, या से बच करि चालिये ॥

॥ दोहा ॥

सैनी मन धीरज नहीं, बिरह बिथा की लार ।
सार भेद मो से कहौ, तब दिल समझि सिहार ॥१॥
हिरदे कहै सैनी सुनौ, सूरति देउँ लखाइ ।
लै लगाइ ऊपर चढ़ौ, निज घर अपना पाइ ॥२॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे तेहि को सुरति लखाई । पुनि उठि कै अपने घर आई ॥
तुलसी से सब कथा सुनाई । सुनि तुलसी कै मन सुख पाई ॥

---

(१) आबरू ।

एक दिवस ऐसी बिधि भयऊ । सैनी करिया के ढिंग गयऊ ॥
करिया ने अस बचन उचारा । तुलसी पै चलिहैं दोउ लारा ॥
प्रात राति चलिहैं दोउ संगा । तैं अपना चित करै न भंगा ॥
समझ बूझ अपने घर आई । चलने की बिधि मति ठहराई ॥
निस पुनि बीत गई अधराती । पुनि दोउ उठि चालीं सँग साथी॥
पहुँचीं तहाँ कुटी निज साजा । तुलसी तुलसी करै अवाजा॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, अर्ध राति कस आइया ।
करिया कहि बिख्यात, सैनी के सँग मैं चली ॥

॥ चैापाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम बाता । कस आई तुम आधी राता ॥
करिया सैनी कहै कर जोरा । तुम्हरे दरसन के मन दैारा ॥
अब इक अरज सुनो हो स्वामी । तुम मोहिं दीन्ह सुरति सहदानी॥
सुरति सैल हम निस दिन पाला । सो तुम सुनियो दीनदयाला ॥
दृग द्वारे दीसै इक खिरकी । ता मैं होइ सुरति मोरि सरकी॥
चढ़ि गइ चटक जाइ वहि द्वारा । फटिक सिला के होगइ पारा॥
वहँ जो कैातुक देखा जाई । सो स्वामी सब भाखि सुनाई ॥
तहँवाँ लोक अलोक समाना । ता का कहिये कैान बिधाना ॥
ता के परे अधर रस देखा । नहिं तहँ लोक अलोक अलेखा ॥
जो निज नैन निरखि कै जानी । मुक्ती भरै वहाँ कै पानी ॥
अस अस कहत रात गइ बीती । मन परतीत काल सोँ जीती ॥
भोर भयो जब आज्ञा लीन्ही । सूरति उठी गवन तब कीन्ही॥
करिया सैनी चरन पखारी । आज्ञा लेकर भवन सिधारी ॥

॥ सोरठा ॥

गईं भवन के माहिं, तुलसी सब्द निरखत चलै ।
उठै घोर घर माहिं, ता मैं निस दिन बसि रहै ॥

॥ चौपाई ॥

करिया सैनी घरहि सिधाईं । अपने अपने मंदिर आईं ॥
निस दिन उठै गगन घनघोरा । ता मैं अटकि रहै मन मोरा ॥
कर्मा धर्मा रहे पुनि दोई । भोर भये उठि पहुँचे सोई ॥
तीजे सेख तकी उठि धाये । तीनौं मिलि तुलसी पै आये ॥
बैठे भेद भाव सब चीन्हा । तीनौं बात आपनी कीन्हा ॥
धर्मा कर्मा भेद बतावा । निज निरबान भेद हम पावा ॥
सो निरबान पार इक द्वारा । निरखा फटिक सिला के पारा ॥
जहँवाँ देखा पुरुष नियारा । ता की सोभा अगम अपारा ॥
ता का भेद निरबान न पावै । नैन सौं देखि नजर मैं आवै ॥
कर्मा धर्मा बोले बोली । गुप्त राखि परगट नहिं खोली ॥
दोउ मिलि भाखी अस अस बाता । तुलसी समझि लीन्ह बिख्याता ॥
सेख तकी उठि कै तब बोला । अपनी बिधी बात सब खोला ॥
खुदावंद इक अरज हमारी । मैं मुरीद मुरसिद की लारी ॥
फजल नजर मेरे पर कीजै । मेरी अरज चित्त मैं दीजै ॥
बंदे ने बकसीसी पाई । सो हजरत मैं कहौं सुनाई ॥
एक रोज फजल अस कीदा । रूह चढ़ गई अगम के दीदा ॥
चौथा तबक देख वहँ जाजा । जहाँ नबी की उठै अवाजा ॥
रूह दौड़ पट अबरा तोड़ा । चौथा तबक रूह से फोड़ा ॥
लै लगि जाइ लाह के माहीं । साहिब रब्ब बसै तेहि ठाँईं ॥
चूँ बेचूँ बेज्वाबी साँईं । वो साहिब दिल अंदर पाई ॥
खुद खुदाइ वो मालिक प्यारा । मुहम्मद खुदा दोऊ से न्यारा ॥
अल्ला नबी रसूल न जाना । चौथा तबक से अधर ठिकाना ॥

॥ सोरठा ॥

तकी तका निज खेल, मुरसिद तुलसी सौं कहै ।
यहि बिधि कीन्ही सैल, सो अदबुद अंदर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तकी सुन मुरसिद प्यारे । मिहर फजल से जाइ निहारे ॥
हर दम रूह लहर लहराई । बिरह भाव हर वक्त सताई ॥
रूह लिपट लिपट तेहि बूझै । साम सुबह कुछ और न सूझै ॥
दम दम बिरह लहर अकुलानी। जेहि बिधि मीन भुलानी पानी ॥
अस्त रबी जस कँवल बँधाना। चंदा अस्त कमोदनि जाना ॥
चंदा अस्त बीत जब जाई । तब वा को कहँ बिरह समाई ॥
ये जहान खिलकत है अंधा । बिरह भाव बूझै कोइ बंदा ॥

॥ सोरठा ॥

कमोदनी बिलखाइ, चंद अस्त आसिक गये ।
बिलखै बिरह बेहाल, चंद देखि निस हरखही ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी दिल बिरह समानी । आवै न बात नैन बहै पानी ॥
दम दम बिकल खुदाइ पुकारी । तन मन सुध बुध सकल बिसारी ॥

॥ शेर ॥

बेहोशिये आदम से, वह ख़्याल जुदा है ।
बाहर जो है मुहम्मद, अंतर में खुदा है ॥

॥ सदा[1] ॥

ऐ बेहोश प्यारे तैं यार बिसारा ।
खिलक़त का खेल सबै झूठ पसारा ॥ १ ॥
इक पल में फ़ना होत देख जक्त असारा ।
इन नैनों से देख तेरा कौन है यारा ॥ २ ॥
अपनी तू आदि देख कहँ से आया ।
उस यार को बिसार के लै कहँ को लाया ॥ ३ ॥
हम ने दिल बीच यार अंदर पाया ।
उस बिरहिन के तन में रोम रोम में छाया ॥ ४ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सदा नहीं है ।

वो मरती बेहाल पिया पिया पुकारै ।
तन मन में नहिं होश नहीं बदन निहारै ॥ ५ ॥
ऐसी बेहोश सहै सूल कटारी ।
जैसे तन बीच सेल तेग़ा मारी ॥ ६ ॥
ऐसी बिरहिन के बीच बिरह सँवारी ।
सोई बिरहिन तो लगै पिउ को प्यारी ॥ ७ ॥
जा का यह हाल सोई अधर सिधारी ।
तुलसी सो नारि भई जग से न्यारी ॥ ८ ॥

॥ ग़ज़ल १ ॥

अरे ऐ तक़ी तकते रहो, मुर्शिद ने दस्त पंजा दिया ।
बेहोश बिरह बिरहिन लिया, पिय पीर की बातैं कहा ॥१॥
अरे ऐ शिताबी आ पिया, बिरहा सरप मुझ को डसा ।
निसरै न चंदा जाय के, सूझा नहीं नैनन किया ॥२॥
चंदा बेदरदी तैं हुआ, दरदी कमोदिन क्या किया ।
हर दम बिरह में हूँ बिकल, चंदा बिना दम दम मुआ ॥३॥
बिरहिन पिया बेहोश है, तन मन बदन सूझै नहीं ।
बूझै चशम बिन क्या कहै, दिल हेर रहम-दिल दोस्त है ॥४॥
हर वक़्त हाज़िर मैं खड़ी, नैना नज़र नदियाँ बहीं ।
याँ कोई मेरा महरम नहीं, अब तो चरन मैं आ पड़ी ॥५॥
आशिक़ इश्क़ हर दम लहर, दिल से जुदा दरदी हुआ ।
कहौं क्या जो सिर खटकै जुवा, हर दम हिये बिच मैं लहर ॥६॥
इस इश्क़ में ग़ाफ़िल फिरौं, कहुं बस नहीं बेहोश हौं ।
दम की ख़बर कुछ ना रहै, अब तो दिलै बिच मैं मरौं ॥७॥
पल पल इसम दिल यों किया, ये तलब के ताईं चहौं ।
तुलसी तक़ी खुब समझ के, तब यार का मारग लिया ॥८॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

अरे ऐ तक़ी दीदार दिल, दिल दिल दिलों बिच तिल में दिल।
नैना नज़र से आन मिल, खिलखिल खुशी दिल कर मियाँ॥१॥
चल गैल गेंद तक आज पिल, ऐसे हिये बिच आन हिल।
झोका न दे दर्दी ज़लल, अरे हाल मिल फिर ना निकल॥२॥
दिल दूर से दरदी फ़ज़ल, इस राह से पहुँचै मँज़ल।
अरे बूझ ले सूझै अदल, उसकी मेहर दिल में शकल॥३॥
मन मार हो दिल में कुसल, प्यारा अधर आवै अजल[1]।
ये वक़्त फिर आवै न कल, पानी बिना पावै न थल॥४॥
देखो नज़र कोइ ना अचल, भल भल भला सोई सथल।
तुलसी तक़ी मुर्शिद से मिल, कर दोस्ती फिर बेख़लल॥५॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

तिल में नक़ल न्यारी अक़ल, मुर्शिद शकल रूह राह चल।
चल आज मिल पावै असल, पी प्यार मिल सोवै अचल॥१॥
नल राह रल गुरले कँवल, पावै तु फल होवै सुफल।
अरे ऐ मुसाफ़िर जल्द चल, होगा वहाँ तुझ पर फ़ज़ल॥२॥
अज आज अल कूकै कँवल, स्वाँसा निकल हर दम ख़लल।
झल झिल झिलल आमिल अमल, पल पल परे पर पाझिलल॥३॥
तक़ी जो तुल तुलसी अतुल, देखौ ज़लल ये जहान फल।
कुछ ना असल हम हैं अबल, आख़िर निकल न्यारा हुआ॥४॥

॥ रेख़ता[2] ॥

दिल दिल हिया हुलसै पिया, दीदा लहर हर दम मेहर।
पाऊँ खुशी आशिक़ रहूँ, दिल से रहम-दिल यारिया॥१॥
मेरे मियाँ मैं प्यारिया, तन मन बदन सब वारिया।
बदनाम सुद्ध बिसारिया, रहुँ लै लपट नैनों जिया॥२॥

---

(१) अजल (अरबी शब्द) = तुर्त। (२) यह रेख़ता, मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

माँगूँ मेहर कीजै किया, इस इश्क़ से आशिक़ लिया।
लागी रहूँ हर दम हिया, माना मना सब कुछ दिया ॥३॥
पाऊँ मेहर महलन रहूँ, आऊँ अटारी कर कहूँ।
बिजली अँध्यारी सम चहूँ, उमगै कड़क बदरी सहूँ ॥४॥
चुनरी रँगीली रँग चुवा, पानी घटा हर दम धुआँ।
कोइ ना अकेलो लार लै, हर दम मियाँ मनुआँ मुआ ॥५॥
ख़िलक़त ख़लक़ थूकै सुवा, तन मन बदन हारी जुआ।
पौढ़ो पलँग हर वक्त सुवा, जागूँ मेहर माँगूँ दुआ ॥६॥
अरे ये अधर आदर करौ, ये जक्त की जाली जरौ।
भावै नहीं ज़ेवर ज़हर, तुलसी तक़ी ख़िलक़त मरौ ॥७॥

॥ दोहा[१] ॥

तुलसी तकी निहार, निकर न्यार पारै हुआ।
खुद खुदाइ की लार, जग जहान सगरा सुआ ॥

॥ छंद[१] ॥

तुलसी तक पाया अगम लखाया, गिरा गजल सोइ भाखि कही ॥
सूरति चढ़ि जागी अगम को भागी, लखा अलख की आदि भई ॥
देखा सब न्यारा अगम पसारा, मुरसिद ने जद राह दई ॥
तकी तलब बुझानी प्यारा जानी, खुद खुदाइ की राह लई ॥
मुरसिद मत पाया दस्तन आया, फजल मेहर की मौज भई ॥
रूह चढ़ी असमाना फोड़ निसाना, देखि आदि की अादि कही ॥

॥ दोहा ॥

तकी तलब मुरसिद भरी, तुलसी पीर हमार।
दस्त फजल अपना करौ, रहम रब्ब दरबार ॥
मुरसिद फजल गुलाम पर, करौ रहम-दिल प्यार।
अबै हुकम मुझ पर करौ, अज्ञा होइ दीदार ॥

---

(१) यह दोहा और छंद मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं।

॥ चौपाई ॥

तुलसी हुकम तकी को दीन्हा। पुनि चलि कै मारग उन लीन्हा॥
मारग चलि पुनि कासी आये। अपने घर को आन सिधाये॥

॥ दोहा ॥

कर्मा धर्मा अरु तकी, करिया सैनी नार।
बस्तु पाइ मारग गहे, दीन्हा पंथ लखाइ॥

सम्बाद माना, नैनू, स्यामा, पंडितों के साथ।

॥ दोहा ॥

नैनू पंडित और सब, स्यामा सब मिलि झार।
कहैं भेद तुलसी सुनौ, तुम कीन्हा झूठ पसार॥

॥ सोरठा ॥

नैनू गुसा गुहार, हार हिये मन तमक से।
बोला बचन बिकार, तुलसी तुम मिथ्या कही॥१॥
स्यामा सोच बिचार, अनल झार हिये उठत जिमि।
क्रोध कुबुधि की लार, लटो लटी कर कर कही॥२॥
माना मान अपूर, झूर झूर बोलै सबै।
बुधि बल मत का कूर, चूर अंग अज्ञान मैं॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनू स्यामा यों कर बोले। नाक फुलाइ बचन अस खोले॥
नैन सुरख और मूछैं मोड़ी। भुजा चढ़ी पुनि भौहैं टेढ़ी॥
मुख सों कड़कि स्वाल अस डारा। तुलसी तुम से करिहौं रारा॥
तुलसी कहौ आदि विख्याता। नैनू पूछै सब बिधि बाता॥
बेद पुरान आदि गति गावौ। और ब्रह्मा की आदि बतावौ॥
सिव स्वामी अरु बिस्नु बिचारा। कहौ आदि रचना बिस्तारा॥
भये भगवान दसौ औतारा। और बैराट का कहौ पसारा॥
ब्रह्मा कहौ कहाँ से अइया। उन रचना कौने बिधि करिया॥

सातौ दीप और नौखंडा । केहि बिधि रचा सकल ब्रह्मंडा ॥
तब साधू तुम पूरे ज्ञानी । आदि अंत की करौ बखानी ॥
स्रावग तुरक मता दरसावा । ये गरीब को ज्वाब न आवा ॥
हम पंडित बिद्या बिधि आगर[1] । बेद बिधी से कहौ उजागर ॥
हम सँग जीति जाव गुरुज्ञानी । तुम्हरा साध मता तब जानी ॥
बिना पुरान ज्ञान कहँ पावा । बिन सास्तर कहौ कहँ से आवा ॥
बेद बिना काहू नहिँ पावा । या के परे कोऊ नहिँ गावा ॥
ब्यास मुनी जो पुरान बनाये । नारद सुकदेव को समझाये ॥
राम कृष्न बिधि भाख्यो भेवा । जोगी ऋषी मुनी सब देवा ॥
सब उठाइ अपना मत ठानै । बेद बिधी बिन हम नहिँ मानैं ॥
सब पंडित मिलि टेकी टेका । बिना निसा नहिँ मानै एका ॥
होहोकार सबन बहु कीन्हा । कासी माहिँ रहन को दीन्हा ॥
कौन मते का साध कहावै । सब को झूठ झूठ बतलावै ॥
यह पुनि साध कहाँ से आवा । कौन गुरू यह ज्ञान पढ़ावा ॥
नैनू नैन गुसा भरि लाये । सरक सरक हमरे ढिग आये ॥
कह तुलसी तुम कहौ जवाबा । अब कस मौन बैठि मोरे बाबा ॥

॥ दोहा ॥

नैनू पंडित तमक सेँ, कह तुलसी से बात ।
इक इक बिधि बतलाइ दे, नहिँ होइ है उतपात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

कह तुलसी नैनू सुनौ, मोरी मनिहौ बात ।
पूछा सोई बताइहौँ, जो चित बसै बिख्यात ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी ज्वाब धीर सेँ दीन्हा । सुनौ भेद भाखौँ मैँ चीन्हा ॥
भाखौँ आदि साध गति न्यारी । नैनू बूझै बुधि अनुसारी ॥

(१) श्रेष्ठ ।

कह तुलसी सुन नैनू पाँडे । पंडित सुनौ सबै चित माँडे ॥
कैान बेद की आदि बखानौं । पंडित कहौ सोई मैं मानौं ॥
बेद चारि ब्रह्मा निज कीन्हा । पंचम सुषम बेद को चीन्हा ॥
छठवाँ प्रसंगै बेद कहाई । वा की बिधी सुनौ हो भाई ॥
चारि बेद जो गुप्त रहाई । ता मैं कागद लगै न स्याही ॥
ता को भेद बेद नहिं जानै । ता के परे कहे को मानै ॥

॥ सोरठा ॥

बेद दसौ बिधि गाइ, का की पूछौ आदि तुम ।
सो मैं देउँ बताइ, नैनू स्यामा भाखिये ॥

॥ चौपाई ॥

तब नैनू कुछ ज्वाब न दीन्हा । मैान रहे कुछ बोल न कीन्हा ॥
तुलसी दसौ बेद बिधि गाई । कैान बेद की आदि बताई ॥
और ब्रह्मा की आदि बखानी । ब्रह्मा अनेक भये उतपानी ॥
कइ उपजे कइ बिनसे भाई । कइ कइ परे कर्म भैा माईं ॥
पूछौ जैान कहौं जेहि नामा । भाखैा सोइ मैं कहौं बिधाना ॥
सिव बिस्नू पुनि भये अनेका । नाम कहौ बरनन करौं जिन का ॥
और भगवान दसौ औतारा । जिन का कहौ कहौं निरवारा ॥
बहुत बहुत औतारी भइया । जेहि पूछौ तेहि की हम कहिया ॥
पुनि बैराट पूछिया ज्ञाना । भये बैराट अनेक बिधाना ॥
फूटै बनै बनै फिरि फूटै । ऐसे अनेक बार पुनि टूटै ॥
जैसे कुम्हरा घड़ा बनाई । फूटै घड़ा काम नहिं आई ॥
झूठा अस बैराट बनावा । ज्यौं बाजीगर आम लगावा ॥
आम लगाइ जगत दिखलावै । पुनि कैाड़ी माँगन को आवै ॥
रूप बैराट अनेकन कहिया । पुनि पुनि नास सबन को भइया ॥
पुनि पुनि आवै पुनि पुनि जाई । ये सब हैं परलय के माईं ॥
जिन के भये दसौ औतारा । अंधा जग तेहि कहै करतारा ॥

कर्म बंध वे उपजे आई । पुनि पुनि उपजै पुनि पुनि जाई ॥
कइ बैराट नास ह्वै गइया । औतारी कैसे कर रहिया ॥
ता का नाम कहो भगवाना । आये पुनि पुनि बहुरि नसाना ॥
नासपालबिधि इन की होई । और बैराट नसे सब कोई ॥
ब्रह्मा नाभि कँवल से भाखो । फिरि फिरि नास भयो पुनि ता को॥
ब्रह्मा बिस्नु की कहौं बुझाई । नसि बैराट येहू नसि जाई ॥
चारि खानि के जीव बिचारा । इन का कोन करै निरबारा ॥
मरिहै धरती पवन अकासा । पानी मरै अगिनि को नासा ॥
ऐसे सब बैराट नसाना । सो ब्रह्मा का कोन ठिकाना ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ दोहा ॥

नैनू कहै तुलसी सुनौ, सब बैराट नसाइ ।
भगवान रहै इक बृच्छ पै, जब जल बास रहाइ ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै जल रहै निदाना । अछै बृच्छ पर श्रीभगवाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुम कहो जल तत रहै निवासा । तो बैराट कहाँ भयो नासा ॥
जल के जीव जलहि में होई । जल तत जीव जगत रहा सोई॥
रहै भगवान और कोइ नाहीं । तुम अस कहि बिधि भाखि सुनाई ॥
नौलख जोनि खानि जल माहीं । जल रहिया वे कैसे जाहीं ॥
पिरथी बिन जल कैसे रहिया । पंडित यह बिधि बरनि सुनइया ॥
अछै बृच्छ रहै जल जाना । ता पर सैन कीन्ह भगवाना ॥
या की बिधि बिधि कहौं बुझाई । पंडित सुनियो चित्त लगाई ॥[1]

(१) यह चौपाई मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

॥ प्रलय की सवैया १ ॥

बाम्हन बेद बताइ कहैं, भगवान महाप्रलय सैन कराई ॥
भये तत नास बैराट अकास, अछैबट बृच्छ से पात के माईं ॥
आतस पिरथी जो पवन नहीं, तब थो न कछू जल जलहिं बताई ॥
ये बिधि भाखि बिचारि कहैं, तौ कहौ थल बिन जल कैसे रहाई
नीर रहै जल जीव सभी, सो पिरथी भये बिन नीर न भाई ॥
बैराट बिनास तो ब्रह्मा को नास, तो बेद बिनास भयौ जल माईं ॥
कागद स्याही न कलम बची, तुलसी तब की बिधि कौन सुनाई ॥

॥ सवैया २ ॥

महा परलय जल बेद कहै, सुन भेद बिना सब झूठ कहानी ॥
पाँचहि तत्त बैराट नसौ, और ब्रह्मा नसौ नसो बेद की बानी ॥
नाद गये नस बेद बहे, जब कौन कही बिधि बात बखानी ॥
ज्ञान बिचार से बूझि कहौ, तब सूझि परै हिये आँखि निसानी ॥
नीर भयौ जल तत्त रह्यौ, पिरथी बिन तत्त रह्यौ कस पानी ॥
पिरथी भई जुग तत्त सही, पिरथी और नीर के तत्त में खानी ॥
जो कोइ जानि बयान करै, भगवान को नाक में स्वाँस समानी ॥
स्वाँस बसे तत तीन फँसे, सो अकास रहे बिन स्वाँस न बानी ॥
चारिहि तत्त रहे रस मध्य, तौ अगिनि कहौ बिधि कैसे नसानी ॥
पाँचोइ तत्त को ठाट रह्यौ, बैराट नसौ कहौ कैसे बखानी ॥
तुलसी तत तोल के बोल कहै, तिन को हिये आँखि से भाखौ बखानी ॥

॥ सवैया ३ ॥

बास बैराट भयौ तत नास, सो पाँच को बास न स्वाँस रह्यौ थो ॥
आदि अकास को भास नसौ, पिरथी और पवन निवास नहीं थो ॥
और अनल जल रह्यौ कछु नाहिं, यह बोल रह्यौ जाको बास कहाँ थो ॥
तुलसी जब की बिधि बात कहौ, जब कागद स्याही न बेद रह्यौ थो ॥

॥ उत्तर पंडित ॥

॥ सवैया ४ ॥

बाम्हन ज्वाब दियौ तुलसी, परलय जल और रहै कछु नाहीं ॥
यहि बिधि बेद बताइ कहै, सोइ स्वाँस मैं बेद भयौ सो बताही ॥
सबही बैराट नसै कोइ नाहिं, जल बृच्छ भगवान सो पात के माहीं॥
और कहूँ कछु रहत नहीं, सोइ स्वाँस मैं बेद रहै बतलाहीं ॥
तुलसो सुनि कै मन मौन गही, सुन बोल बैराट मैं स्वाँस नसाही

॥ सवैया ५ ॥

पवन रही जोइ प्रलय कही, ये तो बिधि बात मिली नहिं भाई ॥
अकास और स्वाँस सब तत्त रहैं, सोइ मत्त येही बिधि बेद बताई ॥
नास भये कोइ नाहिं रहै, जब जोइ रह्यो जाके पार सुनाई ॥
पंडित तोल न बोल कही, तुलसी चुप बैठि न बात बताई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सवैया ६ ॥

पंडित मौन कहै तुलसी, अब भाखि कहौं सुन भेद बताई ॥
नास अकास पवन्न पिरथी, जल नास अनल्ल न कोइ रहाई ॥
ब्रह्मा और बेद बैराट नसौ, सिव चंद न सूर न तारे तराई ॥
निरगुन नास निवास नहीं, सोइ सरगुन सृष्टि की कौन चलाई ॥
ये लखि भेद कहै तुलसी, पुनि परलय भइ ता को लेख लखाई ॥

॥ सवैया ७ ॥

आदि अनादि अगाधि बिधी सुन, याद करि ले कहौं महाप्रलय गाई॥
प्रथम पवन कौ भास नस्यौ, पुनि नीर नस्यौ मिलि स्वाँस के माईं॥
नीर औ स्वाँस मैं मन अगिनी, चलै तीनों भास अकास मैं जाई
चारिहि तत्त के मत्त मिलै, पुनि पिरथी नसी वोहि बास मैं आई
पाँचहि तत्त कौ नास भयौ, नासि आइ समाने अलख के माईं ॥
आदि अलख और जोति नसी, सो बसे अविगत्ति मैं जाइ जो भाई ॥

अविगति नास की बात कहौं, नसि जाइ कै हंस मैं बास कराई ॥
आतम हंस प्रमातम बंस, सो ये दोउ नसि गये सुन्न के माईं ॥
सुन्न नसी और धुन्न नसी, सोइ जाइ लसे दोउ सब्द के माईं ॥
सब्द का नास कहौं पुनि बास, सो सत्तपुरुष मैं जाइ समाईं ॥
सत्तपुरुष कैा नास नहीं, सुन महा प्रलय बिधि ऐसी बताईं ॥
कोटि प्रलय बिधि आदि अनादि, सो सत्तपुरुष पै एक न जाईं ॥
ता के परे पद आदि अनाम, सो संत बसैं वोहि धाम के माईं ॥
तुलसी निज देखि कै बास बिधी, सोइ पास अनाम के संत समाईं

॥ सवैया ८ ॥

बिस्व बैराट हता नहिं ठाट, सो ब्रह्म की बाट कैा घाट कहाँ थो ॥
जीव नहीं तब सीव नहीं, पति पीउ के प्यार मैं जीव बसो थो ॥
जहँ काल कराल की जाल नहीं, तब साह की कोठी मैं माल धरो थो ॥
पिंड ब्रह्मंड न अंड हतैा, तब जीव अजीव न खानि परो थो ॥
जब ब्रह्मा न बेद न खेद हतैा, तब आयौ अभेद न मारे मरो थो ॥
तोल कहै तुलसी निज कै, जब जक्त के जीव को सार कहाँ थो ॥

॥ सवैया ९ ॥

अंड ब्रह्मंड बैराट न पिंड, अखंड जो ब्रह्म की बाट बताऊँ ॥
जीव अजीव न ब्रह्म हतैा, जब जोइ हतैा ता कैा भेद सुनाऊँ ॥
वोहू नहीं कछु और कहो, सुन और से भिन्न का भेद लखाऊँ ॥
आदि न अंत कहै सोइ संत, सो पंथ परे पर पार दिखाऊँ ॥
तुलसी तब की बिधि बात कहूँ, जब कोइ न थो जा के रूप न नाऊँ

॥ सवैया १० ॥

अब सत्तहि सत्त कहौं मत मूल, नहीं अस्थूल न नाम कहायौ ॥
आदि अनादि की आदि कहौं, सो अगाध उपाध जो एक न गायौ ॥
आदि पुरुष निःनाम अनाम, सो ठाम न ठौर न धाम कहायौ ॥
तास हिलोर भया इक सोर, सोर लहरि समुद्र की खाइ कहायौ ॥
खाइ का बयान कहौं सत नाम, सो धाम रहै सतलोक मैं आयौ ॥

नाम निअच्छर की लघुता, रँग ता से भये सोला ब्रह्म जनायौ ॥
तुलसी बिधि ब्रह्म की आदि कही, अब ब्रह्म भयौ जग जीव जो भायौ ॥

॥ सवैया ११ ॥

निरगुन सोला को साखि कहैाँ, सोइ बास बसै सत दीप के माईं
निरगुन एक की नेक कहैाँ, बिधि बेद कहै परमातम ताईं ॥
सोइ परमातम सुन्न बसै, ता को धुन्न से आतम जीव कहाईं ॥
मान सरोवर घाट बसै, येही आतम जीव को बाट बताईं ॥
आतम तत्त तमातम मारग, तत्त भये अविगत्ति कहाईं ॥
तुलसी बिधि बात निहारि कहै, सो पुकारि पुकारि कै कहत सुनाईं

॥ सवैया १२ ॥

अविगति रीति करी जग प्रीति, सो ध्यान से जीति कै मान बढ़ायौ ॥
सत्त पुरुष की डोरि गही, सो पुरुष के अंस से जीव जो आयौ ॥
जीव के तेज से जोति भई, जिव जोति मिले भगवान कहायौ ॥
ता को बैराट कहै नर अंध, सो फंद गुना गुन तीन मैं गायौ ॥
अब तत्त की साखि कहैाँ बिधि भाखि, सो लाग की लाख कौ ताख बनायौ ॥
कुंभ के उद्र अकास औ स्वाँस, अकास जो तीनोइँ तत्त मैं आयौ
पाँचहि तत्त भये बिधि एक, सो याहि कैा नाम बैराट कहायौ ॥
अकास के नूर से सूर भयौ, तत तारे के बंद से चंद चलायौ ॥
सब ही बिधि बंद बैराट बनौ[1], बिधि भूलि पिया चित नेक न लायौ ॥
तुलसी जब की नहिँ बात लखी, जब जाही मैं नाम अलख्य कहायौ ॥

॥ सवैया १३ ॥

अलख निरंजन नाम सोईं, जिन जोति से भोग कियौ भग जाईं
तीनिहि बुंद के तीनि भये, सोइ ब्रह्मा बिस्नु महेस ह भाईं ॥
पहिले जग जीव अलख्य हतौ, गुन तीनि मैं मन सो लख्य कहाईं
तुलसी बिष भास मैं बास बस्यौ, सो फँस्यौ बिधि बेद से खानि मैं आईं ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "बनौ" की जगह "नसैा" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ सवैया १४ ॥

चारोइ बेद की आदि कहौं, पुनि पंचम स्वाँस सुषम्म से आयौ ॥
बेद सुषम की छाया लई, ता से ब्रह्मा ने चारोइ बेद बनायौ ॥
षटवाँ सोइ बेद प्रसंग जोई, सो आये सुषम्म प्रसंग से गायौ ॥
ये षट बेद का भेद कहो, सो रहे पुनि चार सो संत बतायौ ॥
चारोइ बेद की आदि कही, सोइ कागद स्याही न लेख लिखायौ
सुनो दस बेद कहै तुलसी, सो कहो पुनि पंडित कौन बनायौ ॥

॥ सवैया १५ ॥

लख्य रहा गुन तीनि गहा, सो पलक[1] में आ कियौ बास बसेरो ॥
ऐसे बैराट भयौ सब ठाट, सो घाट तीनौं गुन बाट में घेरो ॥
रजो कहुँ ब्रह्मा सतो कहुँ बिस्नु, कियौ तम संकर साज घनेरो ॥
भया भगवान बैराट बिधान, सो माया की चाट में काल को चेरो
चंदा रबि नैन नहीं सुख चैन, सो राहु बिमान करै नित फेरो ॥
देखि दुखी मन राम फिरै, गुन गोरस खानि में कामना पेरो ॥
तुलसी बिधि आदि बिख्यात कही, भगवान नसौ नहिं कोन्ह निबेरो ॥

॥ सवैया १६ ॥

चारोइ खानि भयौ भगवान, सो याही से नाम अनेक कहायौ ॥
काल बली कियौ जाल छली, सोइ बाँधि चले जो अनेकन आयौ
जोगी जती जग ज्ञान मती, सोइ सीता सती और राम को खायौ
ऋषि मुनि रोवैं सीस धुनी, और ब्रह्मा बिस्नु महेस चबायौ ॥
तुलसी तत छान बिचार कहै, जब जोइ बच्यो जा को संत बचायौ ॥

॥ सवैया १७ ॥

पंडित भाखि कहैं बिधि ब्रह्मा ने, चारोइ बेद बनाइ लिये हैं ॥
साम जजुर जो भये हैं लघू, ऋगु बेद अथरवन चारो किये हैं ॥
येहि बिधि जगत सुनाइ कहैं, सो बनाइ के गाइ जनाइ दिये हैं ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "पलक" की जगह "खलक" है।

झूठी जो बात करैं जग साथ, अनाथ अनारी ने मान लिये हैं ॥
ये भौ खानि करी तुलसी, सो बेद ने मारि कै धानि किये हैं ॥

॥ सवैया १८ ॥

पंडित बेद का भेद कहौं, जा की उतपत्ति भाखि कै साखि सुनाऊँ ॥
जक्त रहा पीछे बेद भया, जा की आदि कहौं बिधि बात लखाऊँ
पिरथम बैल किसानी हती, धरती बन बोइ कै सन्न[1] कहायौ ॥
ता की रसी कर टाट बन्यो, फिर कागदी कूटि कै घोइ ले आयौ ॥
पुनि चूने दिवाल पै लेप कियौ, सो भयौ बिधि कागद लेख लिखायौ ॥
तिली जो तेल कियौ पुनि पेल, सो तेल से काजल स्याही बनायौ
स्याही भई पुनि कलम सही, लिखि ब्रह्मा ने याही से बेद सुनायौ
तुलसी तत तोल बिचार कहै, जग बेद के भेद से खानि मैं आयौ

॥ सवैया १९ ॥

पंडित झाड़ की आड़ लई, कहैं ताड़ के पात पर जात लिखो थो
येहि बिधि बेद बखान करैं, सो अजान न जानै जो बेद कहाँ थो
अस्थावर बावर बृच्छ हते तरु, तीस जो लाख मैं कौन नहीं थो ॥
अठरा बन भाँति की जाति सभी, सो सभी संसार को कार सही थो
उषमज अंडज पिंड हतो, अस्थावर चारि चौरासी बनो थो ॥
पात प्रथम्म भयौ तरु कौ, तुलसी पीछे पात के बेद भयौ थो ॥

॥ सवैया २० ॥

बेद मथौ जिन पुरान कथौ, बहु सिम्रित सास्त्र को ज्ञान हतौ ॥
नेम अचार अचारज रीति, सो जीतै नहीं जम खायौ खतौ ॥
परमांहि हंस बँधे जड़ संग, सो ब्रह्म अरंग न जानौ मतौ ॥
जगत अजान रहा रस खान, सो माया के मान मैं रंग रतौ ॥
तुलसी जब जानि कै मौन गह्यौ, सो कह्यौ पद साखी मैं सारो पतौ

॥ सवैया २१ ॥

अरे मन मान अचेत अजान, सो ऊसर खेत मैं काह मिलैगो ॥
ये जग संग पतंग कौ रंग, सो माते मतंग से धानी पिलैगो ॥

---

(१) सन।

ये जम जाल महा बिकराल, सो खालहिं खैंचि के भूस भिलैगो ॥
तुलसी तब की बिधि याद करो, तन छूटै न दैंही से माल मिलैगो

॥ सवैया २२ ॥

तेल फुलेल करै रस केल, सो माया के फेल मैं सार भुलानै ॥
मात पिता सुत नारि निहारि, सो झूठ असार को देखि भुलानै॥
ये दिन चार बिचार न लार, सो भूलि असार के संग तुलानै ॥
तासे कहै तुलसी निज कै, तन छूटि गये जम देत उलानै[1] ॥

॥ सवैया २३ ॥

दृष्टि पसारि के देखि तुही, जग माहिं रह्यौ कोइ बूझ अमाना ॥
पंडो भभीषन भीम बली, गये खोज गली केहि राह समाना ॥
रावन लंकपती पै हती, सो रती भर संग न देखि निदाना ॥
तू केहि लेखे मैं देख कहौं, तुलसी सतसंग से होत न हाना ॥

॥ सवैया २४ ॥

किये तन काज की लाज करो, सो बनाइ कै साज ले तोहि पठायो
ता को बिसारि दियो मतिमंद, जगत के फंद मैं बंद बँधायो ॥
अंत जो कैान बिचार करो नर, जा ने रच्यो ता की याद न लायो
लेत हिसाब बनै नहिं ज्वाब, सो ख्वाब के खेल मैं तोहि भुलायो॥
तुलसी तब बात बिचार पड़ै, जब आनि चढ़ै जम छाती पै धायो

॥ सवैया २५ ॥

सुनो सतसंग का रंग कहैाँ, सो उतंग अमोल जो मोल न आवै ॥
कहैं सबही सब संत पुकारि, बिना सतसंग नहीं कछु पावै ॥
संत मिलै सतपंथ चलै, सो कुपंथ कलह सब दूरि बहावै ॥
ज्ञान बिबेक बैराग लखै, मन मान मनी बिधि सारी नसावै ॥
संत मता कछु और लखै, सो पकै गुरु मारग मैं सुति लावै ॥
तुलसी तत तोल बिचार कहै, सो अमोल पिया घर सहज समावै

(१) उलहना।

॥ सवैया २६ ॥

सतसंग में भेद अभेद मिलै, सुति सैल दुर्बीन को माँजा करै ॥
मन की मत भार निहार लखै, सो पकै सुति घाट पै आनि धरै॥
पच्छिम बास की आस तकै, नित नेम सुती सत चाह करै ॥
येही बिधि डोर लगी निस बास, पिया पद खेल कै माल भरै ॥
तुलसी निज सूझ कै बूझ परी, जिन को पति प्यार से कार सरै॥

॥ सवैया २७ ॥

संत मता अज आद अलग्ग,[1] बिलग्ग[1] बिधी कोउ नेक न जाना
राह रसी रजु[2] पोढ़ करै, लागी डोर की मोर पै सुरति ठिकाना॥
पील पै लील को खील करै, सो अपील अकास को मारि निसाना
मानसरोवर हंस बसै, तेहि माहिं अन्हाइ के देस दिखाना ॥
तुलसी तत आतम भेद कही, पुनि आगे चले पर और कहाना ॥

॥ सवैया २८ ॥

मानसरोवर पार चली, ता की आली सुनौ सत सैन लखाऊँ ॥
जाहि सखी सुन सुन्न सुमारग, पार कै ब्रह्म परमातम नाऊँ ॥
जाहि चढ़ी सत सुरति सुहागिल, पाइ लखै ब्रह्मंड कै ठाऊँ ॥
जीव चराचर जाति सभी, सब देखि निहार कै भाख सुनाऊँ ॥
तुलसी गुरु से सुति राह लखो, बिधि सोई अगोचर ताहि बताऊँ॥

॥ सवैया २६ ॥

सन्त पुरुष को भेद कहौं, सतलोक में जाहि कै बास बसेरो ॥
संत सबै रस राह लखैं, सो चखैं वोहि मारग साँझ सबेरो ॥
सहस कँवल्ल चढ़ै चक देस, सो जाइ लखै जा में जोति को डेरो ॥
ताहि के पास निरंजन बास, सो स्वाँस बसै वोहि धाम के नेरो॥
ता के परे दल दोइ के पास, अकास के पास अलख्य को पहरो॥
ताहि के मध्य भरन्न के पार, अवीगत काल के जाल को घेरो॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अलग्ग" की जगह "अलाप", और "बिलग्ग" की जगह "बिलाप" है जो समझ में नहीं आता। (२) रस्सी।

ता के परे तट ताल मैं हंस, सो बंस अवीगत है तेहि केरो ॥
ता के परे पर बेनी का घाट, प्रमातम ब्रह्म सो सुन्न मैं हेरा ॥
आगे सखी बिधि बात कहौं, दल चारि परे सतलोक निबेरो॥
ता के परे खिरकी से नियार, सो साहिब सत्त पुरुष है मेरो ॥
जा के रोमहि रोम ब्रह्मंड औ अंड, सो कोटि रबी जा के रोम उजेरो ॥
सोइ सतनाम कहो सत साहिब, ता को भयो तुलसी निज चेरो ॥

॥ सवैया ३० ॥

एक अगत्त अगाध अनाम, सो धाम न गाम न ठाम ठिकाना ॥
जहँ लख्य अलख्य कैा खेल नहीं, सो खलक्क बिचारे ने काहे को जाना ॥
ता की बिधी कोइ संत लखै, सो अपेल अकेल का रूप न नामा ॥
आतम हंस प्रमातम बंस, सो इन दोउ नहिं यह देस पिछाना॥
जहँ ब्रह्म न जीव अजीव को बास, सो चंद न सूर जमीं असमाना ॥
पिंड ब्रह्मंड जो तत्त नहीं, जहँ सत्तहि लोक नहीं असथाना ॥
सो साहिब सत्त के पार बसै, सो अगार अनाम जो संत समाना ॥
जा की बिधि तुलसी लखि पाई, सो देखि अनाम को जानि बखाना

॥ सवैया ३१ ॥

संत का भेद अभेद अपार, सो सार वोही वोहि देस को जानै ॥
सूरति सैल से केल करै, सो अपेल अकेल की साखि बखानै ॥
बेद पुरान नहीं मत ज्ञान, सो जोगी कैा ध्यान न पहुँचै निदानै ॥
ता की कहै तुलसी बिधि तोल, सो संत बिना नहिं भेद पिछानै ॥

॥ सवैया ३२ ॥

नीर निरंजन काल बिधी, सो कराल बसै मन ऐन के माईं ॥
चैन अचैन बिचैन करै, सोइ नीत अनीत मैं देत भुलाई ॥
जगत जहान करै जे हैरान, सो खानि मैं डारिकै घानि पेराई ॥
जो कोइ जानि बिचार करै, सोइ संत के पाँउ परै नित आई ॥
वे सो दयाल करैं प्रतिपाल, सो काल के जाल से लेत छुड़ाई ॥
ये तत बात कहै तुलसी, सो बसी निज सूरति सत्त मैं जाई ॥

॥ सवैया ३३ ॥

गीता की भाखि कहीँ पुनि साखि, सो आँखि से पोथी मैँ देख बिचारो
कहा भगवान अरजुन सुन कान, सो साँचे बिधान को जानि निबेरो ॥
अरजुन ठाढ़ रहो रन माहिँ, सो कैारो को मारि कै राज सम्हारो
अरजुन देखि बिचारि कहै, परिवार मरै ऐसे राज को जारो ॥
येहि बिधि ज्ञान उठो मन माहिँ, सोई धनु बान पलक मैँ डारो ॥
कृष्न कह्यौ पुनि ज्ञान बैराग, सो जोग बिज्ञान बिधी से पछारो
अरजुन भक्त गरीब अजान, सो जानै नहीँ या को फंद पसारो ॥
अरजुन गह्यो जो नहीँ धनुवाँ, सो बताइ त्रिलोकी को डाढ़ मैँ चारो
अरजुन जो देखि भयंक भयो, सो कह्यो बिधि कैारौ को सब्र ले मारो
ये छल दाव दियो धनुवाँ, सो कह्यो अरजुन से मारि बिडारो ॥
तो को कछू नहिँ पाप लगै, सो करै करता कछु तोहि न भारो ॥
येहि बिधि भाखि कही भगवान, सो काटि कै मारि कुटुम्ब सँघारो ॥
धनुवाँ अरजुन्न उठाइ लियो, सो भिड़ो रन खेत कुटुम्ब को मारो
अरजुन जीति गहे जब पाँइ, सो पाप लगाइ कै दूरि निकारो॥
दूरि रहो सिर पाप गह्यौ, सो हत्या को पाप लगो तोहि सारो ॥
जज्ञ करो असुमेद जबै, सो तबै कुल हत्या से होइहो न्यारो ॥
अरजुन जज्ञ कियो मत मान, सो हत्या को पाप भयो नहिँ न्यारो
अरजुन भाखि कह्यौ भगवान, सो देही हिवारे मैँ जाइ कै गारो ॥
पाँचोइ पंडा हिवारे गरे, सो मरे गये नर्क मैँ चारो के चारो॥
जोइ युदिष्ठिर एक बचो, जा को कहल स्वर्ग मैँ भयो सुख सारो ॥
अरजुन मित्र बड़े भगवान, सो मारि कै ताहि को नर्क मैँ डारो ॥
नर्क की जाल भया सो बेहाल, सो काल जो कृष्न ने ऐसे बिडारो
ऐसे कुटिल से प्रीति करी, दुख पाइ कै कर्महि कर्म पुकारे ॥
मित्र बड़े सोइ नर्क परे, सो कढ़े नहिँ कृष्न के भारी थे प्यारे ॥

वोही जो कृष्न को इष्ट करै, सो मती भई भ्रष्ट जो दुष्ट के लारे ॥
प्रतच्छ जो कृष्न ने ऐसी करी, तुलसी कहै मूरति कैसे उबारे ॥

॥ सवैया ३४ ॥

भागवत बूझि बिचार करौ, सो कहै सतसंग से संत हैं न्यारा ॥
आतम ज्ञान की बात कहै, दुतिया असकंध मैं बूझि बिचारा ॥
नेम अचार अनेकन कार, सो झूठि असार को सार निकारा ॥
पुनि जो धर्म अनेकन कर्म, सो जीव को काज न एक सँवारा ॥
भागवत माहिं कहै परसंग, सो नेक बिबेक से देखि निहारा ॥
भये नृगराइ[1] कहैं पुनि गाइ, सो गाइ के गोसठि देत अपारा ॥
देतहि देत जो जनम गयौ, सो भयौ गिरगट जो देंहि को धारा॥
पुन्न जतन्न कियो बहु भाँति, सो कर्म के भोग टरे नहिं टारा ॥
पुन्न से जीव को काज नहीं, सो परे नृगराइ कुए बिच डारा ॥
बाम्हन पुन्न से स्वर्ग कहै, तुलसी सब बात अनीति पसारा ॥

॥ सवैया ३५ ॥

ऊधो के मित्र बड़े भगवान, सो प्रीति करी जा की रीति बखानी
भोजन साथ करैं बहु भाँति, सो ऊधो बिना सुख नेक न मानी ॥
कृष्न गये तजि देंह निवास, सो ऊधो ने रोइ दियौ सोइ जानी ॥
बद्रिका जाइ कै तप्प कर्यौ, सोइ रोइ कै तप को कीन्ह निदानी॥
जो कहुँ कृष्न से मुक्ति हुती, तो करौ तप कष्ट कहौ केहि कामी ॥
तुलसी बिधि बूझि कै बात लखौ, तुम्हरी गति मुक्ति की कैसे बखानी॥

(१) राजा नृग ने जो साठ हज़ार गऊ रोज़ दान देते थे एक गऊ को धोखे में दो ब्राह्मणों को दान कर दिया, जब दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए राजा के निकट न्याव को आये तो राजा सोच में दोनों की बात पर सिर हिलाता रहा जिस पर एक ब्राह्मण ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की भाँति सिर हिलाते हो सो वही योनि पाओगे। इस सराप से राजा नृग को गिरगिट योनि मिली और एक अन्धे कुए में पड़े रहे जब कृष्णावतार हुआ तब श्रीकृष्ण ने अपना चरण छुआ कर उसका उद्धार किया।

॥ सवैया ३६ ॥

भागवत के मत्त की गत्ति कहौं, सो परीछित को सुकदेव सुनाई॥
ब्यास कथे जो पुरान बिधी, ता के पीछे संबाद कहौ कस गाई ॥
ब्यास प्रथम्म अरम्भ कियौ, सुकदेव परीछित ग्रंथ म लाई ॥
पुरान लिखे भये ब्यास मुनी, ता के पीछे परीछित को समझाई
पंडित या की बिधी कहौ भाई, सो तोल कहौ तुलसी को बुझाई

॥ सवैया ३७ ॥

जो तुम पंडित ज्वाब कहौ, सुकदेव सुनावन पीछे गयौ ॥
ब्यास पुरान में पहिले कही, सो त्रिकाल के तेज से भाखि कह्यौ॥
पंडित ता कौ जुवाब सुनो, सुकदेव चले मोह ब्यास भयौ ॥
मोह भयौ सँग लारे लयौ, तबही जड़ बृच्छ ने ज्ञान दयौ ॥
या की कहौ सुन भाख बिधी, सो त्रिकाल कहौ तब काँह हिरानौ
तुलसी तब की बिधि छान कहौ, सोइ जानि परै या की बूझ मिलावौ ॥

॥ सवैया ३८ ॥

एक बिचार की और कहौं, ता की ठीक बिधी बिधि भाखि सुनावा ॥
जबही रच साज बैराट भयौ, तब देव उठावन कैसे कै आवा॥
ता की बिधी को बिचार कहौ, सो पहिले जो देवन कौन बनावा
और पुरान जो और कहै, सोइ ब्रह्मा को कस्यपदेव बतावा ॥
या की कहौ सही कौन बिधी, सो बैराट को देव उठावन आवा
तुलसी बिधि तोल के बात कहौ, जो ब्रह्मा के पुत्र से देव कहावा

॥ सवैया ३९ ॥

पंडित एक बिचार कहौं, जोइ बात सुन्यौ ता को भर्म समाई ॥
कहत तुम्हीं नित बात पुनी, भागवत्त सुनो जिन मुक्ति को पाई
ऐसी बिधी बिधि भाखि कहौ, पुनि वाहू को भूत की जोनि बताई
जोई पुरान सुनै नित कान, किरिया करि वाही को भूत बनाई॥
पुरान सुनै सोइ भूत बनै, भागवत के मत्त की साखि जो जाई ॥
एक बिचार कहौ तुम सार, तुलसी बिधि सहज में भाखि सुनाई॥

॥ सवैया ४० ॥

और जो एक बयान करौँ, सुन पंडित प्रेम से कान लगाई ॥
गऊ करन्न बरन्न कहौँ, धुँधकारी कथा बिधि जाइ सुनाई ॥
भागवत के मत्त की साखि सुनौ, सोइ भूत भयो ऐसो कहत बुझाई
उठै कथा भास फुटै तब बाँस, छुटै तब भूत से मुक्ति बताई ॥
ऐसी बिधी बिधि भाख कहो, ये तो ब्यास लिखी तब ग्रंथ बनाई॥
ग्रंथ लिखे भये ब्यास मुनी, धुँधकारी सुनी जा के पीछे जो जाई॥
ये तो आगेइ ब्यास ने भाखि लिखो, सो पुरान बने जा के पाछे सुनाई ॥
धुंध जो कारी तो पहिले लिख्यौ, सो वा की कहो बिधि मोहिँ बताई ॥
सातहि पोरि को बाँस कह्यौ, सोइ बाँस को भेद बतावो आई ॥
जंगल के बीच मेँ बाँस बसै, की कहो बाँस जो और है भाई ॥
या को बिचार करो मन मेँ, तुलसी कहै बूझ सो सूझ मेँ लाई

॥ सवैया ४१ ॥

एक प्रसंग बिधी बिधि बात, कहौँ सोइ बूझि कै भेद बतावो॥
एक बयान सुनौ सोइ कान, सो गूलर फल ब्रह्मंड सुनावौ ॥
ब्यास कही कथ ग्रन्थ सही, सोइ अंड को गूलर खोज लगावौ॥
कौन ठिकाने को ठाट कह्यौ, सो बैराट भयो ता मेँ भेद सुनावौ॥
ता की बिधी भिनि भाखि कहो, तुलसी हिये आँखि से देखि बुझावौ

॥ सवैया ४२ ॥

बेदांत कहै जग ब्रह्म मई, सो ईसुर कर्म मीमांसा ने गायौ ॥
कथन पातंजल जोग कह्यो, सो बिसेसिक[1] सार समय जो बतायौ
न्याय जो गाइ करतार कहै, सोइ सांख्य ने नीत अनीत सुनायौ
तुलसी षट रीति प्रपंच करी, सो कह्यौ जिन जक्त को जानि बुड़ायौ

॥ दोहा ॥

ज्ञानी पंडित भेष सब, परमहंस ब्रह्मचार ।
ये सब भूले षट महीँ, कर्म भूप की लार ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० और हमारी दोनों लिपियों में "बिसेसर" लिखा है।

परमहंस बेदांत से, ब्रह्म जो कहत लबार ।
पातंजल जोगी ठगे, जक्त मिमांसा लार ॥२॥
ज्ञानि बैरागी पंडिता, समया लिखैँ निहार ।
और कहौ का को कहौँ, बहे भर्म की धार ॥३॥
पंडित भूले बेद मैँ, सास्तर पढ़त पुरान ।
ये गति मति है काल की, बूझै संत सुजान ॥४॥
पंडित बूझौ भेद को, देखि लखौ पद सार ।
लार ग्रंथ पढ़िकै कहौ, ये सब झूठ पसार ॥५॥
अगम निगम से भिन्न है, पंडित लखा न जाइ ।
संत मिलै कोइ महरमी, पल मैँ देत लखाइ ॥६॥

॥ चौपाई ॥

या की पंडित कहौ बुझाई । भया बैराट नास कस भाई ॥
पाँच तत्त का रहा पसारा । नास बेद कस कहत पुकारा ॥
या कौ भाखि सुनावौ लेखा । अस बेदन कस कही बिबेका ॥
या की बिधी बतावौ भाई । जा मैँ लेखा लगै बनाई ॥
या की निसा भिन्न भिन दीजै । पुनि घर गवन आपने कीजै ॥
हम परलय बिधि कही बनाई । या को बूझ समझ मैँ लाई ॥
और अनेक भाँति कहा लेखा । ज्वाब स्वाल लखि कहौ बिबेका ॥

॥ सोरठा ॥

पंडित कहौ बिचार, वार पार परचा लखौ ।
बेद पुरान नहिँ सार, अगम ज्ञान कस लखि सकै ॥

॥ चौपाई ॥

संत मता सुन अगम अपारा । ब्रह्मा बेद न पावै पारा ॥
और बैराट ठाट भगवाना । संत मता उनहूँ नहिँ जाना ॥
संत रीति गति सब से न्यारी । कहि कहि थाके नेति पुकारी ॥
तुम ने बेद बेद ठहरावा । बेद नेति कहि भेद न पावा ॥

साखि ताहि की करौ बखाना । बूझ नहीं हिये तिमिर समाना
जल जल रहा कहौ अस भाई । अस अस बेद कहै बिधि गाई ॥
जल तत रहा बूझ अस ज्ञाना । थल बिन जल केहि बिधि ठहराना

॥ सोरठा ॥

ऐसी बूझ बिचार, लार तत्त जल थल रहा ।
जल थल तत्त मँझार, दुइ तत के जिव सब रहे ॥

॥ चौपाई ॥

नौ लख जीव जाति जल माईं । पिरथी लाख सताइस भाई ॥
ये सब जल थल जीव समाना । अछै बृच्छ कस रहे भगवाना ॥
थल बिन बृच्छ रहा कस भाई । बिन थल बृच्छ बहा जल माईं ॥
और जीव जल माहिं रहाई । अस भगवान रहे उन माईं ॥
थल बिन बृच्छ कौन बिधि रहिया । अछै बृच्छ पुनि जल मैं बहिया
और जीव रहे जल माईं । तस भगवान रहे तेहि ठाईं ॥
ब्रह्मा बेद कहाँ तब राखा । जल मैं कागद रहै न आँका ॥
पुनि आगे का कहौ बिबेका । तेहि पीछे भयो कस कस लेखा
हमरे मन मैं संसय आई । सो नैनू तुम कहौ बुझाई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसी बेद कहत गोहराई । सास्त्र पुरान कहैं सब गाई ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

जल मैं कागद रहा न होई । परलय माहिं बचा नहिं कोई ॥
परलय ब्रह्मा बचा न भाई । ये बेदन कस कस गोहराई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

स्वाँसा माहिं बेद तब रहिया । तिन सब यह बरतंत सुनैया ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

स्वाँसा पवन तत्त जब भयऊ । पवन तत्त जिव जग सब रहेऊ ॥
तुम तौ कहौ पवन तत नासा । जल पुनि पवन तत्त रहा बासा ॥

कस बैराट कहाै तुम नासा । पानी पवन रही पुनि स्वाँसा ॥
आई स्वाँस कस बिना अकासा । या कैा भाखैा भेद खुलासा ॥
बिना अकास स्वाँस नहिं आवै । या की बिधि हम प्रगट सुनावैं ॥
देखैा निरखि गगन को भाई । जहँ से स्वाँस सिमटि सब आई ॥
पिंड ब्रह्मंड बिधि एक बखाना । तन मैँ स्वाँसा गगन समाना ॥
गगन रहै स्वाँसा भइ नासा । बेदन कस कस कहा तमासा ॥
जल पिरथी बिन केहि बिधि रहिये । नैनू या की समझ सुनैये ॥
जल रहिया तुम ऐसी भाखी । स्वाँसा पवन बतावौ साखी ॥
तैा अकास होइहै पुनि सोई । जल पुनि रहै प्रिथी पुनि होई ॥
जल पवना पुनि गगन अकासा । रही अगिनि चारौ मैँ बासा ॥
तुम कहैा पाँच तत्त कर नासा । ये बिधि पाँचैा रहे निवासा ॥
तुम कहिया इक जलहि रहाई । ऐसे बेद कहै गोहराई ॥
पाँच तत्त से जग रहा सोई । कहैा या की कस परलय होई ॥
जल के रहे सभी पुनि रहिया । झूठी सकल बेद बिधि कहिया ॥
एक तत्त कधी रहत बतावैा । पाँच तत्त कधी नास सुनावैा ॥
ऐसा कस कस ज्ञान तुम्हारा । या कर कहैा भेद निरबारा ॥

॥ उत्तर श्यामा पंडित ॥

पाँच तत्त पाँचो मैँ जाई । मरना जीना ना कछु भाई ॥
जल मैँ जल पवना मैँ पवना । गगन मैँ गगन अगिनि मैँ अगिना
प्रिथी प्रिथी मैँ जाइ समानी । ऐसे पाँच तत्त अलगानी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

ये पाँचैा पाँचैा मैँ रहिया । पुनि पुनि नास कैान बिधि भइया ॥
अंडा नसि तत कहाँ समाना । ता का हम से कहैा ठिकाना ॥
कहिये तत्त कैान उपजाई । इन की आदि कहाँ से आई ॥
जब ही ठाट बैराट नसाना । तब तत रहि कहैा कौन ठिकाना ॥

कहौ तत पाँच पाँच मैं जाहीं। मरन जिवन औरै कछु नाहीं ॥
पुनि तेहि पाप पुन्य बतलावा। तुम कहौ कीन्ह दीन्ह तस पावा॥
तीरथ ब्रत सुभ कर्म बतावौ। कहौ उन्हैं पुनि कस कस पावौ॥
पाँच तत्त पाँचौ मैं जाई। पाप पुन्य कहौ कौन भुगाई॥
जज्ञ करै सो स्वर्गैं जाई। पाँच तत्त तौ रहै न भाई॥
पाँच तत्त पाँचौ मैं जाई। स्वर्ग भोग कहै कौन कराई॥
नैनू स्यामा पाँडे भाई। या की बिधि बरतंत सुनाई॥
ये सब ज्वाब बतावौ भाई। तब तुम हम से जाने पाई॥
नैनू मन मैं गुनन बिचारा। या कौ कहा करौं निरवारा॥
बुधि चित मन मैं कछू न आवा। बुधि चित ज्ञान बहुत दौड़ावा॥
एकहु ज्वाब साफ नहिं दीन्हा। बुद्धि गई मानौ मतिहीना॥
बोले न ज्वाब काँप अस आई। या की कौन बिधी समझाई॥
जौन जौन बरतंत सुनावा। तौन तौन सुपने नहिं पावा॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, खोल बुद्धि कछु कछु कहौ।
हिये माहिं खिसियात, सूझ बूझ आवै नहीं॥

सम्बाद तुलसी साहिब और माना पंडित का

॥ चौपाई ॥

पंडित रहैं तीन से साठा। देखे एक एक से भाठा॥
तिन मैं इक पंडित रहे माना। ता घर रहैं बहुत से दामा॥
मन मैं मस्त बिद्या बिधि माईं। बहुत पढ़े मद कहा न जाई॥
माया मद बिद्या मद दोई। ब्राह्मन जाति पाँति मद सोई॥
चारि बरन मैं ऊँच बखाना। ता मद का कहौ कौन ठिकाना॥
माना पंडित का कहौं कैसा। सब भैंसिन मैं मानो भैंसा॥
बोले बचन मान मद मारे। काल न चीन्है साँझ सबारे॥
कासी नगर छत्र कर थापा। मान मई सूझै नहिं आपा॥

ज्ञान बिधी बिद्या बल ठाने। आदि अंत की खबर न जाने ॥
माना पंडित बोले बानी। बेद बिधी इन एक न जानी ॥
बेदन कही आदि चलि आई। ता को छाँड़ि अंत कहँ जाई ॥
बेद से कौन बात है न्यारी। ता को ढूँढै हाथ पसारी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सीतल होई। भाखौं भेद बेद कहै जोई ॥
बाहिर भेद नहीं कछु गावा। बेद कहै हम भेद न पावा ॥
नेतहि नेत बेद गोहरावा। ऐसी कौन बस्तु नहिं पावा ॥
ता कर मन में करौ बिचारी। उन से कौन बस्तु रही न्यारी ॥
निराकार को नेति पुकारा। जोति सरूप होत उँजियारा ॥
ऐसे बेद कहै समझाई। कहै बेद हम भेद न पाई ॥
ता की महिमा साखि बखाना। बेद कहै हम मरम न जाना ॥

॥ सोरठा ॥

माना मन में रोस, तुलसी से पूछै सबै।
आदि जगत की बेद, सो तुलसी बरनन करौ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन माना बाता। बेद बिधी बिद्या बिख्याता ॥
सब पहिले संसार रचाना। ता के पीछे बेद पुराना ॥
अंडज पिंडज उषमज खाना। अस्थावर चर अचर बखाना ॥
चारि लाख चौरासी धारा। जब जग का था सकल पसारा ॥
जा के पीछे बेद रचाना। ता को परथम कीन्ह बखाना ॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

कहै माना तुलसी सुन बानी। ये तो तुम ने कूर बखानी ॥
जग के पीछे बेद बतावा। यह हमरे मन में नहिं आवा ॥
तुम तो कहो जगत है पहिले। पुनि फिर रचा बेद का खेले ॥

ऐसी बात अनीति बखानी । अब सुनियौ हम से सहदानी ॥
कहै बैराट रूप भगवाना । नाभि कँवल ब्रह्मा उतपाना ॥
तिन पुनि बेद चारि रचि लीन्हा । ऋगु और साम जजुर को कीन्हा
और अथरवन कीन्ह बनाई । ता पीछे सृष्टी उपजाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित माना सुन बिधि बाता । या की कहौं सकल बिख्याता ॥
अब मैं कहौं सत्त सत भाई । चित दे सुनियो कान लगाई ॥
अब कहौं अगम निगम गति भाखी । बेदन में मिलिहै नहिं साखी
ब्रह्मा बिस्नु महेस न रहिया । नहिं बैराट निरंजन भइया ॥
दस औतार नहीं थे भाई । पाँच तत्त नहिं देही पाई ॥
आदि अंत मध कछू न होती । अकथ कथा की भाखौं पोथी ॥
अब कहौं आदि अंत की बानी । भाखौं आदि भेद सहदानी ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया । रहै नहीं बैराटी माया ॥
जिन से सत्त नाम भया जाना । चौथा पद सोइ संत बखाना ॥
जहँ सोइ सत्तनाम अस्थाना । सत्त लोक की करौं बखाना ॥
सत्त लोक से निरगुन आया । आदि अंत का भेद सुनाया ॥
जा सुत सोल्हा निरगुन होई । ता की बिधि भाखौं सुन सोई ॥
चंद न सूर गगन नहिं तारा । धरति न पानी पवन अकारा ॥
सेस कुरम नहिं दस औतारा । आदि अंत नहिं कीन्ह पसारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं । बिधि बैराट रचौ नहिं जाई ॥
तब नहिं बेद बेद का करता । रूप रेख बिन रहै अकरता ॥
निरगुन पुत्र पुरुष को सोई । ता कर नाम निरंजन होई ॥
चौथा पद सतनाम दयाला । ता कर पुत्र निरंजन काला ॥
जिन पुनि तप कीन्हा बहु ध्याना । सत्त नाम जिन निजकर जाना
उन माँगा होइ दीन अधीना । तीनि लोक ता कौ पुनि दीन्हा ॥

धरती नीर पवन असमाना । ता से रचिया सकल बिधाना ॥
पाँच तत्त वाही पर आवा । पुनि तिन रचि बैराट बनावा ॥
जोती तेज पुरुष से आई । जीव अंस दै ताहि पठाई ॥
जोती निरगुन के ढिंग आई । रति कर भोग कीन्ह पुनि ताही ॥
तीनि बार रति कीन्हा जाई । ब्रह्मा बिस्नु कीन्ह उपजाई ॥
तीजे संभू छोटे भाई । येही बिधि इनकी आदि बताई ॥
ता पीछे जग कीन्ह पसारा । चारि लाख चैारासी धारा ॥
सृष्टि भई तब अगम अपारा । जोति निरंजन जाल पसारा ॥
सुषम बेद स्वाँसा से आवा । आदि भेद उनहूँ नहिँ पावा ॥
सुषम बेद की छाया लीन्हा । ब्रह्मा बेद बनाइ जो कीन्हा ॥
अब या की मैँ बिधी बताऊँ । चारि बेद की आदि लखाऊँ ॥
जग संसार थपा था पहिले । पुनि फिरि रचा बेद का खेलै ॥
अब या की हम बिधी बताई । माना सुनियौ चित्त लगाई ॥
धरती बैल किसानी होई । सन कर खेत भया पुनि सोई ॥
बृछ बढ़ई जब काटा होई । हल बनाइ धरती पुनि बोई ॥
डारा बीज भयौ सन साजी । रसरी कीन्ह ताहि की भाँजी ॥
भया टाट तब किया बिछाना । सड़ा टाट तब हुआ पुराना ॥
ता को जाइ कागदी लीन्हा । कूट काट कर सूधा कीन्हा ॥
नदी माहिँ पुनि धोय सँवारा । तब कीन्हा ता का बिस्तारा ॥
गाय भैँस जब होइहै भाई । पुनि कागद की बिधी बताई ॥
चूने दिवाल लेप ठहराना । तब कागद पर बेद लिखाना ॥
जग मैँ नद्दी नाला होई । टाट बनाइ कागदी धोई ॥
कागद पीछे बेद लिखाया । सो ता को तुम आदि बताया ॥
तिल्ली तेल पेल जब लीन्हा । रुई कपास की बाती कीन्हा ॥
अगिनि तत्त जब होइहै भाई । दिया बारि काजर भइ स्याही ॥
बन बरुई से कलम कर लीन्हा । ब्रह्मा बेद लिखन जब कीन्हा ॥

चारि बेद की आदि बताई । जो ब्रह्मा से उपजे भाई ॥
ता कर नाम गती गुन गाऊँ । पिरथम साम बेद तेहि नाऊँ ॥
ऋग्ग जजुर कौ भाखि सुनाऊँ। चौथा अर्थ अथरबन गाऊँ ॥
ऐसे चारि बेद बतलावा । ता की आदि बिधी बिधि गावा॥
ता से सास्तर भये पुराना । करमी जीव बहुत लपटाना ॥
पूजैं पानी पत्थर देवा । तीरथ बरत बताई सेवा ॥
ऐसे जीव खानि भरमावा । आदि अंत का मर्म न पावा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, माना पंडित सब सुनो ।
रहा जो होइ सम्बाद, कहौं बहुरि जो फिरि कहौ ॥

॥ छंद ॥

कहौं यह बिधि गाई तुमहिं सुनाई । आदि अंत सब भाख भई ॥
बेदन बिधि चारी कहौं पुकारी । सिव ब्रह्मा की आदि कही ॥
निरगुन मति गाई जोति सुनाई । जो रचना ब्रह्मंड मई ॥
सिम्रित समझाई पुरान सुनाई । अस अस सब की आदि भई॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै माना सुनो, स्यामा नैनू बात ।
तीनौं मिलि यह बिधि कहौ, पूछौं सब बिख्यात ॥

॥ सोरठा ॥

दसौ बेद की आदि, जो तुम से मैं भाखिया ।
कहा पाँच बिख्यात, रहे पाँच सो तुम कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुषम बेद बिधि सबहि सुनाई । साम जजुर और ऋगू बताई ॥
और अथरबन भाखि सुनावा । ऐसे पाँच बेद बिधि गावा ॥

रहे पाँच सो भाखि सुनावैा । तिन की आदि अंत समझावैा॥
और सतनाम आदि हम कहिया। कहैा निरगुन ता से कम भइया ॥
और जोति की बिधी बताई । ब्रह्मा बिस्नु कैान बिधि आई ॥
कैान बिधी से बेद लिखाही । जग तब कागद रहै न स्याही ॥
ऐसी भिन्न भिन्न दरसैहैा । तब तुम हम से जाने पैहैा ॥
सब जग लूटि लूटि कर खाई । अब नहिं छोड़ै तुलसी गुसाँई ॥
नैनू स्यामा माना पाँडे । ये सब कहैा बिधी बिधि माँडे॥
बिन कहे ज्वाब न जाने पैहैा । कासी ढिंढोरा पुनि पिटवैहैा ॥
जग कैा पुन्य दान बिधि साजा। सो सब अपने पेट के काजा ॥
तीरथ थापि चलाई राही । ये सब अपने पेट के ताईं ॥
बितीपात परदोस बताई । ये सब झूठी बात चलाई ॥
एकादसि चैादस और अट्ठमी । ऐतवार मंगल और नैामी ॥
तीज चतुरदसि करवाचैाथी । झूँठे बरत बतावै पोथी ॥
जो कोइ करै बरत से प्रीती । ये सब कर्म खानि की रीती ॥
जो कोइ बर्त राह चलै भाई । पुरखा तास नर्क मेँ जाई ॥
गंगा जमुना चारैा धामा । ये सब जैहैँ भव की खाना ॥
कातिक और बैसाख अन्हावैँ । ये सब नीच जोनि मेँ आवैँ ॥
देवल देव पखान पुजावै । ये सब भैासागर भरमावै ॥
राम राम जो जपै अघाई । जा कैा जनम अकारथ जाई ॥
सिव पूजै और देवी पूजै । नीच होइ नीचा मत सूझै ॥
कथा पुरान जो सुनै अघाई । बार बार भैा भटका खाई ॥
जो जो बाम्हन कहै बिचारा। काल खानि ये जम की जारा ॥
ऐसे पंडित जाल बिछाई । कोई जीव बचन नहिं पाई ॥
अज्ञानी को बरत बतावा । ज्ञानी को पोथी समझावा॥
अस अस पंडित डारी जारा । ता से न उतरै भैा के पारा ॥
ता कैा अब बरतंत सुनाऊँ । भागवत की बिधि मैँ अरथाऊँ॥

पिरथम पंडित योँ कर भाखै। भागवत बिना मुक्ति नहिँ राखै॥
और पुनि भाखि कहै परभावा। जिनजिनकीन्हातिनतिन पावा॥
ऐसो कहि कहि कै समझावे। या बिधि सकल जीव भरमावे॥
माना स्यामा तुमहिँ सुनाई। नृग राजा परसंग बताई॥
ता को पुन बिधि बिधि अनुसरई। प्रात दान गोसठि सो करई॥
तिरपित बाम्हन भोजन देवै। यहि बिधि पुन्य जज्ञ सोइ सेवै॥
ऐसे पुन्य बरत तेहि ठाना। भागवत ऐसी करत बखाना॥
दई गऊ बाम्हन को आई। सो गोसठि मेँ आन समाई॥
राजा भूलि और को दीन्हा। बाम्हन बाम्हन झगरा कीन्हा॥
पुनि तिन स्राप ताहि को दीन्हा। गिरगट देँह राइ ने लीन्हा॥
याही पुन्य की करौ बड़ाई। अंत जनम गिरगट को पाई॥
भोजन पुन्य कीन्ह बहुतेरा। किंचित सँग न चला तेहि केरा॥
इतना पुन्य कीन्ह उन भाई। और गया पुनि अंधा चाही[1]॥
सर्ब गया चौथाई पावे। तौ हमरे परतीती आवे॥
चौथाई मेँ कछु नहिँ पावै। ऐसे बाम्हन पुन्य करावै॥
ऐसा पुन्य कीन्ह तेहि राजा। ता के आयौ कछू न काजा॥
जिन जिन को तुम पुन्य कराई। वे बपुरे कैसे करि पाई॥
जग अंधा तुम हूँ पुनि अंधा। या से मचि गया अंधाधुंधा॥
मूए पुन्य बतावे पावे। कोई मुए की खबर न लावे॥
झूठहि झूठ रचा सब ठाटा। ता से जगत न पावे बाटा॥

॥ उत्तर माना और स्यामा पंडितोँ का

॥ चौपाई ॥

माना स्यामा योँ करि बोले। तौ पुनि रचा झूठ का खेले॥
ब्यास भागवत कही बखाना। सुनै मुक्ति जो होइ निदाना॥
सुनि या की मैँ साखि बताऊँ। सुकदेव कह्यौ परीछित राऊ॥
सपता सात दिवस उन भाखा। भागवत कहै सुनौ तुम साखा॥

(१) अंधा या सूखा कुआ।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भागवत तौ पिरथम्म लिखाना। परीछित सुकदेव नाम बखाना॥
ये पिरथम कहि ग्रंथ बनावा। सुकदेव नृप दोउ ता मँ आवा॥
सुकदेव राजहिं कथा सुनावा। ऐसे ब्यास भागवत गावा॥
ब्यास भागवत लिखी बनाई। पुनि सुकदेव राय समझाई॥
ये तौ ब्यास पहिले लिखि गयेऊ। भागवत मँ बरनन करि कहेऊ॥
को सुकदेव परीछित होई। ता की मुक्ति बताई सोई॥
पहिले ब्यास ने कथा बनाई। पीछे सुकदेव नृपहिं सुनाई॥
सुकदेव कथा सुनावन गइया। तब परीछित की मुक्ती भइया॥
ब्यास मुक्ति पहिले लिखि गाई। ता पीछे सुकदेव सुनाई॥
कौन परीछित मुक्ती पाई। ये तौ बिधी मिली नहिं भाई॥
ब्यास ग्रंथ मँ पहिले गावा। तुम ने ये सुकदेव बतावा॥
वो नृप कौन परीछित होई। ता की ब्यास मुक्ति कहि सोई॥
ये तौ पीछे जाइ सुनाई। ब्यास ग्रंथ लिखि पहिले गाई॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना तुलसी से भाखी। या की बिधी कहौं सुनु साखी॥
थे औतार ब्यास तिरकाली। अगमन कही ध्यान ब्रत ताली॥
या से अगमन भाखि सुनाई। येहि बिधि बयास भागवत गाई॥
जो तिरकाल लखै पुनि भाई। अगम भेद सोइ भाखि सुनाई॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना यह बिधि बरनि सुनाऊँ। या की पहिली साखि बताऊँ॥
महादेव ये मंत्र सुनावा। बीजक पारबती मन लावा॥
सब पंछिन कौ दीन्ह उड़ाई। सुवा अंड इक रहा छिपाई॥

बन पंछी सब जाति उड़ाई । सुवा अंड इक रहा लुकाई ॥
तबै मंत्र इक भाखि सुनावा । पारबती सुनि निद्रा आवा ॥
पुनि सुनि सुवा हुँकारी दीन्हा । महादेव कोप तब कीन्हा ॥
सुवा भागि ब्यास त्रिय गर्भा । गर्भ रहा बिधि भाखौं सर्बा ॥
बारा बरस गर्भ म रहिया । यह पुरान बिधि ऐसी कहिया ॥
गर्भ बढ़ा तिरिया अकुलानी । निकसै नहीं मंत्र बिधि जानी ॥
गये भगवान तीर पुनि ब्यासा । ब्याकुल तिरिया गर्भ तिरासा ॥
सींघ भाव जस राई मेवा । माया भिन्न भये सुकदेवा[१] ॥
नारि उठाइ हाथ मैं लीन्हा । तप को चले कहौं अस चीन्हा ॥
ब्यास मोह उपजा दुख लागा । पुत्र पुत्र कहि पीछे भागा ॥
पुत्र मोह ब्याकुल बहु क्रोधा । तब पुनि कीन्ह बृच्छ ने बोधा ॥
तब तिन का तिरकाल हिराना । गई बुद्धि मति मोह भुलाना ॥
ता को कहो अगम तिन भाखा । बुद्धी गई मोह अभिलाखा ॥
सुकदेव परमहंस नहिं जाना । कस कस कीन्हा अगम बखाना ॥
तिरिया गर्भ पीर के काजा । व्याकुल सोग मोह उपराजा ॥
तिरकाली भगवान बतावो । चौबीसन में भाखि सुनावो ॥
सुन माना यह भेद बताई । सुनि कै समझि लेउ मन माईं ॥
अब परिछित की बूझो बाता । और सुकदेव सुनौ बिख्याता ॥
सुकदेव सप्ता पीछे कीन्हा । परिछित कथा सुनायो चीन्हा ॥
कथा सुनावन पीछे गयेऊ । मुक्ती तो पहिले होइ गयेऊ ॥
ये सब झूठ झूठ सी होई । अस अस समझि परा बिधि सोई
सुने सुने मुक्ती बर होई । तो सब जग बूड़ै नाहिं कोई ॥
सुने सुने मुक्ती जो पावै । गुड़ गुड़ कहे मीठ मुख आवै ॥
ता का मैं बरतंत बखानूँ । पंडित तुम सुनियो दै कानूँ ॥

(१) जितनी देर सींघ की नोक पर राई ठहर सकती है अर्थात तत्काल शुकदेव जी माता के गर्भ से बाहर आये।

माल दिसावर तेजी होई । चिट्ठी मैं लिखि भेजा सोई ॥
चिट्ठी सुनि कर माल लदावा । ता का नफा तिनै पुनि पावा ॥
पढ़े सुने कछु हाथ न आवै । ज्यौं बैपारी रीता जावै ॥
सुनि कर करै सोई है गाजी । सुनि सुनि मरि गये कोटिन पाजी
मुए मुक्ति की खबर बतावै । मूए जनम काग कै पावै ॥
ये पंडित तुम्हरो ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

मुक्ती हमरे हाथ न सोई । जो भगवान करै सो होई ॥
मुक्ती तौ भगवान से पावै । जो कोइ उनके सरनै जावै ॥
हम अपंग मारग नहिँ जाना । पल मैं मुक्ति करै भगवाना ॥

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत कृपालमहं बंदे परमानंद माधव: ॥[१]

हम तो हैँ उनकी सरनाई । तन मन बचन परे उन पाँई ॥
हमरे नेत्र दोइ पुनि होई । प्रभु के नेत्र अनेकन सोई ॥

॥ श्लोक ॥

द्वै द्वै लोचन सर्बानां बिद्या त्रय लोचनं ।
सप्त लोचन ज्ञानीनां भगवान अनंत लोचनं ॥[१]

हम तौ उन चरनन सरनाई । अरजुन ऊधौ पार लगाई ॥
जैसी ऊधौ की उन कीन्हा । हमहूँ सरना उनकी लीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, ऊधौ की भइ सो सुनौ ।
अरजुन सुनौ बिचार, वै लबार कैसो करी ॥

---

(१) यह दोनोँ श्लोक मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ नहीँ हैँ ।

॥ चौपाई ॥

ऊधो के मित्र बड़े भगवाना । एकादस में कीन्ह बखाना ॥
जिन की मित्र भाव की करनी । प्रीति अधिक कछु जाइ न बरनी
जब भगवान धाम कियौ गौना । भाखा ऊधो से कहौं जौना ॥
तुम तप करौ बद्रिका जोई । तब ऊधो ने दीन्हा रोई ॥
जब उन अपने प्रान गँवाये । तब ऊधो तप करने आये ॥
उन को मुक्ति न दीन्ही भाई । तुम पुनि मुक्ति कहाँ से पाई ॥
मित्र प्यार कीन्हा बहुतेरा । नहिं उन उनका कीन्ह निबेरा ॥
जो उन की मुक्ती होइ जाती । तौ तप को जाते केहि भाँती ॥
उन की मुक्ति न कीन्ही भाई । तुम भूले केहि लेखे माईं ॥
और अरजुन की कथा सुनाई । उनके बड़े मित्र थे भाई ॥
उन बंधुन से जुद्ध करावा । बन्धु मराइ पाप सिर लावा ॥
जज्ञ करा पुनि पाप न छूटा । जबै कृष्न की देंही टूटा ॥
उन से कहा हिवारे जावौ । ता मँ देंही जाइ गरावौ ॥
पुनि सो परे नर्क के माईं । गीता मँ देखौ तुम जाई ॥
अरजुन मुक्ति न पाई भाई । माँगौ उन से केहि बिधि जाई ॥
कृष्न काल सब जग को खाई । ता कौ जपौ बहुत मन लाई ॥
ऐसी तुम्हरी मती हिरानी । काल से माँगौ मुक्ति निसानी ॥

॥ दोहा ॥

सुनि पंडित मन मँ गुनो, तुलसी कहत प्रमान ।
ये तौ दरसै यहि बिधी, गीता करत बखान ॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना बोले कर जोरे । ये तौ फुरि आई मन मोरे ॥
ऊधो एकादस मँ गाये । गीता मँ अरजुन समझाये ॥
मुक्ति न भई तबै तप कीन्हा । येहि बिधि से मोहिं भयो यकीना

माना पंडित बिनती लाई। इक संसय मोरे मन आई ॥
भागवत सुने मुक्ति होइ जाई। अस अस साख सनातन गाई ॥
सो तुलसी मोहिं समझ सुनावो। या की समझ बूझ समझावो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना बरतंत बताऊँ। भागवत बिधि सब साखि सुनाऊँ ॥
पहिले पंडित करत बखाना। भागवत मति बिन मुक्ति न जाना ॥
सुनते सुनते जनम बिताना। मुए भूत का किया बिधाना ॥
पुनि घट साध बनायो साजा। तबहुँ न भयौ मुक्ति कौ काजा ॥
किरिया करिके पिंड बनाई। तबहुँ न उन मुक्ती को पाई ॥
गंगा माहिं उड़ाई छारा। तबहुँ न भया जीव निरबारा ॥
दसवाँ करिके मूछ मुड़ावा। तबहुँ न मुक्ति गती को पावा ॥
बाम्हन भोजन पंच खवाये। मुक्ति बाट तबहूँ नहिं पाये ॥
गया जाइ के पिंड सँवारा। तऊ न पाया मुक्ती द्वारा ॥
मास पाख छैमासी बरसी। मुक्ति न भई खानि गति परसी ॥
ये सब झूठ मुक्ति की आसा। मुक्ति रहै संतन के पासा ॥
इतनी मुक्ति जुक्ति बतलावै। तबहुँ न प्रानी मुक्ती पावै ॥
अस बिधि कहै भागवत भाई। मुक्ति बताइ के भूत बनाई ॥
और अनेकन जतन करावै। भौ मैं जाइ मुक्ति नहिं पावै ॥
अस अस भाखा झूठ पसारा। मुक्ति न होइ न होइ उबारा ॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी मुक्ति न पावा। ये पुरान झूठे गोहरावा ॥
सिम्रित सास्तर झूठ बनावा। ये तौ आदि अंत चलि आवा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना सुनियौ काल पसारा। वो दयाल पद इन से न्यारा॥
ब्रह्मा बिष्नु काल की जारा। इन सब कीन्हा झूठ पसारा॥
कर्म कराइ जगत बौराया। ता से आदि अंत नहिं पाया॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै सुनु तुलसी स्वामी। तुम तौ औरइ और बखानी॥
मुख से बचन जोई जोइ भाखा। भिनि भिनि वा की दीन्ही साखा
जो जो मुख से भाखि बखानो। ता की निसा दीन्ह सहदानी॥
जो जो बात कही मुख गाई। सो सो दरपन सी दरसाई॥
एक भरम मोरे मन आवा। ता को स्वामी भाखि सुनावा॥
तीरथ धाम बरत अरु पूजा। या में मो कौ कछू न सूझा॥
पुनि स्वामी इक पूछौं बाता। तीरथ में कछु आवै न हाथा॥
न्हाय धोय कछु हाथ न आया। तीरथ सब बिधि झूठ बनाया॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना तोहि भाखि सुनाऊँ। या की बिधी बिधो दरसाऊँ॥
कर्म ख्याल सब जाल पसारा। इन सँग से चौरासी धारा॥
लोमस ऋषी एक जो भइया। भाखा उन सब बिधि बिधि कहिया॥
उन पुनि तीर्थ बर्त बहु ठाना। तप जप पुन्य अनेक बिधाना॥
पितु से पूछि मुक्ति की बाता। गंगा का फल कहौ बिधाता॥
गंगा का फल भाखि सुनाई। गंगा आदि मुक्ति की दाई॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस इकादस गंगा न्हाया। जा से जोनि मच्छ की पाया।
अनेक जीव मारि मोहिं खाया। ऐसे बहुत बहुत दुख पाया॥

जे जे तीरथ सबै अन्हाये । जल जिव जोनि माहिँ भरमाये ॥
ऐसी कैान कैान बिधि गाऊँ । जल आसा जल माहिँ समाऊँ ॥
ऐसी जुक्ति मुक्ति बतलावाै । भैाजल पार उतरि के जावौँ ॥

(पिता)

॥ चैापाई ॥

लोमस ऋषि यह सुनिये भाई । सेवा ठाकुर कीजै जाई ॥
चरनामृत ब्रत साधो सोई । सहजै में मुक्ती पुनि होई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चैापाई ॥

सहस बरस ठाकुर की सेवा । दूजा जाना और न भेवा ॥
बिधि बिधि ध्यान बिधी से कीन्हा । फल जोनी पाहन की लीन्हा
सेवा सिव कीन्ही बिधि भाँता । फूल पत्र जल अच्छत साथा ॥
येहि बिधि पूजा करी बनाई । अंत जोनि पाहन की पाई ॥
अनेक दिवस पाहन कर आसा । अंत तहाँ पुनि लीन्हैा बासा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की गाऊँ । जेहि पूजैाँ तेहि माहिँ समाऊँ ॥

(पिता)

॥ चैापाई ॥

पूजैा तुलसी प्रीति लगाई । पीपर में जल नाओ जाई ॥
ऐसी भक्ति करै मन लाई । सहजै में मुक्ती होइ जाई ॥
एक दिया तुलसी पै लावै । सो तैा कोटि जज्ञ फल पावै ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चैापाई ॥

सहस तीन तुलसी कैा पूजा । बृच्छ जोनि पाई येही बूझा ॥
पीपर पूजा बरस हजारा । ता की बिधि भाखैाँ निरबारा ॥
कानखजूरा देँही पाई । बार बार भैा में भरमाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

एकादसी करौ तुम जाई । ता से मुक्ति सहज मैं पाई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस बरस एकादसि कीन्हा । अंत जनम माखी कौ लीन्हा ॥
ऐसे बर्त कीन्ह बहुतेरा । ता का सुनु बरतंत निबेरा ॥
पिरथम ऐतवार को कीन्हा । ता से जनम चील्ह कौ लीन्हा ॥
मंगल बहु बिधि बरत रहाई । ता से जनम सुवर कौ पाई ॥
अरु पुनि बरत तीज कौ कीन्हा । कूकर जनम ताहि से लीन्हा ॥
अरु परदोस नेम से कीन्हा । खर कौ जनम ताहि से लीन्हा ॥
बितीपात बिधि से बिधि कीन्हा । जनम जाइ बंदर कौ लीन्हा ॥
नौमी बरत अष्टमी कीन्हा । ता से जनम घूस कौ लीन्हा ॥
अरु अनंत चौदस पुनि कीन्हा । ता से जनम ऊँट कौ लीन्हा ॥
और चतुरथी बरत बखाना । ता से जनम भैंस कौ जाना ॥
और बरत करे झार बनाई । पुनि मुक्ती हम ने नहिं पाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

पुन्य गऊ का सब से भारी । या से मुक्ती होइ बिचारी ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

गऊ दान दीन्हा बहुतेरा । जनम मिला जो बकरी केरा ॥
बाम्हन भोजन दिये अघाई । बिच्छू जनम ताहि से पाई ॥
और अनेक पुन्य बिधि कीन्हा । जा से जोनि जोनि दुख लीन्हा ॥
जो तुम कही सभी हम कीन्हा । मुक्ति न पाई रह्यो अधीना ॥
जो जो मुक्ति जुक्ति बतलाई । सो सो सब मैं कीन्ह बनाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि मैं कहौं बिचारा । संत सरनि से होइ उबारा ॥
तीरथ ब्रत सब झूठ पसारा । नहिं होइहै या से निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, माना पंडित सुन बिधी ।
लोमस ऋषि सम्बाद, तीरथ ब्रत बिधि यों कही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन माना स्यामा और नैनू । ये सब भाखि सुनाऔं बैनू ॥
तीरथ ब्रत का सुनौ बिचारा । लोमस ऋषि बिधि कीन्ह सँवारा ॥
तीरथ ब्रत का ऐसा लेखा । लोमस ऋषि ये सब करि देखा ॥
ये सुन कर पंडित घबराना । ज्वाब न आवै मती हिराना ॥

॥ माना स्यामा और नैनू ॥

॥ चौपाई ॥

तब तीनौ मिलि बोले बानी । ये बातैं तौ अकथ कहानी ॥
हम तौ बेद बिधी मैं भूला । ये सब आहि कर्म बिधि मूला ॥
तुम तौ स्वामी और सुनावा । बेद बिधी को सब समझावा ॥
सब बिधि भिन्न भिन्न कर भाखी । तब सूझा हमरी निज आँखी ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये तुम्हरी कछु भूल न भाई । या की बिधी कहौं समझाई ॥
सत्तनाम इक साहिब स्वामी । सो निज रहै अगमपुर धामी ॥
तिन के पुत्र निरंजन होई । जा ने रची सकल बिधि सोई ॥
ज़ोति अंस स्वामी से आवा । दोनों मिलि बैराट बनावा ॥
आई जोति निरंजन पासा । निराकार जोती को ग्रासा ॥

जब पुनि पुरुष दीन्ह तेहि स्रापा। लच्छ जीव करिहौ नित ग्रासा ॥
जाउ निरंजन होइहौ काला। जग मैं रचिहौ बहु जंजाला ॥
ऐसा ज्वाब पुरुष मुख डाला। भया निरंजन जग मैं काला ॥
तीन लोक मैं रहै समाई। चौथे मैं नहिं जाने पाई ॥
ऐसा स्राप पुरुष ने दीन्हा। काल निरंजन को अस चीन्हा ॥
पुरुष पुत्र जग जाग्रत नामा। ता को हुकम दीन्ह तेहि ठामा ॥
निरंजन काल जोति को ग्रासा। जाहि काटि आवौ हम पासा ॥
जग जाग्रत नख भव पर मारा। पटकि निरंजन जोति निकारा ॥
जग जाग्रत गये अपने धामा। रहिया जोति निरंजन ठामा ॥
दोनोँ भये एक रस राजी। तीन बार भग भोगे साजी ॥
तीन पुत्र ता ने उपजावा। ब्रह्मा बिस्नु महेस कहावा ॥
ब्रह्मा पिता ध्यान को गयऊ। पायौ न पिता चारि जुग भयऊ ॥
जोती मैल काढ़ि जब लीन्हा। रच कन्या गायत्री कीन्हा ॥
कन्या ब्रह्मा लेन पठाई। गायत्री ब्रह्मा पर आई ॥
गायत्री कहै चलिये भाई। माता तुम कैा लेन पठाई ॥
ब्रह्मा कहै कैान बिधि जाई। पिता दरस अजहूँ नहिं पाई ॥
माता सें ऐसी कहौ साखी। परस्यो पिता देख निज आँखी ॥
येहि बिधि हमरी साखि सुनाये। तब तुम्हरे सँग हम चलि जाये ॥
गायत्री अस बचन उचारी। कहिहौ झूठी साखि सम्हारी ॥
चलैा बेग माता पै भाई। माता तुम को लेन पठाई ॥
गायत्री अस बचन सुनइया। तब ब्रह्मा उनके सँग गइया ॥
दोनोँ आये माता पासा। पिता भेद पूछा परकासा ॥
पिता दरस माता मैं पावा। दोनोँ मिलि ये सब्द सुनावा ॥
जोती मन मैं सोच बिचारा। झूठी बातैं करै लबारा ॥
ये तो काल कराल कसाई। वा से बचै कैान बिधि भाई ॥
जानेउ पिता दरस नहिं पावा। मिथ्या साखि भाखि गोहरावा ॥

जोती झलक क्रोध तन तापा। तब पुनि दीन्ह दोऊ को स्रापा॥
गायत्री को स्राप सुनाई। बृछ तन धरौ केतकी माईं॥
ब्रह्मा कुल परपंची जोई। मैला मन बुधि सुधि नहिं होई॥
माता स्राप यही बिधि दीन्हा। माना सुन कर करौ यकीना॥
ब्रह्मा स्राप जो कहूँ बिचारी। सब मिलि कै सुनियौ बिधि सारी
तुम्हरा कुल परपंच दुखारी। मति का हीन लोभ संसारी॥
आगे होइहै साखि तुम्हारी। मिथ्या पाप करै बहु भारी॥
प्रगट नेम जो करै अचारा। अंतर मैल पाप बिस्तारा॥
राम कृष्न की भक्ति दृढ़ावै। आप करै सोइ और सिखावै॥
बिस्नु भक्ति से करै हंकारा। ता से परै नर्क की धारा॥
कथा पुरान और समझावै। चालि बेहूद आप दुख पावै॥
इन से और जो सुनिहै ज्ञाना। सो परिहै चौरासी खाना॥
झूठा बेद बिधी बिधि गावै। दछिना कारन गला कटावै॥
जा को सिष्य करै पुनि जाई। परमारथ तेहि नाहिँ लखाई।
अपना स्वारथ ज्ञान सुनावै। अपनी पूजा ज्ञान दृढ़ावै॥
परमारथ के निकट न जाई। स्वारथ हेत सबै समझाई॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मा को भयौ स्राप, तुम्हरा कुल मिथ्या परै।
झूठ चलावै चाल, उदर काज नरकै परै॥

॥ चौपाई ॥

जोति स्राप ब्रह्मा को दीन्हा। तुम्हरा कुल होइ है मति हीना॥
तुलसी कही भई बिधि मूला। स्राप पाप से ब्रह्मा भूला॥
स्राप बिधी निरगुन ने जानी। उन पुनि स्राप जोति पर ठानी॥
द्वापर जुग आवैगा सोई। जब तुम पंच भरतारी[1] होई॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "पंच औतारी" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ सोरठा ॥

अस अस दीन्हो स्राप, बाम्हन की मति यों गई ।
ता से न मानै बात, बुद्धिहीन मानहिं मरै ॥

॥ चौपाई ॥

ता से बाम्हन की मति मैली । मन और बुद्धि पाप से फैली ॥
देबी बकरा गला कटावै । मछरी मास बहुत बिधि खावै ॥
ऐसा कर्म करै सोइ भाई । का को कहिये और कसाई ॥

॥ श्लोक ॥

कामार्त्तस्य कुतो लज्जा, निर्द्धनस्य कुतः क्रिया ।
सुरापस्य कुतः शौचं, मांसाहारे कुतो दया[१] ॥

॥ चौपाई ॥

या से तुम को परै न सूझा । तुम्हरी मति अस भई अबूझा ॥

सम्बाद मानगिरी सन्यासी के साथ ।

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि दीन्ह बिचारा । माना स्यामा नैनू हारा ॥
सुन कर परमहंस इक आवा । मानगिरी सन्यासी नावाँ ॥
पंडित से झगरा सुनि पावा । सो बिधि सुनि हमरे पर आवा
ईसुर ब्रह्म एक नहिं मानै । बेद बेदांत नहीं कछु ठानै ॥
गीता को मानै नहिं भाई । है कोइ ऐसा तुलसी गुसाँई ॥
ये सुनि के हमरे ढिंग आये । जहँ सब पंडित बैठि रहाये ॥

॥ परमहंस उवाच ॥

मानगिरी बोले अस बाचा । जो बेदांत कहै सो साचा ॥
जो बेदन ने कही बखाना । गीता सत्त कहै परमाना ॥

(१) कामी शरम को, निर्द्धन क्रिया को, शराबी सफ़ाई को, और गोश्तख़ार दया को नहीं जानता ।

एक ब्रह्म है सब के माईं । और कोई दूजा है नाहीं ॥
ये बेदांत कहै गोहराई । गीता में भगवान सुनाई ॥
मानगिरी कहै सुनौ गुसाँईं । मैं बेदांत कहौं समझाई ॥
आतम सब में ब्रह्म बखाना । ता को नाम निरंजन जाना ॥
सो तो ब्रह्म हमीं हैं भाई । हम को छाँड़ि अंत नहिं पाई ॥
सब जग हम हम माहिं समानौ । हम से कोई और नहिं जानौ ॥
जग भूला आँखी नहिं सूझै । केवल ब्रह्म न हम को बूझै ॥
ये संकल्प जग जीव भुलाना । योँ अज्ञानी जग्त कहाना ॥
बालक रूप ब्रह्म को भाखा । त्याग सबै कोपीनै राखा ॥
ब्रह्म रूप सब जग्त बिचारै । येहि बिधि आतम ब्रह्म निहारै ॥
जाग्रत सुपन सुषोपति त्यागी । तुरियातत्त रहै अनुरागी ॥
चारो बानी को हम जाना । परा पसंता भेद बखाना ॥
और बैखरी भाखि सुनाऊँ । सो सब जग मैं प्रगट दिखाऊँ ॥
पाँचौ मुद्रा कहौं बखानी । चाचरि भूचरि खेचरि जानी ॥
और अगोचरि उनमुनि जाना । सब जोगिन का भेद बखाना ॥
परमहंस ऐसी बिधि बोला । तुलसी तोल स्वाल अस खोला ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहै तुलसी स्वामी सुन बाता । परमहंस बेदांत सनाता ॥
अब हम तुम से पूछैं बाता । ब्रह्म कहौ तुम आदि सनाता ॥
तुम तो ब्रह्म आप को जाना । रहो तत पाँच सरीर बिधाना ॥
तुम पुनि पाँच तत्त कस आया । रूप रेख बिन रहौ अकाया ॥
पिता बीर्ज माता रकतानी । तब सरीर की रचना ठानी ॥
माता पिता तत्त नहिं रहिया । तब कहँ हते सोई निज कहिया ॥
पाँच तत्त बैराट सरीरा । तब तत नहीं बसौ केहि तीरा ॥
पाँच तत्त मैं केहि बिधि आये । तत्त नहीं तब कहाँ रहाये ॥
धरती अगिनि अकास न रहिया । पानी पवन भवन नहिं भइया ॥

तब तुम कहाँ रहे सोइ भाखो । तब की आदि बताओ साखो ॥
तुम कहो सब मेँ हमीं समाना । जब नहिँ रहे सुन्न असमाना ॥
नहिँ सरीर बैराट बनाया । पाँचो तत्त न उपजी माया ॥
जब बेदांत हतो नहिँ भाई । तब नहिँ गीता कथा बनाई ॥
जब तो तुम्हीं तुम्हीं तुम रहिया । गीता साखि कौन बिधि कहिया ॥
नहिँ सरीर नहिँ लिखनेहारा । कागद स्याहि न कलम सँवारा
तब बेदांत कहाँ था भाई । सो ता की तुम साखि बताई ॥
तब तो तुम्हीं तुम्हीं निज रहिया । तब की बात बिधी बतलइया ॥
तब हमरे मन साँची आवा । बिना भेद सब झूठ कहावा ॥
अब गीता की साख सुनावौ । और बेदांत बिधी बिधि गावौ
जो जो कही बचन बिधि भाखी । सो सो समझि लीन्ह सब साखी
पाँच तत्त रचि बास बनावा । कर्म भोग फिरि भौ मेँ आवा ॥
तुम ता को कहो ब्रह्म बखानी । ये तो भरमै चारो खानी ॥
ये बैराट खानि भौ माहीं । ब्रह्मा बिस्नु कहो कहँ रहहीं ॥
पाँच तत्त नहिँ रहत सरीरा । तब कहँ हते कहो केहि तीरा ॥
प्रथमहि कहो कहाँ से आया । नहिँ तब तन बैराट बनाया ॥
तब की कहो सकल बिधि गाई । तो तुलसी के मन मेँ आई ॥

॥ परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

ये बेदांत कहै सब साखी । गीता की तुम एक न राखी ॥
गीता कहै ईस्वर सब माईँ । आतम ब्रह्म बेदांत बताई ॥
ये तुम्हरे मन मेँ नहिँ आई । सब को तुम ने दीन्ह उड़ाई ॥
ब्रह्म सनातन सब मेँ भाखा । सो तो तुम ने एक न राखा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म ब्रह्म सब तुमहिँ बखानौ । आदि ब्रह्म की कछू न जानौ ॥
भाखौ ब्रह्म कहाँ से आया । कहो ब्रह्म को कौन बनाया ॥

जग नहिं हता ब्रह्म कहँ रहिया । कहौ ब्रह्म को कौन बनइया ॥
ऐसा परमहंस मत गावै । नहीं ब्रह्म की आदि बतावै ॥
बिन सतसंग भेद नहिं जाना । करता ब्रह्म नहीं पहिचाना ॥

॥ साखी ॥

नर पंछी मन पींजरा, ज्ञान पंख भयौ नास ।
सतसँग बृछ पाये बिना, ब्रह्म अकास न पास ॥

॥ चौपाई ॥

अब गीता की साखि बताऊँ । तुम भगवान कहनि मुख गाऊँ ॥
गीता मैं पांडो बिधि भाखो । कौरौ जुद्ध कही सब साखी ॥
अरजुन ज्ञान धनुष चढ़वावा । सब कौरौ का नास करावा ॥
पुनि फिर तिनहिं हिवारे गारे । नर्क माहिं अरजुन को डारे ॥
मित्र बड़े उन के दुख पावा । और जीव की कौन चलावा ॥

॥ साखी ॥

कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बचन हमारा । आदि अंत बेदांत बिचारा ॥
सास्तर ब्रह्मा बेद बनाई । और बैराट ब्रह्म बिधि गाई ॥
आतम और परमातम बानी । कहूँ ब्रह्म की आदि बखानी ॥
जो बेदांत ज्ञान गति गाई । सास्तर आतम अंत सुनाई ॥
नाम भेद भिनि भिनि बतलाऊँ । गुन गति ज्ञान गिरा समझाऊँ ॥
ठेका ठामी ठौर ठिकानी । पिंड ब्रह्मंड की करौं बखानी ॥
जहँ से ब्रह्म आतमा आई । सो पद द्वार सुनाऊँ गाई ॥
भिनि भिनि कर बरतंत सुनाऊँ । मानगिरी सुन ज्ञान लखाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म बेद बैराट की, भिनि भिनि भाखूँ आद ।
आतम अंत बेदांत की, बूझैं बिरले साध ॥१॥

बेद मता मत काल ने, कीन्हा झूठ पसार ।
ब्रह्म बेद बेदांत से, संत मता है पार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुनि कै चित लाऊ । आदि अंत बिधि बरनि सुनाऊँ ॥
नसिहत-नामा भाखि सुनाऊँ । या की बिधि ता मैं दरसाऊँ ॥

नसीहत-नामा

॥ रेख़ता ॥

एरी अली खोज खबर घसि धाई ॥टेक॥
गवन भवन भिन भेद लखाऊँ, तत मत जोति नाद नहिँ जाई ।
अलख जोति बिन खलक समाना, जाना जिन जिन गाई ॥१॥
नाम निवास बास सत लोका, जेहि का कँवल तेज सुन माईं ।
परमातम पद सुन परे धामा, सुन धुनि आतम आई ॥२॥
आतम बास बसै सरवर मैं, वहि तत ब्रास अकास कहाई ।
अली अकास चारौ तत कीन्हा, तत बैराट बनाई ॥३॥
सुन नभ वार तार सुर्त स्यामा, ता मैं आतम मनहिँ कहाई ।
पँच इंद्री कर्म ज्ञान पाँच मैं, दस बस फाँस फँसाई ॥४॥
इंद्री कर्म असुभ बस बाँधे, सुभ करिकै गति ज्ञान गिराई ।
सुभ अरु असुभ कर्म मन मारग, ये दोउ भव भुगताई ॥५॥
आसा बास बसै कर्मन मैं, फिरि फिरि जनम जोनि भरमाई ।
यहि बिधि आवागवन भवन मैं, फिरि फिरि खानि समाई ॥६॥
यहि बिधि संत सभी सब गावैं, सब्द साखि सब बरनि सुनाई ।
बूझै न मूढ़ चलै मन मत के, सत सत बचन उड़ाई ॥७॥
आतम ज्ञान ब्रह्म बन बैठे, कहते लाज न मन बिच आई ।
द्वैत भाव भर्म मन बरतैं, अद्वैतो दरसाई ॥८॥

तजि मन मूढ़ कूड़ पाखँड को, झूर झूठ सब धोखा खाई ।
तन कर नास बास चौरासी, फिरि फिरि जम धरि खाई ॥९॥
या से मान मनी मति डारौ, लख गुरु गगन गवन बतलाई ।
सूरति डोर लील बिच खोलौ, फाड़ि कै पछिम समाई ॥१०॥
लीला सेत स्याम सुन पारा, न्यारा द्वार दोदा दरसाई ।
जहँ परमातम आतम नाहीं, खिरकी पुरुष लखाई ॥११॥
जहँ सत लोक मोष पर बेनी, मंजन करिके सहज अन्हाई ।
चढ़ि कर द्वार देखि सत साहिब, सुभ और असुभ नसाई ॥१२॥
जे जे बंद फंद कर्मन के, सत्त पुरुष दरसत नसि जाई ।
यहि बिधि भाँति सुरति से खेलै, सतगुरु कहत बुझाई ॥१३॥
सतसँग रंग दीन दिल पावै, मोटे मन तन बूझ न आई ।
जिन मन नीच कीच सम कीन्हा, उनकी दृष्टि समाई ॥१४॥
जोगी भेष भर्म मन ज्ञानी, परमहंस बैरागी गुसाँईं ।
करि करि खोज रोज पचि हारे, वा की खबर न पाई ॥१५॥
सास्त्र संग बिधि साखि बिचारै, बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाई ।
बेद नेति कर कहत पुकारा, ब्रह्मा आपु हिराई ॥१६॥
बिधि बैराट कँवल नाभी मैं, खोजत खोजत फिर फिरि आई ।
ब्रह्मा भूले बेद कहै नेता, ये दोउ भेद न पाई ॥१७॥
ये बेदांत ब्रह्म कस गावै, या को कहौ किन बूझ बताई ।
या के गुरु का भेद बतावौ, बिन गुरु कहौ कस गाई ॥१८॥
पिरथम बन बैराट बनावा, ता पीछे ब्रह्मा उपजाई ।
ब्रह्मा पीछे बेद बिधाना, ये सब खोज न पाई ॥१९॥
बेद बिधी से सास्तर कीन्हा, ता पीछे बेदांत बनाई ।
ये तौ ब्रह्म ब्रह्म कहि गावैं, वा ने नेति सुनाई ॥२०॥
या की साखि समझ नहिं आवै, झूठ साच निरनै न बुझाई ।
पोल पोल विधि कोइ न बिचारै, टेकै टेक चलाई ॥२१॥

ब्रह्मा बाप बैराट कहावै, जा मैं आतम ब्रह्म समाई ।
सूर चंद दोउ नैना वा के, राहु बिमान सताई ॥२२॥
ब्रह्मा बाप आप भये रोगी, भोग रोग नित राहु सताई ।
उन का बाप आप दुख पावै, ता का दुख न छुड़ाई ॥२३॥
बेद भेद सँग जग्त उबारै, अस अस पंडित कहत सुनाई ।
पीछे सास्तर नाती कहिये, आजा दुर्ग दुख पाई ॥२४॥
जग बेदांत ब्रह्म कहै ज्ञानी, राहु बैराट ब्रह्म दुखदाई ।
पंडित बूझ सूझ समझावौ, ये कहौ समझ सुनाई ॥२५॥
तन को तेल फुलेल रसिक मैं, खान पान पोसाक सुहाई ।
नित नित सैल करै बागन मैं, तन नित माँजि अन्हाई ॥२६॥
ये सब मौज चौज सुख संगा, तन हबूब बुल्ले सम जाई ।
पल पल घट घड़ियाल पुकारै, जग जम सोंटे खाई ॥२७॥
लेत हिसाब ज्वाब नहिं आवै, आतम ज्ञान गैल गिरि जाई ।
ब्रह्म बूझि बैराट दुखारी, परलय माहिं नसाई ॥२८॥
ता के भीतर चेतन बासी, परलय तन तत कहाँ रहाई ।
ब्रह्मा नासि और बेद नसाना, जब का भेद सुनाई ॥२९॥
पिरथम पवन अकास नसाना, ब्रह्मा बेद बैराट नसाई ।
कागद स्याही न लिखनेहारा, तब की बिधि समझाई ॥३०॥
बिधि बैराट नास सब जानै, आगे भेद न कहत सुनाई ।
जेहि जेहि पूछौ सोइ अस गावै, आगे न खबर सुनाई ॥३१॥
काल जाल सब चालि बखानै, बेद नेति सास्तर समझाई ।
या मैं जोग ज्ञान फँसि मारे, सब को भर्म भुलाई ॥३२॥
अगम निगम पर नेक न पावै, बेद नेति आतम कहि गाई ।
सोइ सास्तर सुनि मुनि जन गावै, आगे भेद न पाई ॥३३॥
आतम ब्रह्म अबाच बतावैं, कहत दृष्टि नहिं देत दिखाई ।
बिन देखे बरनन जिन कीन्हा, नहिं परमान कहाई ॥३४॥

कहत बेद कोइ देख न पावै, पुनि अबाच कहौ कौन सुनाई।
बिन बाचा सास्तर नहिँ भयऊ, अरी अबाच किन गाई ॥३५॥
वह अबाच कहौ बोलत नाहीं, बाचा बिन किन खबर सुनाई।
सुनि कहौ बेद नाद बाचा से, या को भेद बताई ॥३६॥
पूछौ जित जो अबाच बतावै, बाचा मैँ बरतंत सुनाई।
बाचा बचन न जाने पावै, पूछौ कहौ सुनाई ॥३७॥
बाक बचन कहौ बात न मानै, बिन बाचा मैँ कहौ समझाई।
सुनि द्वैति बिन बाच न आवै, बचन बिना दरसाई ॥३८॥
ये सब काल जाल जग बाँधा, ज्ञानी पंडित भेष भुलाई।
मान मनो मद अहं बतावै, यहि बिधि जाल जमाई ॥३९॥
पढ़ि पंडित रुजगार चलावै, कुटँब काज परपंच बसाई।
ता मेँ ज्ञानी जगत अबूझा, सो सुनि समझि सुनाई ॥४०॥
यहि बिधि बुधि बेदन सँग बाँधो, संत मता बेदन सम गाई।
नाद बेद से संत नियारे, सो नहिँ कोइ गति पाई ॥४१॥
ये अबाच पर और अबाचा, सो कोइ संत भेद बतलाई।
उन देखा सुर्त से चढ़ि चौथे, सो सब संत सुनाई ॥४२॥
पिरथम एक अनाम अबाचा, वा की गति मति संत जनाई।
सत्त लोक पर नाम अबाचा, सो पद चौथे माँई ॥४३॥
परमातम पद सुन पै अबाचा, सुनि धुनि नीचे आतम आई।
मानसरोवर तेहि कर धामा, सोइ आकास समाई ॥४४॥
जड़ अकास चेतन जिन्ह कीन्हा, स्याम सेत बिच नाम गुसाँई।
सोइ निज नाम निरंजन भाखा, बेद अबाच सुनाई ॥४५॥
सहस कँवल मध धाम कहावै, ता पर तीनि अबाच रहाई।
ब्रह्मा बेद बैराट न पावै, ऋषि मुनि भ्रम मन माँई ॥४६॥
सास्तर मिलि पुनि आतम गावा, काल की कला अबाच सुनाई।
पंडित पढ़ि गुनि ज्ञान गठाने, या से जग बौराई ॥४७॥

निरगुन कंज राह नहिँ पावै, संत सुरति से नित नित जाई ।
जो वोहि देस भेस के भेदी, जिन जिन खबर जनाई ॥४८॥
उनको जग नास्तिक ठहरावै, बोल वचन उनके न सुहाई ।
वे पुनि चढ़ि चढ़ि अगम निहारैँ, बिधि सब कहत सुनाई ॥४९॥
काल निरंजन बाच अबाचा, कहत नाद बिच बेद बनाई ।
आतम तमा अवाच कहावै, येहि बिधि काल जनाई ॥५०॥
संत मता कछु और पुकारै, आतम जीव मानसर माईं ।
परमातम सुन खिरकी पारा, संतन देख जनाई ॥५१॥
आगे सत्तलोक चौथे मेँ, सो अबाच सत पुरुष कहाई ।
जहँ नहिं निरगुन बेद बिचारा, ये सब वार रहाई ॥५२॥
चौथे पार अनाम अमाया, नाम न रूप अगम गति गाई ।
सो सब संत करैँ दरबारा, ये गति बिरले पाई ॥५३॥
ये गति धाम अगमपुर ठामा, जाहि देत जो जाइ जनाई ।
या की साखि बेद नहिँ जानै, संत कृपा से पाई ॥५४॥
संत सरन बिन पंथ न पावै, सतगुरु गैल खेल खुलि गाई ।
मन होय छोट मोट छल छाँड़ै, तब सत सुरति लखाई ॥५५॥
सत मत रीत जीत जब जानै, ज्ञान मान मद दूरि बहाई ।
मन और कर्म बचन बुधि[1] साँची, काँची कुबुधि उठाई ॥५६॥
संत दयाल चाल जब चीन्है, लीन दीन दिल लेत लगाई ।
सब अस भाँति जाति पक[2] परखै, तरकै तन बिच जाई ॥५७॥
वे अंतर घट घाट बिचारैँ, कर कर फैल गैल नहिँ पाई ।
कूड़ कपट सब झारि निकारैँ, जब रस राह लखाई ॥५८॥
सत मत सुरति निरति नित न्यारी, सारी समझ बूझ बतलाई ।
लोल सिखर पट परदे माहीँ, पल पल मनहिँ लगाई ॥५९॥

(१) म० दे० प्र० की पुस्तक में "धिधि" है जो सही नहीँ मालूम पड़ता । (२) पक्ष ।

काग भसुंड धाम धसि पावै, कँवल कंज करिया के माईं ।
ता पर सेत सुरति सत द्वारा, चढ़ चढ़ सुन्न समाईं ॥६०॥
सुनि धुनि ताल तरँग आतम जिव, पछिम दिसा दिस देत दिखाईं ।
खिरकी खोल अबोल अबाधा, सो रचि जीव जनाईं ॥६१॥
ताल निहार पार चलि आगे, सुन्न सिखर फाटक मैं जाईं ।
तहँ कहुँ ताक भाख दोउ द्वारा, पारब्रह्म पद पाईं ॥६२॥
सुरति सैल जहँ खेल निहारी, लख लख गगन अंड अरथाईं ।
जा बिच सुरति सिरोमनि पेलो, ज्योँ चींटी सम जाईं ॥६३॥
अस भसुंड भिन अंड निहारा, राम रमा मुख जाइ समाईं ।
रामायन लखि साखि सुनाऊँ, हिये दृग देत दिखाईं ॥६४॥
चर और अचर खानि सब सारी, भिन भिन भेद भसुंड सुनाईं ।
काग भसुंड काया के माहीं, लखि जिन जानि जनाईं ॥६५॥
या से परखि पार पद न्यारा, पारै चढ़ि चल चस्म चिन्हाईं ।
सुनि धुनि आतम पद परमातम, इन के पार लखाईं ॥६६॥
ये दोउ वार पार सतलोका, परदा तीनि फोड़ जोइ जाईं ।
सूरति सब्द पुरुष पद पारा, जब घर अपने आईं ॥६७॥
ता पर धाम नाम नहिं न्यारा, तारा चंद न सुरज रहाईं ।
धरती न गगन गिरा नहिं बानी, जानी जिन जिन गाईं ॥६८॥
पिंड ब्रह्मंड न अंड अकारा, न्यारा अली अलोक कहाईं ।
जहँ सब संत पंथ पद माहीं, नित नित सैल समाईं ॥६९॥
सतगुरु साथ हाथ हित पावै, संत सरन स्रुत सार लखाईं ।
सतसँग संत बिना नहिं पावै, फिर फिर कर्मन माईं ॥७०॥
आगे सुन गुन ज्ञान बताऊँ, जीव कर्म बस ब्रह्म बँधाईं ।
ब्रह्म जीव बस कर्म बिचारै, जड़ सँग ज्ञान गिनाईं ॥७१॥
अब या की सुन साखि सुनाऊँ, भागवत मत बिधि ब्यास बताईं ।
जब बैराट ठाट ब्रह्म भइया, देवन जाइ उठाईं ॥७२॥

नहिँ बैराट उठा बिन आतम, पुरुष अंस आतम जब आई ।
मध बैराट जीव आतम अस, तब तन तुरत उठाई ॥७३॥
अंस जीव आतम कहै। कहँ से, आया सो बिधि खोज कराई ।
सो स्वामी का कहै। कहँ बासा, जिन से अंस जो आई ॥७४॥
अंस बुंद आतम तन बासा, सिंध खोज कहुँ अंत रहाई ।
यहि बिन संत पंथ नहिँ पावै, फिरि फिरि जड़ तन माईं ॥७५॥
बिन साखी संध फंद न टूटै, छूटै न ज्ञान जो कोटि कराई ।
बिन बिधि सुरति सिंध नहिँ पावै, बिन सिंध बुंद बहाई ॥७६॥
चेतन जड़ तन गाँठि बँधानी, छूटै बिन बस ब्रह्म न भाई ।
छूटै गाँठि गगन चढ़ चीन्है, तब बिधि ब्रह्म कहाई ॥७७॥
जैसे गगन रबी रहै बासा, किरनि भास भूमी पर आई ।
जब सब सिमटि भास गति रबि मैँ, बुंदा सिंध कहाई ॥७८॥
नास अकास सूर सब बिनसै, तब रबि रहै कहै। कहँ जाई ।
सो ठेके का खोज लगावौ, वो पद कैाने ठाईं ॥७९॥
सास्तर ने गति गैल भुलाई, ब्रह्म बाँधि जड़ जीव रहाई ।
यहि बिधि भूल फूल मन मारग, या से गति नहिँ पाई ॥८०॥
ज्ञान ठान दृढ़ सास्तर भाखा, परमहंस ज्ञानी उरझाई ।
चारि अवस्था भाखि बताई, सो सब कहत सुनाई ॥८१॥
सब ज्ञानी तुरिया गति गावैँ, पूछै। भेद सो मन मुख माईं ।
जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, तुरियातीत सुनाई ॥८२॥
जाग्रत सुपन का भेद न बूझै, सुषोपति तुरिया मुख से गाई ।
तुरियातीत रीत मन मारग, आगे भेद न पाई ॥८३॥
बानी चार लार कर बोलै, परा पसंता मधिमा भाई ।
बैखरी बिधि बोलै सुन बोली, कँवल पेट के माईं ॥८४॥
यहँ से बानी उठत बतावैँ, बिष्टा बास बतावत आई ।
जहँ से बानी उठत अबाचा, वहँ का खोज न पाई ॥८५॥

ज्ञान तीन गति गाइ सुनावैं, रेचक पूरक कुंभ कहाई ।
ये सब ज्ञानी बानी बूझैं, मन सँग बुद्धि बहाई ॥८६॥
मन बिधि ज्ञान बुद्धि बस देखै, ब्रह्म ब्रह्म कर कहत सुनाई ।
आतम को अद्वैत बतावै, या से बूझ न आई ॥८७॥
आतम कुबुध बंध कर्मन मैं, ब्रह्म ज्ञान गति कहत बुझाई ।
रहै अज्ञान बास जड़ देँही, ता बिच गाँठि बँधाई ॥८८॥
ठट कर ठाट ठटै जब सूरति, अंडा फोड़ अगम गति पाई ।
सब्द सिंध सूरति चढ़ जावै, जब पावै पद आई ॥८९॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, संत सत्त कहि कहत सुनाई ।
मैं मति नीच कीच सम किंकर, सतसँग समझ सुनाई ॥९०॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी बूझौ बिधि सारी । संत अंत गति सब से न्यारी ॥
गीता ज्ञान ब्रह्म समझावा । अरजुन छले नर्क बिच नावा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर परमहंस अस बोला । ये बरनन गीता मैं खोला ॥
पुनि अस भेद सबै सब गावा । सास्तर सुध आतम समझावा ॥
सब ने सब मैं ब्रह्म बताई । और बेदांत साखि समझाई ॥
या को मरन जिवन कछु नाईं । आवै नहीं नहीं कहुँ जाई ॥
सोई सनातन सत्त समाना । आतम आवागवन न जाना ॥
ऐसे सास्तर साखि बतावैं । सबहि महातम अस अस गावै ॥

॥ दोहा ॥

परमहंस अस भाखेऊ, सब मैं ब्रह्म समान ।
सब सास्तर अस अस कहैं, और स्रुति कहत पुरान ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सास्तर सब मेँ ब्रह्म बखाना । पाँच तत्त जड़ चेतन जाना ॥
जीवत पाँच तत्त से छूटै । गगन चढ़ै असमान जो फूटै ॥
वहँ से अधर और है धामा । जीवत चढ़ै जाइ वोहि ठामा ॥
पाँच तत्त जड़ चेतन छूटै । ऐसे चढ़ै अधर तब टूटै ॥
वोही धाम धसि जाइ समाना । अस चढ़ि चलै ब्रह्म जेहि माना ॥
ज्ञान दृष्टि से बूझै कोई । सो नहिँ ब्रह्म ब्रह्म गति होई ॥
जो जो सास्तर करत बखानी । उन ने सब सास्तर की जानी ॥
स्वाँस उपर का भेद न जाना । ता की कहा करै परमाना ॥
सास्तर मेँ इस लोक बखाना । वे उस लोक का मरम न जाना ॥
पढ़ि पढ़ि सुनि सुनि साखि बतावैँ । ब्रह्म अदेख देख बतलावैँ ॥
तब तो हमरे मन मेँ आवै । और बात मन नाहिँ समावै ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चैापाई ॥

परमहंस पंडित से बोले । तुलसी और और बिधि खोले ॥
परमहंस मन मेँ सकुचाना । ये तो भेद हमहुँ नहिँ जाना ॥
पंडित परमहंस भये एका । तुलसी भाखा अगम अलेखा ॥
हमरी बुद्धि न पहुँचै ताहीँ । ये तो अकथ कथा गति गाई ॥
परमहंस कहै ब्रह्म समाना । सुन पंडित ये और बिधाना ॥
मन मेँ पंडित करत बिचारा । परमहंस अंतर मन हारा ॥
तुलसी स्वामी अगम बखानी । सब पंडित मिलि ऐसा जानी ॥
परमहंस पंडित भये दीना । तब हम से पूछन इक कीन्हा ॥
तुलसी स्वामी मन को रहिया । पूछैाँ ब्रह्म कहाँ से भइया ॥
पवना कहैा कहाँ से आई । हम को यह बिधि कहैा बुझाई ॥
या के परे और कछु भाखा । जा की संध बतावौ साखा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित परमहंस सुन ज्ञानी । अब या का हम भेद बखानी ॥
सत्त पुरुष इक साहिब स्वामी । ता सुत भया निरंजन जानी ॥
मन का नाम निरंजन होई । आतम ब्रह्म कहै सब कोई ॥
मन से पवन भई उतपानी । तब मन बँधा देँह मेँ आनी ॥

॥ प्रश्न पंडित और परमहंस और उत्तर तुलसी साहिब ॥

(१)

स्वामी जी–(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म, (५) जोव, (६) सीव कौन हैँ ?

(१) मन चकोर है, (२) पवन घोर, (३) शब्द अडोल, (४) ब्रह्म निरंजन काल, (५) जीव काल कर्म बंध, (६) सीव कर्ममुक्ता ।

(२)

स्वामी जी–(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म निरंजन, (५) जीव, (६) सीव, (७) प्रान, (८) हंस, (९) काल, (१०) सुन्न का कहाँ बासा है ?

(१) मन और (२) पवन का नभ गगन मेँ बासा है, (३) शब्द का हृदय अधर मेँ, (४) ब्रह्म निरंजन का सुषमना मेँ, (५) जीव का काया मेँ, (६) सीव का मन मेँ, (७) प्रान का निरन्तर मेँ, (८) हंस का गगन पार, (९) काल का कलह मेँ, (१०) सुन्न का अनूप मेँ ।

(३)

स्वामी जी–(१) जब गगन नहीं था तब मन कहाँ रहता था, (२) जब नभ नहीं था तब पवन कहाँ रहता था, (३) जब हृदय नहीं था तब शब्द कहाँ रहता था, (४) जब निरन्तर

नहीं था तब प्रान कहाँ रहता था, (५) जब ब्रह्मंड नहीं था तब ब्रह्म कहाँ था, (६) जब गगन नहीं था तब हंस कहाँ रहते थे, (७) जब कलह नहीं था तब काल कहाँ था, (८) जब अनूप नहीं थी तब सुन्न कहाँ था, (९) जब काया नहीं थी तब जीव कहाँ था, (१०) जब जीव नहीं था तब सीव कहाँ था ?

तब (१) मन जोति सरूप मैं रहता था, (२) पवन निराकार मैं, (३) सब्द ओंकार मैं और ओंकार की उत्पत्ति के पहिले सुन्न मैं रहता था, (४) प्रान निरंजन मैं और निरंजन की उत्पत्ति के पहिले अविगत मैं रहता था, (५) ब्रह्म सत्तनाम मैं, (६) हंस सहज मैं, (७) काल सुन्न मैं, (८) सुन्न ररंकार मैं, (९) जीव सीव मैं, (१०) सीव निरंजन में ।

(४)

स्वामी जी-(१) निरंजन, (२) मन, (३) सीव, (४) जीव, (५) हंस, (६) काल, (७) शब्द, (८) पवन इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

(१) अक्षर से उत्पत्ति निरंजन की हुई, (२) निरंजन से मन की, (३) मन से सीव की, (४) सीव से जीव की, (५) हंस और (६) काल की सत्तनाम से, (७) शब्द की नाम से, और (८) पवन की सुन्न से ।

(५)

स्वामी जी-ये सब कहाँ कहाँ समाते हैं-(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द अनाहद, (४) प्रान, (५) ब्रह्म, (६) हंस, (७) जीव, (८) सीव, (९) निरंजन, (१०) जोति ?

(१) मन जोति सरूप में समाया, (२) पवन निराकार मैं, (३) शब्द अनाहद ओंकार में, (४) प्रान अविगत में (५) ब्रह्म हंस में, (६) हंस सत्तनाम में, (७) जीव सीव में, (८) सीव निरंजन अथवा ब्रह्मांडी मन में, (९) निरंजन जोति में, (१०)

जोति अलख में, अलख अबिनाशी में, अबिनाशी अगम में, अगम सत्तपुरुष में।

सत्तनाम चौथे पद स्थान, आवै न जाय, मरै न जन्मै।

शेष तीन लोक बैराट स्थान ब्रह्म, बैराट, आतमा, भगवान मन, औतार, बेद, ब्रह्मा, बिष्नु, शिव, जक्त, उदर में रहे, ब्रह्म नाश, बैराट नाश, आतमा नाश, जोति नाश, निराकार नाश, आकार नाश, ब्रह्मा बिष्नु शिव नाश, ओंकार शब्द नाश, बेद शब्द नाश, अंडा तीन लोक सीव नाश।

(६)

स्वामी जी—तीन लोक बैराट नाश होकर कहाँ समाते हैं?

ब्रह्म निराकार जोति तीन लोक बैराट नाश होकर सुन्न में समाता है। सुन्न नाश हो कर महासुन्न में समाता है। महा सुन्न के परे सत्तलोक है जहाँ सत्त साहिब रहता है, यहाँ प्रलय और महा प्रलय की गम नहीं।

सत्त साहिब की लहर से महासुन्न होता है, महासुन्न से सुन्न, सुन्न से शब्द, शब्द से ब्रह्म, ब्रह्म से जोति निराकार, निराकार जोति से मन, मन से जक्त, ब्रह्मा बिष्नु शिव बेद सब उत्पन्न होते हैं।

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी पूछौं बाता। औतारी नसि कहाँ समाता॥
तीनि लोक जस नास कहाई। ब्रह्मा नसि कहौ कहाँ समाई॥
सिव बिस्नू और बेद नसाना। ये सब नसि कहो कहाँ समाना॥
पारब्रह्म और जोति नसाना। निराकार नसि कहाँ समाना॥
सुन्न नसी पुनि कहाँ समानी। मन भया नास कहौ कहँ को जानी

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

दस औतार नास जो भइया । सो ये सब मन माहिँ समइया ॥
और सब जगत नास जब होई । सो सब मन के माहिँ समोई ॥
ब्रह्मा बिस्नु और महादेवा । नास भये मन मत के भेवा ॥
मन को नास सुनो पुनि भाई । मन नसि गया निरंजन माईँ ॥
नास निरंजन ब्रह्म समाना । ब्रह्म जो नसा सब्द में जाना ॥
सब्द नास जो सुन्न समाना । सुन्न नास महासुन में जाना ॥
यहँ से उतपति परलय होई । आगे भेद न जानै कोई ॥
वहँ से आवै यहँ लै जावै । आगे भेद न कोई पावै ॥
सत्तलोक महासुन्न कहाई । तीनि लोक सब सुन में जाई ॥
तीनि लोक करता नहिँ जावै । वा पद को कोइ संत समावै ॥
वो पद है संतन कर सारा । वहँ कोइ संत करै दरबारा ॥
निराकार जोती नहिँ जावै । जम और काल गम्म नहिँ पावै ॥
दस औतार न पहुँचै भाई । ब्रह्मा बिस्नु की कौन चलाई ॥
सत्तलोक सत साहिब साईँ । मिलै कोइ संत अंत जब पाई ॥
संत दयाल दया जो करई । लख लख भेद जीव निस्तरई ॥
संत अगम कोइ बिरले पावा । होइ दीन जब भेद लखावा ॥
अपना ज्ञान मान मत डारै । नीच होइ सोइ सहज निहारै ॥
दीनदयाल नाम उन केरा । दीन होइ जब होय निबेरा ॥
मोट उँचाई अपनी मानै । अपना ज्ञान ऊँच कर ठानै ॥
ता से संत नजर नहिँ आवैँ । नीचा होइ ताहि दरसावैँ ॥
संत दयाल बड़े सुखदाई । निमिख एक में देत लखाई ॥
नीचा होय होय निरबारा । ज्ञान मान बस फिरै लबारा ॥
ज्ञानी मान खानि की रीती । संत कृपा से भौजल जीती ॥
संत कृपा जेहि हेत निहारैँ । कोटिन कर्म काटि कै डारैँ ॥

संतन की गति अगम अपारा। ब्रह्म राम दोउ लखैं न पारा ॥
ब्रह्म राम से नाम नियारा। सो घर है संतन कर न्यारा ॥
सन्त नाम सतलोक दुहेला। जहँवाँ संत करैं नित केला ॥
जा को सतगुरु संत लखावैं। एक पलक मैं लोक दिखावैं ॥
उन की कृपा दृष्टि जब होई। दीन होय पद पावै सोई ॥
परमहंस सुनि कै भय माना। तुलसी तो कछु और बखाना ॥
ये तो भेद पार पद न्यारा। ऐसा मन मैं किया बिचारा ॥
तुलसी संत भेद बिधि गाई। संत भेद सब अगम लखाई ॥
बिना संत नहिं होइहै न्यारा। संत सरन से उतरै पारा ॥
परमहंस ये मन मैं जानी। ये तो अकथ अगाध बखानी ॥
ये बेदांत बेद मैं नाहीं। गीता सास्तर भेद न पाई ॥
संत मता कछु इन से न्यारा। सो तुलसी ने कही बिचारा ॥
हम अपने मन त्याग बिचारा। ये सब आहि कर्म भौ जारा ॥
त्यागै जोइ जोई पुनि पैहै। बार बार भौसागर ऐहै ॥
बिन कोपीन बस्त्र बिन रहिया। अपने कर भोजन नहिं खइया ॥
मुखहिं न बोला मौनि बिचारा। ये सब झूठा फैल[1] पसारा ॥
ऐसी बूझ बात मन लावा। तब चरनन पर हाथ चलावा ॥
तुलसी पकरि हाथ तेहि लीन्हा। परमहंस पूछै इक चीन्हा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

परमहंस पूछत सकुचाया। परमहंस मत कब से आया ॥
सो तुलसी मुख भाखि सुनाई। या की आदि अंत बतलाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बात हमारी। काल रचा बैराट सँवारी ॥
पाँच तत्त से पिंड बनाया। पुरुष अंस चेतन जब आया ॥

---

(१) फ़ैल।

जड़ चेतन दोउ गाँठि बँधानी । सोइ निज ज्ञान जानि मन मानी ॥
मौन रहै मुख बोलत नाईं । करि कपड़ा कोपीन बनाई ॥
बालक रूप ब्रह्म मन जानै । दुइत भाव और नहिं आनै ॥
निराकार ने बेद उपाया । ज्ञान ब्रह्म बिधि भाखि सुनाया ॥
मन से ब्रह्म आप को माना । जड़ चेतन की गाँठि न जाना ॥
करि करि कर्म रहे भौ खाना । ता को कहौ ब्रह्म कस माना ॥
ये मत काल जाल परचावा । ब्रह्म ज्ञान जड़ गाँठि बँधावा ॥
ता से आदि अंत नहिं जाना । बोलै सब मैं हमीं समाना ॥
भौजल काल जाल उरझाया । परमहंस मत यहि बिधि आया
आदि मते का खोज न पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
मानगिरी कहै सरना लीजै । आद अरु अंत भेद मोहिं दीजै ॥
चरन सरन में राखौ स्वामी । हमरी भूल भेद हम जानी ॥
परमहंस गति दीन बिचारी । दीन्हा उन आपा सब डारी ॥
कपड़ा फारि कोपीन बनाई । परमहंस को ले पहिराई ॥
सूरति संध पंथ दरसावा । चौथे पद की राह बतावा ॥
भेद भाव और ताला कूँची । दीन्ही परमहंस को सूची ॥
चरन सीस धरि पंथ सिधारे । बिधी देख पंडित सब हारे ॥
परमहंस गति दीन निहारे । तब पंडित मन माहिं बिचारे ॥
अपनी गती गती गति धारी । दीन होय मग भवन सिधारी ॥
नैनू स्यामा माना भाई । पंडित तीन रहे ठहराई ॥
कुटी राति रह कीन्ह बसेरा । राति रहे दिन भया सबेरा ॥
भोर भये तेहि संध लखाई । तीनौं गिरे चरन पर आई ॥
भेद भाव बिधि सब दरसावा । सीस टेकि कै भवन सिधावा ॥
कासी नगर पहुँचे जाई । जहँ कबीर चौरा नियराई ॥
पहुँचे पहर दिवस भयौ भ्याना । गये कबीर चौरा अस्थाना ॥
चौरा ऊपर पहुँचे आई । फूलदास महंत गोहराई ॥

संबाद फूलदास कबीर पंथी के साथ ।

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास पंडित से बोलेउ । तुलसी बचन बिधी बिधि खोलेउ ॥

॥ पंडित उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना महंत से कहै बुझाई । फूलदास सुनियो चित लाई ॥
तुलसी गत मत कहैं बिचारी । उन सम मता नहीं संसारी ॥
साध संत मत भये अनेका । तुलसी सम हम एक न देखा ॥
मत तुम्हरा हमहूँ पुनि जाना । तुलसी मता अगाध बखाना ॥
सुनि महंत तन तमक समानी । को कबीर सम करत बखानी ॥
खुद कबीर अविगति से आया । पुरइन पात वो भया अकाया ॥
सत्त पुरुष की आयस लाये । जग मैं जीव नेग मुक्ताये ॥
उन सम मता न जानो भाई । होइहै यह कोइ साध गुसाँईं ॥
हम पूछैं सोइ भेद बतावै । फूलदास के मन जब आवै ॥
जो कबीर मुख अपने भाखा । सो बिधि देखौं अपनी आँखा ॥
सत्त लोक की करै बखाना । पूरा साध ताहि हम जाना ॥
सत्त सत्त जो सत्त कबीरा । उन भाखा अदबुद मत हीरा ॥
आदि अंत उन भाखि सुनावा । सो तुलसी पै कहँ से आवा ॥
तुम पंडित जानौ नहिं भाई । तुम को ज्ञान दीन्ह समझाई ॥
हमरे सनमुख बात न आवै । एक सब्द मैं देँह घुजावै ॥
अब हम उन को देखब जाई । केहि बिधि ज्ञान कहै समझाई ॥
पंडित कहै भोर तुम जइये । हम अपने घर से पुनि अइये ॥
पंडित उठि मारग को लीन्हा । घर को गवन आपने कीन्हा ॥
पुनि घर पहुँचे अपने आई । करी जुगति तुलसी जो बताई ॥

निसि दिन सुरति निसाना लावै। निरखि परै तुलसी पै आवै ॥
फूलदास भोरहि चलि आई । पूछत कुटिया तुलसी गोसाँई ॥
पूछत पूछत हिरदे पाई । उन पुनि कुटी दीन्ह बतलाई ॥
हम पुनि जानि साध कोइ आवा । आदर भाव करन मन लावा ॥
तब सुखपाल पास नियरानी । तुलसी गति मति दीन बखानी॥
लारै भीर भार बहु भारी । चौंर ढुरै सुखपाल सवारी ॥
जब निज चालि कुटी पर आवा। उठे चरन पर सीस चढ़ावा ॥
आदर भाव चरन लिये दोनो । साल प्याल को किया बिछौना॥
आदर भाव दीन गति गाई । मैं मति नीच साध सरनाई ॥
बड़े भाग साधू के सरना । कुटी पुनीत भई तुम चरना ॥
स्वामी गवन कहाँ से कीन्हा । भाखौ नाम कहौ अस चीन्हा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तब बचन बखाना । सत्त कबीर पंथ अस जाना ॥
फूलदास महंत अस नामा । कासी कबीरचौरा अस्थाना ॥
महिमा सुनि पुनि हमहूँ आये । दरस कीन्ह सुख मन उपजाये॥
फूलदास तब बचन उचारा । गुरू पंथ बिधि कहौ बिचारा ॥
को है गुरू पंथ को कहिये । कौन मते के साध कहइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरू और पंथ न जाना । येही संत पंथ हित माना ॥
दूजा इष्ट न जानौं कोई । संत सरनि नित सुरति समोई॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरू बिन पंथ न होई । अपना गुरुमत भाखौ सोई ॥
सतगुरु बिना ज्ञान नहिं आवै। सतगुरु बिना भेद नहिं पावै ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहौ कैसे गुरु भेद लखावै । कौन राह से पंथ बतावै ॥
ताकी बिधी कहौ तुम साखी । सो किरपाल दया करि भाखी
हम अजान कछु मरम न जाना । तुम हौ साधू परम निधाना ॥
तुम को कस सतगुरु दरसावा । भाखि भेद सोइ मोहिँ सुनावा
मैं अति दीन दया कर कीजै । होउ दयाल भेद पुनि दीजै ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ चित लाई । पंथ भेद मैं कहौँ सुनाई ॥
सत्तपुरुष रहै पुहप मँझारा । संपुट कँवल खुले तेहि बारा ॥
सत्तपुरुष तेहि बचन उचारा । ज्ञानी बेगि जाउ संसारा ॥
काल देत जीवन को त्रासा । सत कबीर काटौ जम फाँसा ॥
पिरथम चले जीव के काजा । सतजुग चले पास धर्मराजा ॥
धर्म देखि अस बोले बानी । जोगजीत कित कीन्ह पयानी ॥
तब कबीर अस कही पुकारी । जीव काज मैं जगत सिधारी ॥
सत्त पुरुष अस कहा बुझाई । जग में जाइ जीव मुकताई ॥
धर्मराइ अस बचन सुनाई । तुम भौसिंधु बिगारन चाही ॥
तब कबीर बोले अस बाता । तुम्हरो करहुँ प्रान को घाता ॥
पुरुष बचन अब देहौ टारी । तौ हम तुम को देहिँ निकारी ॥
मन मैं सोचि धरम सकुचाना । तब कबीर जग कीन्ह पयाना ॥
सतजुग नाम मुनिंद्र धरावा । चौका करि जिव लोक पठावा ॥
चौका करि परवाना पावै । छूटै जीव मुक्ति को जावै ॥
और त्रेता जुग कीन्हा चौका । जीव मिले बहु किये बिसोका ॥
द्वापर जुग की कहौँ बखानी । धुंधल सुपच खेवसरी जानी ॥
मुक्ति लोक जिव किये पयाना । अस अस जीव मुक्ति को जाना॥

चौका करि परवाना पावा । नरियर मोड़ि तिनुका तुरवावा॥
कलजुग नाम कबीर कहाये । पुरइनि सेत पान पर आये ॥
कासी नगर कीन्ह कर काया । नूरा नीमा के घर आया ॥
बालक जानि चीन्ह नहिँ पाये । कई दिवस अस बीति सिराये ॥
एक दिवस धर्मदास चितावा । चौका करि परवाना पावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भर्म एक मोरे उपजाई । चौका बिधी कहौ समझाई ॥
चौका कीन्ह दीन्ह परवाना । सो बिधि मो से कहौ बखाना ॥
धर्मदास जस चौका कीन्हा । जस कबीर वा को कहि दीन्हा ॥
सो बिधि मो को बरनि सुनावौ। दया भाव यह बिधि दरसावो ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ तुम काना । चौके का मैं कहौँ बिधाना ॥

॥ छंद ॥

निज भाव आरति सुनौ खेवसरि, तोहि कहौँ समझाइ कै ॥१॥
मिष्टान पान कपूर केरा, अष्ट मेवा लाइ कै ॥२॥
पाँच बासन सेत बस्तर, कदली पत्र अछेदना ॥३॥
नारियर और पुहप सेतहि, सेत चौका चंदना ॥४॥

॥ सोरठा ॥

और आरति अनुमान, सब बिधि आनौ साज तुम ।
पुंगीफल परमान, सब्द अंग चौका करौ ॥

॥ चौपाई ॥

और बस्तु आनौ सुठि पावन । गऊ घिर्त और सेत सुहावन ॥
ऐसे सिष्य सिखापन मानै । ततखन सब बिस्तार जो आनै ॥
सेत चदरवा दीन्हेउ तानो । आरति कीन्ह जुगति बिधि ठानी ॥
चौका पर बैठक जब लयऊ । भजन अखंड सब्द धुनि भयऊ ॥

पाँच सब्द का दल जब फेरा । पुरुष नाम लीन्हौ तेहि बेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । सत्त पुरुष को जाइ जनाई ॥
छिन मैं पुरुष परस पद आये । सकल सभा उठि आरति लाये ॥
पुनि आरति बिधि दीन्ह मड़ाई। तिनुका तोरे जल अचवाई ॥
सोइ सिष हाथ दीन्ह जब पाना। पावै पान सोइ लोक पयाना ॥
सब्द अंग दीन्हो समझाई । सिष्य बूझि कै सुरति लगाई ॥
पहुँचै लोक अगम के द्वारा । चौका बिधी कबीर पुकारा ॥
येहि बिधि जीव करै जो चौका। जा का मिटि गया संसय सोका ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसिदास मन मैं मुसिकानी । मौन रहे कछु कही न बानी ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि कहे सुनाई । कहौ तुलसी कछु मन में आई ॥
कहै तुलसी नहिं बूझ बयाना। फूलदास मन मैं रिसियाना ॥
तुलसी रीस ताहि पहिचानी। दीन होइ जोरे जुग पानी[1] ॥
फूलदास अस कहै बिचारी । तुलसी कैसे मौन सम्हारी ॥
चौका कबीर भाखि बतलावा। तुम्हरे मन कछु एक न आवा ॥
सत्त कबीर जो बिधी बताई। सो हम तुम को भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि कबीर जो चौका गावै । सो बिधि कहौ तो मन में आवै
दासकबीर जो कही बखाना । सो बिधि चौका है परमाना ॥
वा का भेद बिधी बिधि गावै। तब तुलसी के मन में आवै ॥
उन पुनि चौका कौन बताया । तुम ने कौन बिधी ठहराया ॥

---

(१) दोनों हाथ ।

नरियर उन पुनि कौन बतावा। मोड़ि तास जो बास उड़ावा ॥
तुम बजार से नरियर लावा। ता की बिधि तुम हमैं सुनावा ॥
जो कबीर नरियर फरमावा। सो तौ तुम्हरी बूझ न आवा ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर लाये। ता के पाँच फूल बतलाये ॥
पाँच फूल का नरियर होई। ता कौ भेद बतावौ सोई ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर आवा। ता के पाँच फूल बतलावा ॥
वोही दीप जलखंडी राजा। ता से आना नरियर साजा ॥
सो नरियर का भेद बतावै। तब तुलसी के मन में आवै ॥
नरियर बास उड़ावत जानौ। ता की बिधि तन भीतर मानौ ॥
जो जो मुख से संतन भाखा। सो काया के भीतर राखा ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ हैं एका। होइहै नरियर पिंड बिबेका ॥
ता की बिधी भेद दरसावौ। सो बिधि हम को भाखि सुनावौ ॥
पान प्रवाना भाखा लेखा। ता का मन में उठै बिसेखा ॥
बेचै बरई पान बतावा। सो परवाना मन नहिं आवा ॥
अंबू सागर देखौ जाई। नरियर पान की बिधी बताई ॥
चौधा हाथ पान बतलावा। सो कबीर अपने मुख गावा ॥
चौधा हाथ पान बतलावौ। सो परवाना भाखि सुनावौ ॥
वो भी काया में कहुँ होई। संत कृपा से पावै सोई ॥
अठ मेवा तुम भाखि सुनावा। छुवारा दाख बदाम मँगावा ॥
ये हमरे मन में नहिं आवै। कहो कबीर सो भाखि सुनावै ॥
कबीर बिधी अठ मेवा भाखी। पुरुष आठ मेवा कहै साखी ॥
और कपूर उन भाखि सुनावा। तुम दुकान बनिये से लावा ॥
वो कपूर काया के माहीं। ता की बिधि कोइ संत बताई ॥
गऊ घिर्त जो भाखि बतावा। सो तुम दही दूध मथि लावा ॥
सो कबीर बिधि और बतावा। गो इंद्री का घिर्त कहावा ॥
कदली पत्र कहा उन गाई। काया में सादृष्ट दिखाई ॥

कदली पत्र छेदन बतलावा। काटि पेड़ तुम खंभ गड़ावा॥
कदली छेदन कौन बखाना। तुम ता की बिधि नहिं पहिचाना॥
बासन पाँच कबीर बतावा। तुम ताँबा पीतर मँगवावा॥
पाँचौ बासन काया माईं। करता ठठेरे आपु बनाईं॥
सो बासन का कहो बिचारा। तब जिव उतरै भौजल पारा॥
तुम जो बस्तर सेत सुनावा। धोया कपरा आनि मँगावा॥
बस्तर सेत कबीर बखाना। सो बिधि तुम ने नहिं पहिचाना
संत सरन सेवा चित लइहो। कोई साध बिरले से पइहो॥
पुंगीफल उन भाखि सुपारी। ता का मरम न जानि बिचारी
निकरै पवन सुपारी माहीं। सो फल पुंगी चैाका गाईं॥
पवन सुपारी संतन पासा। दीन होय पावै निज दासा॥
पाँच सब्द चौका उन भाखा। भिनि भिनि भेद बतावौ ता का
एक सब्द काया के माईं। और चारि का भेद बताईं॥
चारि चारि बिधि कैान ठिकाना। न्यारा न्यारा कहो मकाना॥
न्यारी न्यारी बिधि बतलइया। पाँचो सब्द कबीर सुनइया॥
चोका कीन्ह सब्द धुनि गाजा। कहो सब्द केहि ठाम बिराजा॥
और चार की बिधी बतावै। तब तुलसी के मन मैं आवै॥
सेत चदरवा दीन्ह तनाईं। सो कबीर ने कहा बताईं॥
कपड़ा तानि चदरवा कीन्हा। कही कबीर सो बिधि नहिं चीन्हा॥
आरति करन साज बतलाईं। सूरत रित रति मरम न पाईं॥
आवै सुरति सब्द रित माहीं। सो कबीर ने भाखि सुनाईं॥
चैाका कैान ठिकाने कीन्हा। ता की राह रीति नहिं चीन्हा॥
कही कबीर चोका सोइ साजा। जहँवाँ सब्द अखंडित गाजा॥
चोका माहिं सब्द तुम गाईं। स्वाँस थकै खंडित होइ जाईं॥
आठ पहर चौंसठ घड़ि गाजा। या बिधि सब्द अखंडित साजा
ता चैाके का करौ बयाना। सो कबीर मुख आप बखाना॥

कही कबीर सोई बिधि हेरै । पाँच सब्द के दल के। फेरै ॥
सो दल सब्द कैान केहि ठामा । या की बिधि भिनि भाखि बखाना ॥
कैान ठिकान पाँच दल फेरा । पुरुष नाम केहि ठीके हेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । सो नरियर मोड़ा केहि ठाईं ॥
नरियर बनिये हाट मँगावा । सो नरियर मन मैं नहिं आवा
नरियर मोड़त बास उड़ानी । सो कहो बातैं ठीक ठिकानी ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । तुरत पुरुष के दरसन पाई ॥
सो ततवर कहो पुरुष दिखाना । सो ठीके का करो बखाना ॥
नरियर ऐसे कबीर बतावै । मोड़त छिन पद पुरुष दिखावै
तुम ते। नरियर मोड़े अनेका । उमर गई पुनि पुरुष न देखा ॥
चैाका करि परवाना लीन्हा । तन बीता पुनि पुरुष न चीन्हा
मिलन कबीर आज बतलावा । पूछै कोइ नहिं भेद बतावा ॥
कहा कबीर जीवत कर लेखा । तन बीता सुपने नहिं देखा ॥
परवाना सत लोक पठावै । जिवत मिलै न मुए कोइ पावै ॥
कह कबीर छिन लोकै जाई । सो परवाना भेद न पाई ॥
सत कबीर परवाना भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
तिनुका तोरि के जल अचवाई । ये बिधि तुम ने भेद बताई ॥
तिनुका तुरत कबीर न गावा । तिनुका कौन मरम बतलावा ॥
सिष के हाथ पान पुनि दीन्हा । कौन पान भाखा उन चीन्हा ॥
चैाथा हाथ पान बतलावा । तुम बरई की हाट मँगावा ॥
पावै पान सो लोक पयाना । ये कबीर ने करी बखाना ॥
तुमहूँ पान लिये हैं हाथा । देखा कहो लोक बिख्याता ॥
जोइ जोइ कहो देखि द्रृग अपना । हाल मिला कहो कहो न सुपना
जाना बिधि बिधि पाइ न होई । पाये कहैं कबीर बिलोई ॥
सब्दै अंग कबीर बुझाई । सिष्य बूझि के सुरति लगाई ॥
पहुँचे सिष्य अगम के द्वारा । चैाका सुरति कबीर पुकारा ॥

निरतं कबीर द्वार द्रुग भाखा । सूरति सब्द मिलै सिख साखा
सूरति सब्द मिलै चढ़ि चाँपा । घर लिपाय चौका तुम थापा
नौतम चौका द्वार लिपाई । ये कबीर चौका नहिँ गाई ॥
चौका नौतम भेद बतावौ । तब कबीर का गाना गावौ ॥
जो कबीर बिधि भाखा चौका । सो मेटै जिव संसय सोका ॥
देखो तुम अपने मन माहीं । संसय सोक अनेक सताई ॥
चौका करै सोक नहिँ आवै । ये तो सोक अनेक सतावै ॥
चौका कहो कौन है भाई । ता से संसय सोक नसाई ॥
करि करि चौका लोक सुनावै । छिन छिन संसय सोक मिटावै
ये चौका परतीत दृढ़ाया । सो तुलसी के मन नहिँ आया
चौका करि पावै परवाना । एक पलक मेँ लोक पयाना ॥
लोक बिधी सिष आइ बखानै । सो चौका मोरे मन मानै ॥
चौका पान अनेकन खाया । बपुरे कोई लोक नहिँ पाया ॥
चौका करिकै साख बतावै । जीवत कोई लोक नहिँ पावै ॥
चौका करिकै जन्म सिराना । अब मरने का भया ठिकाना ॥
मूए पर मुक्ती नहिँ पावै । ये कहो लोक कौन बिधि जावै
जो कबीर ने चौका गाया । सो चलि आज लोक निज पाया
जो कछु पंथ कबीर चलाया । पंथ भेद कोइ मरम न पाया ॥
पंथ कबीर जौन बिधि भाखी । सो ता की बिधि सूझि न आँखी
पंथ कबीर कौन बिधि गावा । गये कबीर सोइ मारग पावा ॥
पंथ नाम मारग को होई । मारग मिलै पंथ है सोई ॥
बिन मारग जो पंथ कहावा । सो उन नहीं पंथ को पावा ॥
पंथ कबीर सोई है भाई । गये कबीर जेहि मारग जाई ॥
ये नहिँ पंथ कहावै भाई । चेला करि सिष राह चलाई ॥
ये सब जाति पाँति कर लेखा । या से गुरु सिष तरत न देखा ॥
अब कबीर की साख सुनाई । जो कबीर अपने मुख गाई ॥

पुरइनि सेत पान कियौ चौका। चीन्हौ पुरइनि छाँड़ौ धोका ॥
पुरइनि सेत का खोज लगावौ। ढूँढ़ि ताहि पर चौका लावौ ॥
तुम धरती पर चौका ठाना। पुरइनि सेत कबीर बखाना ॥
ये तौ बिधी मिली नहिँ भाई। कही और तुम और चलाई ॥
ये तुम बनिया हाट लगावा। कहा कबीर सो मरम न पावा ॥
जो कबीर ने बिधी बताई। सब्द राह मारग समझाई ॥
सब्द चीन्ह कर बूझि बिचारा। केहि बिधि सब्द कहै निरबारा ॥
जा को कहिये साधु सुजाना। सब्द चीन्ह सोइ बूझै ज्ञाना ॥
सोई साध बिबेकी होई। कहा कबीर पद बूझै सोई ॥
सब्द पंथ सब राह बतावै। भिन्न भिन्न बिधि त्रिधि दरसावै
कोऊ न बूझै सुरति लगाई। चौका पट्टा औरहि गाई ॥
सब कहि भिन्न भिन्न दरसाई। सो पंथिन को दृष्टि न आई ॥
पंथ और मग औरै जाई। कही कबीर सो राह न पाई ॥
अब कबीर-मुख साखि सुनाऊँ। फूलदास सुनि मन मेँ लाऊ ॥
चौका राह पंथ दरसाऊँ। कहि कबीर-मुख सब्द सुनाऊँ ॥
तुलसी सब्द कबीर सुनाई। फूलदास सुनि सुरति लगाई ॥

॥ मंगल १ ॥

खोजो साध सुजान, सो मारग पीउ का।
परख सब्द गहौ सरन, मूल जहँ जीव का ॥१॥
भौजल अगम अपार, लहर बिकरार है।
कठिन ये पाँचौ मगर, बीच जम जार है ॥२॥
इंद्रादिक ब्रह्मादिक, पार न पावहीं।
गुरु बहियाँ कड़िहार, जो पार लगावही ॥३॥
निरखि पकरि कड़िहार, तो घर पहुँचावही।
देत नाम की डोरि, तो दुख बिसरावही ॥४॥

बैठि के आनँद महल, परम गुन गावही ।
सुखमन सेज जगाइ, तो पिया रिझावही ॥५॥
बिन जल लहर अनूप, तो मोती झिलमिलै ।
देखि छत्र उँजियार, तो हंसा हँस मिलै ॥६॥
अग्र जोति उँजियार, तो पंथ सिधावही ।
कोटिन भान निछावर, आरति साजही ॥७॥
का लिखि दीन्हे पान, तो तिनुका तोरई ।
का नरियर के मोरे, जो जम धरि बोरई ॥८॥
सत लिखि दीन्हे पान, सो तिरगुन तोरई ।
सुरति फूल बरमूल, सो नरियर मोरई ॥९॥
नरियर भेद अगम्म, संत जन मोरई ।
कहै कबीर तेहि जाचौ,* तो बंदी छोरई ॥१०॥

॥ मंगल २† ॥

तेरो संगी निकरि गयो दूर । सोहागिल आइ मिलै ॥टेक।
आया सँदेसा आदि घरै का । लिये सब्द टकसार ॥१॥
सतगुरु घाट अगम तोहि चढ़ना । चढ़न के पंथ सिधार ॥२॥
नवएँ धाम खोलिये कुंजी । दसएँ गुरु परताप ॥३॥
चौका चार गुप्त हम कीन्हा । ता का सकल पसार ॥४॥
कह कबीर धर्मदास से । ये चौका है निरधार ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये कबीर चौका अस भाखा । मूल बृच्छ तजि पकरै साखा ॥
पंथ राह चौका अस जाना । सोइ कबीर-पंथी को माना ॥
कही कबीर सो राह उठाई । अपनो मन मत राह चलाई ॥
झूठा पंथ जगत सब लूटा । कहा कबीर सो मारग छूटा ॥
कहा कबीर जीवत निरबारा । तुम लै उलटी फाँसी डारा ॥

* माँगो । † यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनकर फूलदास सकुचाना । तुलसी बचन सत्त कर माना ॥
तुम कबीर बिधि भाखी रीती । या मैं एक न कही अनीती ॥
जो कबीर ने पंथ चलाई । सोही तुमने राह बताई ॥
साहिब ने एक बानी भाखा । धरमदास कुल दीन्हो साखा ॥
बंस बयालिस तुम्हरे होई । अटल राज भाखा पुनि सोई ॥
ऐसी सब्द साखि सब गावैं । और ग्रंथ ये भेद बतावैं ॥
अस कबीर अपने मुख भाखा । अटल बयालिस बंसी साखा ॥
या की तुलसी कस कस भइया । कहो बुझाइ कैसी बिधि कहिया ॥
कहि कबीर ने बंस बखाना । सो कहो तुलसी केहि बिधि जाना
बंस बयालिस अटल बतावा । कस कस धरमदास सोइ गावा ॥
या की बिधि बिधि भेद बतइये। सो तुलसी बरतंत सुनइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बंस बयालिस भाखि सुनाऊँ । मुख कबीर बिधि मैं समझाऊँ ॥
जो कबीर मुख भाखे बैना । ता की बिधी सुनाऊँ सैना ॥
काया बीर कबीर कहाई । सब्द रूप है घट के माहीँ ॥
ता को नाम कबीर कहाई । सो कबीर है जग के माहीँ ॥
चौथे पद से सब्द जो आवै । सत कबीर सोइ नाम कहावै ॥
निज निज पद से सब्द जो आवै। धरमदास तेहि नाम कहावै ॥
काया बीर कबीर कहाई । धरमदास ये मन है भाई ॥
एक सब्द और एक कबीरा । धरमदास मन भया अनीरा ॥
धरमदास को पंथ बतावा । धरमदास मन सब्द समावा ॥
ता की पंथ राह बतलाई । ये कबीर मुख अपने गाई ॥
काया बीर कबीर कहावा । धरमदास मन को दरसावा ॥

बंस बयालिस मन के भाई । ता की बिधी कहूँ समझाई ॥
चालिस बंस बास मन केरा । इकतालिस सुत सार बसेरा ॥
बिधी बयालिस सब्द बखाना । ऐसे बयालिस अटल कहाना ॥
ये कबीर मुख भाखि सुनाया । तुम कछु और और ठहराया ॥
मन और सुरति सब्द मैं जावै । अस अस ब्यालिस अटल कहावै ॥
मन और सुरति सब्द भया मेला । अस कबीर भाखा निज खेला ॥
ग्रंथ माहिँ पुनि देखौ साखी । ये कबीर मुख अपने भाखी ॥
अब आगे का कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
भिनि भिनि भाखूँ भेद बुझाई । आदि अंत सुन गुन मन माईं ॥
अगम निगम भिनि भिनि कर भाखी । कह कबीर स्रुति समझौ वा की॥
औरौ और संत सब गाये । जोइ जोइ अगम पंथ पद पाये
जिन की सुरति अगमपुर धाई । तिन तिन की पुनि साखि सुनाई॥
कही कबीर सोइ पिरथम भाखा। छूटै तिमिर होय अभिलाखा॥
सुन और महासुन्न के पारा । जहँ वो सार सब्द बिस्तारा ॥
येहि अलोक कब्बीर लखावा । ता पीछे सतलोक बतावा ॥
सुन और महासुन्न उन गावा । हम अनाम निःनाम सुनावा ॥
सत्त पुरुष सतलोक कहाये । ता को हम सतनाम सुनाये ॥
सोला सुत[१] कब्बीर बखाना । हम ने सोला निरगुन ठाना ॥
सोला माहिँ निरंजन पूता । हम भाखा निरगुन मजबूता ॥
सोई निरंजन मन भया भाई । जा ने जग रचना उपजाई ॥
हम निरगुन से सरगुन भाखा । मन को सरगुन कहि कर राखा
मन सरगुन सब जग उपजाई । कही कबीर तुलसी पुनि गाई ॥
मनहिँ कबीर निरंजन गावा । ब्रह्मा बिस्नु सिव पुत्र बतावा॥
निरगुन से सरगुन मन भाखा । हम पुनि तीनि गुनन मैं राखा

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "सुत" की जगह "सुनि" है लेकिन आगे की कड़ी से "सुत" ही शुद्ध जान पड़ता है।

तीनोँ गुन मन से उपजाई । ब्रह्मा बिस्नु सिव गुन के नाईँ
सरगुन मनहिँ निरंजन कहिया । मनहिँ निरंजन निरगुन भइया
ये कबीर बिधि तुलसी कहिया । सोइ कबीर निज मुखहि सुनइया॥
संत मता बिधि एकहि जाना । नाम कही बिधि आनहि आना
ता से तुम को बूझ न आवै । अनि अनि नाम धरे बिधि गावै
सत साहिब सत नाम सुनावा । सार सो सब्द अनाम कहावा ॥
निरगुन नाम निरंजन जाना । राम कहा सोइ मनहिँ बखाना
कहि कहि संतन भाखि सुनाई । सोइ कबीर अपने मुख गाई ॥
और संत और बिधि समझाई । येहि कबीर और बिधि गाई ॥
मत पहुँचे पहुँचे पर एका । जो अबूझ सो बाँधै टेका ॥
जिन जिन अनुभै भाखि सुनावा । अगम पंथ बिधि एकहि गावा॥
पुरइनि पात कबीर सुनाये । पुरइनि सोई संत सब आये ॥
पुरइनि सेत कबीर सुनावा । सोइ सब सेत संत बतलावा ॥
सूरति सब्द कबीरहि खेला । सार सब्द मत अगम अकेला ॥
सूरति सत्त नाम कियो सैला । सूरति सार सब्द करै मेला ॥
निःअच्छर सोइ आदि अमेला । कहिये सार सब्द तेहि खेला ॥
जो जो संतन कही अगारा । सो सो दास कबीर पुकारा ॥
या मैँ भर्म न कीजे भाई । संत द्रोह नीच ऊँच न गाई ॥
संत को नीच ऊँच बतलावै । आद अरु अंत नर्क गति पावै॥
संत देस गति अगम बखाना । फूलदास तुम राह न जाना ॥
चैाका पंथ ये हाट बजारा । चैाका संत पंथ गति न्यारा ॥
फूलदास सुनि सीतल भइया । तुलसी स्वामी अगम सुनइया ॥
हम तो पंथ भेष मैँ भूला । तुम कहा सार भेद पद मूला ।
फूलदास ऐसी बिधि बोला । तब हम अपनि दीन गति खोला
तुलसि निकाम संतन कर चेरा । संत कृपा से अगम पद हेरा ।
संत चरन परसादी पाई । ता से सब कहै तुलसि गुसाँईँ ।

सब मिलि के पुनि कहै गुसाँई। मैला मन मत बुद्धि न पाई॥
मैं किंकर संतन कर दासा। संत चरन बिन और न आसा॥
दास कबीर संत है स्वामी। उन सम फूलदास को जानी॥
तुम साधू हो चतुर सुजाना। तुलसी जानो दास समाना॥
मैं साधन कर दास बिचारा। संत चरन की लागौं लारा॥
दीन जानि किरपा करि हेरा। वे दयाल सब कीन्ह निबेरा॥
तुमहूँ साध दया के स्वामी। फूलदास तुम चरन नमामी॥
भूल न मोरी अचरज मानो। मैं तुम्हरे चरनन लपटानो॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै स्वामी सूझा। है कबीर तुलसी नहिं दूजा॥
मैं महंत मन मान निकामा। मैं मति नीच न तुम को जाना॥
हाथ चरन पर तुरत चलावा। दीन होय सिर चरन गिरावा॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धाइ पाँइ को लीन्हा। चरन सीस तेहि आपन दीन्हा॥
तुलसी कहै ऐसी नहिं कीजै। कृपा चरन अपना मोहिं दीजै॥
फूलदास बिधि कैसी भाखी। दीन साधना क्या कहुँ जा की॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंध अचेता। तुलसी स्वामी दीन्ही चेता॥
मोरा मन मैला अति नीचा। ये महंत मत मन सम कीचा॥
मोरी मति पर दृष्टि न दीजै। फूलदास अपना करि लीजै॥
तुम्हरे चरन माहिं निरबारा। बिना चरन नहिं होइ उबारा॥
जो कबीर सो तुम हो स्वामी। दया करहु मोहिं अंतरजामी॥

मैं अपनी गति कस कस गाऊँ। सुरति न छाँड़ै तुम्हरा पाऊँ ॥
एक बात मोरे मन आई । भाखौ स्वामी तुलसि गुसाँई ॥
है सरीर में बीर कबीरा । सात दीप नौ खंड अमीरा ॥
ऐसी साखि कबीर पुकारा। बूझौ यह बिधि कौन बिचारा ॥
या कौ भेद भर्म मोहिं आवा। भाखौ स्वामी भर्म नसावा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनिये दै काना । या का भाखूँ सकल बिधाना ॥
धरमदास मनहीं को जानौ । काया बीर कबीर बखानौ ॥
बिधि कबीर संबाद बखाना । धरमदास मन तुलसी जाना ॥
काया बीर मन कहि संबादू । ये कबीर मुख भाखी आदू ॥
सातौ दीप कबीर समाना । सो कबीर मन माहिं भुलाना ॥
मन भूला इंद्री सँग साथा । काया बीर देँह में राता ॥
सात दीप नौ खंड समाई । रहत कबीर भर्म उपजाई ॥
तन सँग कर्म माहिं किया बासा । उपजै बिनसै पुनि पुनि नासा ॥
तन सँग पाइ हिये रहै सोगा । उपजै बिनसै दुख सुख भोगा ॥
मन से इंद्री बास उड़ाई । सो मन धर्मदास है भाई ॥
काया बीर जो धर्म न जानै । होइ कबीर आदि पहिचानै ॥
सुरति सैल जो चढ़ै अकासा । फोड़ि अकास अमर पद बासा ॥
सत्त गहै सतगुरु पद पासा । सत्त लोक सत पुरुष निवासा ॥
ता के परे अगमपुर धामा । देखै लोक अलोक अनामा ॥
सत कबीर होइ वहँ को जाई । और कबीर भौ झटका खाई ॥
सत कबीर जाहि कर नामा । चढ़ै सुरति सतलोक समाना ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है स्वामी । सो गुरु करै चेला परमानी ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है सैला । वो कबीर सतगुरु का चेला ॥
वो कबीर जेहि राह बतावै । सुरति सैल सोइ अगम लखावै ॥

वो कबीर भौ पार लगावै । और कबीर भौ भटका खावै ॥
और गुरु चेला झूठ पसारा । दोनों बूड़े भौजल धारा ॥
सतगुरु सत्तपुरुष की बाटा । चेला चढ़ै सुरति से घाटा ॥
सोइ चेला है पद परवाना । और सगरा जग निगुरा जाना ॥
कनफूका से काज न होई । दोनों जाहिं नर्क में सोई ॥
सत्त सोई गुरु गगन प्रकासा । जा से मिटै काल की त्रासा ॥
गगन चढ़ै सोइ सतगुरु पाई । नहिं तो चेला निगुरा भाई ॥
गगन चढ़ै गुरु परसै आई । चेला से पुनि गुरू कहाई ॥
सत्त कबीर ताहि कर नाईं । काया कबीर को राह बताईं ॥
कनफूका गुरु जग ब्यौहारा । उन से न उतरै भौजल पारा ॥
सतगुरु सत्त कबीरहि पावै । चौका की बिधि बिधी बतावै ॥
सुरति सब्द की डोर लखावै । चौके से चौथा पद पावै ॥
सब्द सोर जो उठै अखंडा । सुरति राह से चढ़ि गई डंडा ॥
होवै सत्त पुरुष पद मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
सो कबीर चौका बिधि जानै । चौथे पद की राह बखानै ॥
चौका बिधि भिनि भिनि बतलावै । पंथ राह सतगुरु दरसावै ॥
सूरत चढ़ै पंथ जब पावै । चौका पंथ राह सोइ आवै ॥
ये चौका कब्बीर बतावा । चौका राह रीति समझावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, तुलसी स्वामी साथ ।
चौका बिधि बतलायऊ, कस कस बिधि बिख्यात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिधि बिधि सुनौ, चौका बिधि सब सार ।
जो कबीर मुख भाखिया, सो बिधि हम निरबार ॥

॥ चौपाई ॥

चौका बिधि काया मँ गाई। जो कबीर ने कही लखाई ॥
सिलिपिलि दीप जलखंडी राजा। ये सब बिधि काया मँ साजा ॥
पाँच फूल नरियर के गावा। सो सब काया माहिँ लखावा ॥
सतगुरु मिलै तो भेद लखावै। नरियर मोड़त बास उड़ावै ॥
बहुतक नरियर मोड़ेव भाई। पत्थर पर फोड़ेव तुम जाई ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई। तुम ने गंध बास ठहराई ॥
या से भेद मिलै नहिँ भाई। ढूँढौ बनिये हाट बिकाई ॥
अब वो पान का भाखौँ लेखा। पान परे पर आवै न पेखा ॥
तुम बरई का पान मँगावा। बीरा करि करि ताहि खवावा ॥
बीरा पान कबीर लखावा। सोई पान घट माहिँ बतावा ॥
सतगुरु मिलै पान पर आना। बिन सतगुरु कोइ राह न जाना
मेवा आठ बखाने जोई। वह अठमेवा पुरुषै होई ॥
सत कबीर ऐसी बिधि भाखा। मेवा फल लीन्हे सिष साखा ॥
काया पूर जोति है ताई। तुम कपूर बनिये से लाई ॥
इंद्री पाँच बासना नासा। पाँचौँ बासन तन मँ बासा ॥
तुम लीन्हा ताँबा और काँसा। या से भूले अगम तमासा ॥
पुंगीफल सूपारी गाई। स्वाँसा पवन चलै तेहि माईँ ॥
सो पारी पारी पद जाई। तुम बनिये की हाट मँगाई ॥
सेतै बस्तर बास बतावा। तुम बजार से कपरा लावा ॥
उन चंदा दर तानि बतावा। तुम घर कपरा बाँधि तनावा ॥
उन तन्दुल सेर सवा बतावा। तुम चौके चाँवल मँगवावा ॥
कदली पत्र छेदन उन कहिया। तुम केले के खंभ गड़इया ॥
सेत मिठाई उन बतलाई। तुम गुड़ मीठा खाँड़ मँगाई ॥
नौ के तम चौका चिन्हवावा। तुम सगरा घर जाइ लिपावा ॥
आवै रित उन साज बतावा। तुम दीपक को आरति लावा ॥

पाँचौ सब्द अखंडित कहिया । तुम खँजरी पर सब्द सुनइया ॥
पाँच सब्द का कहौं बिधाना । न्यारा न्यारा ठाम ठिकाना ॥
सत्त सब्द पहिले परवाना । सो कोइ साधू बिरले जाना ॥
सत्त सब्द सतलोक निवासा । जहँवाँ सत्तपुरुष कर बासा ॥
दूजा सब्द सुन्न के माईं । तीजा अच्छर सब्द कहाई ॥
चौथा ओंकार बिधि गाई । पंचम सब्द निरंजन राई ॥
चढ़ि ब्रह्मंड फोड़ असमाना । सुरति सब्द मेँ लगै निसाना ॥
ताहि पार सतलोक बिराजा । अखंड सब्द ता ऊपर गाजा ॥
मिलै संत कोइ भेद बतावै । तब वोहि पंथ संत से पावै ॥
दीन होइ गरुवाई डारै । संत कृपा से उतरै पारै ॥
पंथी भेष टेक नहिं राखै । सुरति चीन्हि कै द्वारा ताकै ॥
चौका काया कबीर बतावा । बोली चीन्ह भेद जिन पावा ॥
जो समान चौका कर साजा । सो समान तन माहिं बिराजा ॥
जो जो बस्तु चौका मेँ गाई । भिनि भिनि घट भीतर दरसाई
अंतर घट जो चौका कीन्हा । मरम सत्तलोक सोइ चीन्हा ॥

॥ छंद ॥

चौका बिधि गाई भाखि सुनाई, जो कबीर मुख आप कही ।
तुलसी सब भाखी देखा आँखी, जब कबीर की साखि दई ॥१॥
घट भीतर जाना भेद बखाना, फोड़ि निसाना पार गई ।
अंतर गति गाई भेद सुनाई, तन भीतर बिधि बात कही ॥२॥
देखा सतलोका अगम अलोका, चौका चौथे पार गई ।
येहि बिधि हम भाखा नैनन ताका, सेत पुरइन तन तार लई ॥३॥
तोरा तन ताला खोलि किवारा, अगम निगम का भेद कही ।
तुलसी कहै साँची यह बिधि बाँची, सब्द सुरति गुरु गैल गई ॥४॥

॥ मंगल ॥

सतगुरु मारग चीन्ह दीन दिल लाइ कै ।
बूझै अगम की राह पाइ पद जाइ कै ॥१॥

दृग पर चौका पान जानि जब पाइये ।
नरियर सीस सँवारि सार समझाइये ॥२॥
तत मत गुन हैं तीनि सो तिनुका तोरिया ।
सुरत निरत निज नैन नारियर मोरिया ॥३॥
सूरति चढ़ै असमान पोढ़ि[1] सुर्त डोरि है ।
दीन्हा दीनदयाल काल सिर फोड़िहै ॥४॥
इंद्री बासन पाँच बासना जाइया ।
अठमेवा है पुरुष बाट तब पाइया ॥५॥
काया मद्धे पूर कपूर जनाइया ।
पाँच तत्त तन अगिनि जोति दरसाइया ॥६॥
होत जोति उँजियार पार स्रुत से लखो ।
सार सब्द सत द्वार लार स्रुत से पको ॥७॥
मन बैठक है बास स्वाँस सुन से भई ।
पान सुपारी सेत सोई चौका कही ॥८॥
गगन चढ़ै असमान चदरवा तानिया ।
सेत माहिँ है स्याम पान सोइ आनिया ॥९॥
नौतम द्वार लिपाइ सोई नौ द्वार है ।
अष्ट कँवल दल फूल मूल सोइ सार है ॥१०॥
येहि बिधि चौका चार सार सोइ भाखिया ।
और चौका जग रीति चित्त नहिँ राखिया ॥११॥
येहि बिधि चौका चाह थाह जब पाइया ।
अगम चढ़े सोइ संत पंथ दरसाइया ॥१२॥
धरमदास धरि ध्यान सुरति समझाइया ।
सुरति फोड़ असमान सब्द जब पाइया ॥१३॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मेँ "फोड़ि" अशुद्ध है ।

अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ।
या को भाखूँ भेद भाव दरसाइया ॥१४॥
चालिस सेर मन फेर इकतालिस सुत भई ।
बिधी बयालिस सब्द अटल ऐसे कही ॥१५॥
जो कोइ मिलिहै संत भेद अस भाखिया ।
मन चढ़ि सुरति सँवारि सब्द में राखिया ॥१६॥
सुरति सब्द मन मेल सैल समझाइया ।
अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ॥१७॥
तुलसी भाखा भेद भाव दरसाइया ।
चौका कीन्ह कबीर हंस मुकताइया ॥१८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, फूलदास चौका बिधी ।
ये गति तनहिं बिचार, जो कबीर चौका कहा ॥१॥
चौका चार चिताव, सुरति सब्द तुलसी कहै ।
दीन लोन मन भाव, भेद संत दरसावही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

अस चौका कब्बीर पुकारा । पुरइनि पात पर साज सँवारा ॥
जो जल पुरइनि बूझ न लावै। तन में पुरइनि खोज लगावै ॥
ता पर बैठि करै चित चौका। सूरति चढ़ै मिटै मन धोका ॥
जब कोई संत सुरति लखवावै। पुरइनि सेत सत चौका पावै ॥
पुरइनि पात नभ गगन अकासा। पावै सोइ सतगुरु का दासा ॥
ता कर भेद लखावै संतो। पावै सोई कबीरा पंथो ॥
पान फोड़ि कै सुरति चढ़ावै । सहस कँवल दल अंदर पावै ॥
दोइ दल कँवल द्वार में ताकै । सुन की धुन्न सुरति से राखै ॥
धरती ऊपर तरे अकासा । ता के चारि कँवल मधि बासा ॥
वा के बीच नाल नल जानी । धधकै जोर गगन से पानी ॥

ता नाली चढ़ि सुरति सँवारा। निरखै पिंड ब्रह्मंड पसारा ॥
ता के परे अगमगढ़ घाटी। हिये दृग नैन निरखिये बाटी ॥
जोड़ा कँवल दोइ दल चारी। तिरबेनी सोइ संत पुकारी ॥
सुरति अन्हाइ सुन्न के पारा। ता के परे अगम का द्वारा ॥
पुनि सुन महा सुन्न के पारा। सत्त लोक सत पुरुष अपारा ॥
सूरति सतगुरु मिलै ठिकाना। तुलसी चौका भाखि बखाना ॥
सूरति सिष्य सबद गुरु पावै। चौथा पद सतगुरु गति गावै ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी समझ बिचार, फूलदास चौका विधी।
ये गति मति है सार, जो कबीर चौका कहा ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास चौका बिधि जाना। ये कबीर तन माहिँ बखाना ॥
चौका तन के माहिँ सँवारा। ये कबीर बिधि माहिँ पुकारा ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी राह पंथ बिधि गाई। सो सब समझ परा मन माई ॥
बिन सतसंगति राह न पावै। सत्त सत्त तुलसी गोहरावै ॥
मन महंत कछु कान न आवै। अंत बाद नरकै लै जावै ॥
ये सब भूल भाव हम चीन्हा। चौका पट्टा जगत अधीना ॥
चौका से कछु काज न होई। वे चौका औरै बिधि जोई ॥
तुलसी स्वामी चौका भाखी। बिधि बिधान बिधी कहि जा की
काया माहिँ रीति बतलाई। सोइ चौका सत सत्त चिन्हाई ॥
ये सब और पखंड पसारा। भौजल खलक खानि की धारा ॥
जो कबीर चौका बिधि गाई। सो स्वामी तुम समझ सुनाई ॥
चौका काया माहिँ पुकारा। जस कबीर कहि तुलसी सारा ॥
खूब खूब मन मैं ठहरानो। तुलसी बचन सत्त कर मानो ॥
तुलसी कबीर भेद नहिँ दूजा। हमरी बुधि नैनन अस सूझा ॥

जग अजान कछु मरम न जाना। डिंभि पखंडि भेष भरमाना ॥
ये जग रीति जीति नहिं पावै। भेष पंथ सब पोल चलावै ॥
माला कंठी सेली माहीं। भूले पंथ भेष यहि राही ॥
जो कोइ मंत्र जंत्र को जानै। उन को बड़े संत करि मानै ॥
जो रथ गाड़ी बैल चलावै। जग सोइ बड़े साध ठहरावै ॥
गाय भैंस और खेती होई। चेला गाँव महंती सोई ॥
माया मोह बँधा संसारा। जिन को साधू कहै लबारा ॥
जग अंधा अंधा भया भेषा। ये दोउ पंथ इष्ट की टेका ॥
जग में इष्ट टेक लौ लावै। भेष टेक पंथी गोहरावै ॥
जग अंधा पुनि भेष भुलानो। ये सब काल राह रस जानो ॥
जहँ लग अंत पंथ जग माईं। भूले फिरैं राह नहिं पाई ॥
चेला करैं द्रब्य के काजा। भोजन खान पान कर साजा ॥
येहि आसा बस फिरैं अयाना। बंधन जीव काल नहिं जाना ॥
जिन से मुक्ति जगत सब माँगै। आपा सँग रह भोग न त्यागै ॥
जस जस रीति जगत की होई। तस तस साधू समझि बिलोई ॥
अस अस साध जगत मैं लेखा। जो कथि कही सो नैनन देखा ॥
संत रीति रस जगत न जाना। डिंभ करै तेहि संत बखाना ॥
संत दयाल दरस नहिं चीन्हा। उन बिन फिरै कर्म लौलीना ॥
वे दयाल के दरसन पावै। मुक्ति राह और अगम लखावै ॥
जिनके बड़े भाग जग माईं। नित प्रति संत चरन लौ लाई ॥
काल जाल और जम की फाँसी। दरसन संत कर्म भये नासी ॥
वे साधू बिरले जग माईं। जग जल मैं जस कँवल रहाई ॥
वे सज्जन सत साध कहावैं। उन की गति मति बिरले पावै ॥
संत भेद भिनि कोउ कोउ जाना। भेष डिंभ सब भर्म भुलाना ॥
ये सब जग मैं कीन्ह दुकाना। या मैं जगत भेष लपटाना ॥
जीव लोक की राह नियारी। कृपा संत बिन पावै न पारी ॥

हम तो जनम बादि सब खोवा। समझि परी तब सिर धुनि रोवा
बार बार नर देह न पावै। ये तन दुरलभ सब गोहरावै॥
जोगी ऋषी मुनी अरु देवा। तप जप जोग ज्ञान बहु सेवा॥
पुनि निज नर देही नहिं पाया। हम अबूझ तन बादि गँवाया॥
अब ये समझि परा सब लेखा। भेष पंथ मैं कछू न देखा॥
भेष पंथ मद राह अबूझा। सब अबूझ बस काहु न सूझा॥
मान बड़ाई दोजख काजा। जिभ्या इंद्री सब सुख साजा॥
ये कबीर ने कहा पसारा। उन सब कीन्ह जीव निरबारा॥
ना कोइ बूझी समझ बिचारा। इन सब कीन्ह दुकान बजारा॥
ये दुकान से लोक जो जावै। तो सब जगत रहन नहिं पावै॥
साँच झूठ सब परा निबेरा। चित्त चीन्ह नैनन से हेरा॥
तुलसी बिधि बिधि सत्त बखानी। मन मैं ठीक ठीक पहिचानी॥
तुलसी स्वामी संत सुजाना। अस अस बूझ सुनाई काना॥
तन और प्रान छूटि सब जाता। ये पुनि भेद हाथ नहिं आता॥
साखी सब्द अनेकन देखा। ग्रंथ कबीर अनेक बिबेका॥
सो सब देखि देखि पचि हारी। बस्तु न पाई रहे अनारी॥
सार भेद संतन ने जाना। सो ग्रंथन मैं नाहिं बखाना॥
साखी सब्द पढ़ै जो कोई। बस्तु न पइहै सिर धुनि रोई॥
कह्यो कबीर सार पद गुप्ता। परगट माहिं लखो सब थोथा॥
ये तो संत गुप्त मत भाखी। ता की नकल ग्रंथ मैं राखी॥
ढूँढ़ै अब या मैं अज्ञाना। पचि पचि मूरख भये हैराना॥
ये सब ग्रंथ देखि हम भूला। साखी सब्द माहिं बहु फूला॥
आँखी फार फार हम जोवा। जनम अकारथ बादहि खोवा॥
सब्द साखि जो पढ़ि पढ़ि चलिहै। संत दृष्टि बिन कछू न मिलिहै
जो कबीर मुख कहि कर भाखी। संत दृष्टि बिन परै न आँखी॥
ता से संत चरन सिर दीजै। कारज और बात मैं छोजै॥

जो कबीर ग्रंथन मैं कहिया । सो तो भेद संत पै रहिया ॥
हम जूझे ग्रंथन के माईं । केहि बिधि हमरे हाथे आई ॥
संत सुरति चढ़ि गये जो पारा । पावै तिन से भेद नियारा ॥
जगत भेष नहिं भेद बिचारै । ये कहा समझै सार असारै ॥
दीन होइ सतसंगति तोला । जा से सूझै बस्तु अमोला ॥
तोलै दीन होइ निज दासा । सो स्रुति सार मिलै उन पासा ॥
हम तो सरन संत कर लीन्हा । और बात नहिं आइ यकीना ॥
जो कोइ लाख लाख समझावै । हमरे मन में एक न आवै ॥
कहो को खोज सार कर दीन्हा । हम तो स्वामी तुलसी चीन्हा ॥
संत कही और दास कबीरा । जो जो अगम पंथ पद धीरा ॥
जिन जिन स्वाद पाइ पद हेरा । होइ हौं उन चरनन को चेरा ॥
चरन लाग तुलसी के तीरा । उनहिं लखाया अद्‌बुद हीरा ॥
अब कहुँ चित्त लगै नहिं भाई । तुलसी बस्तु अमोल लखाई ॥
बार बार चरनन सिर नाई । करिहैं तुलसी मोर सहाई ॥
अब तो पोढ़ पोढ़ कर पकड़ा । तुलसी चरनन मैं मन जकड़ा ॥
और कहूँ मोहिं बोध न आवै । जो कोइ कोटि कोटि समझावै ॥
समझि परा सब बात बिधाना । तुलसी बिन सूझै नहिं आना ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, पुनि पुनि सरन तुम्हार ।
मैं अचेत चेतन कियौ, तुलसि उतारो पार ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास सज्जन बड़े, तुम चित मति बुधि सार ।
संत चरन अब मन बस्यौ, पैहौ सतसँग सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तुम साध सुजाना । तुम्हरी बुधि निरमल परमाना ॥
दिन दोपहर भयौ मध्याना । अब परसादी करौ समाना ॥

आटा चून चना कर होई। करी प्रसाद भाजी सँग सोई ॥
घीव न पास न पैसा होई। नोन मिरच चटनी सँग सोई ॥
किरपा कर परसाद बनाई। पुनि वा को सब भोग लगाई ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हम नहिं अपने हाथ बनैहैं। सीत उच्छिष्ट चरनामृत पैहैं ॥
तुलसी उठि परसाद बनावा। भया प्रसाद साध सब आवा ॥
सब साधू मिलि भोग लगाई। भोजन करि आसन पर आई ॥
फूलदास बंदगी सिर नाई। सीस टेक कर परसे पाँई ॥
हाथ जोड़ कर बिनती लाई। स्वामी मोहिं भव पार लगाई ॥
हमहूँ दीन दंडवत कीन्हा। सीस नवाइ चरन पुनि लीन्हा ॥

संतबानी पुस्तकमाला

कबीर साहिब का साखी-संग्रह	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन ...	॥)
,, ,, ,, भाग २	॥)
,, ,, ,, भाग ३	।)
,, ,, ,, भाग ४	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।)
,, ,, अखरावती	-)॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १ ...	॥।)
,, ,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ...	॥।)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	॥।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र, भाग १ ...	१)
,, ,, भाग २ ...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित भाग १ ...	१)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ [साखी] जीवन-चरित्र सहित ...	१-)
,, ,, भाग २ [शब्द]	॥।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र	॥=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया और जीवन-चरित्र	॥)
,, ,, भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कबित्त और सवैया ...	॥)
,, ,, भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ ...	॥)
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥-)
,, ,, ,, भाग २	॥-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र	=)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १	॥)॥
,, ,, भाग २	।=)॥
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	॥।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।-)॥

दूसरी पुस्तकेँ

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीँ है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग २

रेवतीदास चरित्र

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सँग रहि इक साधा । मनमुख और मान मद माता ॥
रेवतीदास ताहि कर नामा । फूलदास देखि घबराना ॥
पुनि बोला मन मेँ रिसियाना । स्वामी अब चलिये अस्थाना ॥
फूलदास कहै आज न आवौँ । तुम सब मिलि अस्थानै जावौ ॥
हमहूँ भोर बिहानै अइहैँ । राति यहीँ चरनन मेँ रहिहैँ ॥
तिन पुनि तरक कीन्ह इक बाता । तुमहूँ रहिहौ इन के साथा ॥
हम को सूझि परा अस लेखा । तुम्हरी मति बुधि अचरज देखा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

गुसा खाइ बोले अस बोली । लै उतार दीन्ही सोइ सेली ॥
फूलदास दीन्ही तेहि हाथा । रेवती सीस नवायौ माथा ॥
गल बिच डारि महंती दीन्हा । सुखपालै बकसीसी कीन्हा ॥
तुम तौ करौ महंती जाई । अब हम नहिँ अस्थानै आई ॥
चेला चला बैठि सुखपाला । फूलदास भया और हवाला ॥
चेला मारग मता बिचारा । मन मेँ सोच किया अधिकारा ॥
छाँड़ि महंती हम को दीन्हा । या से अधिक बात कछु चीन्हा ॥
सब सुख भोग मनै नहिँ लाये । ये तौ अधिक बात कछु पाये ॥

जो महंत पद होता भारी । तौ छाँड़त ये देत न डारी ॥
ये सब बात तुच्छ सम होई । तब हमरे सिर डारी सोई ॥
ये बिचार मन माहिं समाना । मति भई सुद्ध उठा अस ज्ञाना ॥
फिरि पीछे मारग से आये । सुखपालै अस्थान पठाये ॥
सब मिलि कै जावौ अस्थाना । हम महंत सँग उपज्यो ज्ञाना ॥
मंगलदास रहे गुरु भाई । टोपी सेली तेहि पहिराई ॥
आये पुनि महंत के पासा । जहँ तुलसी की कुटी निवासा ॥
चौरदार सुखपाली गइया । चौरा पर उन खबर जनइया ॥
मंगल चेला सुनि पछिताना । चौरा सून भया अस्थाना ॥
पुनि बिचार कीन्हा मन माईं । यह अस्थान महंती जाई ॥
ये दोनौं मिलि कीन्ह बिचारा। हम छाँड़ैं तौ होय बिगारा ॥
जो कछु होइ होइ सो होई । अब निबाह बिन बनै न सोई ॥
मंगल मन में बहुत रिसाना । सेली पहिरि बैठि अस्थाना ॥
रेवतीदास कुटी पर आवा । ले पकरे तुलसी के पाँवा ॥
रेवतीदास बोले अस बानी । मैं रहिहौं इन के ढिग स्वामी ॥
कुटी सामने कुटी बनाई । दोनौं रहे कुटी के माईं ॥
रेवतीदास दीन दिल आनी । स्वामी से पूछौं इक बानी ॥
गुरु चेला कर कैसा लेखा । सो स्वामी मोहिं कहौ बिबेका ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रेवतीदास सुनौ तुम भाई । याकी बिधी कहौं समझाई ॥
नहिं कोइ गुरू नहीं कोइ चेला । बोलै सब में एक अकेला ॥
जो कोइ गुरु चेला कर जाना । सोइ सोइ परे नर्क की खाना ॥
एक बोल सब माहिं बिराजा । गुरु चेला दोइत बिधि साजा ॥
चेला होइ नीकि बिधि भाई । गुरू होइ चौरासी जाई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, रहै दीन गति सोइ ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥ १ ॥
तुलसी कह रेवती सुनौ, कहौँ कबीर मुख बात ।
कहि कबीर सब मैं बसौँ, को गुरु चेला साथ ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कह कबीर सब माहिँ बिराजौँ । सब मैं किया सभी मैं साजौँ ॥
कह कबीर हम सब के माईँ । सब हम किया सभी सब ठाईँ ॥
सब के माहीं बासा कीन्हा । सब मैं हमीं हमीं को चीन्हा ॥
जो महंत चेला करै भाई । सब मैं रहा कबीर समाई ॥
ये बिधि बिधी कबीर पुकारा । का को चेला करै लबारा ॥
घट घट माहिँ कबीर समाना । का को चेला करै हैवाना ॥
कह कबीर मोहिँ सब मैं बूझा । चेला करै आँखि नहिँ सूझा ॥
है कबीर सब काया माईँ । ता को तुम चेला ठहराई ॥
कह कबीर सब ठाम ठिकाना । सोई कबीर का फूँको काना ॥
तुम्हरी मति कहौ कौन हिराई । कहा कबीर हम ठामै ठाईँ ॥
कहते तुम को लाज न आई । कहौ कबीर फिरि गुरू कहाई ॥
कहौ कबीर सब माहिँ समाना । गुरु कबीर की करौ बखाना ॥
तुम कबीर को स्वामी गावौ । पुनि वा को चेला ठहरावौ ॥
कस कस ज्ञान तुम्हारा भाई । भूल न अपनी देखौ जाई ॥
अगम निगम का ज्ञान सुनावौ । अपने घर की भूल न पावौ ॥
कहि कबीर मुख गाना गावौ । सब्द न खोजौ पोल चलावौ ॥
नहिँ कोइ तुम को पकरनहारा । सो धन सब्द समझ की लारा ॥
ता से सोल पोल तुम लाई । पकरै तो कछु ज्वाब न आई ॥
और अनेक बात अस नासी । कौन कौन कहुँ तुम्हरी फाँसी ॥
अपना मता ऊँच करि ठानौ । ऊँचे का कछु मरम न जानौ ॥

कहि कबीर मुख साँची बानी । तुम अबूझ कछु परख न जानी ॥
कहि कबीर कथनी को गावै । बूझै ज्वाब न ता को आवै ॥
एक स्वाल हम पूछैं भाई । कँवल चौरासी कौने ठाईं ॥
या की भेद राह बतलाई । कौन ठाम वे कँवल रहाई ॥
नौलख कँवल कबीर बखाना । कहौ तुम उन का कौन ठिकाना ॥
सहस कँवल दल सो पुनि भाखा । अष्ट कँवल दल भेद कहौ ता का ॥
चारि कँवल दल देव बताई । दोइ दल कँवल कौन से ठाईं ॥
ये सब कँवल जोग से न्यारा । जोगी न जानै भेद बिचारा ॥
कँवल चक्र षट जोगी गाई । उन कँवलन से न्यारे भाई ॥
या की बिधि बिधि कहौ बुझाई । कही कबीर पंथ तेहि नाहीं ॥
जो कबीर मुख भाखि बखानी । ता की तुम से पूछौं बानी ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुन भेद कहौं समझाई । रेवतीदास सुन चित्त लगाई ॥
षष्ट कँवल जोगी पुनि गाई । या का तुम को भेद बताई ॥
रहै चार दल गुदा के माईं । और दूजे की बिधी बताई ॥
छः दल कँवल नाभ के नीचे । अष्ट दल कँवल पुहमी के बीचे ॥
पखड़ी बारह हिरदे माईं । सोला पखड़ी कंठ रहाई ॥
उदित मुदित दुइ दीप कहावै । ता मैं सहस कँवल को पावै ॥
कँवल चक्र षट खुल के कहिया । संत कँवल भिनि न्यारे रहिया ॥
ये कँवला षट चक्र से न्यारा । उन को जानै संत बिचारा ॥
षोड़स द्वार काया के माईं । तुम जानौ दस द्वार रहाई ॥
छः त्रिकुटी काया के माईं । तुम जानौ पुनि एकै भाई ॥
नाल सताइस काया माईं । अट्ठाइस पुनि बंक कहाई ॥
बाइस सुन्न संत बतलावा । ये कबीर मुख अपने गावा ॥
मान सरोवर सुषमनि नारी । तिरबेनी ब्रह्मंड के पारी ॥
इतना भेद कहा हम गाई । भिन्न भिन्न कर दिया बुझाई ॥

ये हम कहा भाखि सोइ देखा । ये कबीर ने भाखा लेखा ॥
जो कोइ या का भेद बखानै । पंथ कबीर जाहि को जानै ॥
कहि कबीर की भाखि सुनावै । ये झूठै औरन की गावै ॥
अपना चखा स्वाद बतलावै । और की करनी काम न आवै ॥
और की करनी बूझ बुझावै । सो अपना कारज नहिँ पावै ॥
गुरु चेला का बूझो लेखा । सो गुरु का मैं कहैाँ बिबेका ॥
जगत गुरू नहिँ संत पुकारा । सतगुरु भेद जगत से न्यारा ॥
जो कोइ चढ़ै गगन को धावै । सो सतगुरु के सरनै आवै ॥
सतगुरु सत्त पुरुष हैँ स्वामी । सो चैाथा पद संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बिचार, रेवती यह बिधि गुरु लखैा ।
चखैा अमर पद सार, देखि आदि अंदर मई ॥

॥ प्रश्न रेवतीदास और फूलदास ॥

॥ चैापाई ॥

सुनि रेवती मन संसय आनी । तुम ने औरै और बखानी ॥
जस जस बचन बिधी समझावा । अस आगे कोउ संत न गावा ॥
औरैा संत गये वोहि राही । सो अब उनकी साखि सुनाही
सत्त सुधा रस जिन की बानी । कहिये नाम भेद गुर छानी ॥
येहि बिधि फूलदास पुनि बोला । पूछै बिधी गुरू और चेला ॥
स्वामी या की साखि सुनाई । अगम पंथ को संतन पाई ॥
भिनि भिनि न्यारा नाम बताई । जिनकी साखी सब्द सुनाई ॥
अनुभै भिनि भिनि सब कर न्यारा । भाखैा एक एक बिस्तारा ॥
संत संत की न्यारी बानी, एक एक की कहैा निसानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

कहै तुलसी तुम सुनियो काना । संत सब्द का करैाँ बखाना ॥
दादू मीरा नाभा भाई । नानक दरिया सूर सुनाई ॥

अरु कबीर पुनि भाखा भाई । और अनेक संत बिधि गाई ॥
जो जो संत अगमपुर धाये । जिन जिन साखी सब्द सुनाये ॥
संत चरन रज तुलसीदासा । कछु कछु भाखा अगम बिलासा
तुलसी संत चरन की लारा । मेरी बुद्धि न उन अनुसारा ॥
संत चरन महिमा पुनि भाखौं । उनके चरन सीस पर राखौं ॥

॥ दोहा ॥

संत सब्द बिधि बिधि कहौं, सुनियो फूलादास ।
जो जो सब्द उन भाखिया, कहौं चरन होइ दास ॥

॥ शब्द ॥

तुलसी तुल जाई, गुरु पद कंज लखाई ॥टेक॥
मैं तो गरीब कछू गुन नाहीं, मो को कहत गुसाँईं ।
जो कछु कीन्ह कीन्ह करुनामय, मैं उनकी सरनाई ॥१॥
मैं अति हीन दीन दारुन गति, घट रामायन बनाई ।
रावन राम की जुद्ध लड़ाई, सो नहिं कीन्ह बनाई ॥२॥
ये तत सार तती निज जानत, जो ये लखै लखाई ।
काल काया परिवार मयाई, ये गुन ग्रंथन गाई ॥३॥
ता मैं सार पार पद न्यारा, सो कोइ संत जनाई ।
पंडित भेष जगत अरु ज्ञानी, भेद कोऊ नहिं पाई ॥४॥
अब बरतंत कहौं याही को, भरत चत्रगुन भाई ।
दसरत सीता और कौसिल्या, सिया लछमन्न कहाई ॥५॥
काग भसुंड गरूड़ सबै सब, मंथ्रा अरु केकाई ।
रघुपति रंग संग परिवारा, येहि विधि जगहिं सुनाई ॥६॥
और सुनौ रावन रँग राई, सब परिवार बताई ।
कुंभकरन भाभीषन भाई, इंद्रजीत सुत राई ॥७॥
रानी राइ मँदोदरि सोई, सब परिवार सुनाई ।
ये घट माहिं घटा घट ही मैं, रामायन्न बनाई ॥८॥

रावन ब्रह्म बसै त्रिकुटी मैं, लंक त्रिकूट बनाई।
कुंभ तनै करता मनहीं को, कुंभकरन्न कहाई ॥९॥
भय भै खानि भभीषन भाई, सो भै माहिँ भ्रमाई।
इंद्रजीत जीतै मनहीं को, सो इंद्रजीत कहाई ॥१०॥
रावन ब्रह्म बसै मन दौरी, ता को मँदोदरी बनाई।
मन की दौर को दूर बहावै, त्रिकुटी ब्रह्म कहाई ॥११॥
दस इंद्री रत दसरत कहिये, राम रमा मन जाई।
सत की सीता असत सिया को, कुमति कौसिल्या बसाई ॥१२॥
मन थिर सुरति करै थिर कोई, सो मन मंथ्रा कहाई।
वहँ की बात कहै। कैान सुनाई, कर्मन थिर केकाई ॥१३॥
ले छै रस मनही को भाई, लछमन बीर बड़ाई।
गो मैँ रूढ़ गरूढ़ गिनाई, भय ले भसुंड भुलाई ॥१४॥
भय रत भरम भरत है सोई, चाह त्रिगुन्न गिनाई।
ता को नाम चतुरगुन कहिये, ये सब भेद बताई ॥१५॥
ये नौ द्वार काया के माहीं, सो हनुमान हँसाई।
ये तो चिन्न भिन्न बिन देखे, जोग करै सो जनाई ॥१६॥
काया सोध कसै इंद्रिन को, त्रिकुटी ध्यान लगाई।
स्वाँसा धाइ बंक खुल खोलै, सहस कँवल दल पाई ॥१७॥
जो कोइ जोग जुगति करि लाई, जेहि घट ब्रह्म दिखाई।
जोगी का जोग इष्ट जगही को, ये गति योँ बिधि गाई ॥१८॥
दूजा जोग ज्ञान गति गाई, आतम तत्त लखाई।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, ज्ञान तीनि गति गाई ॥१९॥
चाचरि भूचरि और अगोचरि, खेचरि खेह लगाई।
उनमुनि उभै अकास के ठाइ, ज्ञान बिधी बतलाई ॥२०॥
रेचक पूरक कुंभक कहिये, येहि बिधि ज्ञान गिनाई।
और अवस्था अरथ बताई, ज्ञानी किनहुँ न पाई ॥२१॥

जाग्रत सुपन सुषोपति कहिये, तुरियातीत कहाई ।
तुरियातीत बसै वोहि पारा, जो या करै तिन पाई ॥२२॥
चारो बानी का भेद बताई, सास्तर संध लखाई ।
परा पसंता मधिमा सोई, बैखरी बेर बताई ॥२३॥
ये सब जोग ज्ञान गति गाई, ज्ञानी यही बताई ।
इनके परे भेद है न्यारा, सो कोइ संत जनाई ॥२४॥
और सुनौ जो अगाध अघाई, संतन की गति गाई ।
जा को भेद बेद नहिं जानै, जोगी किनहुँ न पाई ॥२५॥
परमहंस बैरागी गुसाँई, जग्त की कौन चलाई ।
ये कहुँ देखि कहूँ न कहाई, काहू प्रतीति न आई ॥२६॥
तुलसी तोड़ फोड़ असमाना, सूरति सार मिलाई ।
सरकी चाँप चली धौ धाई, धनुवा धनुष चढ़ाई ॥२७॥
तीनि लोक तिल खेई पारा, चौथे जाइ समाई ।
वो साहिब सतनाम अपारा, तिन मोहिं अंग लगाई ॥२८॥
या के पार परे गति न्यारी, सो कोइ संत जनाई ।
जा को नाम अनाम अमाई, केहि बिधि कहौं बुझाई ॥२९॥
ता के रंग रूप नहिं रेखा, नाम अनाम कहाई ।
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, ता घर जाइ समाई ॥३०॥
सब संतन के चरन सीस धरि, आदि अजर घर पाई ।
तीनि लोक उपजै और बिनसै, चौथे के पार बसाई ॥३१॥

॥ सोरठा ॥

येहि बिधि रघुपति रंग, रावन संग प्रसँग भयो ।
सुरति चढ़ा चित चंग, ज्यों पतंग डोरी गह्यो ॥

॥ शब्द १ दादू साहिब ॥

दादू देखा अदीदा, सब कोइ कहत सुनीदा ॥टेक॥
हवा हिरस अंदर बस कीदा । तब यह दिल भया सीधा ॥१॥

अनहद नाद गगन चढ़ गरजा । तब रस पिया अमीं दा ॥२॥
सुखमनि सुन्न सुरति महलैं नभ । आया अजर अकीदा ॥३॥
अष्ट कँवल दल म दृग दरसन । पाया खुद्द खुदी दा ॥४॥
जैसे दूध दूध दधि माखन । बिन मथे भेद न घी दा ॥५॥
ऐसे तत्त मत्त सत साधन । तब टुक नसा पिय पीदा ॥६॥
नहिं यह जोग ज्ञान मुद्रा तत । यह गति और पदीदा ॥७॥
जो कोइ चीन्ह लीन्ह यह मारग । कारज हो गया जी दा ॥८॥
मुरसिद सत्त गगन गुरु लखिया । तन मन कीन्ह उसी दा ॥९॥
आसिक यार अधर लखि पाया । हो गया दीदम दीदा ॥१०॥

॥ शब्द २ दादू साहिब ॥

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी ॥ टेक ॥
नौ लख कँवल जुगल दल अंदर । द्वादस साहिब स्वामी ॥१॥
सूरत कड़क कँवल दल नभ पर । झटकि झटकि थिर थामी २
जैसे जहाज चलै सागर मेँ । बरदबान[1] बहै धीमी ॥३॥
तैसे यार प्यार लखि पाया । तब सूरति ठहरानी ॥४॥
सूरति सब्द सब्द मैं सूरति । अगम अगोचर धामी ॥५॥
का से कहौं पिया सुख सारा । ज्यौं तिरिया मुसकानी ॥६॥
नहिं ये जोग ज्ञान तुरिया तत । यह गति अकथ कहानी ॥७॥
चंद न सूर पवन नहिं पानी । क्यौंकर करौं बखानी ॥८॥
सुन्न न गगन धरन नहिं तारा । अल्ला रब्ब न रामी ॥९॥
कहा कहौं कहिबे की नाहीं । जानत संत सुजानी ॥१०॥
बेद न भेद भेष नहिं जानत । कोऊ देत न हामी ॥११॥
दादू दृग दीदार हिये के । सूरति करति सलामी ॥१२॥
मैं पिया प्यार प्यार पिय अपने । मिलि रहे एक ठिकानी ॥१३॥
सूरति सार संध लखि पाई । ये गति बिरले जानी ॥१४॥

(१) बादबान अर्थात पाल ।

॥ शब्द नानक साहिब ॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरू परिवारा ॥ टेक ॥
चढ़ गइ चंग पतंग संग ज्यौं । चंद चकोर निहारा ॥१॥
सूरति सोर जोर ज्यौं खोलत । कुंजी कुलफ किवारा ॥२॥
सूरति धाइ धसी ज्यौं धारा । पैठि निकसि गइ पारा ॥३॥
आठ अटा की अटारि मँझारा । देखा पुरुष नियारा ॥४॥
निराकार आकार न जोती । नहिं वहँ बेद बिचारा ॥५॥
औंकार करता नहिं कोई । नहिं वहँ काल पसारा ॥६॥
वे साहिब सब संत पुकारा । और पखंड पसारा ॥७॥
सतगुरु चीन्ह दीन यह मारग । नानक नजर निहारा ॥८॥

॥ शब्द दरिया साहिब ॥

दरिया दरबारा खुल गया अजर किवारा ॥ टेक ॥
चमकी बीज चली ज्यौं धारा । ज्यौं बदरी बिच तारा[१] ॥१॥
खुलि गया चंद बंद बदरी का । घोर मिटा अँधियारा ॥२॥
लै लगी जाइ लगन के लारा । चाँदनी चैाक निहारा ॥३॥
सूरति सैल करै नभ ऊपर । बंक नाल पट फारा ॥४॥
चढ़ि गइ चाँप चली ज्यौं धारा । ज्यौं मकरी मुख तारा ॥५॥
मैं मिलि जाइ पाय पिया प्यारा । ज्यौं सलिता जल धारा ॥६॥
देखा रूप अरूप अलेखा । लेखा वार न पारा ॥७॥
दरिया दिल दरवेस भये तब । उतरे भैाजल पारा ॥८॥

॥ शब्द मीरा बाई ॥

मीरा मन मानी सुरति सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरति लगै वा घर की । पल पल नैनन पानी ॥१॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बीज" की जगह "बीच" और "बदरी" की जगह "बिजुली" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

ज्यों हिये पीर तीर सम सालत । कसक कसक कसकानी ॥२
रात दिवस मोहिं नींद न आवै । भावत अन्न न पानी ॥३॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर । जागत रैन बिहानी ॥४॥
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी । देस बिदेस पिछानी ॥५॥
ता से पीर कहौं तन केरी । फिरि नहिं भरमौं खानी ॥६
खोजत फिरौं भेद वा घर का । कोऊ न करत बखानी ॥७॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु । दीन्ही सुरति सहिदानी ॥८
मैं मिलि जाइ पाइ पिया अपना । तब मोरी पीर बुझानी ॥९
मीरा खाक खलक सिर डारी । मैं अपना घर जानी ॥१०॥

॥ शब्द सूरदास जी ॥

मुरली धुनि गाजा, सूर सुरति सर साजा ॥टेक॥
निरखत कँवल नैन नभ ऊपर । सब्द अनाहद बाजा ॥१॥
सुनि धुनि मैल मुकर मन माँजा । पाया अमी रस झाँझा ॥२॥
सूरति संध सोध सत काजा । लखि लखि शब्द समाजा॥३॥
घट घट कुंज पुंज जहँ छाजा । पिंड ब्रह्मंड बिराजा ॥४॥
फोड़ि अकास अललपछ भाजा । उलटि के आपु समाजा ॥५॥
ऐसे सुरति निरखि निःअच्छर । कोटि कृष्न तहँ लाजा ॥६॥
सूरदास सार लखि पाया । लखि लखि अलख अकाया ७
सतगुरु गगन गली घर पाया । सिंध मैं बुंद समाया ॥८॥

॥ शब्द नाभा जी ॥

नाभा नभ खेला, सुरति केल सर सैला ॥टेक॥
दरपन नैन सैन मन माँजा । लाजा अलख अकेला ॥१॥
पल पर दल दल ऊपर दामिनि । जोत मैं होत उजेला ॥२॥
अंडा पार सार लखि सूरति । सुन्नो सुन्न सुहेला ॥३॥
चढ़ि गई धाय जाय गढ़ ऊपर । सब्द सुरति भया मेला ॥४॥
ये सब खेल अपेल अमेला । सिंध नीर नद मेला ॥५॥

जल जल धार सार पद जैसे। नहीं गुरू नहिं चेला ॥६॥
नाभा नैन ऐन अंदर के। खुलि गये निरखि निहाला ॥७
संत उचिष्ट वार मन झेला। दुरलभ दीन दुहेला ॥८॥

॥ शब्द कबीर साहिब ॥

कबीर पुकारा, मैं तो जगत से न्यारा ॥टेक॥
आदि पुरुष अविगत अबिनासी। दीप लोक पद पारा ॥१॥
सूरति सहर हेर हिये द्वारा। सब्द न सिंध अकारा ॥२॥
काल न जाल स्वाल नहिं बानी। सो घर अधर हमारा ॥३॥
अंत न आदि साध कोइ जानै। सतगुरु पदम निहारा ॥४॥
नहिं तहँ आदि निरंजन जोती। सत्त पुरुष दरबारा ॥५॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं। नहीं आदि ओंकारा ॥६॥
ये सच धार प्यार लख पूरा। रूप न रेख जहूरा ॥७॥
कहै कबीर संत वोहि द्वारा। चकवा चौक हुकारा ॥८॥

॥ दोहा ॥

फूलदास तुलसी कहै, संत सब्द की रीत।
जो जो गये अगाध को, सोइ सोइ संत समीर ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई सब्द सुनाई, पंथ अगम सुर्त सार भई ॥१॥
नानक और दादू दरिया साधू, मीरा सूर कबीर कही ॥२॥
नाभा नभ जानी भाखि बखानी, सुरति समानी पार गई ॥३॥
सब की बिधि न्यारी एक बिचारी, सब संतन इक राह लई ॥४॥
सब चढ़े इक धारा पहुँचे पारा, लखी गगन गति गवन गई ५
कोइ करिहै संका महा मतिरंका, तुलसी डंका दीन्ह सही ॥६॥
ये सतमत भाखा देखा आँखा, साखि सब्द में गाइ कही ॥७॥
ये करी बखाना भेष न जाना, सब्द निसाना सुरति लई ॥८॥
कागद नहिं स्याही ग्रन्थन पाई, गाइ गाइ सब जनम गई ॥९॥

कोइ संत लखैहैं न्यारी कहिहैं, कथन बदन मैं नाहिं नहीं ॥१०
जो पोथी पढ़िहैं ज्ञान से अड़िहैं, नरक परैं पन भक्ति नहीं ॥११
बिन भक्ति न पैहैं जनम गमैहैं, संत सरन बिन राह नहीं ॥१२॥
जिन जिन यह मानी सत कर जानी, भक्ति संत सब भाखि कही १३
संतन को जाना सब्द पिछाना, सुरति समानी आदि लई १४
तुलसी तत सारा अगम निहारा, गुरू पिया पद पार लई ॥१५
महुँ पुनि गाई संत सुनाई, संत सब्द रस अगम कही १६
सब संत पुकारा महुँ पुनि लारा, सारा चारा पार गई ॥१७॥
चौथा पद गाई संत सुनाई, सुरति सैल अज आदि लई १८
संतन कर भेदा जानै न बेदा, खेद कर्म की दूर भई ॥१९॥
संतन की सरना दुख सुख हरना, बरना तुलसी तोल लई ॥२०
संतन मुख भाखी अगम की आँखी, उन से ता की तरक कही ॥२१
कोइ बूझै न संधा पड़ा जम फंदा, अंधा जग को बूझ नहीं ॥२२
संतन बिधि लाई सब्द सुनाई, भई बानी सब गाइ कही २३
सब्द जो गावै आँखि न आवै, बिन सतसंगति भर्म सही २४
छूटै सब टेका बूझै एका, ये संतन ने सार दई ॥२५॥
तुलसी गोहराई बूझ न पाई, बिन बूझे सब खानि मई २६
दीन निहारा संत पुकारा, सब्द बिचारा पार भई ॥२७

॥ सोरठा ॥

तुलसी सब्द बिचार, फूलदास ये बिधि सुनौ ।
सब्द करै निरधार, सार पार पद लखि परै ॥१॥
सब्द सब्द बहु भेद, ये अभेद गति भाखिया ।
तुलसी ता की धार, सब्द निरखि रस जिन पिया ॥२॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सब्द संत जो भाखा । निज निज संत जो गये अगाधा॥
अपने अपने सब्द बनाये । अपनी अपनी साखि सुनाये ॥

जो जो गये अगम के द्वारा। पंथ अगम के उतरे पारा॥
पार जाइ बिधि सगरी भाखी। जो जो देखा अपनी आँखी॥
अपनी देखी कही बखानी। आदि अंत जो जिन ने जानी॥
कही संत और कही कबीरा। सब मिलि कही एक बिधि हीरा॥
पहुँचे पहुँचे एक ठिकाना। बिन पहुँचे का और बखाना॥
जो जो संत जो भये सनाथा। पहुँचे पार सार रस माता॥
बरनि न जाइ संत गति न्यारी। मोरी मति कछु नाहिं बिचारी॥
संतन की गति कस कस गाऊँ। दादू की कहैा साखि बताऊँ॥
दादू सब्द संत गति गाई। सब्द संत उन भाखि सुनाई॥
उनकी निसा साखि दरसाऊँ। तुलसी उन की अगम सुनाऊँ॥

॥ शब्द (३) दादू साहिब ॥

दादू जानै न कोई, संतन की गति गोई ॥टेक॥
अविगत अंत अंत अंतर पट। अगम अगाध अगोई ॥१॥
सुन्नी सुन्न सुन्न के पारा। अगुन सगुन नहिं दोई ॥२॥
अंड न पिंड खंड ब्रह्मंडा। सूरति सिंध समोई ॥३॥
निराकार आकार न जोती। पूरन ब्रह्म न होई ॥४॥
इनके पार सार सोइ पैहै। तन मन गति पति खोई ॥५॥
दादू दीन लीन चरनन चित। मैं उनकी सरनोई ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, फूलदास सुन संत गति।
दादू साखि बताइ, निसा बूझि कै यह कहो॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई। यह दादू की साखि बताई॥
जो संतन ने देखा माहीं। रूप रेख बिन रहै अकाई॥
तन भीतर जो लखा अलेखा। रूप रेख ना रहै अदेखा॥
जा के रूप रेख कछु नाहीं। सो वो देखा घट के माहीं॥

पुनि दादू की साखि बताऊँ । सब्द एक जो गाइ सुनाऊँ ॥
जो जो संतन दिल मँ देखा । जिन जिन भाखा अगम अलेखा

॥ शब्द (४) दादू साहिब ॥

दादू दिल बिच देखा, रंग रूप नहिँ रेखा ॥टेक॥
हद हद बेद कितेब बखानै । मैँ कहा बेहद लेखा ॥१॥
मुल्ला सेख सैयद और पंडित । ये मुए अपनी टेका ॥२॥
राम रहीम करीम न केसो । हरि हजरत नहिँ एका ॥३॥
वो साहिब सबहिन से न्यारा । कोइ कोइ संतन पेखा ॥४॥
दादू दीन लीन हुइ पाया । क्या कहूँ अगम अलेखा ॥५
जिन जिन जाना तिन पहिचाना । मिटि गया मन का धोखा ॥६

॥ शब्द (५) दादू साहिब ॥

दादू देखा मैँ प्यारा, अगम जो पंथ निहारा ॥टेक॥
अष्ट कँवल दल सुरति सब्द मैँ । रूप रेख से न्यारा ॥ १ ॥
पिंड ब्रह्मंड और बेद कितेबै । पाँच तत्त के पारा ॥ २ ॥
सत्त लोक जहँ पुरुष बिदेही । वह साहिब करतारा ॥ ३ ॥
आदि जोत और काल निरंजन । इन का वहँ न पसारा ॥ ४ ॥
राम रहीम रब्ब नहिँ आतम । मुहम्मद नहिँ औतारा ॥ ५ ॥
सब संतन के चरन सीस धर । चीन्हा सार असारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द (६) दादू साहिब ॥

दादू दरस दिवाना, आरसी यार दिखाना ॥ टेक ॥
आधी रात गगन मध चंदा । तारा खिलक खिलाना ॥ १ ॥
चटकी सुरति चढ़ी ज्योँ चकरी । फूटि गया असमाना ॥ २ ॥
लै लगी जाइ महल मध ऊपर । सूरति निरत ठिकाना ॥ ३ ॥
मिल गया यार प्यार बहु कीन्हा । खुलि गया अरस निसाना ॥ ४ ॥
आदि अंत देखा मध म्याना । क्योँकर करूँ बखाना ॥ ५ ॥

गुप्त बात गुप्तै भई गाफिल । अंदर माहिँ छिपाना ॥ ६ ॥
मैं कछु कीन लीन सोइ जानत । और कहूँ नहिँ चीन्हा ॥ ७ ॥
दादू पीर मिटी परलै की । जनम मरन नहिँ माना ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

जो देखा घट माहिँ, जिन जिन संतन सब कही ।
रूप रेख नहिँ ताहि, सो अदृष्ट अंदर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

सब संतन ने पाया लेखा । जोई अगम पंथ जिन देखा ॥
जोइ जोइ संतन भाखि सुनाई । सो सब देखा अपने माईं ॥
बिन देखे नहिँ संत पुकारा । देखे बिन कहै झूठ लबारा ॥
फूलदास बूझौ मन माईं । संत कही जो कबीर गुसाँईं ॥
संत कबीर से अंतर नाहीं । भिन्न कहै सो नरकै जाई ॥
जो जो संत गये निज धामा । सो कबीर ने कहे मुकामा ॥
चढ़े संत जो गगन ठिकाना । उन की गति काहू नहिँ जाना ॥
संत मते को दुइ कर जानै । ता तें परै नरक की खानै ॥
संत की निंदा करै बनाई । आदि अंत भौ भटका खाई ॥
संतन की गति भेष न जाना । संत बिना कहुँ नाहिँ ठिकाना ॥
भेष भुलाना भौ के माहीं । रहै काल बस जम की छाहीं ॥
मैं कछु कही न निंदा भाई । जस जस देखा तस तस गाई ॥
मुख अपने निंदा नहिँ गाऊँ । और संत की साखि सुनाऊँ ॥
औरो और और पुनि गाऊँ । तिन तिन की मैं साखि बताऊँ ॥
तुलसी संत भेष कर चेरा । ये भौ सिंध अनीत अनेरा ॥
तुलसी संत चरन की धूरी । दादू सब्द बताऊँ मूरी ॥
उन की साखी सब्द बताऊँ । पुनि दादू की साखि सुनाऊँ ॥
भेष भूलि सब जग के माईं । ता कारन ये सब्द सुनाई ॥
भेष भुलान खान सुख कारन । ता तें दादू सब्द पुकारन ॥

॥ शब्द (७) दादू साहिब ॥

दादू भेष भुलाना, जम सँग कीन्ह पयाना ॥टेक॥
षट दरसन पंडित और ज्ञानी । पढ़ि पढ़ि मुए पुराना ॥१॥
परमहंस जोगी सन्यासी । बेद करत परमाना ॥२॥
आतम ब्रह्म कहैं अपने को । सब मैं हमीं समाना ॥३॥
ता से भौजल पार न पावैं । अहँग ब्रह्म मन माना ॥४॥
मन बिहंग की खबरि न जानै । तन निहंग है बाना ॥५॥
जग जज्ञास मोह मद माते । ता से बहु लपटाना ॥६॥
वे साहिब समरथ हैं दाता । तिन को नहिं पहिचाना ॥७॥
वा को भेद बेद नहिं पायौ । अगम पंथ नहिं जाना ॥८॥

॥ शब्द (८) दादू साहिब ॥

दादू दो दिन रहिहौ, जम दुख बंधन सहिहौ ॥टेक॥
तू मत जान ज्ञान आतम कस । इन बस धोका खैहौ ॥१॥
ये संसार भाव भय भावत । खोजत फिरि फिरि बैहौ ॥२॥
भेष भुलान खान सुख कारन । सार न पुनि फिरि पैहौ ॥३॥
ये जग खोट मोट कौं पूजत । सूझत स्वारथ दैहौ ॥४॥
ये भौ-सिंध अथाह अपारा । बूझि बूझि पग दैहौ ॥५॥
जम की जाल बड़ी अति दारुन । आपै आपु बँधैहौ ॥६॥
दादू कहत पुकारि जगत जग । भेष सबै सुनि लैहौ ॥७॥
भौजल पार जबै होइ जैहौ । सूरति सब्द समैहौ ॥८॥

॥ शब्द (९) दादू साहिब ॥

दादू दीन अवाजा, जग जिव भेष न लाजा ॥टेक॥
सिव सनकादि सिंगी पारासर । इन कौ सखौ न काजा ॥१॥
ये तन तोर काल कर खाजा । छिन छिन सिर पर गाजा ॥२
सुकदेव ब्यास जनक नारद मुनि । घट घट उन पर छाजा ॥३॥

तू केहि लेखे माहिँ न बचिहै । पचि पचि मरत अकाजा ॥४॥
बाघ उपाव करै गउ कारन । जम दल यहि बिधि साजा ॥५
पल मेँ छुटि जैहै सुख सम्पति । ज्योँ माखी मधु राजा ॥६॥
राति दिवस धावै धन कारन । मरन काल कित आ जा ॥७॥
जिन कोइ सुरति सत्त लखि चीन्हा। जनम मरन भै भाजा ॥८॥
दादू भेष भेद जब छूटै । सूरति सब्द समा जा ॥९॥
जब भया सिंध बुंद का मेला । वोहि साहिब को ताजा ॥१०

॥ शब्द (१०) दादू साहिब ॥

दादू कहत पुकारी, कोइ मानै नाहिँ हमारी ॥टेक॥
पंडित काजी बेद कितेबा । पढ़ि पढ़ि मुए लबारी ॥१॥
ये तीरथ वे हज को जाते । बूड़े भौजल धारी ॥२॥
हिंदू तुरक दीन दोउ भूले । करम धरम पचि हारी ॥३॥
नूर जहूर खुदा हम पाया । उतरे भौजल पारी ॥४॥

॥ शब्द (११) दादू साहिब ॥

दादू दीन अधीना, मैँ मति काहू न चीन्हा ॥टेक॥
देह भाव जानत जग सारा । मैँ तिन से तस कीन्हा ॥१॥
मैँ अति नीच जाति कर बेहना । का कहुँ बूझि न सैना ॥२॥
जो कछु कही सही नहिँ लीन्हा । पुनि पुनि उत्तर दीन्हा ॥३॥
मैँ कहा सार पार परमारथ । स्वारथ जग मति हीना ॥४॥
जो कोइ कहन गहन लखि लीन्हा। कही संतन मत भीना ॥५॥
आठ अरब बानी पद पूरन । सूर न सार यकीना ॥६॥
दादू दूरि गाँव बसि पारा । धुनि कपास रस पीना ॥७॥
सतगुरु संध मारग अति झीना । ज्योँ जल तैरत मीना ॥८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भेष भुलान, जानि मानि भै मैँ लसा ।
फँसा रस सार न जान, जानि कानि बूझी नहीँ ॥

॥ चरचरी ॥

तुलसी सब तोल देख, भेष भाव जाई ॥ टेक ॥
तुलसी रस खान पान, जान मान माईं ।
ऐसा मन भूल भेष, भिन्न चिन्ह न पाई ॥ १ ॥
संतन से बैर हेर, साथ चहत नाईं ।
तुलसी सब भेष भूल, अपने हँग[1] माईं ॥ २ ॥
देखा सब झार झार, पार कोउ न पाई ।
लाई लै लार लार, जग असार साईं ॥ ३ ॥
भूलो हक[2] सक्क नाहिं, तुलसी कछु गाई ।
पैहै सुख संत साथ, और कहूँ नाहीं ॥ ४ ॥
संत साँच और काँच, पाँच भूत माईं ।
तुलसी सब हेर देख, भेष अनेक ठाईं ॥ ५ ॥
देखा सब जोइ जोइ, चौज[3] कहुँ न पाई ।
तुलसी मन टूट फूट, छूट छाँड़ ताही ॥ ६ ॥
बिना संत सत्त तत्त, हाथ नहीं आई ।
देखा सब जोइ दोइ, द्वार खानि माईं ॥ ७ ॥
तुलसी निरखा निहार, पार सार नाहीं ।
चित्त कहन बर्त बूझ, कर्म काल जाई ॥ ८ ॥
मैं तो कही पेखि नैन, देख भेद जाई ।
बूझा नहिं सुपन सैन, ऐन आद नाहीं ॥ ९ ॥
ता से मन चेत बूझ, देखि दृष्टि जाई ।
तुलसी तन तोड़ फोड़, मोड़ पोढ़ पाई ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

भेष भुलान सबै जग माईं । आदि अंत की खबरि न पाई ॥
जो कोइ भेद कहै समझाई । भेष कान पर एक न लाई ॥

---

(१) हँगता, अहंकार । (२) सत्त, सत्तपुरुष । (३) आनन्द, विलास ।

कपरा रँगे भेष भये साधू । बूझै न बस्तु जो आदि अनादू ॥
दया जानि कोइ भेद बतावै । तौ वह नगर रहन नहिँ पावै ॥
गृही भेष सब मारि निकारै । कहै हमरा रुजगार बिगारै ॥
परमारथ नहिँ बूझि गँवारा । पढ़ि पढ़ि बूड़े भव जल धारा ॥
या ते संत मता नहिँ पावै । ता ते जिव भव मैँ रहि जावै ॥
कर्म बंध जिव भरमै खाना । बिना संत नहिँ लगै ठिकाना ॥
फूलदास रेवती सुन दासा । संत मिलै तौ होइ सुबासा ॥
और जो सुनौ जगत सब बोरा । भेष टेक मैँ बूड़ न थोड़ा ॥
संत मता कहुँ देख न आवै । भेष मता सब जगत बुड़ावै ॥
ऐसी सोल पोल कहा कीजै । उपजै बिनसै नित नित छीजै ॥
ऐसी कहा कहा की कहिये । ता से गुप्त मौन होइ रहिये ॥
को जग अजगुत सिर पर लेही । परी भूल सर्ब मत येही ॥

हाल मुसलमान साधू अली मियाँ का

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

एक समय इक अचरज भइया । इक फकीर मक्के से अइया ॥
नाम अली तेहि जाति फकीरा । राति भई रहे हमरे तीरा ॥
अल्ला कुह कुह करै निमाजा । हमरे माहिँ देखि मन लाजा ॥
फारिग भये तब खाना खाया । ले आसन कुटिया मैँ आया ॥
हम से खुदा खुदा कर बोले । खुदा नबी बिन कछू न तोले ॥
पूछा अल्ला नबी केहि ठावाँ । उन पुनि ले असमान बतावा ॥
हम पुनि कहा तुम्हारे पासा । मुरसिद मिलै तो होय खुलासा ॥
हमरी बानी कान न लावा । तब दादू का सब्द सुनावा ॥
अली मियाँ सुन हक्क इमाना । मुरसिद दादू किया बखाना ॥
अंदर अली भली कर मानौ । अल्ला अलिफ जुबान बखानौ ॥

॥ अली मियाँ ॥

॥ चौपाई ॥

भूल रसूल रमक दरसावौ । पैगम्बर परमान बतावौ ॥
पैगम्बर कहि भाखि सुनावौ । मसजिद हक मक्का को गावौ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कितनी कही इमान न लावा । गजल एक उन भाखि सुनावा ॥
खुदा खुदाय सब खलक बखानै । खुदा बिना कही एक न मानै ॥

॥ ग़ज़ल अली मियाँ ॥

बंदा बेहोश याद हर दम लावै ।
तेरे बिन खुदी खूब कैसे भावै ॥१॥
कीन्हे तैं आफ़ताब ख़लक़ आफ़रीं ।
कलमा बिन पढ़न कहै कुफ़र काफ़रीं ॥२॥
तुलसी ये अली ग़ज़ल गाइ सुनाई ।
दादू दुरवेश देश हमहूँ गाई ॥३॥

॥ ग़ज़ल तुलसी साहिब ॥

दिल का दुरवेश एक दादू फ़क़ीरा ।
भाखि कही साखि शब्द मुरशिद पीरा ॥१॥
सुनिये म्याँ अली अलिफ़ बानी उनकी ।
रोज़ा निमाज़ कही अंदर धुन की ॥२॥
कलमा पढ़ खुदा खोज अपने माहीँ ।
देखो तन बदन बीच भिश्त बनाई ॥३॥
तुलसी की कहन मियाँ दिल मैं लावो ।
बदन बीच खोज यार अंदर पावो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

अली अजब दीदार, पार परख दादू कही ।
दिल दुरबीन निहार, सो बिचार कह्यो सब्द मैं ॥

॥ दोहा ॥

फहम फकीरी अरस की, मुकर देखि दुरबीन ।
चीन्ह चलै उस राह को, रूह रहम लौलीन ॥

॥ सोरठा ॥

दादू दूर दराब,[1] आबताब[1] पट अबर नाहिं ।
अल्ला अलिफ मकान, अबर फाड़ि पट राह लख ॥ १ ॥
दिल बिच अलिफ दीदार, स्याम सहर पर रूह लखै ।
चखै अरस रस सार, ये बिचार दादू कही ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

दरिया भी दादू बतलाई । अली मियाँ सुन साखि सुनाई ॥
जो सराब दादू भरि पीना । सो सुनि कर कै करै यकीना ॥
आब अलिफ जिन की चलि आई । सो फकीर दुरबेस कहाई ॥
उन कुरान का मभ्फब सुनावा । भिस्त खोज खुद खुदा लखावा ॥
अब दादू का सब्द सुनाऊँ । परस पिया रस लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द (१२) दादू साहिब ॥

दादू दूरि दराबी, पिय रस पियत सराबी ॥ टेक ॥
पियत पियाला मन मतवाला । भोर भई उँजियारी ॥ १ ॥
खूबी खलक खुदी खोइ ख्वाबी । अंदर खिलि गइ स्वाबी ॥ २ ॥
मक्का भिस्त हज्ज को देखा । अबरा आब और ताबी ॥ ३ ॥
अल्ला आदि नबी लख छूटा । रोजा निमाज अजाबी ॥ ४ ॥
मलकुत नासुत जबरुत जा के । लाहुत हाहुत पागी ॥ ५ ॥
लै लगी लामुकाम रब्रि ही से । जगत जहान खराबी ॥ ६ ॥
दादू दृग दीदार हिये के । चूँ बेचूँ बेज्वाबी ॥ ७ ॥
चौथा तबक रियाजत बाजा । आया अरस अराबी ॥ ८ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "दराब" की जगह "निशान" और "आबताब" की जगह "आफ़ताव" है लेकिन आगे की चौपाई की पहिली और तीसरी कड़ी और दादू के शब्द (१२) की टेक और तीसरी कड़ी के देखने से हमारा पाठ शुद्ध समझ पड़ता है ।

॥ सोरठा ॥

अली मियाँ सुन साखि, दिलै फहम बेदिल हुआ ।
मुए रूह से बाद, साथ स्वाल काफर कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अली मियाँ सुन हमरी बानी । गुन गुन मन मैं बहुत रिसानी ॥
कही कुरान अल्ला मुख बानी । हिंदू को काफर कर जानी ॥
और रसूल पर करौ यकीना । उन फकीर ताजीमी कीन्हा ॥
स्वाल भाखि पुनि आसन लीन्हा । उठकर चलन फिकर मन कीन्हा ॥
हाथ पकरि हम गुसा उतारा । आसन जिमीं डारि बैठारा ॥
हम पर मेहर करौ तुम साँईं । अपने दिल मैं बूझौ भाई ॥
तुम खुदाइ का खोज न पावा । मट्टी महजित को सिर नावा ॥
जो महजित तुम आप बनाई । ता महजित मैं खोज लगाई ॥
कहौ खुदा तुम सब के माईं । ऐसे कुरान कितेब सुनाईं ॥
अपने मुख से सब मैं भाखौ । मट्टी महजित को फिर ताकौ ॥
समझौ अपने दिल के माहीं । खुदा खोज खोजौ दिल माहीं ॥
पाँच यार मुहम्मद जो भाखा । आग खाक जल पौन अकासा ॥
ता को खोजो अपने माहीं । बिन मुरसिद कोइ खोज न पाई ॥
सब मैं खुदा कुरान बतावै । करौ हलाल सो दरद न आवै ॥
अपना कुफर चीन्ह नहिं भाई । हिंदू को काफर बतलाई ॥
सुन कर अली मियाँ कछु बूझा । ये तो ज्वाब खूब कर सूझा ॥
खुसी भये और गुसा उतारा । है खुदाइ सब मैं इक प्यारा ॥
फिर हम से वो पूछन लागा । कहौ खुदाइ सब माहिं बिराजा
अली कहै कछु देख न आवै । खोजै खुदा खोज नहिं पावै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कह म्याँ अली सुन, खुदा भिस्त के द्वार ।
दो अनार लटकत रहैं, कुंजी मुरसिद हाथ ॥१॥

अली मियाँ अचरज भया, कही बात सब साँच।
तुलसी भेद बताइये, दीन होय मैं जाच[१] ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी हम भेद बतावा। भिस्त के द्वार अनार लखावा॥
येहि अनार पर सुरति लगावै। खुलै द्वार भिस्त तब पावै॥
तब तुलसी के कदम उन लीन्हा। अली मियाँ आधीनी कीन्हा॥
हुआ अधीन भेद बतलाई। तब उठि मियाँ राह को जाई॥
फूलदास बूझै तुम भूला। हिंदू तुरक भेद दोउ भूला॥
भूला भेष काल भरमाया। काल अपरबल सब को खाया॥
संत मते की राह न जानै। काल चाल बिधि कालहि मानै
जम फाँसी म भेष भुलाना। केहि बिधि पावै जीव ठिकाना
ये जग माहिं फाँस जम डारा। संत बिना नहिं होइ उबारा॥
बारा[२] मते काल ने कीन्हा। आदि अंत फाँसी जिव दीन्हा॥
सतजुग द्वापर त्रेता माहीं। और कलजुग की कहा बताई॥
अनेक जुगन जुग फाँस फँसानी। भेद न चीन्हा पड़े पुनि खानी॥
जब निरगुन बैराट पसारा। सत्त नाम से माँगि लबारा॥
बारा मते मोहिं को दीजै। मोरा मता साध अस कीजै॥
बारा मत की राह चलाऊँ। जा से जीव जगत उरझाऊँ॥
ऐसे निरगुन माँगा भाई। काल जाल मति जिनहिं चलाई॥
बारा माहिं भेष सब भूला। सो जग जाल सहै जम सूला॥
निरगुन काल जग कीन्हे भेषा। चारो जुग जग बाँधी टेका॥
भेष किया जग काल कराला। संत बिना नहिं छूटै जाला॥
काल भेष जग भये अनेका। अपनी अपनी बाँधी टेका॥
ता से तुलसी पंथ न कीन्हा। जगत भेष भया काल अधीना॥
जो जो कहे जीव निरबारा। सो सो फाँसी सब ने डारा॥

---

(१) माँगता हूँ, प्रार्थना करता हूँ। (२) बारह।

बिन आँखी सूझा नहिं भाई । बिना संत कहौ कौन लखाई ॥
चीन्है संत तो होइ उबारा । नहिं तो बूड़ै भौजल धारा ॥
जो कोइ बारा[1] मत को चीन्हा । काल रहै पुनि तासु अधीना ॥
ता पर काल जाल नहिं डारा । जम होइ दीन ताहि को लारा ॥
संत मिलैं पुनि मारग पावै । ऐसे जीव लोक[2] को आवै ॥
ये जग भेष काल बस होई । इन की बात न मानौ कोई ॥
जो कोइ काल भेष पहिचानै । गति मति भेद संत कर जानै ॥
दस औतार निरंजन जाना । ब्रह्मा बिष्नु काल उतपाना ॥
बेद कितेब अस फंद पसारा । ये जग काल जाल मत डारा ॥
या को जब चीन्है कोइ प्रानी । मत बारा की राह पिछानी ॥
पुनि बारा से भये अनेका । कहँ लग कहौं पार नहिं जे का ॥

॥ फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, स्वामी कहौ बुझाइ ।
ये बिधि मो को लखि परी, पुनि कबीर कहि गाइ ॥

॥ सोरठा ॥

अनुराग सागर माहिं, कही कबीर धर्मदास सों ।
हम पुनि देखा ताहि, स्वामी यह बिधि सत्त है ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, फूलदास कहिये बिधी ।
कस कबीर बिख्यात, काल मते बारा कहै ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास यह भाखौ साखी । बारा मते काल कस भाखी ।
कस कबीर ग्रंथन मैं गावा । सो बारा की बिधी बतावा ।

(१) बारह । (२) सत्तलोक ।

तुम ग्रन्थन मेँ देखा आँखी । सो सब भाखि कहो बिधि ता की॥
पहिले तुम भिनि भिनि बतलाई। फिरि तुम के हम बरनि सुनाई॥
बारा भेद नाम गुन कहिये । भिन्न भिन्न पुनि बरनि सुनैये॥
कस कबीर ने भाखि बताई । सो बिधि तुम हम को समझाई॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस भाखा लेखा । कही कबीर सो कहूँ बिवेका॥
तुम ने बचन जो भाखि सुनावा । सो कबीर मुख अपने गावा॥
तुम भाखा सत नाम से पावा । बारा मते काल लै आवा॥
या मेँ वा मेँ अंतर नाहीं । ता की बिधि मेँ बरनि सुनाई॥
ये कबीर मुख अपने कीन्हा । काल निरंजन को मत दीन्हा॥
उन अपना खुद ज्ञानै भाखा । तुम ने भक्ति भाव कर राखा॥
दोनोँ बिधी एक सम जानी । या मेँ कछू भेद नहिँ मानी॥
बारा मते काल को दीन्हा । मन अपने परमान जो कीन्हा॥
ये तो स्वामी सत्त जनाई । कहि कबीर ग्रन्थन मेँ गाई॥
भाखा सोई सुनाऊँ लेखा । जोइ कबीर ग्रन्थन मेँ देखा॥
ये कबीर मुख अपने भाखी । बारा मते काल बिधि ताकी॥
धरमराइ नीरंजन होई । बारा मते दीन्ह हम सोई॥
अस कबीर ग्रन्थन मेँ गाई । देखी जस बिधि ताहि सुनाई॥
प्रथम दूत मृतअंध कहावा । दास नरायन नाम धरावा॥
काल अंस ये नाम नरायन । जीव फाँस फंदा जिन लायन॥
तिरमिर दूजा नाम बखाना । जाति अहेरी कुफर कहाना॥
दूत तीसरा भाखि सुनाऊँ । अंधअचेत ताहि कर नाऊँ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि पावा । कह कबीर ऐसी बिधि गावा॥
चौथा दूत भंगमन होई । भंगा मूल पंथ कहै सोई॥
पँचवाँ दूत ज्ञानभँग नामा । परचा करन मंत्र को थामा॥

मकरंद षष्टम दूत कहावा । नाम कमाली तासु धरावा ॥
सप्तम दूत आहि चितभंगा । नाना रूप करै मन रंगा ॥
अष्टम दूत का नाम बताऊँ । अकलभंग तासु कर नाऊँ ॥
नवाँ दूत कर नाम बताऊँ । दूत बिसंभर बरनि सुनाऊँ ॥
अब मैं दसवाँ दूत बताई । नकटा दूत ताहि कर नाँई ॥
एकादस दूत नाम बतलाऊँ । दुर्गदानी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
द्वादस दूत नाम बतलाऊँ । हंस मुनी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
ऐसे बारा दूत बखाना । अनुराग सागर करत बखाना ॥
साहिब कबीर ऐसी बिधि गावा । सो मैं तुम को भाखि सुनावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी सुनाई । कस कस मता काल बिधि पाई ॥
या की बिधि मोहिं बरनि सुनैये । सब बिधि नाम दूत कर कहिये

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । अब या कौ हम बरनि सुनाई ॥
निरगुन काल निरंजन जानौ । सोई याहि मनै पहिचानौ ॥
सत्त सब्द तन माहिं रहाई । वा को छाँड़ि खानि को जाई ॥
बारा मत नहिं कहिया भाई । वाही राह की मती बुझाई ॥
मन ये राह की मति जो राखा । या को बारा की मति भाखा ॥
मन ये द्वैत भाव जग राखा । दूत नाम येही बिधि भाखा ॥
एक नाम बिधि भूला भाई । ता से मन को दूत बताई ॥
ये मन की बिधि कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
बारा मत मनही के जाना । द्वैत न छाँड़ि एक नहिं माना ॥
योँ बारा मत मन के भइया । बारा मत मन नाम कहइया ॥
द्वैत राह मन छाँड़ न भाई । तहँ लगि यह मन काल कहाई ॥

द्वैत काल मन यह बिधि गाया । मन मत द्वैत जगत सब आया॥
मन मत द्वैत वो राह न पाया । ये कबीर ने योँ बिधि गाया ॥
या मन की बिधि बिधि समझाई । बारा दूत मन काल कहाई ॥
ये मत बिधि सब कही बखाना । बारा नाम मनहिँ के जाना ॥
नरायनदास नर मन है भाई । येहि बिधि दास कबीर बताई ॥
मन मृतअंध दूत बतलाई । मन नित मृत्त करै जग जाई ॥
ये मन तिमर जगत को लावा । या ते तिमर नाम मन पावा ॥
मन जगअंध अचेत करावा । अंधअचेत दूत ठहरावा ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि कहिया । सूरति मन गो पालन करिया ॥
मन मत भंग करै जग केरी । मन मत भंग नाम अस फेरी ॥
मन मत ज्ञान करै चित भंगा । मन मत दूत नाम रस रंगा ॥
मन पतंग माया मन राखा । मन मकरंद दूत योँ भाखा ॥
मन अरु चित भँग करै अनेका। चित भंग दूत नाम योँ लेखा ॥
मन अक्कल को भंग लगावा । अकलभंग नाम अस गावा ॥
बिषै अमर मन करिकै राखै। सुरति नाम को नेक न ताकै ॥
ताकर नाम बिसंभर दूता । बिष रस जीव किया मजबूता ॥
मन कहँ नकटा दूत कहाई । ज्ञान सुनै फिरि बिष रस खाई ॥
या को लज्जा नेक न आवै । नकटा होइ पीछे पुनि धावै ॥
नकटा नाम दूत येहि जानौ । या की साखि न कोऊ मानौ ॥
मन दुर्ग[१] गुन के दान चुकावै। गुन तीनोँ से जग बौरावै ॥
दुर्ग दानी येहि मन को जाना। अस दुर्ग दानी नाम कहाना ॥
या की बात सत्त कर मानी ।येहि बिधि मन को दूत बखानी॥
यह मन निरमल सुरति कराई। मन होइ हंस सुरति घर जाई
हंस मुनी होइ दूत उड़ाई । सुरति सब्द घर अपने जाई ॥
सत्य नाम पद पहुँचै भाई । चौथा पद रस पियै अघाई ॥

(१) देखो नोट पृष्ठ १४, भाग १ ।

मुनि होइ हंस ताहि कर नामा। बारा मत मन के पहिचाना ॥
यह कबीर ने भाखा पेखा। औरौ संत यही बिधि लेखा ॥
ये सब मन के मते बताये। मन से पंथ भेष जग आये ॥
मन बाहर कोइ पंथ न होई। ये सब मते काल कर जोई ॥
मन से भिन्न सुरति को पावै। सुरति जाइ पद नाम समावै ॥
सो बारा से न्यारा होई। सो जिव अमर पंथ को जोई ॥
मन से राह सुरति नहिं जाने। सो सब पंथ काल मत साने ॥
यह महंत मन अंधा धुंधा। येहि माँ काल रखावा फंदा ॥
दास कबीर येही पुनि भाखा। हमहूँ दीन्ह येही बिधि साखा ॥
वह कबीर यह तुलसी लेखा। मन मानै तौ करौ बिबेका ॥
तुलसी संत चरन की आसा। संत सरन मैं सुरति निवासा ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास मत भाखिया, मते काल के नास।
बारा मत मन के बसे, जग्त भेप के पास ॥

॥ छंद ॥

बारा मत गाई मनहिं लखाई। बूझ बुझाई राह कही ॥१॥
तुम अंतै गावौ भेद न पावौ। मनहिं काल घट घाट मई ॥२॥
या को नहिं बूझा अंत न सूझा। ता से तुम को भूल रही ॥३॥
जिन मन को जाना सुर्त पिछाना। निरत तोल असमान गही ॥४॥
संतन निज जानी करी बखानी। महुँ पुनि उन सम गाइ कही ॥
मन की बिधि जानी सुरति पिछानी। बिन सूरति यह राह नहीं ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, फूलदास सूरति लखौ।
ये चौका येहि पान, सुरति जानि पद रस चखौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुरति चीन्ह रस जानौ भाई। तब वा घर का मारग पाई ॥
कमठ ध्यान कछुवा मत ताकौ। ऐसी सुरति नाम से राखौ ॥

ज्यों चकोर चंदा को ताकै । येहि बिधि सुरति नाम रस चाखै
सूरज-मुख पषान इक होई । रबि सनमुख तेहि पावक जोई॥
पथरी सूरज सन्मुख लावै । तत खन ता मँ अगिनि समावै॥
चंद्र मुखी इक पथरी भाई । सन्मुख चंदा जाय दिखाई॥
तत खन नीर चुवै तेहि माहीँ । देखो पथरी हाल मँगाई॥
ऐसे दृढ़ करि सुरति लगावै । चूवै अमी नाम रस पावै॥
चौका पान झूठ है भाई । सुरति नाम पान से पाई॥
भाखा संत सरन को चीन्हा । सुरति पान लखि होइ यकीना॥
नील सिषर खिरकी के पारा । वहँ से ताकै अगम दुवारा॥
अलख पलक से न्यारा होई । खलक राह सब छूटै सोई॥
निस दिन सुरति गगन मँ राखै । झँझरी सुरति नजर से ताकै॥
येहि बिधि निस दिन सुरति लगाई । मन मँ इष्ट भरम नहिँ लाई
ऐसे सुरति द्वार पर खेला । स्याम सपेदी न्यारी सैला॥
स्याम लोक पुनि सेतहि दीपा । संख चक्र मध पुनि एक सीपा॥
वा के परे बंकगढ़ न्यारा । सुखमनि सैल मानसर पारा॥
वा के परे त्रिबेनी घाटी । ता से निकरि अगमपुर बाटी॥
करि असनान अगम को धावै । तब साँचे सतगुरु को पावै॥
चारि कँवल द्वै भीतर माहीँ । ता मँ पैठि द्वादस मँ जाई॥
ता के परे पुरुष इक देखा । रूप रेख बिन अगम अलेखा॥
अठमेवा पूरुष को जाना । अठवाँ लोक तेहि संत बखाना॥
कोउ कोउ आठ अटारी भाखो। कोउ कोउ आठ महल कहै जाको
संत बिना कोउ भेद न पावै । ताते तुलसी येहि बिधि गावै॥
यह बिधि भेष पंथ मँ नाहीं । संत मिलै तो पावै राही॥
सूरति चढ़ै गगन को धावै । तै। अठमेवा पुरुष को पावै॥
पाँच बासना मन से जावै । तब मन राह पुरुष की पावै॥
नरियर ऐनक मुकर लगाई । मन मोड़ै पुनि बास उड़ाई॥

तीनि गुनन का तिनुका तोड़ै । इंद्री गौ घृत रित को मोड़ै ॥
कदली छेद बास चढ़ पारा । सेत के परे निरखि वहि द्वारा ॥
सो पारी जाइ पवन सो पावै । सेत सुपारी पुनि दरसावै ॥
यहि बिधि चौका जो कोइ जानै। सोई कबीर पंथ हम मानैं ॥
और अनेक बिधि कस कस कहिये। स्याना होइ समझि लखि लैये ॥
थोड़े मैं लखि लेइ सयाना । बहुत बहुत क्या करूँ बखाना ॥
सूच्छम बूझ भेद हम भाखा । थोड़े माहिं भेद कह्यो ता का ॥
या से भेद संत कर न्यारा । कोइ बूझै संतन का प्यारा ॥
जिन पर संत दयाली कीन्हा । अगम बूझ कोइ बिरले लीन्हा॥
कहा कहा कहूँ अगम की बाता । तुलसी बूझ संत सँग साथा ॥
ता से मौन मौन होइ रहिये । जस जग देखि ताहि बिधि कहिये

भेद राम रामायन के रचने का

॥ चौपाई ॥

भेष अबूझ जगत नहिं जानै । कस कस कहूँ कोऊ नहिं मानै ॥
जग अपनी बिधि मैं सब माना । ता से उन से करी बखाना ॥
राम रमायन माहीं गाई । सात कांड कहि अस बिधि भाई
रावन राम किया सम्बादा । औरै कही बनाइ जियादा ॥
जग सब अंध फंद गति बूड़ा । राम राम गति जानि अगूड़ा ॥
उन अँधरन मिलि कै हम गायौ। यहि बिधि राम चरित्र सुनायौ
सब जग कहै राम रस भाखी । राम बिना कछु इष्ट न राखी ॥
तुलसी तो भये राम उपासी । येहि बिधि सकल जगत करै हाँसी ॥
सब अंधन मैं महुँ पुनि चोटा[1] । कस कस कहूँ जगत सब खोटा॥
राम काल जग खाइ बढ़ाया । मैं दयाल पद औरै गाया ॥
राम काल जग कारन भाखा । सो सूझा नहिं इनकी आँखा ॥

---

(१) चोट्टा = चोर ।

राम जगत हम येहि बिधि गावा। नहिँ देखा जग मोर निभावा॥
राम राम कछु इष्ट न मानी। जग अँधरे को कहा बखानी॥
राम चरित्र राम बिधि राखी। दसरत राम अजुध्या भाखी॥
ये नहिँ अगम राह कर पंथा। अगुन सगुन जहँ नहिँ तहँ संता
निरगुन सरगुन इष्ट न जाना। चैाथा पद सत नाम बखाना॥
अगुन सगुन दोउ काल की फाँसी। जग मैँ कहूँ जगत करै हाँसी॥
वो साहिब पद इन से न्यारा। तीनि लोक निरगुन के पारा॥
निरगुन सरगुन दोउ न जाई। तेहि घर संत करै पासाही[1]॥
तुलसी इष्ट संत को जाना। निरगुन सरगुन दोउ न माना॥
जो जो संत अगम गति गाई। निरगुन सरगुन नहिँ ठहराई॥
जो कोइ बूझै तुम कस गावा। राम राम कहि ग्रंथ बनावा॥
हम कछु और भेद दरसावा। जब अबूझ अँधरा समझावा॥
जो ग्रंथन मैँ गाइ सुनाई। जियत न मिलै मुए कस पाई॥
मैँ मति ठीक ठीक कर गावा। पंडित भेष जगत नहिँ पावा॥
राम राम कहि सब जग मरिया। आदि अंत मध कोउ न तरिया॥
राम जो कहै परै भैा खानी। राम मरम मन आप न जानी॥
जो कोइ करै राम की टेका। सो भैा भरमै खानि अनेका॥
तुलसी सत्त सत्त कहि भाखी। जस जस सूझ जैान जेहि आँखी
फूलदास बिधि सुनहु बनाई। येहि बिधि तुलसी ग्रंथन गाई॥
और कबीर दादू रैदासा। दरिया नानक अगम तमासा॥
सूरदास नाभा अरु मीरा। औरो संत अगम मति धीरा॥
अरु अस बिधि सब साखि बनाई। सो सो सभन अगम गति गाई
जस जस मैँ पुनि भाखि सुनावा। संत कृपा रज महुँ पुनि गावा॥

---

(१) बादशाहत, राज।

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बैन, आदि सैन अंतै कहो ।
जो कबीर मत ऐन, संत सार लारै लई ॥१॥
ये संतन मत सार, जो अगार अंदर लखा ।
चखा सुरति पद सार, आदि अंत बिधि सब लखो ॥२॥

॥ दोहा ॥

तोल बोल जेहि लखि परै, तुलसी निरखि निहार ।
सार पार सूरति करै, तब लख लोक अगार ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी जग तरक तोल, बोल हेर हारा ॥ टेक ॥
देखो दुर्ग काल जाल, माँगै स्वर्ग बास हाल ।
लिये मोह भरम जाल, ख्याल खोजि पारा ॥
बूझै नहिं साध संत, खोजै नहिं आदि अंत ।
पावै कस पिया पंथ, बूड़ै भौ धारा ॥
ऐसा भौ भरम माहिं, काम क्रोध लारा ॥१॥
राम प्रिये परन ठान, मन से सुत त्रिये मान ।
माया बस परत खानि, बूझ खोज पारा ॥
येहि बिधि अज्ञान बास, बूझो मृत अंत नास ।
प्रीति मुक्ति कह अकास, स्वाँस नास न्यारा ॥
ऐसी बुधि हीन चीन्हि, बूझि ले गँवारा ॥२॥
चाहत पद राम बास, रामहिं पुनि होत नास ।
वोहू पुनि काल फाँस, आस मौत मारा ॥
वा से कोउ करौ न हेत, बूझो नर अंध अचेत ।
सूरति छबि नाम लेत, चौथे पद पारा ॥
याही ब्रत बान ठान, संत पंथ न्यारा ॥३॥
देखो कृत कर्म काग, या से पुनि निकस भाग ।
साधौ सत सुरति लाग, लखि अकास पारा ॥

ऐसी लख मान सीख, नाहीं भौ खानि नीक ।
ऐसो अज अमर लोक, तुलसी तन छारा ॥
याही घट खोज रोज़ चौज मौज मारा ॥४॥

भाखा सत मत पसार, ता का भौ भिन अपार ।
आखा पद सूर सार, जाहिर जग सारा ॥
पावै सत मत्त सार, देखै अगमन बिचार ।
उतरौ भौ सिंध पार, नौका भौ वारा ॥
तुलसी घर घोर सोर, निरतौ चित चारा ॥५॥

तुलसी तन माहिं पैठि, छाँड़ौ नर सकल टेक ।
आदि और अंत देखि, टेक एक सारा ॥
कहनी मन मँ बिचार, सेरा कोउ ना निहार ।
निरखो नैना पसार, वाहि को अधारा ॥
तुलसी ये खूब अजूब, पावै मन मारा ॥६॥

मो को सब जगत कहत, तुलसी के राम टेक ।
जाना निज एक अलेख, संतन के लारा ॥
जा के नाहिं रूप रेख, देखा जो जाइ अदेख ।
ऐसा पद पार पेख, कोटि राम चेरा ॥
तुलसी तत करि बिचार राम खानि घेरा ॥७॥

तुलसी सतगुरु की दृष्ट, ता से निरखा अदृष्ट ।
सत्त लोक पुरुष इष्ट, वे दयाल न्यारा ॥
मोरी लौ चरन लार, छिन छिन निरखत निहार ।
कीन्हा पद पूर पार, काल जाल मारा ॥
तुलसी ये जगत भ्रष्ट, देख मैं दिदारा ॥८॥

तुलसी ये अंड खंड, निरखा सगरा ब्रह्मंड ।
मारा मन काल डंड, छाँड़ छूट न्यारा ॥

धरती और चंद सूर, निरखा सगरा जहूर ।
लीन्हा रन खेत सूर, संतन मत सारा ॥
तुलसी दीदा निहार, भागा बटपारा[१] ॥९॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुन बात, जगत भूल बिधि यों कहो ।
राम रहै भौ खानि, जा की आसा जग महीं ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सब बिधी बताई । जगत राम हम यहि बिधि गाई ॥
हम संतन मत अगम बखाना। हम तो इष्ट संत को जाना ॥
संत इष्ट लखि वार अरु पारा। उन चरनन सूझा सत सारा ॥
उन सम और इष्ट नहिं भाई। राम करम सब भौ के माहीं ॥
संत अगम घर कीन्ह पयाना । सो घर राम न सुपने जाना ॥
राम करम बस भौ के माहीं । संत अगम घर नित प्रति जाई ॥
संत जाइ निरगुन के पारा। राम रहै निरगुन भौ वारा ॥
संत जाइ निरगुन जहँ नाहीं। सरगुन की कहौ कौन चलाई ॥
सरगुन निरगुन दोउ से न्यारा। वा घर संत करै दरबारा ॥
निरगुन राम भौ जग में आई। संत अगम घर अपने जाई ॥
राम रहा तिहुँ लोक समाई। कर्म भोग भौ खानि रहाई ॥
तीनि लोक के चौथे पारा । वा से परे संत घर न्यारा ॥
राम काँच सम को मत जाना। संत गती हीरा परमाना ॥
वो पैसे में जग ले आवै । राम काँच मन जग को भावै ॥
संत अगम हीरा गति न्यारी । केहि बिधि पावै जगत भिखारी॥
ये मत बिरले खोज कोउ कीन्हा। संत कृपा से हीरा चीन्हा ॥
जो जेहि संत लखावै भाई । जब वह हीरा हाथै आई ॥
वो हीरा पत्थर मत जानौ। हीरा नाम अगम घर मानौ ॥

---

(१) ठग ।

वो हीरा चौथे पद पारा । राम जगत जौहरी निहारा ॥
राम जगत जौहरी पै नाहीं । हीरा अगम संत पै पाई ॥
संत कृपा कोइ दास निहारा । संत चरन लागे सोइ लारा ॥
राम काँच चूरी जग माहीं । तिरिया पहिरि हाथ मैं जाई ॥
फूटै बिनसै बहुरि बनाई । धक्का लगे फूट जिमि जाई ॥
टूक टूक चूरीगर लीन्हा । घरिया करम आँच पुनि दीन्हा ॥
घरिया करम माहिँ पुनि डारा । चूरी मनिया बहुरि सँवारा ॥
ले बजार गलियन के माईं । करि खरीद ले तिरिया जाई ॥
पुनि कमनीगर कहत पुकारे । नीच बुद्धि तिरिया के लारे ॥
ऐसी नीच जगत मति जानी । राम काँच जेहि अगम बखानी ॥
राम राम बिधि ऐसी जाना । चूरी फूट कमनीगर आना ॥
तोड़ फोड़ भट्टी औंटाई । ये बिधि राम कर्म भौ माहीं ॥
तन भट्टी कमनीगर काला । ये जग खान राम बेहाला ॥
ता को जाय जगत मन लाई । ता की कहो कौन गति गाई ॥
राम आप कर्मन बस परिया । कहौ ता से जग कस कस तरिया ॥
राम राम मन बूझौ भाई । मन को राम संत गोहराई ॥
देखौ सब संतन की साखी । बूझि ज्ञान जब खुलि है आँखी ॥
मन जो राम को जपै बनाई । मनहिँ राम को गारी लाई ॥
मन से कहत बहुत यह खोटा । राम जपे केहि बिधि है मोटा ॥
मुख से मन को खोट लगावै । वही राम मन इष्ट बतावै ॥
राम इष्ट मन गारी दइया । तुम्हरा ज्ञान आहि कस भइया ॥
राम राम जपिया दिन राती । मन को खोट कहौ केहि भाँती ॥
मन को खोट देउ तुम गारी । इष्ट राम पर परिहै सारी ॥
अपने मन मैं ज्ञान बिचारा । बूझ करौ सतसंगति लारा ॥
जग सब भूल भूल के माहीं । बुद्धि कर्म बस बूझ न आई ॥
भेष पंथ सब झारि बिचारा । बहु पुनि परे राम की लारा ॥

राम राम पुनि आपुहि गावै। जो कोइ बूझि ताहि बतलावै ॥
उन से बूझ राम कहँ होई। कह सब माहीं रहा समोई ॥
राम राम सब माहिँ बताई। चारि खानि चर अचर समाई ॥
येहि बिधि मुखसेबोलैबाता। नर पसु पंछी सब के साथा ॥
पूछौ नर मैं राम बतावै। कंठी बाँधि चेला ठहरावै ॥
राम राम बिधि सब मैं गावै। पुनि चेला कस कस ठहरावै ॥
मुख से राम कहै सब माहीं। पुनि पूछै सेवक बतलाई ॥
सेवक मन से ता को जानै। फिर कस राम को स्वामी मानै ॥
स्वामी सब के माहिँ समावा। पुनि सेवक कस कस बतलावा ॥
राम बसा सब जग के माहीं। ये तो जग स्वामी भया भाई ॥
सब घट माहीं राम बिराजा। घट मैं रामहिँ करै अवाजा ॥
चेला करि तुम नाम पुकारी। बोलै को लख दृष्टि पसारी ॥
को अवाज चेला मैं दीन्हा। को बोलै केहि चेला कीन्हा ॥
बोलनहार राम बतलावौ। सिष्य करौ सेवक ठहरावौ ॥
कस कस बुद्धि तुम्हारी भाई। बुद्धि गई मति ज्ञान हिराई ॥
राम राम करि मुक्ति तुम्हारी। बोलै चेला राम बिचारी ॥
बोल राम तुम चेला कीन्हा। चेला मुक्ति कौन बिधि दीन्हा ॥
बोल राम रित चेला थापा। बुद्धि गई तुम बूड़े आपा ॥
बूझौ खूब खूब कर देखौ। तुलसी बचन हृदै मैं पेखौ ॥
तुलसी बूझ अबूझ बिचारा। साँच झूठ परखौ निरधारा ॥
मन गुन ज्ञान बुद्धि सँग बूझो। तुलसी नहिँ कछु कही अबूझी ॥
निंदा भाव कीन्ह कछु नाहीं। निंदा संत न करिहैं भाई ॥
निंदा भाव नर्क की खानी। ता को संत न करैं बखानी ॥
ये अबूझ अपने से जानौ। ता से निंदा कहि कर मानौ ॥
तुम निंदा कर बूझा भाई। संत मता सतसंग न पाई ॥
संत मता सतसंगति जानौ। सार असार सबै पहिचानौ ॥

बिन सतसंग बूझ नहिं आवै । ता से निंदा करि ठहरावै ॥
संत सरन से उतरै पारा । सो तो तुम निंदा कर डारा ॥
मुख से कहो संत मत न्यारा । संत बिना नहिं होइ उबारा ॥
संत गती न्यारी तुम भाखो । न्यारी कहि पुनि ताहि न ताको ॥
संत का भेद बेद से न्यारा । अस अपने मुख कहो बिचारा ॥
संत साध कहो सब से न्यारा । पुनि सुनि कै नहिं मानो लबारा ॥
न्यारी कहै सत्त सत जाना । न्यारी सुनै देइ नहिं काना ॥
न्यारी को न्यारी कर बूझै । न्यारी गुनै सुनै नहिं सूझै ॥
कहै न्यारी मुख मीठा लागै । न्यारी सुनै तभी उठि भागै ॥
अपने मुख से न्यारी भाखै । न्यारी सुनि उठि कै कस भागै ॥
न्यारी सुनि बूझै नहिं भाई । ता से कछू हाथ नहिं आई ॥
ये अद्‌बुद सुनियो अज्ञाना । न्यारी कहै सुनै नहिं काना ॥
भेष जगत की ऐसी रीती । ज्यौँ भेड़ी जग बहै अनीती ॥
या बिधि से जग बेद भुलाना । संत मता ता से नहिं जाना ॥
फूलदास ये येहि बिधि लेखा । परघट नहीं संत गति पेखा ॥
जो कोइ परघट कहत बुझाई । तो झगरा करने को धाई ॥
गुप्त मता संतन ने भाखी । कागद मैँ मिलिहै नहिं साखी ॥
साखी सब्द ग्रंथ जो गावै । बिन सतसंग समझ नहिं आवै ॥
ये झूठे कागद के माहीं । ढूँढ़ ढूँढ़ सब जनम सिराई ॥
ज्यौँ बाजीगर डंका मारा । ठगन जगत इंद्रजाल पसारा ॥
ऐसी सब ग्रंथन की बानी । ता मैँ ढूँढ़ै भेष अजानी ॥
या से इन के हाथ न आवै । गुप्त संत बिधि कैसे पावै ॥
फूलदास मति बूझो भाई । अस जग अंध कहा कहैाँ गाई ॥
सब सब बिधि बिधि गाइ बताई । फूलदास बिधि भूल सुनाई ॥

सम्बाद साथ गुनुवाँ बेटा हिरदे अहीर के

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में हिरदे चलि आये । संगहिं सुत दरसन को लाये ॥
दोऊ दरस डंडवत कीन्हा । चरन धाइ पुनि हमरे लीन्हा ॥
हम पूछी हिरदे से बाता । आज को लाये अपने साथा ॥
हिरदे पुत्र सामने कीन्हा । हम पूछी केहि नाम से चीन्हा ॥
हिरदे कहै यह जगत बिधाना । गुनुवाँ नाम से पुत्र कहाना ॥
पूछी तुलसी कौन ठिकाना । कहँ से आये कहौ बिधाना ॥
हिरदै कहै सुनो हो स्वामी । मोसे जुदा रहै यह जानी ॥
रह लखनऊ मोर यह बेटा । बहुत दिनन पर मो से भेंटा ॥
मोरे मिलन काज यह आवा । सो स्वामी के दरसन पावा ॥
स्वामी चरचा सुनी बिख्याता । फूलदास साध के साथा ॥
इन सब वह चरचा सुनि पावा । या के मन में भर्म समावा ॥
ये स्वामी जस ज्ञान बखाना । या की समझ बूझ नहिं माना ॥
राम राम तुम कछू न गाई । राम से और कोऊ बतलाई ॥
राम से और कोऊ नहिं दूजा । यह या के मन आई बूझा ॥
कह तुलसी गुनुवाँ सुन बाता । रह दो चार रोज यहिं राता ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

माथ नवाइ जोरि जुग पानी । स्वामी से बूझौं इक बानी ॥
राम राम जग बिरत बिराजा । जिन ने किये अनेकन काजा ॥
जक्त भेष सब साध बतावा । तुम ता को कछु नहिं ठहरावा ॥
सब मिलि कै ये बिधी बखानी । महुँ पुनि सुनी कहौं यह बानी ॥
राम ने सिंध पखान तरावा । जल पर सिला राखि उतरावा ॥

और पहलाद भक्त को तारा। ता कारन हरनाकुस मारा।
गुजरी एक बिन्द्राबन माहीं। तिन पुनि कथा सुनी इक ठाहीं॥
कथा माहिं इक सुना प्रसंगा। राम राम नौका चित चंगा॥
उन सुनि साँच मान मन धारी। वो उतरी जमुना के पारी॥
अजामील अस पातकि होई। ता सुत नाम नरायन सोई॥
मरत बार सुत नाम पुकारा। सो पहुँचा मुक्ती के द्वारा॥
गनिका सुवा पढ़ावत तारी। राम राम कहि उतरी पारी॥
ध्रू ने अटल तपस्या कीन्हा। पदवी राम अटल तेहि दीन्हा॥
और गज अर्ध नाम गोहरावा। ता को तुरत स्वर्ग पहुँचावा॥
बालमीक जपि उलटा नामा। राम राम कहि मुक्ति समाना॥
महादेव दुइ अच्छर बासी। राम राम कहि भये अबिनासी॥
अस परचे जो राम के गावै। तुलसी पत्र लिखा इक ठाँवै॥
राम राम इक पत्र लिखाया। या की बिधि सब साखि सुनाया॥
पत्र एक पर राम लिखाना। पलरा माहिं धरा तेहि जाना॥
इक पलरा पर द्रब्य चढ़ावा। दूजा पलरा पत्र धरावा॥
पलरा पत्र उठा नहिं भाई। राम राम की ऐसी बड़ाई॥
महिमा राम राम अस गाई। नामदेव पुनि गाइ जियाई॥
येहि बिधि साखी बेद पुकारै। सास्तर कहै राम ही तारै॥
ऐसी बिधि मिलि राम की साखा। सोई राम तुम ने नहिं राखा॥
राम राम बिधि तुमहूँ गावा। तुमहूँ राम राम समझावा॥
या का भरम बहुत मोहिं आई। या की बिधी बिधी समझाई॥
पहिले तुमहुँ राम कहि गावा। राम राम कहि भाखि सुनावा॥
अब तो मोड़ तोड़ तुम डारा। राम राम कहो झूठ पसारा॥
या की बिधो भेद समझावौ। राम छाँड़ि तुम केहि को ध्यावौ॥
सब जग साखि तुम्हारी गावै। तुलसी राम राम समझावै॥

या की स्वामी साखि सुनैये । मोरे मन का भर्म मिटैये ॥
सो स्वामी मो को समझावौ । मोरे मन का भर्म छुड़ावौ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी कहो बुझाइ, भर्म भाव मो को भयो ।
मन मेँ संक समाइ, राम राम कछु ना कह्यो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ तो को समझाऊँ । आदि अंत या को बतलाऊँ ॥
सत्तलोक इक पुरुष अपारा । चौथे पद के पार बिचारा ॥
तासु अंस जिव पुरुष नियारा । जा का पद चौथे के पारा ॥
ता के पुत्र भये पुनि भाई । सोला निरगुन तिन कर नाईं ॥
सो निरगुन जो पुरुष से भैया । जा मेँ लघू निरंजन कहिया ॥
ता को संत काल गोहरावै । सोई राम रमतीत कहावै ॥
सोई निरंजन कहिये काला । आदहि जोति बिछाई जाला ॥
पुरुष निरंजन जोती नारी । ये दोऊ मिलि सृष्टि रचा री ॥
तिन के पुत्र तीनि जो जाना । ब्रह्मा बिष्नु ताहि कर नामा ॥
तीजे संभू छोटे भाई । तीन पुत्र या बिधि उपजाई ॥
निरंजन पिता जोति है माता । ये तीनोँ इन से उतपाता ॥
रमतीता सोइ बूझो काला । जोती काल रचा जंजाला ॥
ता के भये दसो औतारा । काल अंस जग राम पसारा ॥
रमता राम कर्म के माहीं । रमतीत राम काल की छाहीं ॥
रमतीत काल ने जाल पसारा । रमता रहा राम भो जारा ॥
राम कहो सोइ मन है भाई । मनहिँ राम जिन जक्त बुड़ाई ॥
राम काल सब संत पुकारा । जा को जपै यह जक्त लबारा ॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसर जाना । बेद कहे सोइ झूठ पुराना ॥
ये तीनोँ ने जाल पसारा । राम काल ने सब जग मारा ॥

राम काल को जपै बनाई । चर और अचर सभी चरखाई ॥
राम काल को जपिहै भाई । जम बंधन भौ खान समाई ॥
रमतीत काल जोति है ठगनी । तीन पुत्र उपजाये अपनी ॥
सास्त्र बेद और दस औतारा । ये सब जानौ काल पसारा ॥
या के मत में परिहै प्रानी । काल जाल ये जम की खानी ॥
तीनि लोक जम जाल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
वो दयाल समरथ है दाता । सो पद को कोउ संत समाता ॥
वा की राह संत से जानै । भेष जक्त[1] दोउ नहिं पहिचानै ॥
संत मता कोइ भेद न जाना । सूरति संत चढ़ै असमाना ॥
पहुँचै सूरति अगम ठिकाने । अपना आदि अंत घर जानै ॥
सूरति मिलै पुरुष को जाई । तिन को नाम संत है भाई ॥
संत राह सूरति को पावै । और सब भेष खानि में आवै ॥
आदि पुरुष को देखै नैना । तब अदृष्ट की बूझै सैना ॥
पतिबरता सो पुरुष पिछानै । वा को इष्ट संत सब मानै ॥
और इष्ट नहिं जानै भाई । राम इष्ट ये काल कहाई ॥
जो कोइ राम पतिब्रत कीन्हा । सो सब परे कर्म आधीना ॥
जिन दयाल से सुरति लगाई । सो पहुँचे वा पद के माईं ॥
येहि बिधि संत कहँ गोहराई । अस अस संत सभी समझाई ॥
राम काल जो जपै बनाई । संत बचन निंदा ठहराई ॥
संत बचन निंदा कर माना । ता ते परे नर्क की खाना ॥
या का कोई भर्म लै आवै । बार बार चौरासी पावै ॥
आप अबूझ बूझि नहिं लावै। संतन को नास्तिक ठहरावै ॥
यह सब भेष अंध भये भाई । संतन को निन्दक ठहराई ॥
संतन की बूझै कोई बानी । तौ छूटै चौरासी खानी ॥
राम काल को दूर बहावै । निस दिन संत चरन लौ लावै ॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ में "भक्त" अशुद्ध है।

वो दयाल कहुँ राह बतावैं । तब जिव अपने घर को जावै ॥
संत चरन पावै निरबारा । राम काल जग फाँसी डारा ॥
जो कोइ गहै राम की सरना । छूटै न जनम मरन का धरना ॥
कहै राम के होइ गये बेटा । ता को परिहै जम को सोंटा ॥
जो कोइ भये राम के प्यारे । खानि गये जम लातन मारे ॥
तुलसी सत सत यहि मत भाखा । या मैं पच्छपात नहिं राखा ॥
संत बचन जेहि सत्त न भासी । जा की होइ जनम की नासी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, गुनुवाँ बूझो बात यह ।
राम भर्म भौ खानि, सब कहै संत पुकारि कै ।

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि स्वामी इक पूछौं बाता । केहि बिधि ये जिव होइ सनाथा ॥
ध्रू प्रहलाद जो गनिका भइया । सेसनाग गज नामदेव कहिया ॥
बालमीक अरु सबहि बखानी । अजामील सिव गुजरी जानी ॥
तुलसी पत्र राम लिखवाई । और पखान जल माहिं तराई ॥
ये स्वामी कहौ कैसी भैया । कहै गुनुवाँ मो को समझैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ मैं बूझ बताई । मन ठहराइ सुनौ चित लाई ॥
राम अनादि चारि जुग भैया । ग्यारह जीव ताहि मैं तरिया ॥
ता मैं सात जीव की चरचा । और चारि बतलावौ परचा ॥
गिरे परे दस पाँच अरु होई । ये सब साखि बतावौ सोई ॥
पोढ़ पोढ़ तौ सातै भैया । चारि बिधी परचे की कहिया ॥
चारौ जुग जिव भये अनेका । सतजुग द्वापर त्रेता देखा ॥
कलजुग सुधाँ चार जुग पेखा । चार जुगन कौ पूछौं लेखा ॥

ता मैं सात जीव सब तरिया। और जीव गये कहाँ जो मरिया॥
राम राम चारो जुग आवा। चारो जुग सबहिन मिलि गावा॥
निरमल सतजुग जीव अनेका। राम राम जपि बाँधी टेका॥
सो तरे जीव अनेकन होई। तुम ने सात जीव कहे सोई॥
और जीव का भाखो लेखा। तरि गये होइहैं जीव अनेका॥
और नहीं थोरे पुनि कहिये। सतजुग क्रोड़ जीव तो चहिये॥
सतजुग उजली बुधि मन होई। राम जपा निस्चय से सोई॥
ता मैं क्रोड़ जीव तो चाही। ये तो सात नाम भये भाई॥
और अनेक राम जपि जानी। सात तरे की हम नहिं मानी॥
क्रोड़ जीव का नाम बतावे। तब हमरे मन साँची आवै॥
उजला सतजुग सात बखाना। मैला कलि का कौन ठिकाना॥
सतजुग सात निष्ठ से गैया। कलजुग एक तरे नहिं भैया॥
सतजुग मैं तुम सात बतावा। कलजुग कर्म नष्ट लपटावा॥
जो कोइ कहै राम से तरिहै। झूठ समझि मन मैं नहिं धरिये॥
राम रमा जुग चारो खानी। तरिहै या से कस कस मानी॥
तुम को कहते सरम न आई। या को मन मैं बूझो भाई॥
येहि बिधि तुम मन अपने बूझा। करि बिचार तब परिहै सूझा॥
क्रोड़ों ऋषि मुनि जपि पुनि होई। क्रोड़ों तपसी जानो सोई॥
क्रोड़ों इष्ट नेम पुनि करिया। कइ इक राम पतिब्रत धरिया॥
राम राम कहि सब जग तरते। भौसागर मैं कोइ न परते॥
जो तुम कहो करै परतीता। सतजुग मैं थी सत की रीता॥
साँचा जुग परतीत न आई। झूठे कलि की कौन चलाई॥
काल राम मन उतपति माहीं। राम न तारा होइहै भाई॥
सत जुग राम कहे नहिं तरिया। भौसागर मैं सब जिव परिया॥
तुम तो कहो राम सब माहीं। चार खान मैं रहा समाई॥
राम खान मैं रहा बिराजा। कस कस भयो तुम्हारो काजा॥

राम खान बस रहिया भाई । तुम को कस मुक्ती पठवाई ॥
ये सब जानौ झूठी बाता । या में खैहौ जम की लाता ॥
सत सत लोक राह चढ़ि जाई । तब यह जीव मुक्ति को पाई ॥
राम राम की झूठी आसा । गये राम कहे जम की फाँसा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम पुनि राम राम कस कहिया । सब ग्रंथन में साखि सुनैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जग अबूझ कारन हम गाई । जो करै इष्ट राम से भाई ॥
जो हम न्यारा भेद सुनावैं । तो जग माहिं रहन नहिं पावैं ॥
ता से न्यारा भेद न भाखा । संत भेद हम गुप्त राखा ॥
भेद ग्रंथ में गुप्त लखावा । पुनि काहू की दृष्टि न आवा ॥
हम ने भाखा अगम अलेखा । जा कौ मरम न जानै भेषा ॥
हम सतपुरुष अलख लखवावा । बेद न भेद भेष नहिं पावा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी एक मोहिं समझाई । गुजरी सिला की कहौ बुझाई ॥
सब भाखैं जल में जो तरिया । या बिधि कहौ मोर मन भरिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

या की मैं परतच्छ बताई । देखौ जाइ नजर से भाई ॥
या की बिधि मैं तुरत बताऊँ । ज्यों बजार सौदा समझाऊँ ॥
जस बजार में सौदा लीन्हा । परखा तोल दाम तेहिं दीन्हा ॥
अपने मन में साँची आई । पैसा दीन्ह गाँठि बँधवाई ॥
ऐसा परचा ततवर पेखौ । अपने नैन नजर से देखौ ॥

वोहि पानी वोहि पत्थर होई। वोहि पुनि राम लिखावै सोई ॥
राम लिखै पत्थर के माईं। पानी डारि देखि लो भाई ॥
जो पत्थर पानी नहिं बूड़ा। तौ तुम जानौ राम अगूढ़ा ॥
पत्थर डूबै राम लिखे से। तौ तुम बुड़िहौ राम कहे से ॥
ततवर करौ नजर से पेखौ। ये तो आज आँख से देखौ ॥
संसय सोग सब झारि निकारौ। ले पत्थर पानी में डारौ ॥
जो जल पत्थर रहि उतरानी। सिल गुजरी की साँची मानी ॥
बूड़ै पत्थर राम लिखाना। अपने बूड़न की अस जाना ॥
एक बिधी मैं और बताई। ता से देखौ सत्त बनाई ॥
राम राम जेहि तुमहिं दृढ़ाओ। ले पत्थर वोहि हाथ लिखाओ॥
सोइ पत्थर वोहि हाथ डरावै। जो बूड़ै झूठे कर गावै ॥
नहिं तो और बिधी इक भाखौं। जैसी बिधी जुगत करि ता कौ
राम राम जग कहै अनेका। राम इष्ट जेहि जेहि करि देखा॥
सोइ सोइ हाथ सभन लिखवावै। पत्थर लिखि पानी सोइ नावौ
एक एक बिधि बिधि से डारी। ये परचा सब देखौ झारी ॥
या में कोइ परतीती होई। सब का परचा भिनि भिनि जोई
या में रहै भरम इक साथा। ये लिखि देखौ अपने हाथा ॥
तुलसी पत्र की बिधी बताई। सोई बृच्छ बहुत जग माइ ॥
पत्र तोड़िकै परचा पेखौ। लिखि वोहि राम पत्र धरि देखौ
पत्र तोल में हलुक उठाना। तौ यहि बिधि झूठी करि जाना

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सुनु बिख्याता। ये सब वाहि समय की बाता ॥
वाहि समय में यह बिधि होती। आज कलू नहिं होइ यह भोती[1]
राम राम जपि सिव अबिनासी। ये भी वाहि समय की बाती ॥

(१) परिश्रम, काम।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रामराम कैाने बिधि कहिया । जा से सिव अबिनासी भैया ॥
मुख से जप कीन्हा कछु औारी । ये गुनुवाँ बिधि कहैा बहोरी ॥

॥ गुनुवाँ उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ कहै सुनो हो स्वामी । मुख से जपि जपि राम बखानी ॥
महादेव ने मुख जप कीन्हा । ये भया वाहि समय का चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ।

॥ चौपाई ॥

या मेँ राम बड़ा नहिँ होई । ये तो समय बड़ा भया सोई ॥
राम कहे सिव नहिँ अबिनासी। वे भये समय भाव बिधि बासी ॥
ये तो समय बड़ा बिधि भाखी। राम बड़ा कहो केहि बिधि राखी
राम बड़ा जब जानै भाई । जल मेँ पत्थर आज तराई ॥
उन को बड़ा जबै हम जानैँ । आज लिखे पत्थर उतराने ॥
समय भाव पत्थर उतराई । कहैा राम की कैान बड़ाई ॥
कहैा राम से मुक्ति बताई । पुनि फिरि ले समया ठहराई ॥
कभी राम को बड़ा बतावो । कभी लेइ समया ठहरावो ॥
एकहि बात सत्त ठहरावै । तब सत हमरे मन मेँ आवै ॥

॥ दोहा ॥

एक कहै दूजी कहै, दो दो कहै बनाय ।
ये दो मुख का बोलना, घने तमाचे खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ भाई । समय बड़ा कै राम बड़ाई ॥
या मेँ एक सत्त करि भाखैा । एक बात झूठी करि राखैा ॥
जो तुम कहैा राम सब तारा । परचा देखि न कहै लबारा ॥
ऐसी बड़ी राम गति जेही । समया झूठ ताहि कर देई ॥

राम से समय बड़ा है भाई । कहौ राम की कौन बड़ाई ॥
समया झूठ राम करि डारै । ऐसी कहौ तो साँच बिचारै॥
समय राम की कला उड़ाई । तुम जपि मुक्ति कौन बिधि पाई
अपनी मुक्ति खोज नहिं पावौ । राम राम कहि जगत ढूढ़ावौ ॥
जो सच्चा तुम राम सुनावौ । तौ पत्थर पानी मेँ नावौ ॥
जब जानैँ वोहि सच्चा रामा । पानी पत्थर आज तिराना ॥
अपनी देखी कहौ न भाई । मुए गये की बिधी बताई ॥
साँचा सोई मिलै जो आजी । मूए मुक्ति बतावै पाजी ॥
जीवत मिलै सोई मत पूरा । मूए कहै समझ सोइ धूरा ॥
अब सुन आगे बिधी बताऊँ । महादेव की बिधि समझाऊँ ॥
महादेव राम नहिँ जपिया । ये साखी झूठी तुम कहिया ॥
महादेव तो जोग कमाया । राम राम जोगी नहिं गाया ॥
उन अपनी इंद्री मन जीता । मुद्रा साधी पाँच पुनीता ॥
स्वाँसा साधि गगन मन धावा । उनमुनि साधि कै गगन लगावा
चाचरि भूचरि भावक जानी । खेचरि मिलि योँ पाँच बखानी
आगे अगोचरि साखि सुनाऊँ । ऐसे जोगी जोग जनाऊँ ॥
जोग किया जब भये अबिनासी । राम राम कहै काल की फाँसी
करि के जोग उन जोति समाने । जोति दृष्टि मुक्ती पद जाने ॥
मुक्ती भोग भोग भया भाई । पुनि फिरि फिरि चौरासी पाई
संत मते की राह न जानी । या से भरमे चारो खानी ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम सत्त बताई । ये सब मोरे मन मेँ आई ॥
एक बिधी मोहिँ बरनि सुनावौ । बालमीक बिधि साखि बतावौ
अजामील गति कैसी भैया । सो बिधि मो को बरनि सुनैया

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ बाता । बालमीक की सुन बिख्याता ॥
बालमीक जप उलटा कहिया । उलटा जपत मुक्ति नहिं भैया ॥
सूधा जपि जपि जन्म सिराना । मुक्ती को सुपने नहिं जाना ॥
उलटा जपत मुक्ति जो होती । सुलटे मिलन जपा जप थोथी ॥
जीवत मुए मुक्ति नहिं पाई । ये जग झूठी जाल बिछाई ॥
अजामील का भाखौं लेखा । सुन गुनुवाँ अपने मन पेखा ॥
नारायन जेहि सुत का नामा । ता कै मोह बंध बस जामा ॥
अपने सुत से मोह जो कीन्हा । मरते नाम नरायन लीन्हा ॥
मुक्ति भई अस कहैं बुझाई । या की बिधी कहूँ समझाई ॥
जग में पुत्र सभन के होई । राम कृष्न नारायन सोई ॥
गोबिंद नाम गोपाल मुरारी । येहि बिधि पुत्र नाम जुग चारी
मोह बंध बस नाम पुकारी । नाम पुत्र जग होत उबारी ॥
येहि बिधि मुक्ति होत जो भाई । तो भौ मेँ जिव एक न जाई ॥
ये सब जानो झूठी बाता । राम काल जिव कीन्ही घाता ॥
और तुम ने ध्रू मुक्ति बतावा । सो तो गगन दृष्टि में आवा ॥
ध्रू तारे की मुक्ति बतावो । सब तारे की बिधि समझावो ॥
तारा गगन मुक्ति जो होती । तारा टूट गिरै भुँइ जोती ॥
जो तुम ध्रू को अटल बताया । गगन फूटि ध्रू कहाँ समाया ॥
पाँच तत्त का होइहै नासा । कहो ध्रू ने कहँ कीन्हा बासा ॥

॥ दोहा ॥

चंद मरै सूरज मरै, मरिहैं जिमीं अकास ।
ध्रू पहलाद भभीषना, परे काल की फाँस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ सब बिधी बताई। ये सब की तोहि भाखि लखाई ॥
अब पहलाद का भाखौं लेखा। सो तुम सुन कर करो बिबेका ॥
दस औतार काल के भाई। ता मैं नरसिंघ है दस माहीं ॥
हरनाकुस का उदर बिदारा। ये जानौ सब काल पसारा ॥
वे दयाल एक सब माहीं। वो कहो केहि का मारन जाई ॥
हरनाकुस को मारि बिदारा। पुनि पहलाद राज बैठारा ॥
राज भोग जिन कीन्हा भाई। सो तेहि पुत्र बिलोचन राई ॥
बे लोचन केवलि भयो सोई। जा को बावन बाँधे जोई ॥
जो मुक्ती वा की होइ जाते। बली छुड़ावन केहि बिधि आते ॥
आवागवन मुक्ति नहिं भाई। बली छुड़ावन कस कस आई ॥
भागवत मैं देखौ यह साखी। बली काज आये अस भाखी ॥
जो पहलाद मुक्ति को जाता। आवागवन केहि कारन आता ॥
सहाय करी नरसिंघ बतावा। पिता मारि राज जिन पावा ॥
राज करै सो नरकै जाई। कस कस ता की मुक्ति बताई ॥
जो नरसिंघ जिवत ले जाता। तो ता की हम मानैं बाता ॥
राज थापि तेहि भोग करावा। भोग भोग भौ खानै आवा ॥
ता की मुक्ति साखि बतलावो। कहि झूठी झूठी समझावौ ॥
सुवा पढ़ावत गनिका तारी। यह बिधि भाखूँ कहूँ बिचारी ॥
सुवा पढ़त जो गनिका तरती। सहजै होत जक्त सब मुक्ती ॥
सुवा सुवा घर घर मैं होते। तो मुक्ती का सोच न करते ॥
ध्रू तप की तुम साखि बताई। गोपीचंद भरथरी भाई ॥
पढ़ पढ़ सुवा मुक्ति जो होते। तो पुनि राज काहे को तजते ॥
ध्रू को तप की बिधी बताया। राज छाँड़ि तन खाक मिलाया ॥
गनिका मुक्ति सहज बतलावौ। ध्रू जी राज गये किमि गावौ ॥

कभि सुवा पढ़ते सहज बतावा । कभि कभि कष्ट तपस्या गावा
ये तो बिधी मिली नहिं भाई । ये सब झूठ झूठ सी गाई ॥

॥ सोरठा ॥

सुन गुनुवाँ ये बात, राम काल जग में फँसा ।
बसा करम के माहिं, लसा खानि चारो भरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी सत सत तुम भाखो । समझि परा बूझी सब साखो ॥
ये सब काल जाल कर लेखा । अपने मन मैं किया बिबेका ॥
पुनि गुनुवाँ बोला अस बानी । महूँ आप चरनन लपटानी ॥
चरन दास जानौ मोहिं चेरा । किरपा दृष्टि मोहिं तन हेरा ॥
मैं पुनि रहौं चरन के लारा । जीव काज मम करो सुधारा ॥
अब मैं सरन आपु की लीन्हा । राम काल धोखा यह चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब तुलसी अस करी बखानो । हिरदे की संगत पहिचानो ॥
निस दिन हिरदे संग निहारो । हिरदे से होइहै निरबारो ॥
मन को थिर कर बूझो बाता । मन थिर बिना न आवै हाथा ॥
इंद्री मन थिर सूरति हेरो । तब भौजल से होइ निबेरो ॥
ये हिरदे रहै हमरे पासा । तन मन बिधी रहो येहि दासा
ये सत संगत सगरी जानी । या से प्रीति करो पहिचानी ॥
हिरदे का तुम भेद न पाई । सूरति पाइ चरन चित लाई ॥
या से पिता भाव नहिं मानौ । सूरति सैल चरन मैं आनौ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तब हिरदे बोला अस बानी । अब चालन घर कहूँ बखानी ॥
ये गुनुवाँ परसाद कराऊँ । पुनि सिर नाइ चरन मैं धाऊँ ॥
अस कहि दीन डंडवत कीन्हा । चरन पाइ मारग को लीन्हा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी अरज हमारी । किरपा करौ कहौ निरवारी ॥
हिरदे की मोहिं बिधी बताई । हिरदे पार समझ मोहिं आई ॥
अस बिस्वास मोर मन आवा । या की गती कहौ परभावा ॥
मैं स्वामी निज दास तुम्हारा । ये कहिये बूझौं निज सारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तब तुलसी बोले यहि भाँता । हिरदे भेद सुनाऊँ बाता ॥
इन सतसंगति बहु बिधि कीन्हा । संत चरन मैं रहे अधीना ॥
दीन बिधी और गुरुमत लीन्हा । संत चरन घट अंतर चीन्हा ॥
सूरति लीन अधर रस माती । का पूछौ हिरदे की बाती ॥
सतसंगति बिधि सगरी जाना । सूरति सैल फोड़ि असमाना ॥
दस दिस पार सार सब जाना । नौलख कँवल पार पहिचाना ॥
मानसरोवर बेनी तीरा । जल प्रयाग बहै निरमल नीरा
ता मैं न्हाइ चढ़े असमाना । सतगुरु चौथे पार ठिकाना ॥
निसि दिनि सैल सुरति से खेला । सुरति नाम करै निस दिन मेला
अष्ट कँवल दल गगन समाई । सहस कँवल पर तेहि की राही
ता के परे चार दल लीन्हा । द्वै दल जाइ दोइ मैं कीन्हा ॥
यहि बिधि रहै दिवस अरु राती । जानै कोइ न इन की बाती ॥
कोउ न भेद जान घर माईं । यह रहै सूरति अधर लगाई ॥

ऐसे कई दिवस गये बीती । ता पीछे भइ ऐसी रीती ॥
चलि हिरदे पुनि घर को जाई । घर मैं तिरिया पुत्र रहाई ॥
रात बास घर अपने कीन्हा । भोजन कर पुनि कीन्हा सैना ॥
पुनि पुनि निसा गई अधराती । चढ़ि गई सुरति सैल रस माती ॥
ता समय तिरिया कीन्ह उपावा। रोग सोग अपना दुख गावा ॥
जब हिरदे मन कीन्ह बिचारा। ये गृह साल जाल है न्यारा ॥
अस मन में कछु भई उदासी। पुनि तब से रहे हमरे पासी ॥

॥ गुनुवाँ उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी बताई । हिरदे की कछु अगम सुनाई ॥
हिरदे पार सार गति पाई । तुलसी स्वामी अगम लखाई

हाल अभ्यास तीनौं पंडितौं का

॥ नैनू उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

इतने मैं पंडित चलि आई । करो डंडवत परसे पाँई ॥
स्यामा नैनू माना नामा । तीनौं मिलि बैठे वोहि ठामा ॥
पुनि नैनू ने अरज बिचारी । स्वामी तुम चरनन बलिहारी ॥
बाम्हन जाति मान मद भारी । स्वामी तुम ने लीन्ह उबारी ॥
अब मैं अपनी बिधी बताऊँ । स्वामी सुनिये चित कर भाऊ ॥
चमकै बीज अरु गगन दिखाई । अंदर स्वाबो फैलत जाई ॥
पाँच तत्त रँग भिन भिन देखा। कारा पीरा सुरख सपेदा ॥
और जंगाल रंग तेहि माहीं । येहि बिधि पाँचौ तत दरसाईं॥
ता से सुरति भिन्न होइ खेली । तेहिं के आगे चली अकेली ॥
सहस कँवल से न्यारी जाई । सेत दीप द्वारे के माहीं ॥
ता से चली निकर होइ न्यारी। देखा सब ब्रह्मंड पसारी ॥
नैनू यह बिधि बिधी बताई। तुलसी सन्मुख जाइ सुनाई ॥

तुम्हरी कृपा और कछु पैहौँ । पुनि चरनन मेँ आनि सुनैहौँ ॥
हम जड़ जीव बिद्या के माते। बाम्हन जाति बुद्धि मेँ राते ॥
पढ़ि पढ़ि कै हम जनम गँवावा। संतन सन्मुख राखि दुरावा ॥
मैली बुद्धि ज्ञान मति छोटा । संतन से मन राखा मोटा ॥
ता से बिधी भेद नहिँ पाई । अब स्वामी तुम सब दरसाई ॥
तुम्हरी कृपा नजरि बिधि सारी। बिधि बिधि देख परी गति न्यारी

॥ स्यामा उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तब स्यामा बोला अति दीना । मन बुधि चित चरनन मेँ लीना
तुलसी स्वामी मैँ बलिहारी । तुम्हरे चरनन मेँ सुख भारी ॥
जिन जिन तुम्हरे चरन निहारा। सो सो उतरे भैाजल पारा ॥
जो जो चरन और कोउ धरिहै । भौ के माहिँ कधी नहिँ परिहै ॥
ये मोरे मन सत कर भासा । तुम्हरे चरन छूटि जम फाँसा ॥
हे दयाल तुम किरपा कीन्हा । मेरी सुरति करी लैालीना ॥
होत उजास जोति हिये माइँ । छिन छिन सुरति ताहि मेँ लाई
जोति फाड़ सूरति गइ आगे । मानैा सुरति द्वार पर लागे ॥
द्वार बैठि देखा हिये माइँ । चंद और सुरज गगन सब ठाइँ
घट मेँ देखा अगम बिलासा । सो सब भाखूँ तुम्हरे पासा ॥
अब आगे जो परचा पाऊँ । पुनि चरनन मेँ आनि सुनाऊँ
स्वामी हमैँ दया नित कीजे । निस दिन चरन सरन राखि लीजै
स्वामी हम ने अपति बिचारी । तुम दयाल कछु मन नहिँ धारी
हम ने टहल कछू नहिँ कीन्ही । तुम ने वस्तु अमोलक दीन्ही ॥
सास्तर नाहिँ न बेदन माहीँ । और पुरान येहि जानत नाहीँ
ब्रह्मा या को अंक न चीन्हा । येहि बिधि औतारन से भिन्ना
आतम ब्रह्म से यह गति न्यारी । चीन्है कोइ कोइ संत सँवारी ॥
संत चरन जोई जित्र जाना । ता का आवागवन नसाना ॥

संत चरन जो चीन्है नाहीं । पुनि पुनि चौरासी भरमाई ॥
अस अस समझि परा यह स्वामी। सो दयाल किरपा से जानी ॥
संतन की गति अगम अपारा । हम पंडित लघु पावैं न पारा ॥

॥ माना उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै जोर दोउ हाथा । चरनन माहिँ डारि कै माथा ॥
स्वामी हम कीन्ही अजगूती । मारन काज कीन्ह मजबूती ॥
तुम दयाल कछु स्वाल न भाखा। मन से द्रोह कछू नहिँ राखा ॥
हम औगुन कहि कर कर भाखा। तुम स्वामी चित कछू न राखा ॥
लड़का कपूत बाप देइ गारी । पितु औगुन तेहि नाहिँ बिचारी
तेहि समझाइ मिठाई दीन्हा । पुनि पुनि ताहि बोध कर लीन्हा
येहि बिधि भाँति भई गति मोरी। स्वामी से कीन्ही बरजोरी ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी माना मनहिँ बिचारी । ये बिधि होति आइ जुग चारी
संत जगत दोऊ के माहीं । येहि विधि आदि अंत चलि आई
अब या का बरतंत सुनाऊँ । बिधि दृष्टांत बहुरि दरसाऊँ ॥
संत जगत-तारन बतलावैं । जग पुनि उन को मारन धावै ॥
परमारथ की राह बतावैं । सब जग उनको निंदा लावै ॥
साधू जीव करैं उपकारा । जिव मत-हीन उन्हीं को मारा ॥
जस बालक फुड़िया दुख माहीं । माता चहै नीक होइ जाई ॥
पकि फुड़िया बालक दुख पावै । माता फोड़न ता को चावै ॥
बालक माता मारन धाई । वो जानै मो को दुखदाई ॥
माता कहै नीक होइ जावै । तब मोर हिरदा माहिँ जुड़ावै ॥
माता सुख उपकार बतावै । बालक के मन मैं नाहिँ आवै ॥

बालक बुधि जग रीती जाना । माता अस मत संत बखाना ॥
ये दुख का उपकार बतावैं । वे पुनि उन को मारन धावैं ॥
ऐसी संत जगत की रीती । या मैं तुम का करी अनीती ॥
ता का इक दृष्टांत बताऊँ । हाथी ऊपर नकल दिखाऊँ ॥
हाथी की बिधि बरनि सुनाई । माना सुनियो मन चित लाई ॥
हाथी का इक बन रहै भाई । तहँवाँ हथिनी अनेक रहाई ॥
ता मैं गज मकरंद रहाई । ता की बिधी सुनौ तुम भाई ॥
गज मकरंद की बिधी बताई । सब हथिनी सँग रहै बनाई ॥
दूजा हाथी रहै न लारै । दूजा देखि प्रान से मारै ॥
सब हथिनी सँग आप रहाई । दूजा बन मैं रहन न पाई ॥
हथिनी ब्याई तेहि को देखै । नर बच्चा होइ मारै जे कै ॥
बच्चा नारी जो कोइ होई । ता को नाहिं मारै पुनि सोई ॥
नर को देखि प्रान हरि लेई । मादी देखि बोल नाहिं तेही ॥
नर बच्चा जहँ रहन न पाई । यह बिधि आपु रहै बन माईं ॥
सब हथिनी मैं आप रहाई । दूजा हाथी रहन न पाई ॥
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये तौ बूढ़ भया तन सारा ॥
हाथी बच्चा रहन न पावै । जो उपजै तेहि मारि गिरावै ॥
बूढ़ भया येहि छूटै प्राना । पुनि फिर अपना कौन ठिकाना
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये बिधि बच्चा होइ उबारा ॥
वा बन मैं इक साध रहाई । बच्चा ले राखौ तहँ जाई ॥
साधू दयाहीन नाहिं होई । वो पालै पुनि वा को सोई ॥
यह कहि हथिनी कीन्ही आसा । बच्चा डारि कुटी के पासा ॥
साधू देखि दया अति आई । बच्चा लीन्ह कुटी के माईं ॥
दया जानि तेहि पालन कीन्हा । मोटा भया जाति को चीन्हा
चल्यौ जहाँ सब हथिनी ठाहीं । गज मकरंद देखि तेहि भाई ॥
सनमुख जुद्ध भया तेहि जाई । ये जवान वो बूढ़ा भाई ॥

गज मकरंद को मारि गिराई । पुनि हथिनी में आप रहाई ॥
पुनि बच्चा ये कीन्ह बिचारा । वोहि साधू ने मोहिं उबारा ॥
साधू मारि मिटाऊँ ख्याले । मो सरिखा दूजा नाहिं पाले ॥
सो पुनि मोरा बैरी होई । ता से साधू मारौं सोई ॥
यह बिचारि साधू को मारा । ये बिधि माना यह संसारा ॥
वो साधू बच्चा को पाला । सो पुनि भया ताहि का काला ॥
दया जानि उन किया उबारा । वे बच्चा साधू को मारा ॥
साधू जग को ये बिधि जाना । येहि बिधि चारौ जुग परमाना
काल बुद्धि सब जग के माहीं । संत दया बिधि मानै नाहीं ॥
वे दयाल बिधि दया बिचारा । कोइ कोइ जीव होइ उपकारा ॥
सब जग जीव काल मुख माईं ।कोइ कोइ जीव निकस पुनि जाई
सुनु माना जग का व्यौहारा । आदि अंत अस रचा पसारा ॥
या में तुम को दोस न भाई । आदि अंत ऐसै चलि आई ॥

॥ माना उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुम दयाल पूरे हौ स्वामी । जीव काल बस तुम्हैं न जानी
तुम परमारथ राह बताई । जग कर्मी स्वारथ को धाई ॥
अब स्वामी इक अरज बिचारी । मैं तुम चरनन की बलिहारी
जो कछु बस्तु आप ने दीन्हा । ता बिधि भाखि सुनाऊँ चीन्हा
नील सिखर होइ सूरति जाई । स्याम सिखर के पार समाई
सातौ दीप सेत के पारा । जहँ होइ पहुँचे गगन अधारा
तहँ पुनि सैल सुरति से कीन्हा । आतम निरखि भिन्न लख लीन्हा
घट घट देखा सब्द पसारा । सूरति चढ़ी सब्द की लारा
सुरति सब्द मैं जाइ समानी । जस जस भई सो भाखि बखानी
जब स्वामी तुम दाया कीन्हा । बस्तु अगम को हाथै दीन्हा
अनेक जन्म ये देह सिराती । पुनि मरते कहुँ हाथ न आती

मैं पुनि सतगुरु तुम को जाना । तुलसी सत सतगुरु कर माना
जस जस सतगुरु की जस रीती । तस तस मोरे भइ परतीती

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत् कृपालमहं बंदे, परमानंद माधवः ॥१॥
द्वै द्वै लोचन सर्बानां, बिद्या त्रय लोचनं ।
सप्त लोचन ज्ञानीनां, भगवान अनंत लोचनं ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, काल कँवल स्रुति भिनि भये ।
माना मरम निहाल, को कृपाल तुलसी बिना ॥

॥ चौपाई ॥

माना के मन होस निकारी । तुलसी चरन सरन गति सारी ॥
स्वामी तुलसी सतगुरु दाता । अगम निगम का किया बिख्याता
सतगुरु सन्त सन्त हम जाना । सतगुरु बिना न मिलै ठिकाना ॥
बिन सतगुरु पावै नहिं कोई । बिन सतगुरु सब गये डुबोई ॥
तुम सतगुरु मोहिं राह लखाई । आदि रु अंत नजर में आई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, तुम स्वामी दाया करी ।
छूटा भ्रम दुख जाल, कहि दयाल बिधि सब लखी ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि माना सीख जो मंगी । नैनू स्यामा तीनौं संगी ॥
सीस टेक डंडवत कीन्हा । चरन छुए पुनि मारग लीन्हा
तीनौं पंडित मारग जाही । कीन्हा गवन भवन की राही
पुनि गुनुवाँ आया तेहि बारा । किया प्रनाम डंडवत सारा ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ पूछै तुलसी स्वामी । एक बिधी मैं कहूँ बखानी ॥
जीव राह की जुगत बताही । ता से छूटै जम की राही ॥

तुम दयाल सतगुरु हौ स्वामी। जा से होइ जीव कल्यानी ॥
ये भौजाल जगत ब्यौहारा। ता मेँ जीव कर्म बस डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु गुनुवाँ यह जम की बाजी। जग संसार यही मेँ राजी ॥
पंडित और समझै नहिँ काजी। ये सब झूठ काल से राजी ॥
इन की बात न चित पर दीजे। ये सब पाप पुन्य मेँ भीजे ॥
संत चरन की आसा कीजे। संत सरन मुक्ती करि लीजे ॥
ये जग मेँ कछु नाहिन भाई। सुन्न जगत जिव भै भरमाई ॥
राम कृष्न दोऊ बटमारा। सिव ब्रह्मा मिलि फाँसी डारा॥
या से संत राह धरि लीजै। उन कि कहनि चित से नहिँ दीजै

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

चरन बंद तुम्हरी सरनाई। ये सब झूठ समझ मेँ आई ॥
मोरे चित का भर्म उठावा। जब से चरन सरन मेँ आवा ॥
हिरदे मोहिँ बिधी समझावा। भर्म भाव बिधि सबहि बतावा॥
अब प्रभु कृपा दृष्टि मोहिँ कीजै। जीव सरन अपना करि लीजै ॥
मैँ तो स्वामी तुम को पाये। तुम्हरे चरन सरन चित लाये ॥
अब कोउ बात बिधी नहिँ भावै। सूरति तुलसी चरन समावै ॥
अब कछु राह मोहिँ को दीजै। यह गुनुवाँ अपना करि लीजै ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब वहि को कछु राह बताई। गुनुवाँ सीस चरन तर नाई ॥
सुनु गुनुवाँ यह बिधी बताई। मन थिर करो गुनो[1] मत भाई ॥

(१) मन मेँ गुनावन न उठने देव।

सूरति सोध कँवल में राखै ।नित प्रति सुरति दृष्टि होइ ताकै
येहि बिधि रहै दिवस और राती। गुनुवाँ गुनन करै मत भाँती

॥ सोरठा ॥

सुनु गुनुवाँ यह बात, बिधि बिचार गुप्त रहै ।
कहै न काहू साथ, येहि बिधि मन मैं बसि रहै ॥

॥ चैापाई ॥

चरन लाग मारग कै लीन्हा । घर को सुरति गवन जिन कीन्हा॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चैापाई ॥

स्वामी हम के नाहिं बिसारी । नेक सुरति हमहूँ पर डारी ॥
हम को अपना दास बिचारै । अस जानि मोरी ओर निहारै

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि करै बिचारा । बिन चैाके नाहीं निरबारा ॥
चैाके की बिधि करै बनाई । जब सूरति अपना घर पाई ॥
सूरति से नरियर को मोड़ौ । हाथै से नरियर नहिं फोड़ौ ॥
सुरति पान पर बीरा खावै । बरई बीरा दूरि बहावै ॥
तीनि गुनन का तिनुका तोड़ौ । बासन पाँच इंद्री को मोड़ौ ॥
और कहाँ लगि बिधी बताऊँ । ये चैाका बिधि औरै गाऊँ ॥
जग चैाके को दूरि बहावै । सत चैाका हिरदे मैं लावै ॥
जग चैाके की झूठी बाता । सत चैाका संतन रस माता ॥
जो चैाका संतन ने जाना । सोइ कबीरदास पहिचाना ॥
सो चैाका तुम को बतलैहैाँ । ता से राह अगम को पैहै ॥
जो कबीर ने राह बताई । सो चैाके की कहैाँ बुझाई ॥
जो कबीर राह बिधि गाई । सोई राह संत बतलाई ॥
संत कबीर ये अंतर नाईं । या बिधि से कोइ भर्म न लाई

सूरति चढ़ै संध जो पावै । सो कबीर सम चित में लावै ॥
वा में भिन्न भाव कोइ लैहै । कर्म भाव बिधि नरकै जैहै ॥
कहै कबीर ने अगम सुनाया । और संत नहिं वहँ से आया ॥
कहै कबीर अविगति से आये । और संत वो घर नहिं पाये ॥
ऐसी बिधि कोइ मन में आनै । तो पुनि परै नर्क की खानै ॥
भेषी पंथ संत ये नाईं । आदि अंत सो संत कहाईं ॥
आदि संत सब वहिं से आये । भेष पंथ में वे नहिं पाये ॥
भेष पंथ में ढूँढ़ौ भाई । या से तुम को नजर न आई ॥
अंदर की आँखो से देखो । तब पुनि संत नजर से पेखो ॥
तुम को नजर कहाँ से आई । चौका पंथ माहिं उरझाई ॥
चौका पंथ को दूरि बहावै । तब वो राह नजर में आवै ॥
चौका पट्टा हाट बजारा । या से परै कर्म की लारा ॥
संतन का चौका बिधि न्यारा। ये सब जानौ हाट बजारा ॥
संतन का चौका बिधि गाऊँ । संत कृपा से समझ बताऊँ ॥
सुरति मोड़ नरियर को फोड़ौ । अगम पान चढ़ि धनुवाँ तोड़ौ॥
राह बिधी कोइ संत बतावै । जीवत अगम बस्तु को पावै ॥
तुलसी कहि इक सब्द लखाऊँ। ता में सब चौका बिधि गाऊँ॥
फूलदास तुम सुनियो काना । बिधि चौका का सब्द बखाना ॥

॥ जैजैवंती ॥

एरी लै आज तो अधर घर आई, तुलसी चढ़ि देखिया ॥टेक॥
सूरत दृग दौड़ अटारी, हिये हेर लखा पिउ प्यारी ।
सारी तो लै हेरि निहारी, प्यारा लै सँग पेखिया ॥१॥
नरियर को मोड़ा जाई, प्रिये बास सुगंध उड़ाई ।
बीरा पान पाये आई, सुगंधी महकाइया ॥२॥
मेवा आठ पुरुष लखि जानी, स्रुति हेर हिये उड़ानी ।
सब्दारस भई रंग रानी, हरखानी पिउ पाइ के ॥३॥

पलँगा पर जाइ पौढ़ी, धन धन सुख की घड़ी ।
अटारी महलन चढ़ी, प्यारा पिउ लेखिया ॥४॥
फूलदास दृग पर चौका, परवाना छाँड़ौ धोखा ।
नारियर सुरति से मोड़ौ, तोड़ौ असमान को ॥५॥
तुलसी लखि सूरति जाई, चौका परवाना याही ।
बसि तिल हिरदे बिच आई, चढ़ी द्वारा पाइ के ॥६॥
रेवतीदास को समझावा, फूलदास दोऊ लख पावा ।
कँवला में सुरति लखाई, तुलसी बिधि पाइ कै ॥७॥
इंद्री पाँच बासन मोड़ा, गुन तीनि तिनुका तोड़ा ।
पोढ़े तिनुका बासन छूटै, झूठे जग लूटिया ॥८॥
तुलसी कबीर बखाना, सो चौका बिधि हम जाना ।
पूछे कोइ चित ब्रत आई, ता को दरसाइया ॥९॥
पत्र कदली छेदा जाई, जहँ सेत चदरवा तनाई ।
तुलसी बिधि कहि समझाई, संत जनाइया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

फूलदास चौका बिधी, सुरति नारियर मोड़ ।
पान अमर बीरा लखौ, चखौ अधर रस और ॥
रेवतीदास तुमहूँ लखौ, नरियर निरत निहार ।
निज अकास पर पान है, बीरा है निज सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस सुरति लगाई । नरियर माहिं पंथ सोइ राही ॥
येही पंथ की राह जो पावै । पंथ कबीर ताहि कर नावैं ॥
येही पंथ सुरति से लावै । अगम अगोचर घर को पावै ॥
सूरति सैल करै असमाना । निज घर पहुँचै जाइ ठिकाना ॥
या बिधि पंथ संत दरसावै । तब सत सुरति समझ घर आवै ॥
आद रु अंत पंथ पद जाना । भाखै सतगुरु संत बखाना ॥

सतसँग करै बूझ जब आवै। सूझै मत सतसंगत पावै ॥
जिन जिन चरन बिधी बिधि जाना। सो गुरुमत जानौ परमाना॥
पंथी राह रीत सब छूटै। मन की मान मनो सब टूटै ॥
दीन होइ कर सेवै संता। जब लखि परै अगम पद पंथा॥
जस कबीर ने भाखा चोका। सो विधि करौ मिटै जम धोका॥
उन कहि बिधि जो बूझ विचारै। सो घर पुनि पद पार निहारै॥
संत गूढ़ मत गुप्त पुकारै। बूझै सतगुरु सब्द सुधारै॥
जो कछु कही उलट बिधि बानी। सो बिन समझ बूझ ना जानी॥
सब्द साखि सो भाखि सुनावै। बिन सतगुरु कछु हाथ न आवै॥
सतगुरु मिलैं बतावैं भेदा। जब जम जाल मिटै मन खेदा॥
संत बाग बन अंड पुकारा। सोइ ब्रह्मंड बाग बन सारा॥
तन मन बृच्छ देखि दृग अंडा। चढ़ कर सुरति निरखि नौखंडा॥
जो अंडे बिच बाग बखाना। देखा सुरति समझि असमाना॥
बाग बृच्छ बेली पर अंडा। सतगुरु सुरति बतावै डंडा॥
ये मन खलक खान बिच डारा। पाँच पचीस तीनि तेहि लारा॥
अब या का सुन सब्द लखाऊँ। बृच्छ बेलि अंडा अरथाऊँ॥
उलटावसी जो कही कबीरा। रमज रेखता मैं मत धीरा॥

॥ रेख़ता ॥

अली इक बाग बन खंडा। लगे बृछ बेलि पर अंडा ॥१॥
अजब इक फूल पचरंगा। भँवर बसै बास के संगा ॥२॥
अगर सब लोग फल खावैं। स्वाद बस रैन रहि जावैं ॥३॥
फले फल दाख के पेड़ा। रहत जेहि भूमि पर भेड़ा ॥४॥
भेड़ा रहै बाग मैं अली जा। काढ़ि नित खात कालेजा ॥५॥
वोही मन बीच मैं राजै। गरज सब सूरमा भाजै ॥६॥
कहूँ कोइ रहन नहिं पावै। सकल बन जीव चरि जावै ॥७॥
कहूँ उनमान बल केरा। बनी बिच जीव सब घेरा ॥८॥

सुनौ अब तोल तन केरा । नहीं त्रय लोक में हेरा ॥९॥
अली एक बात अनतोली । सुनी सब संत की बोली ॥१०॥
कहै दस सीस वोहि केरा । पाँउ पचबीस तन हेरा ॥११॥
अली मुख तीनि से खावै । अजब येहि बात में आवै ॥१२॥
तरँग तन बीच में भावै । समझ दस सीस पर लावै ॥१३॥
अरी थिर थोव नहिं जाना । रहे भ्रम भाव रस खाना ॥१४॥
अली जिन अंड को फोड़ा । सुरति निज नैन से जोड़ा ॥१५॥
मुवा मन भाव का भेड़ा । चले सत नाम चढ़ि बेड़ा ॥१६॥
तुलसी तब बूझ में आई । अगम सब समझ दरसाई ॥१७॥
लिये सत संत के चरना । बिधी बरतंत सब बरना ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास दिल समझ बिचारो । अस अस भेद कबीर पुकारो ॥
मन पचबीस पाँच सँग भूला । गुन तन बृच्छ बसै सहि सूला ॥
बेली सुरति अंड पर लागी । दिल दुरबीन चीन्ह सोइ भागी
मन कर भर्म भूल थिर थावै । थिर कर सुरति निरति तत तावै
नित नित ऐनक आँखि दिखावै। लिखि कागद पर अच्छर पावै ॥
निःअच्छर निरनै गति न्यारा । निरखि संत सो करै बिचारा ॥
रेवतीदास रमज रस बूझा । जिन जिन को संतन मत सूझा॥
ये मन काल बड़ा बल भूता । पाँच पचीस संग मजबूता ॥
तीनि गुनन तन मन बिच राजै। चल कर स्त्रुति मन बिष रस साजै
ता से थिर करि सुरति लगावै। कंज कँवल बिधि बिच ठहरावै॥
पल पल सूरति सिखर निहारै। लील गिरी पर समझि सिधारै॥
रबि रज किरनि गगन के पारा। सूरति सतगुरु ऐन निहारा ॥
सिखर निकर नभ द्वारे माईं । सेता सहर अटारी जाई ॥
स्याम कंज स्त्रुति दूर बहाई । द्वैदल कँवल केल हिये आई ॥
सरवर गिरजा गुरुपद माईं । कंज कँवल तज पदम सुहाई ॥

लघु दीरघ दल चारि बिराजै। सतगुरु सुरति मीन जहँ राजै॥
फूलदास ये लखि लखि बैना। सूरति द्वार पार की सैना॥
या से परे आदि घर न्यारा। या से अंत संत दरबारा॥
जिन सतगुरु की सैन बिचारी। सो गति बूझै अगम अपारी॥
ये मत संत पंथ नहिं भेषा। खोज खोज पचि मुए अनेका॥
सुरतवंत गुरु सैन लखावै। सो चेला सतगुरु से पावै॥
पदम मध्य सत सतगुरु धामी। सूरति सिमटि सब्द अलगानी॥
जिमि सागर बागर भया सिंधा। सरिता समुँद मिलै जिमि बुंदा॥
अस सूरति सिष सतगुरु पासा। सब्द गुरू मिलि किया निवासा
गुरु सिष सार धार इक जानी। ज्यौं जल मिलि जल धार समानी
अस अस खोज करै कोइ भाई। नित हित संत चरन लै। लाई॥
तन मन धन संतन पर वारै। नित नित सतसंगति की लारै॥
दास भाव सतसंगति लीना। दीन हीन मन होइ अधीना॥
चित्त भाव दिल मारग चावै। सब साधन की टहल सुहावै॥
ये बिधि भाँति रहै रस लाई। तब सतगुरु सत दया लखाई॥
द्वारा दृग दुरबीन लखावै। कंज स्याम ता समझ सुनावै॥
ता मैँ समुँदर सोत अपारा। ता मैं लील पील सम द्वारा॥
सूरति समझि बूझि जहँ आवै। गज गिरजा तहँ आसन लावै॥
निस दिन रहै सुरति लै। लाई। पल पल राखै तिल ठहराई॥
या मैँ सुरति नेक नहिं बिसरै। छिन छिन मन से न्यारी पसरै॥
येहि बिधि जतन करै कोइ लाई। सूरति रहै द्वार पर छाई॥

॥ फूलदास उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंतरजामी। अगम बस्तु दीन्ही सहदानी॥
सुनी न भेष पंथ के माईं। अजर पंथ मो को दरसाई॥
मो को कीन्ह सनाथी स्वामी। आदि अलख की दीन्ह निसानी

अब तौ रहौँ चरन लौ लाई । जो कबीर सो तुलसि गुसाँई ॥
जो कबीर बिधि भाखि बताई। सो सो सब तुलसी पै पाई ॥
तुलसि कबीर एक कर जाना। दूजा भाव न मन मैँ आना ॥

॥ दोहा ॥

तुलसि कबीर ये एक गति, दूजा कहे अचेत ।
दोनौँ स्वामी एक रस, मोर चरन से हेत ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी बिधि पहिचानि कै, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति बाँधि असमान पर, निज घर पहुँचे जाइ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि गाई अगम लखाई। फूलदास बिधि राह लई ॥१॥
रेवती अति दासा सुरति निवासा। तिल मैँ बासा जुगति सही ॥२
राती और दिवसा छिन छिन बासा। सुरति अकासा निरति रही॥३
मन सूरति लागी नेक न भागी । निस दिन जागी ठहर तहीँ ॥४
रेवती और फूला स्वामी अनुकूला । सूल बंध सब काटि दई ॥५॥
मनहीँ बुधि पाई भूल नसाई । स्वामि सहाई बाँह गही ॥६॥
मन के भ्रम भागे थिर होइ लागे। कछु अभिलाषा नाहिँ रही॥७
मन की बृत चेती छाँड़ि अचेती। सेत द्वार पर लागि रही ॥८
तुलसी कहि कहिया अगम लखैया। चरन पाइ स्रुति पागि रही।.९

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बात, संत चरन अति अगम गति ।
सत मत गति पद सार, ये अगार गति को लखै ॥१॥
कोइ जानै स्रुति सार, सब्द लार लै पार रहि ।
सिंध बुंद स्रुति धार, मिलि अगार अद्बुद भई ॥२॥

सम्बाद साथ गुसाँई प्रियेलाल के

॥ चौपाई ॥

नाम जाति इक अग्गरवाला । कहँ नाम तेहि सुरति गुपाला ॥
जिन के गुरू गुसाँई आये । प्रियेलाल अस नाम रहाये ॥
उन उनके घर किया निवासा । सुन सोइ बात दरस अभिलासा
जिन पुनि सुनो हमारी बाता । दोऊ चले दरस को साथा ॥
प्रियेलाल और सुरतिगुपाला । आये लिये हाथ में माला ॥
आये कीन्ह डंडवत बैठे । प्रीति उठी तुम दरसन भेंटे ॥
कहै तुलसी किरपा तुम कीन्हा । दास जानि प्रभु दरसन दीन्हा
अपन जानि प्रभु भयउ दयाला । स्वामी बिन किरपा को पाला

॥ प्रियेलाल उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल कहै भये प्रसन्ना । भीतर प्रेम मगन प्रिये मन्ना ॥
स्वामी दुरलभ दरस तुम्हारे । संत दरस बड़ भाग हमारे ॥
नगर नारि सब यों बिधि भाखा । सो बिधि तौ हम एक न ताका ॥
सब मिलि कहैं नगर के माईं । उन दरसन नहिं जावौ भाई ॥
बेद पुरान एक नहिं जानै । राधा कृष्न राम नहिं मानै ॥
गंगा जमुना कछू न राखै । कछु नहिं आदि अंत को भाखै ॥
सब जग मिलि ये कहल बनाई । सो बिधि सुनि हमहूँ चलि आई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी उन सत सत कहिया । मैं मति-हीन बुद्धि नहिं रहिया ॥
मैं तौ सब चरनन कौ दासा । मैली बुद्धि नीच मोरी आसा ॥
तुम्हरे चरन मोर निरधारा । पकरि हाथ करिहौ निस्तारा ॥

मैं औगुन की खानि अपारा । सूरति संत चरन की लारा ॥
मोर निबाह तुम्हारे हाथा । अब तौ लगो चरन के साथा ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी अस अस कस भाखौ । हम जग जीव चरन में राखौ ॥
काम अरु क्रोध लोभ के माते । बिष रस भोग फिरै सँग साथे ॥
ये जग जाल काल दिन राती । कर्म भाव भरमै सँग साथी ॥
हम चहले के जीव अनीती । छूटे तुम चरनन की प्रीती ॥
श्रीभगवान जी कहत पुकारा । मैं तौ सदा संत की लारा ॥
गीता में अरजुन से भाखा । मो से बड़ा संत को राखा ॥
श्रीमुख ऐसे आप बखान्यो । मो से अधिक संत को जानो ॥
मो को संत भाव रस नीका । जगत भाव रस लागै फीका ॥
श्रीमत में अस कहत बखानी । भागवत में ऊधो से बानी ॥
स्वामी तुम सा संत सुजानी । हम निस्तार चरन में मानी ॥
संतन की गति बेद पुकारा । नेतहि नेत न पावै पारा ॥
महातम सब सब मिलि भाखा । सब से बड़ा संत को राखा ॥
मैं स्वामी इक पूछौं बानी । किरपा करि भाखौ सहदानी ॥
दास भाव पूछौं मैं स्वामी । या में भेद भाव नहिं जानी ॥
पहिले जग के बेद बनावा । यह रचना कौने बिधि आवा ॥
जीव कहाँ से आया कहिये । केहि बिधि कर्म माहिं भौ रहिये ॥
जीव मुक्ति कैसे करि पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
माया मोह जगत अँधियारा । और अज्ञान काम की लारा ॥
ऐसे जीव छुटन नहिं पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
अपना ज्ञान न सतसँग मानै । गुरु बिन राह कौन बिधि जानै ॥
सतगुरु मिलै ते बाट बतावै । जब कोइ जीव मुक्ति को पावै ॥
गुरु सम बड़ा और नहिं कोई । ये भगवान कही मुख सोई ॥

गुरु द्रोही पातक का मारा । कधी न उतरै भौ के पारा ॥
गुरु बिन कर्म नास को करई । भर्म माहिँ भौजल मैँ परई ॥
गुरु से बड़ा और नहिँ रहिया । बेद पुरान संत अस कहिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै ये सत्त बखाना । अस अस बेद पुरान न जाना ॥
ये तुम भाखा सत्त प्रभावा । बेद पुरान येही बिधि गावा ॥
पुनि संतन कछु और बखाना । सतगुरु मता भिन्न करि जाना ॥
जगत गुरू कंठी गहि बाँधा । ता को गुरू कहै पुनि साधा ॥
ये ब्यौहार गुरू जग सोई । मुक्ति गुरू कोइ औरै होई ॥
ये तो गुरू जगत ब्यौहारी । इन से मुक्ति न होइ बिचारी ॥
कर्म जाति देँही गुरु करई । कर्म भोग इन से नहिँ टरई ॥
गुरु है आप करम के माईं । चेला को कैसे मुक्ताई ॥
गुरु की करनी गुरु सोइ पावै । चेला आप कर्म भुगतावै ॥
जगत गुरू जिव पार न पावै । वो गुरु संत और गोहरावै ॥
कनफूका गुरु नहीं कहाई । गुरु दयाल की औरै राही ॥
वे दयाल गुरु समरथ दाता । जग भौजाल पार के करता ॥
गुरु है सब्द सुरति है चेला । चीन्है गुरु चेला सोइ मेला ॥
वे गुरु स्वामी अगम अपारा । पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा ॥
ता के रूप रेख नहिँ काया । वे गुरु मिलैँ तो मुक्ति लखाया ॥
ये तो गुरू कर्म की लारी । आप न तरे और कहा तारी ॥
ये जानौ ब्यौहारी नाता । लेन देन पैसे के साथा ॥
खान पान चेला से माँगै । गर्भ बास कर देने लागै ॥
चेला जानि जाहि सोँ लेई । पुनि पुनि ताहि भोग करि देई ॥
पुत्र बैल घोड़ा होइ ऊँटा । सो बिन दिये कोऊ नहिँ छूटा ॥
ये गुरु लेन देन ब्यौहारा । गुरु चेला भौ कर्म पसारा ॥

कंठी बाँध गुरू सोइ भइया । जग ब्यौहार नात यहि कहिया ॥
जग मैं कन्या क्वारी ब्याही । करे ब्याह तेहि कहै जमाई ॥
ब्याह किये का नाता लागा । येहि बिधि गुरु चेला मत जागा ॥
सतगुरु मत पद अगम अपारा । ता को चीन्ह जीव होइ पारा ॥
वो गुरु पंथ संतही जानै । जग गुरुवा नाहीं पहिचानै ॥
चेला बने जीव नहिं हाना । गुरु सोइ बनै कर्म की खाना ॥
ता से संतन भक्ति दृढ़ाई । बिना भक्ति उबरै नहिं भाई ॥
भक्ति बिना जिव जम करै हाना । बिना भक्ति चौरासी खाना ॥
बिना भक्ति कोइ पार न जाई । ता से भक्ति संत ठहराई ॥
गुरु सेवा स्वामी को चीन्हो । ता से सदा काल आधीनो ॥
स्वामी कठिन खोज करि पैहै । सतगुरु भेद संत समझैहै ॥
स्वामी संत बिना नहिं पावै । बिना संत गुरु को दरसावै ॥
जग के गुरू न जानौ भाई । वे सतगुरू कठिन से पाई ॥
दास बनै सतगुरु को पावै । दास बिना गुरु नहिं दरसावै ॥

॥ प्रश्न प्रिये लाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी कहौ बुझाई । कौन बिधी सतगुरु को पाई ॥
कौन बिधी स्वामी दरसावा । कौन भक्ति से सतगुरु पावा ॥
वे गुरु कहाँ कहाँ है बासा । स्वामी का कहौ कौन निवासा ॥
कौन बिधी जो नजर मैं आवै । चेला कौन बिधी से पावै ॥
सो बिधि भिन्न भिन्न दरसाई । जा से चित की संसय जाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुम ने गुरु अपने को जाना । आदि गुरू मत मर्म भुलाना ॥
कंठी बाँधि ज्ञान बतलावा । भक्त भये सतगुरु नहिं पावा ॥
उन सतगुरु की राह नियारी । पावै संत चरन को लारी ॥

सतगुरु आप पुरुष हैँ स्वामी । गगन कंज मद्ध अस्थानी ॥
पिरथम अष्ट कँवल को बूझै । सहसदल कँवल पार होइ सूझै
ता के परे चार दल भाई । ता से भिन्न दोइ दरसाई ॥
ता के आगे सतगुरु धामा । चौका मिलै गुरू परमाना ॥
पारब्रह्म जो कहिये ऐसा । ता के आगे सतगुरु देसा ॥
पारब्रह्म जेहि कहि गोहराई । ता ने सतगुरु भेद न पाई ॥
निरगुन सरगुन दोउ से न्यारा । भिन इन से सतगुरु दरबारा ॥
यह चेला वो सतगुरु पावै । वो सतगुरु सोइ कर्म नसावै ॥
जहँ लगि वो सतगुरु नहिँ पावै । तहँ लगि चेला निगुर कहावै ॥
वो सतगुरु चौथे पद स्वामी । ता की भक्ति संत सब ठानी ॥
सतगुरु फोड़ै गगन अकासा । तब पहुँचै सतगुरु के पासा ॥
सो घर मिलि पहुँचै उन पासा । सो चेला सतगुरु का दासा ॥
सोई घर से सब जिव आये । निरगुन सरगुन उनहिँ बनाये ॥
वा के पास जीव चलि जावैं । सो जिव जाइ परम पद पावै ॥
जहँ लगि वो गुरु नाहीं पावै । जगत गुरूसोइ निगुर कहावै ॥
जगत गुरू सब निगुरा भाई । जब लगि गुरु नहिँ गगन समाई ॥
गुरु ने अपना गुरु नहिँ पाया । चेला हाथ कहाँ से आया ॥
खाना द्रव्य टका के माइ । सो गुरु चेला घर घर जाई ॥
ज्यौं ब्योपारी हाट लगावा । ऐसे ये गुरु जग रस भावा ॥
पेट काज दूकान लगाई । आप तरन की खबरि न पाई ॥
कहै चेला को गुरू तरावै । अपनी तरन बिधी नहिँ पावै ॥
ये ब्योहार तुम्हारा भाई । सतगुरु की तुम सुधि बिसराई ॥
जिन ने तन का ठाट सँवारा । जीव अंस का किया पसारा ॥
किया पिंड तन रचा बनाई । सात दीप नौखंड रचाई ॥
सो स्वामी है घट के माईं । ता से जीव सकल चलि आई ॥
सो स्वामी घट माहिँ समाना । सबहि संत ये कहत बखाना ॥

पिंड ब्रह्मंड दोऊ से दूरा । बसै पास रहै सदा हजूरा ॥
वा का भेद संत से पावै । चढ़ै सुरति छिन छिन मैं जावै ॥
दास होइ ढूँढ़ै सतसंगा । चरन संत के बाँधै चंगा ॥
जाति पाँति मोटा मन त्यागै । संत चरन मैं सत करि लागै ॥
गोसाँईं स्वामी पद डारै । बाम्हन जाति पाँति मन मारै ॥
नीचा होइ दीन पद धारै । मान और मनी करै सब छारै ॥
अस अस समझ संत को चीन्हा । संत चरन मैं होइ अधीना ॥
तब उन से मारग कछु पावै । सतगुरु संत सोई दरसावै ॥
वे कृपाल कहुँ राह बतावैं । पलक माहिं अगमन घर पावै ॥
जीवत पावै घर मैं स्वामी । मुए गये की बात न मानी ॥
जीवत मिलै सोई है लेखा । मूए भाखैं अंध अचेता ॥
वा को बेद नेत गोहराई । ब्रह्मा बिष्नु राह नहिं पाई ॥
ऋषी मुनी पुनि कहैं पुराना । सिव जोगी कोइ मरम न जाना ॥
दस औतार जगत जिव माया । निरंकार जोती से आया ॥
निरंकार हैं सोलहा भाई । पुरुष निरंजन जोति लुगाई ॥
निरगुन निराकार निरबानी । चारो नाम काल अभिमानी ॥
चारो जुगन काल जिव चारा । सोइ जग जाल निरंजन डारा ॥
जोति निरंजन किया बिचारा । ता से उतपन दस औतारा ॥
दस औतार काल के जाना । जा मैं सगरा जगत भुलाना ॥
निरंकार काल है भाई । जा ने तीनि पुत्र उपजाई ॥
ता ने कीन्हा बेद बिधाना । सास्तर कीन्हे बेद पुराना ॥
या मैं ऋषी मुनी सब बूड़ा । जग अज्ञान जीव भया मूढ़ा ॥
देवल देव पषान पुजावै । तीर्थ बर्त सँग जनम गँवावै ॥
ऊँचे मन की राह बतावै । चारो जुग जिव खानि समावै ॥
निरंकार काल अरु जोती । डारै मारि जीव बिन मोती ॥
दस औतार काल ठग केरे । ब्रह्मा बिष्नु पुत्र जम चेरे ॥

ठग ठग मिलि सब जाल पसारा। अस नहिं होइ जीव निरबारा
निरंकार काल अन्याई। जोती ठगनी सब जग खाई ॥
इन से न्यारा पुरुष दयाला। जहँ नहिं पहुँचै जोत अरु काला॥
वो स्वामी संतन का प्यारा। वा घर संत करैं दरबारा ॥
निरंकार से पुरुष नियारा। सो साहिब संतन का प्यारा ॥
लोक तीन नहिं चौथे माहीं। जा घर संत करैं पाछाई[1] ॥
निरगुन सरगुन उहाँ न जावै। जोति न ब्रह्मा बिष्नु समावै ॥
दस औतार की कौन चलाई। वा घर संतन सुरति लगाई ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुनु बात, संत गती न्यारी अगम।
गुन निरगुन नहिं जोति, तिरदेवा औतार नहिं ॥

॥ चौपाई ॥

जहाँ संत तहँ निरगुन नाईं। निरंकार जहँ जोति न भाई ॥
दस औतार जान नहिं पावै। ब्रह्मा बिष्नु महेस न जावै ॥
जहँ नहिं बेद जहाँ नहिं बानी। इन से पारै पुरुष अनामी ॥
जहँ संतन की सुरति समानी। वो घर अगम संत सो जानी ॥
दीन होइ संतन सरनाईं। तब कछु राह संत से पाई ॥
फोड़ै गगन अगम को जाई। स्वामी सतगुरु भैंटै भाई ॥
प्रियेलाल अस बूझि बिचारा। सब बिधि भाखि सोइं निरवारा

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुम तो कहा बेद से न्यारा। अरु पुनि भाखा अगम अपारा॥
तुम्हरी कहन कोऊ नहिं ठहरा। भाखा तुम ये अगमपुर डेरा ॥
राधा कृष्न प्रिय इष्ट हमारा। तुम भाखा प्रभु और पसारा ॥
सुन कर भर्म बहुत मोहिं आवा। तुम ने कछु कछु और सुनावा ॥
येहि बिधि बेद कहत है नाईं। सो प्रभु मुख से भाखि सुनाई ॥

---

(१) बादशाहत।

हम करैं संध्या नेम अचारा। पूजा सेवा ठाकुरद्वारा ॥
और सनातन धर्म हमारा। ठाकुर भोग अछूता सारा ॥
मंदिर मेँ कोइ जान न पावै। बरतन कपड़ा छुवा न जावै ॥
भोजन ठाकुर करै अछूता। करते बल हाथन के बूता ॥
और अनेक अनेक बिचारा। कहँ लगि कहौँ सुचा निरवारा॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब बात अनीती भाखी। सुनी कान देखी नहिँ आँखी ॥
ये तो बहुत निष्ट[१] कहि भाई। कहे सुने से मन रिसियाई ॥
ब्रह्म बिभाव कर्म तुम कीन्हा। ये तौ निष्ट अनीती लीन्हा ॥
जनम अनेकन परिहौ खाना। ब्रह्म बिभाव संत नहिँ माना ॥
सब मेँ आतम ब्रह्म बतावौ। चेतन ब्रह्म बिभाव लगावौ ॥
तुम्हरै बेद पुरान बतावै। गीता भागवत सब मिलि गावै॥
सो तुम अपने मुख से गाई। आतम ब्रह्म एक बतलाई ॥
चर अरु अचर सब माहिँ समाना। तुम्हरा सास्तर करै बखाना॥
कोउ कोउ संतन कही बुझाई। एकै ब्रह्म सबन के माईं ॥
कहि कै एक बिभाव बिचारौ। कौन बिधी ये ज्ञान तुम्हारौ ॥
पाँच तत्त नर आतम देही। एक तत्त पाहन को सेई ॥
जड़वत देख दोऊ के संगा। चेतन देख दोऊ मेँ रंगा ॥
या मेँ लघु दीरघ को देखा। मन अपने मेँ करौ बिबेका ॥
इक चेतन की पूजा थापौ। चेतन एक निष्ट करि राखौ ॥
आतम चेतन निष्ट जो भइया। पाहन जड़ सुध केहि बिधि रहिया ॥
पाहन को तुम सुद्ध बतावौ। चेतन को धरि दोष लगावौ ॥
बिन चेतन सुध कैसे भइया। चेतन को तुम दोष लगइया ॥
चेतन देही तुम्हरी कीन्हा। कै पाहन तुम को रचि लीन्हा ॥

---

* निकृष्ट।

नादहि बिंद देह को साजा। पूजौ पाहन को केहि काजा॥
पाहन मूरति येही बनाई। गढ़ी सिलावट छाती पाँई॥
ता कै मंदिर ठाकुर थापी। चेतन ठाकुर मंदिर आपी॥
चेतन मंदिर बोलै माहीं। तुम्हरी आँखिन सूझै नाहीं॥
पाहन प्रेम जाइ सिर फोड़ै। मंदिर बोलै आतम तोड़ै॥
ऊपर न्हाइ अचार जो कीन्हा। अंदर मन मैला नहिं चीन्हा॥
न्हाइ जो धोइ रसोई कीन्हा। सुचि भोजन ठाकुर को दीन्हा॥
सुचि ठाकुर को भोग लगाई। माखी ता पर बैठी आई॥
माखी का कछु कीन्ह बिचारा। उठि बैठै भिष्टा की लारा॥
यही अचार करौ तुम भाई। माखी की चौकस नहिं लाई॥
दस औतार भये सब भाई। ता में तीन प्रतच्छ दिखाई॥
मच्छ कच्छ कहि और बराही। ये प्रतच्छ पूजौ नहिं भाई॥
मुख से दस को भाखि सुनावौ। छाँड़ि प्रतच्छ तुम जड़ को ध्यावौ॥
यह अपने मन बूझौ ज्ञाना। सत अरु असत करौ पहिचाना॥
या में भाव अभाव न जानी। सत असत्त लखि पद पहिचानी॥
या में निंदा भाव न भाखी। सब संतन की देखौ साखी॥
निंदा आहि नरक की खाना। मिथ्या संत न करैं बखाना॥
प्रियेलाल कछु बूझि बिचारी। ये तुम ने कछु समझ सिहारी॥
पाँच तत्त बैराट बनाई। ता में सब ब्रह्मंड समाई॥
पाँचो तत्त सरीर बिधाना। सोइ बैराट कहौ भगवाना॥
पिंड ब्रह्मंड एक करि राखौ। पुनि निंदा करि कस कस भाखौ॥
जो ब्रह्मंड में बिधी बताई। सो सब भाखौ पिंड के माईं॥
रज गुन तम गुन सत गुन भाई। ये सब ब्रह्मा बिष्नु कहाई॥
गो इंद्री गोपिन कर नामा। मन को मोहन सभी बखाना॥
राधे रकार नाम समझाऊँ। पिंड पाँच पंडौ बतलाऊँ॥
मन द्वै दृष्टि लीन यहि माईं। सोइ दो दृष्टी भाखि सुनाई॥

अरजुन बिधी बात समझाई । इंद्री अड़ी जो बन मन माईं ॥
भौ में सैन मन करै बुझाऊँ । ता को भीमसेन बतलाऊँ ॥
भौ में असल नकल होइ गइया । ता कर नाम नकुल हम कहिया ॥
सोदेह दीसै सनमुख भाई । नाद बिंद बिधि देह बनाई ॥
बिंद से बना बिंद्राबन होई । जग के माहीं रहा समोई ॥
बसै देव इंद्री के माईं । मन बस देवन में रहा जाई ॥
बिषय भोग रस देव किये सारी । मन देवकी ये भौ रस डारी ॥
जो सोधै मन घर को जाई । मनहिं जसोधा नाम कहाई ॥
मन डूबा भय बल के माईं । सो बलभद्र नाम है भाई ॥
उदै कर्म मन दुख सुख माई । कर्म उदै मन मित्र कहाई ॥
जमुना सुरति करै असनाना । सूरति चढ़ै फोड़ि असमाना ॥
जहँ जमुना जम ना अस्थाना । इंद्री गोरस कालहि जाना ॥
गोरस गोकुल जानौ भाई । येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाई ॥
ये नर देह मानुष के माईं । देव ऋषी मुनि ताहि समाई ॥
अरसठ तीरथ सकल पसारा । नद्दी गंडा झारि अठारा ॥
सातौ दीप पृथी नौखंडा । तुम कहो मनुष देह येहि पिंडा ॥
कहँ लगि कहौं अनेक पसारा । यह ब्रह्मंड पिंड माहिं सँवारा ॥
संत सुरति फोड़ै असमाना । पिंड में देखा सकल बिधाना ॥
निरखा अनुभौ मुख से भाखा । पिंड में राम कृष्न की साखा ॥
पिंड में राम कृष्न लखवाया । वा अहीर पर नकल दिखाया ॥
नकल की नकल सिलावट कीन्हा । ऐसी भूल भटक तुम लीन्हा ॥
पाहन को थापौ भगवाना । येहि बिधि बुधि मति ज्ञान हिराना ॥
येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाना । ता को तुम छुतिया करि जाना ॥
संतन भाखा दृष्टि हिये आँखी । ता की बिधि भिनि भिनि करि भाखी ॥
संतन की तुम साखि मिटाओ । अँधरी आँखि भाखि समझावो ॥
अपना पिंड न खोजो भाई । तुम पत्थर में ढूढ़ौ जाई ॥

खोज राह तुम दूर बहाई । सूरति पाहन माहिँ लगाई ॥
सूरति पाहन कीन्ही आसा । आसा अंत ताहि में बासा ॥
सब मिलि टेरि टेरि गोहरावै । ढूढ़ै मिलै पिंड में पावै ॥
बेद पुरान माहिँ बतलावै । बेद कहै तुहि तुहि समझावै ॥
भागवत कहि तुहि तुहि बतलावै। सास्तर कहै तुही तुहि गावै ॥
संत कहै तुहि तुही सुनावै। सब कहि तुही तुही करि गावै ॥
ते बुधिहीन सूझ नहिँ पावै। ता से पाहन में मन लावै ॥
है परतच्छ ब्रह्म तुहि आगे। जा को छुतिया करि करि भागै ॥
भागवत सबद ब्रह्म तुहि बोलै। बिना संत को पट्टी खोलै ॥

॥ दोहा ॥

बिन सतसँग पावै नहीं, पढ़ि पढ़ि भर्म भुलान ।
बेद भागवत पढ़न में, नहिँ पावै सत सार ॥

॥ सोरठा ॥

संस्कृत बेदन माइँ, खेद खेद खानै चलै ।
संत भेद नहिँ पाइ, इन सब से न्यारी कहैं ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि भाखी संतन साखी। देखौ आँखी आप तुही ॥
तुहि बेद बतावै तुहि तुहि गावै। तुहि पुरान तुहि तुही कही ॥
तुहि तुहि सब गाई तुही सुनाई। तुहि तुहि भौ में भर्मि रही ॥
तुहि आपा कीन्हा संत न चीन्हा। मान मनो सब दूर नहीं ॥
सूरति न्रित जानी फोड़ि निसानी। ले ले निसानी अगम लई ॥
ये अगम ठिकानै सतगुरु जानै। चौथे पद गति गवन गई ॥
छूटै जम काला भौ जंजाला। लखि दयाल घर गवन भई ॥
पाहन अरु पानी झूठ बखानी। जानी जिन जिन मान लई ॥
चेतन घट माहीं घट घट वाही। बूझ सुनाई समझ सही ॥
सब झूठ अचारा घट घट प्यारा। देखा न्यारा नेक नहीं ॥
जिन बूझा लेखा अगम अलेखा। सत ब्रत देखा दूार महीं ॥

कोइ बूझै ज्ञाना संत बखाना । अगम ठिकाना ठौर कही ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुन बात, संत सुमति गति ना लखी ।
रहे बेद के माहिं, बहे खोज आचार में ॥

॥ चौपाई ॥

सतसंगति तुम करौ बनाई । तब तुम्हरी बुधि में लखि आई ॥
बेद बिधी बुधि रही समाई । नित पुरान पढ़ि पार न पाई ॥
अब तुम को सत बिधि समझावा। अभी तुम्हरी सो दृष्टि न आवा ॥
सतसँग करौ दीन मन लाई । इष्ट जो पाहन दूर बहाई ॥
कृष्न राम दोउ जम की जारा। करि करि इष्ट जगत सब मारा ॥
जा को कहौ नंद कौ लाला। सो तो है सबहिन कर काला ॥
छल बल करि कौरौ संघारे। पंडौ भगत हिवारे गारे ॥
ता से कहौ कहा तुम पैहौ। खोजत खोजत जनम गँवैहौ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥ १ ॥
जो कृष्न पारस हुते, लोहा पंडौ मान ।
कृष्न दरस मुक्ती मिलत, गरे हिवार केहि काज ॥ २ ॥
पंडौ चारौ नर्क को, गये युधिष्ठिर धाम ।
मित्र प्रीति भगवान की, आई कौने काम ॥३॥
कृष्न मित्र ऊधो हुते, कही एकादस माहिं ।
कृष्न दरस मुक्ती हुती, तप कीन्ह क्यौं ताहि ॥४॥

॥ ग़ज़ल ॥

बिंद्राबन बिंद कीन्ह सोई साँचा ।
गुसाँईं गोपी के साथ बन बन नाचा ॥१॥
गो में मन बिंधा सोई गोबिंद भाई ।
मनुवाँ गोपाल मूढ़ इंद्री माहीं ॥२॥

इंद्री बसुदेव भेव सेवै मन को ।
नाद सोई नंद फंद जानै तन को ॥३॥
जिन ने तन सोधि लिया सोई जसोधा ।
पंडौ तत पाँच और झूठा सौदा ॥४॥

॥ चौपाई ॥

ऊधो कृष्न मुक्ति जो देता । कीन्हौ तप केहि कारन हेता ॥
कृष्न मुक्ति नहिं दीन्ही भाई । तब ऊधो तप कीन्हा जाई ॥
अपने मित्र जो कष्ट बतावा । तप करि कै मुक्ती धौं पावा ॥
ऊधो मुक्ति मिली धौं नाहीं । तप की बिधी पुरान बताई ॥
तन छूटे पुनि कहाँ समाने । ये पुरान नहिं साखि बखाने ॥
तन छूटे की खबर न पावै । नर्क स्वर्ग धौं कहाँ समावै ॥
तन छूटे की खबर बतावै । तौ मन को परतीती आवै ॥
मुए गये की खबर न पावा । तप और कष्ट करा सोइ गावा ॥
सत्त सत्त पावा की नाहीं । ऐसो बूझ सूझ नहिं पाई ॥
जीवत करतब सभो बतावै । मुए मिलन कोउ ना दरसावै ॥
मुए मिलन बिधि भाखै भाई । जीवत मिलन कोऊ न बताई ॥
जीवत मिलन बिधि भाखि सुनावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
जीवत इत से जाइ न भाई । मूए उत से आवत नाहीं ॥
ये पुरान कस कस ठहरावा । मुए गये की खबर न पावा ॥
नेक भेद उत का नहिं गावै । इत की करनी विधि बतलावै ॥
बिन देखे जग अँधरा माने । पूछै पंडित पढ़ै पुराने ॥
ये सब पोल पाल कर लेखा । मिथ्या पढ़ै कहै बिन देखा ॥
देखे की हम साखी मानैं । बिन देखी कहै झूठ समाने ॥
नर्क बिधी पंडौ जो गइया । नर्क भोग पुनि कस कस भइया ॥
आगे खबर न उनकी पाई । नर्क भोग पुनि कहाँ सिधाई ॥
नर्क भोग कहौ मुक्ति सिधावा । ये पुनि खबर कौन बतलावा ॥

ऊधो तप पैस्रम[१] बतलावा । तन छूटे की खबर न पावा ॥
तन छूटे जोइ होइ सो होई । या को भेद न पावा कोई ॥
बिना कष्ट[१] मुक्ति नहिँ भाई । यहि बिधि कृष्न ऊधो समझाई ॥
कर तप कष्ट इष्ट मेँ नाहीं । बिन तप मित्र मुक्ति नहिँ पाई ॥
तुम मुक्ती उन से कस पाई । मित्र मुक्ति दीन्ही नहिँ भाई ॥
उन को साफ़ कही गोहराई । ये पुरान में देखौ जाई ॥
ततवर मित्र कृष्न तेहि आगे । ऊधो रोइ जप तप को लागे ॥
पूजा इष्ट तुम्हारा लेखा । कृष्न मिले नहिँ सन्मुख देखा ॥
तुम मुक्ती कस कस करि लयऊ। ऊधो सन्मुख तप को गयऊ॥
सन्मुख कृष्न मुक्ति नहिँ पाई। तब ऊधो तप को मन लाई ॥
पाहन नकल इष्ट को मानौ । या से मुक्ति कौन बिधि जानौ॥
या की बिधि इक साखि सुनाई । प्रियेलाल चित से सुनु भाई ॥
जेहि बिधि करज साह से लावै। साह मिलै तबही कछु पावै ॥
ता की बिधी बताऊँ गाई । सुनियो नकल इष्ट की भाई ॥
दिवस एक साह चले गाँई[२] । अरज असामी कीन्ह बनाई ॥
तुम तौ चले गाँव को भाई। गरज हमारी कैान चलाई ॥
सेठ नकल अपनी लिख दीन्हा। कागद मूरत अपनी चीन्हा ॥
मूरत नकल से कारज कीजौ । चाहैा सोई नकल से लीजैा ॥
या से माँगि काज सब कीजैा। दाम माँगि या से पुनि लीजैा ॥
यहि कहि साह गाँव को गइया । तब भइ गरज नकल से कहिया॥
नकल साह कछु कारज कीजै । दीजै दाम काम मोरा छीजै ॥
पुनि वो नकल नहीं कछु दीन्हा । बहु बहु भाँति बिनय उन कीन्हा ॥
सेठ नकल मूरत नहिँ बोलै । पुनि पुनि माँगै गाँठि न खोलै॥
बहुत बहुत बिनती उन कीन्हा । मूरत गाँठि से कछू न दीन्हा ॥

---

(१) परिश्रम । मुं० दे० प्र० के पाठ मे पैस्रम की जगह "आश्रम" और दो कड़ी आगे "कष्ट" की जगह कृष्न अशुद्ध है । (२) गाँव को ।

नकल सेठ से हाथ न अइया । माँग माँग उन जनम गँवैया ॥
असल सेठ बिन दाम न पाया । नकल सेठ से हाथ न आया ॥
येहि बिधि असल कृष्न नहिं भाई । तुम ने ता की नकल बनाई ॥
नकल कृष्न से कछु नहिं पाई । काहे बिरथा जनम गँवाई ॥
येहि बिधि बूझि बूझि मन लीजै। समझ बिचार से कारज कीजै॥
नकल भाव तेहिं हाथ न आवा । ये बिधि बूझौ नकल प्रभावा ॥
सादृष्ट कृष्न ऊधो सँग रहिया । मुक्ति न पाई तप को गइया॥
असल कृष्न की ये बिधि कहिये । मुक्ति नकल से कस कस पइये॥
एकादस में कही बखाना । देखौ अपना जाइ पुराना ॥
असल कृष्न की बिधी बताई । नकल कृष्न की कौन चलाई ॥
जिन्ह गोपिन सँग कीन्ह बिलासा । समझ भाव मन बूझौ आसा[१]॥
बिषय उपाव हाथ से कीन्हा । दौड़ दौड़ पाँवन से लीन्हा ॥
छूटि देहि जगन्नाथ कहाये । कर्म भोग पाँव हाथ कटाये ॥
अपना भोग आपने पाया । तुम ने ब्रह्म कौन बिधि गाया ॥
असल कृष्न बिधि ऐसी जोई । नकल कृष्न की कैसी होई ॥
असल कृष्न जो मुक्ति न पाई । कर्म भोगि कै पैर कटाई ॥
कहै पुरान कृष्न गये धामा । जगन्नाथ भये कहौ प्रमाना ॥
कभि कभि गये धाम बतलावै । भागवत कृष्न धाम समझावै॥
वोही कृष्न जगन्नाथ बतावै । वोहि जगन्नाथ कृष्न करि गावै ॥
धाम गये की संध न पाई । यहाँ रहे की झूठ जनाई ॥
कैान प्रमान दोऊ में कीजै । सत्त असत्त कैान को लीजै ॥
या में सत्त कैान को बूझा । कहि समझावै तुलसि अबूझा ॥
नानक संत साखि बतलाई । कृष्न काल तिन भाखि सुनाई॥

(१) आशय = मतलब ।

॥ सवइया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है १
कालै खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, सो कालै खाइ गयौ जुगिया है २
इंद्र मुनिन्द्र सुरासुर गंधर्ब, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ३
ये तो भये सबही बस काल के, नानक संत अकाल सदा है ४

॥ चौपाई ॥

अब कबीर की साखि बताऊँ। कहि कबीर बिधि भाखि सुनाऊँ॥
दस औतार कबीरा गावा। ता की सब्द बिधी समझावा॥
वोहू कही काल बस गइया। दस औतार काल के कहिया॥

॥ शब्द ॥

आवै जाइ सो माया साधो, आवै जाइ सो माया।
है प्रतिपाल काल नहिं वा को, ना कहुँ गया न आया॥१॥
क्या मकसूद मच्छ कछ होता, संखासुर न सँघारा।
है दयाल द्रोह नहिं वा के, कहो कैान को मारा॥२॥
वे करता न बराह कहाये, धरती धरा न भारा।
ये सब काम साहिब के नाहीं, झूठ कहै संसारा॥३॥
वे करता नहिं भये कलंकी, नहीं कलिंजै मारा।
है दयाल सबहिन को साहिब, कहो कैान को मारा॥४॥
खंभ फाड़ि के बाहर होई, तेहि पतीजै सब कोई।
हरनाकुस नख उदर बिदारा, सो करता नहिं होई॥५॥
परसराम छत्री नहिं मारे, ये छल माया कीन्हा।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं पाये, जीव अमिथ्या दीन्हा॥६॥
सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिं बंधा।
वै रघुनाथ एक करि सुमरै, सो नर कहिये अंधा॥७॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया, मामा कंस न मारा।
वो दयाल सबहिन को साहिब, ना जीता ना हारा॥८॥

वै करता नहिं बोध कहाये, नहिं असुरन को मारा।
ज्ञान हीन करता नहिं होई, माया जग भरमाया ॥९॥
दस औतार ईसुरी माया, करता करि जिन्ह पूजा।
कहै कबीर सुनो हो साधो, उपजै खपै सो दूजा ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

सूर सब्द या बिधि कहि भाखी। उनहुँ कही कर्मन में साखी ॥

॥ शब्द ॥

कर्म गति टारैउ नाहिं टरै।
कहँ वै राहु कहाँ वै रबि ससि आनि सँजोग परै ॥टेक॥
गुरु बसिष्ठ पंडित मुनि ज्ञानी, रुचि रुचि लगन धरे।
तात मरन सिया हरन राम बन, बिपति में बिपति परे ॥१॥
पंडो के प्रभु बड़े सारथी, सोऊ बन निकरे।
दुरबासा से स्राप दिवायो, जदु कुल नास करे ॥२॥
रावन अस तैंतीस कोटि सब, एकछत राज करे।
मिरतक बाँधि कूप मैं डारे, भाभी सोच मरे ॥३॥
हरीचंद ऐसे भये राजा, डोम घर पानि भरे।
भारथ में भरुही के अंडा, घंटा टूटि परे ॥४॥
तीनि लोक करमन के बस में, जो जो जनम धरे।
दस औतार भाभी के बस में, सूर सुरति उबरे ॥५॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल बिख्यात, औतारी कर्मन कहे।
बहे भोग भौ माहिं, सब सब संत पुकारिया ॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्न औतारी आहीं। भोगे कर्म जाइ तन माहीं ॥
दस औतार निरंजन धरिया। सोऊ काल बस भौ मैं परिया॥
सोई निरंजन सोई निरंकारा। सोई काल धरे औतारा ॥
कर्म भाव तिन देही पाई। करै भोग भौ में भरमाई ॥

सारा जग बेदन भरमैया । औतारी साँचे गोहरैया ॥
दीनदयाल पुरुष है न्यारा । निरंकार काल के पारा ॥
निरंकार तक काल न जावै । वहँ की गम जोती नहिं पावै ॥
वो स्वामी है अगम अगाही । जहँ संतन ने सुरति समाई ॥
सुरति समाइ पुरुष को देखा । मिला पुरुष गम अगम अलेखा ॥
उनका लेखा बेद न पावै । नेति नेति चारो गोहरावै ॥
पंचम बेद सुषम नहिं जाना । षष्टम प्रसंग बेद कहै नाना ॥
चारि बेद पुनि गुप्त रहाई । ता मैं कागद लगै न स्याही ॥
तुम पुनि पुरुष भेद नहिं जाना । दसो बेद कहै नहिं पहिचाना ॥
दसो बेद से भेद नियारा । पुरुष भेद नहिं पावै पारा ॥
निरंकार जोती नहिं जाना । जहँ पहुँचे कोइ संत सुजाना ॥
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा । पाया अगम गम्म का चीन्हा ॥
पत्थर पानी दूर बहावा । तब घर अगम राह को पावा ॥
बेद कितेब पुरान उठाये । तब लखि सुरति अगम को धाये
नेम अचार चार नहिं माना । बोलै सब घट माहिं दिखाना ॥
बोल अबोल दोऊ के पारा । तहँवाँ तुलसी सुरति सँवारा ॥
छर अच्छर निःअच्छर पारा । देखा तुलसी निरखि निहारा ॥
अगम अगाध पुरुष दरबारा । तुलसी मिलै सुरति की लारा ॥
तन मैं देखि ब्रह्मंड पसारा । सो हिये हेर सुरति की लारा ॥
हिये मैं हेर फोड़ ब्रह्मंडा । हिये की लार सार नौखंडा ॥
अंतर हेर हिये के माईं । अंड फोड़ ब्रह्मंड दिखाई ॥
अंतर खोज कीन्ह हिये माईं । अंतर हिये माहिं दरसाई ॥
तन मैं तोड़ फोड़ हिये कीन्हा । अंतर सार हिये मैं चीन्हा ॥
अब या का बरतंत बताऊँ । बारहमासा बरनि सुनाऊँ ॥
द्वादस सन संबत का चीन्हा । मास मास सुनि गहैा यकीना ॥
हिये बिच सुरति समझि घर आई । बारहमासा बरनि सुनाई ॥

॥ दोहा ॥

हिये हेरा खुत सैल से, बारह मास बयान ।
जानि सूर कोइ संत जन, सुनै सो सज्जन कान ॥१॥
गुइयाँ गोह गुमान गुन, गिरि बानी बिच बास ।
फाँस कटी कटि सुरति की, कीन्हा अगम निवास ॥२॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास मिलाप, सुरति आप अपनी कही ।
लही जो तुलसीदास, बारह मास समझाय कै ॥

॥ बारहमासा ॥

(सवैया)

गुइयाँ री गुन गोह गिरा बिच मैं न रहौंगी ॥ टेक ॥
आली असाढ़ के मास बिलास, सो बास पिया बिन मोहिं न भावै ॥
गरजि अकास की भास रवी, छबि बादर की कही बात न जावै ॥
बिजली चमकै घन घोर घटा, घर घाट पिया कोउ नेक न पावै
गोह गुना गिरि बीच बसी, सो फँसी तुलसी चित चेत न आवै ॥

(कड़ी)

अगमन आयौ असाढ़हि मास। गरजत गगन रवी तजि भास ॥
भान घटा नभ नैन निहार। सूरति समझि चली नभ पार ॥
पिया पद साज गहौंगी ॥१॥

(सवैया)

सावन सोर करै बन मोर, सो दादुर प्यास पपीहा पुकारी ॥
ताल मही हरी भूमि भई, सो नहीं कोइ पंछिन चोंच चुकारी ॥
मैं मन में सुनि कै बिगसी, जस ताल रबी बिच कंज सुखारी ॥
जो तुलसी गुन माहिं रही, सो भई जम साथ के संग दुखारी ॥

(कड़ी)

सावन सरवर नीर अपार। बरसत गगन अखंडित धार ॥
गैल गली सब हरियल भूमि। नील सिखर चढ़ि सूरति घूमि ॥
चमक बिजली की सहौंगी ॥२॥

(सवैया)

भादौँ का भेद कहौँ जो निखेद, सो खेद करम्म को काढ़ि निकारी ॥
सूरति सूर भई मति पूर, सो नागिनि नारि डसी जस कारी ॥
चेत चली जो अकास अली, सो गली गुन गोह से होत नियारी ॥
जो तुलसी सुख नारि भई, सो गई ले लार लगन्न के पारी ॥

(कड़ी)

भादौँ भर्म भेद सब छूटि । काया कर्म कलस गये फूटि ॥
नागिनि बिरह मूल डसि खाई। येहि बिधि सूरति गगन समाई ॥
लगन सँग लार लरौँगी ॥३॥

(सवैया)

कूर कुवार कुमति को जार, सो बारि बनी सब खाक मिलाई ॥
कूकर काम भये जो निकाम, सो ठामहिँ ठाम जो भूमि भुलाई ॥
सुन सूरति भाल सो ताल भई, गइ मान सरोवर पैठि अन्हाई ॥
तुलसी सोइ संत के संग अड़ी, सो खड़ी सुन सब्द मेँ जाइ समाई

(कड़ी)

कुमति कुवार जारि जस फूस । कूकर काम रहे सब भूँसि ॥
मानसरोवर सरस अन्हाई । सूरति समझ चली रस पाई ॥
सब्द सुनि सार भरौँगी ॥४॥

(सवैया)

कातिक किरनि भई ससि सूर, सो दूर भये दल बादल सारे ॥
भूमि मेँ थीर भये जल नीर, सो नार नदी सुत सिंध सम्हारे
सिंधहिँ बुंद मिले चढ़ चाल, सो काल कला जम दूर निकारे ॥
तुलसी जिन चाँप धनू पै धरी, सो करी सम सूरति संत पुकारे ॥

(कड़ी)

कातिक किरनि भास भये सूर । सलितहिँ समुंद मिलै जस मूर ॥
बुंद सिंध बिन फिरत बेहाल। मिलि गया सब्द कटे जम जाल ॥
सुरति घर चाप चहौँगी ॥५॥

(सवैया)

अगहन मास अनंद अली, सो चली पिया पास पलंग बिछाई ॥
पायौ पलक्क के पार पती, सो सती सत सूरति सार लखाई ॥
सेज मिलाप भये पति आप, सो जीवत जनम सुफल्ल कहाई ॥
तुलसी मन में सुख चैन भई, सो गई बर आदि सो साध समाई ॥

(कड़ी)

अगहन अली पिया पलँग बिछाव। जीवत जनम मिलै अस दाँव॥
पिया की सेज सुख सज सुति सार। नित प्रति केल करौं पति लार॥
अली बर आदि बरौंगी ॥६॥

(सवैया)

पूस पुरुष की होस भई, सो गई सतलोक में सोक सिहारी ॥
प्यारी सखी गुरु गैल गई, सो कही पद प्यारे की चोज चिन्हारी
छाइ रही सुन मंदिर में, घर घाट पिया लखि बाट बिचारी ॥
पिय रस रीत की जीत भई, सो कही तुलसी जिन नैन निहारी ॥

(कड़ी)

पूस परम पद पुरुष निवास। सुति सत लोक करै नित बास
सिष गुरु गवन मिले मत पाइ। प्यारी पुरुष रही घर छाइ ॥
सखी सुख जानि कहौंगी ॥७॥

(सवैया)

माह[1] मनोहर महल चढ़ी, सो खड़ी खिरकी तक तोल बखानी॥
जानि कही सोइ साध सुजान, सो मानी जिन्ही सोइ पास समानी
पानी दूध की छान करी, सो भरी लखि सूरति सब्द ठिकानो ॥
जीवतही मरि जात सही, सो कही तुलसी जिन जानि निसानी

(कड़ी)

माह महल भँझरी चढ़ि ताक। पिया की सेज सुख सत सत भाख ॥
कोइ कोइ सज्जन साध बिलास। पहुँचे अगम पिया घर बास॥
कही जिन जिवत मरौंगी ॥८॥

---

(१) माघ।

(सवैया)

फागुन फहम करौरी सखी, लख जात बह्यौ संसार असारा ॥
सूरति सार के पार लखै, सो थकै मन मारग मौज अपारा ॥
संत सिरोमनि सैल कही, सो गई गुरु मारग साँझ सबारा ॥
प्यारे पिया की पकड़ गही, सो जकड़ हिये जंजीर सी डारा ॥

(कड़ी)

फागुन फरक भयौ संसार। जिन जिन सुरति करी तन जार ॥
सतगुरु मूल मता मुख बैन। जब लखि लखी संत की सैन ॥
समझ सोइ पकड़ धरौंगी ॥९॥

(सवैया)

चैत चली सो सुनौ री अली, गई गैल गली सुन रीति निहारी॥
सेत सरासर भेद लखी, सो पकी त्रिधि बेनी के घाट बिचारी ॥
सारी सरोवरि ताल तकी, पकि प्यारी अन्हाइ के काज सँवारी ॥
जो तुलसी चढ़ि के जो चली, सो अली खिरकी बिधि आनि पुकारी ॥

(कड़ी)

चैत चली जिन चरन निहार। सो उतरी भौसागर पार ॥
आद अरु अंत पंथ घर बाट। सो पद परसि त्रिबेनी घाट ॥
चीन्ह खिरकी को चहौंगी ॥१०॥

(सवैया)

बैन बिधी बैसाख बिलास, सो पास पिया नित सैल सँवारे ॥
पार के सार बिहार करै, सो बिचार बिधी स्रुत तार निहारे ॥
प्रीतम मेल भया रस केल, सो केल किवार के पार पुकारे ॥
तुलसी तन मैं जिन जान लखे, सो भखे पिया पास के भास निकारे

(कड़ी)

करि बस बास बैसाख बिलास। छूटि गई तन मन की आस॥
प्रीतम प्यारो मिले मन खोल। रँग रस रीति सुने सब बोल॥
पिया सँग केल करौंगी ॥११॥

(सवैया)

जेठ की रीत करी मन जीत, सो प्रीत की बात की सैन सुनाई ॥
चेत चली तजि काल बली, सोइ जाल जली दुख दूरि नसाई ॥
जिमि धाइ जो धीर गँभीर नदी, सुत सार सँवारि जो सब्द समाई॥
ये मुख बैन कहै तुलसी, सो लसी सत द्वार जो सब्द को पाई ॥

(कड़ी)

जेठ जबर तन मन सुत रीत। सुरख सबज चली अगमन जीत॥
सेत जरद रँग स्याम भुलान। पाँचोइ तत्त करी नहिं कानि ॥
सखी सुनि पार फिरौंगी ॥१२॥

केवल ज्ञान निरबान निवास। ता से परे कहै तुलसीदास ॥
संत चरन धरि धारौ धूरि। अगम बरन बरनैा पद मूर ॥
निडर घर सुरति भरौंगी ॥१३॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास बयान, हिये हेरि कोइ पद लखै।
चखै चरन रस रीति, प्रीति पार पुर्षहिं मिलै ॥

॥ चैापाई ॥

जिन जिन हेर हिये बिच पावा। बारह मास समझि चित लावा ॥
समझि समझि कोइ बूझै साधू। सुरति सहर घर बरन अगाधू ॥
चित दे गुनै लखै सुनि काना। सत सतसंग करै परमाना ॥
बिन सतसंग साँच नहिं आवै। घर घर धोखे जन्म गँवावै ॥
जिन सतसंग रंग रस पाई। हिरदे तिमर कपाट खुलाई ॥
मन तन सुरति फोड़ असमाना। मद्ध हिये तन तिमर नसाना ॥
मोड़ी सुरति पोढ़[1] पद लारी। तेज भास लखि सुरति निहारी॥
हिये दृग नैन निरखि जस देखा। संत सैन कोइ करै बिबेका ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मे "फोड़" अशुद्ध है।

जिन जिन सुख दुख दूरि बहाये। कर्म काल कृत धोय नसाये ॥
तन बिच तोड़ा सुरति निसाना। सुन्न सब्द स्रुति गगन समाना ॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सब्द तन तोड़ि कै, मोड़ि गगन की गैल।
मूल बिलावल में कहूँ, बूझै सज्जन सैल ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी तन तोड़ फोड़ मोड़ पोढ़ पाई ॥ टेक ॥
देखौ नृत नैन सैन बूझौ सतगुरु के बैन।
छाँड़ौ दुख सुक्ख सैन संतन मत चाही ॥
अंदर में आदि खोज उतरै भौजाल बोझ।
मारौ जम काल फौज चौज चार माहीं ॥
देखौ हिये हेर खोज अंत कहूँ नाहीं ॥
सूरति नृत सैल खेल तोड़ौ असमान पेल।
सब्दा रस सुरति मेल मार दे चढ़ाई ॥
येहि बिधि चित चेत हेत मारौ मन सूर खेत।
छाँड़ौ सगरी अचेत हेत सेत माईं ॥
ता से मन चेत बूझि देखि दृष्टि जाई ॥ २ ॥
बाहर सब झूठ लूट ऐसा मन टूट फूट।
तन में मन आतम मोट भूला भल साईं ॥
ये तौ सब काल जाल राम कृष्न निरख हाल।
या के सँग चलौ न चाल छाँड़ि भेद भाई ॥
यासे सतसंग सार खोजु मौज माहीं ॥ ३ ॥
साँची कहै पूर अदूर बूझै कोइ संत सूर।
जानै अगमन अपूर मन तन रत राही ॥
का से कहौं बात चौज सूरति मन मार मौज।
छूटै दिल दरज दौज खोज आप माहीं ॥
रोज पार सार देख अंतर बिच पाही ॥ ४ ॥

बूझौ मन सीख लीक चाखौ रस अगम चीख।
छूटै भौ भर्म भीख पी के पार साईं ॥
देखौ अज अमर हेर कीजे ब्रह्मंड सैर।
लीजै पिउ पार हेर फेरि मेहर पाईं ॥
जा की गम घोर सोर कँवलन के माईं ॥ ५ ॥
सुन्न धुन्न सुन्न माहिँ सूरति से निरख जाइ।
हिये माहिँ हरष पाइ लै से लै पाईं ॥
बूझै कोइ सब्द बुंद पहुँचै पार अगम सिंध।
सूरति से लखौ संध फंद फाड़ जाईं ॥
सब्दा रस सुरति चीन्ह लीन पार पाईं ॥ ६ ॥
पाया सतगुरु दयाल मारा मन डंड काल।
पाया पद पदम हाल साल जाल नाहीं ॥
कीन्हा बहु प्यार यार लेखा अगमन अपार।
हर दम हिये लौ की लार कर्म को छुड़ाही।
ये तौ तत मत्त सार तेरे तिल राही ॥ ७ ॥
तुलसी दास पास आस सूरति निज चढ़ि अकास।
सोहत अगमन बिलास बुंद सिंध आईं ॥
ऐसो दिन दिवस रैन पौढ़ी पलँगा पै सैन।
चीन्हा घर आदि ऐन प्यारा गुरु पाईं ॥
न्यारा नित नित निहार प्यारे के माईं ॥ ८ ॥
याही बिधि कहत सूर सतगुरु की चरन धूर।
जाना सगरा जहूर जल जल ज्यों जाईं ॥
मो को प्रिये प्रिये लाग छिन छिन उठि निरख भाग।
मन से जग सुरति त्याग खग ज्यों उड़ जाईं ॥
छिन छिन नित करै सैल घृत ज्यों दधि माईं ॥ ९ ॥

तुलसी तन निरख सार सूरति पेखा बिहार।
देखा पद चटक चार दीदा दरसाई ॥
सुखमनि मन मन्न लार आगे सूरति सँवारि।
पाये पिया प्राग पार पूरा मद माईं ॥
तुलसी तुलसी निहार बोलै घट माईं ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल लखि बात, ये अनंत न्यारी कही।
सूझि बूझि हिये सोय, जब अरूप गति को लखै ॥

॥ चौपाई ॥

ये घर अगम भेद है भाई। सतसँग करै लखै तब जाई ॥
ये अगाध की बात अनूपा। बूझै संत मिलै कोइ भूपा ॥
अगम पंथ सतगुरु से पावै। सतगुरु मिलै तो राह बतावै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी से बूझौं इक बाता। ता की बिधी कहौ बिख्याता ॥
जग निस्तार बेद से होई। कै कोइ और राह मति सोई ॥
सब मिलि कहै बेद निस्तारा। बेद बिना नहिं उतरै पारा ॥
आदि बेद चारो जुग माहीं। जिव भो पार उतरि के जाई ॥
ऐसे सबी सबी मिलि गावैं। सतगुरु मिलैं भेद बतलावैं ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु मिलैं कहैं दरसाई। बिना संत नहिं बूझ बुझाई ॥
बेद भेद बिधि नाहीं जानै। बाम्हन पंडित एक न मानै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी दया भाव करि दीजै। दास जानि प्रभु किरपा कीजै ॥
हे दयाल या की बिधि भाखो। मो पर दया दृष्टि सोइ राखो ॥

मोहिं प्रभु दास भाव करि जानौ। किरपा करि सोइ करौ बखानौ ॥
मैं चेरा तुम चरन बिचारा। भाखौ आदि अंत निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब भाखूँ सुन आदि अपारी। बेद अंत भाखूँ सब झारी ॥
सत्त पुरुष इक रहै अकाया। अंस तासु सोइ निरगुन आया॥
गुन तीनोँ से सरगुन भइया। सोइ भगवान बैराटी कहिया॥
सोइ बैराट से ब्रह्मा भइया। तुम कहौ ता ने बेद बनइया॥
पुनि उन निरगुन बेद बुझाई। सोइ निरगुन ने नेति सुनाई ॥
सत्त पुरुष निरगुन से न्यारा। निरगुन काल न पावै पारा॥
पुरुष अंस से सब जिव आये। निरगुन ने सरगुन में नाये ॥
पाँच तत्त गुन तीनि समाई। भये बैराट कर्म बिधि जाई ॥
जा को जगत कहै भगवाना। कर्म भाव चर अचर समाना॥
रजोगुन ब्रह्मा ता से भइया। पहिले नाद बेद पुनि कहिया॥
पाँच तत्त बिन नाद न सोई। सो बिन नाद बेद कस होई ॥
पुरुष नाम निरगुन से न्यारा। सोई अंस जिव जुग जुग सारा॥
आदि पुरुष को जीव भुलाना। निरगुन काल माहिँ उरझाना॥
निरगुन नेति सरगुन बतलावै। यह बैराट बेद बिधि गावै ॥
सत्त पुरुष का भरम न पावै। निरगुन सरगुन को गोहरावै ॥
आदि पुरुष को संत बखाना। वो घर पहुँचै सुरति निसाना ॥
अब या का दृष्टांत बताऊँ। प्रियेलाल सुनियौ सत भाऊ ॥
प्रथमहिँ जीव पुरुष से आया। निरमल ज्ञान संग सम लाया॥
परथम जुग जिव निरमल होई। तारन उजला होत न सोई॥
जिव उजला जुग उजला भाई। जबहि बेद तारन कस गाई ॥
कहै बेद तारन की बाता। तरन कहा कर कीन्ह बिधाता॥
उजला जुग उजला जिव आवा। ताजा पुरुष पास अस गावा॥

तब तारन कस बेद बतावा । मैला जिव होइ तरन लखावा ॥
मैला तौ जब हता न भाई । जब यह कस निस्तार बताई ॥
उजला कपड़ा धोवन कहिया । सो धोबी के कस कस दैया ॥
मैले को धोबी समझावै । उजले को कस धोइ बतावै ॥
या की बिधी बतावौ भाई । कस उजला धोवन बिधि गाई ॥
उजला जीव बेद सँग साथा । मैला होत न पकरै हाथा ॥
मैला करन बेद समझावा । जब जोइ उजला ज्ञान हिरावा ॥
उजला कर निस्तारै बेदा । जीव जो आदि खानि बस खेदा ॥
कर्म काल सँग कीन्ह समाधा । अस अस बेदन करी उपाधा ॥
बेद तो लिखा आदि से भाई । निरमल कोमल कर्म लखाई ॥
जैसे बनिया करै दुकानै । बेचि खरीदि न टोटा जानै ॥
लेन न देन दुकान न जागा । टोटा करज ताहि कस लागा ॥
बेद नाद दोउ संगहि आवा । तुम्हरे सास्तर अस अस गावा ॥
बेदहि निरमल मैला कीन्हा । निरमल जब कछु लेन न देना ॥
पुरुष पास जिव निरमल आवा । जुग निरमल जिव निरमल गावा
धोवन बेद भाख कस भाई । जब उजला उजले की राही ॥
झूठा सौदा बेद लखावा । उजला मैला करन को चावा ॥
मैला रहै जगत भौ भावै । उजला रहै तो घर को जावै ॥
मैला रहै खानि में आवै । येहि कारन किया बेद उपावै ॥
तीरथ ब्रत और चारो धामा । जप तप इष्ट नेम बहु कामा ॥
ये सब पाप पुन्य बतलावा । येहि बिधि मैला बेद करावा ॥
कर्म धर्म सब जीव फँदाई । उजले घर की राह भुलाई ॥
घर की राह का धोका दीना । करै कर्म फिरि भयो मलीना ॥
आदि अंत घर सुधि नहिं पावै । कर्म कर्म बिधि बेद बतावै ॥
या की साखि बतावो भाई । जग जिव झारि खानि में जाई ॥
बेद निस्तार करन को आवा । उजला था तब नहिं समझावा ॥

उजले में नहिं समझा भाई । मैले को कस पार लगाई ॥
जस सहुकार चोर घर लीन्हा। घेरा ताहि कैद में कीन्हा ॥
चोर ज्ञान सँग छूटै नाहीं । साह ज्ञान सँग घर को जाई ॥
साह संग सुध जब ही पाता । तौ अपने घर को चलि जाता ॥
योँ अपना घर भूल न चीन्हा । ता से बेदन फाँसी दीन्हा ॥
साह संत से उतरै पारा । चोरइ बेद कैद में डारा ॥
चोर संग ने फाँसी डारा । फाँसि डारि कर कहै उबारा ॥
जुगन जुगन संगहि चलि आवा । देखौ सब जग खानि समावा ॥
कोइ उबरन की खबर न लावा । मरि मरि गये खबर नहिं पावा ॥
मूए मुक्ति सभी मिलि गावा । जीवत मुक्ति न कोउ बतलावा ॥
येहि बिधि बेद रीति है भाई । मुए मुक्ति की बेद बताई ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी । ता का मता कहनि सब भाखी ॥
जीवत जीव मुक्ति को पावै । तहु नहिं आदि अंत घर जावै ॥
घर की राह मुक्ति से न्यारी । सो कोइ जानै संत बिचारी ॥

॥ प्रियेलाल उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल कहै बूझा स्वामी । बेद बिधी सब झूठी जानी ॥
संध्या तरपन नेम अचारा । ये भी जाना झूठ पसारा ॥
इनसे मुक्ति बिधी है न्यारी । ऐसी मन में समझ सिहारी ॥
मुक्ति बिधी से पुरुष नियारा । सो पावै संतन की लारा ॥
ऐसी खूब खूब मन आई । तब पुनि गिरे चरन पर धाई ॥
स्वामी करौ मोर निरबारा । मैं अब लागेउ चरन तुम्हारा ॥
जो कछु कही सन्त मन भाई । जेहि बिधि तारा कूँची लाई ॥
ऐसी पोढ़ पोढ़ मन मानी । जो जो भाखा मनहिं समानी ॥
अब अस दया करौ हो स्वामी। मन रहै चरन माहिं लपटानी ॥
मोरे मन बिधि ऐसी आई । तुम बिन राह कहूँ नहिं पाई ॥

अस कहि माल डारि जिन दीन्हा। रात रहन मन में अस कीन्हा ॥
सुरतगुपाल सुनौ तुम भाई। तुम अपने घर जाउ बनाई ॥
हम तौ रहैं चरन के तीरा। जब मन आवै मौज सरीरा ॥
सुरतगुपाल गये घर अपने। ये तौ चरचा सुनी न सुपने ॥
येहि बिधि कहि अपने घर आये। प्रीयेलाल रहन मन भाये ॥
ज्ञान उठा बैराग समाना। देखा जग झूठा संधाना ॥
तिरिया पुत्र और धन धामा। तन छूटे कोइ आवै न कामा॥
तन पानी जस ओस समाना। फूटै बिनसै निल नित जाना ॥
येहि बिधि समझि परा मन लेखा। ये जग ज्यों सुपने सम देखा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल मन बिरह समानी। झरि झरि परै नैन से पानी ॥
उठा ज्ञान जस सिंध समाना। उठी तरँग पुनि लहर प्रमाना ॥
मुख से स्वाल बात नहिं आवै। बिरह लहर जस भुवँग सतावै ॥
भुवँग डसे जस मन लहराई। मन मैं जहर लहर सी आई ॥
जग देखा तन कछू न भावै। जला जंत जग बूड़ समावै ॥

॥ प्रियेलाल उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

अब स्वामी मोहिं सरनै लीजे। दया भाव मोहिं पर कीजै ॥
कपड़ा नीके फैंकि निकारा। तोड़ जनेऊ कंठी डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि तेहि ज्ञान भेद समझावा। ता के मन कछु धीर न आवा॥
पुनि तेहि बोध ज्ञान गति गाई। डारि जनेऊ गले मेलाई ॥
कपरा कंठी गहि पहिरावा। बूझा ज्ञान बोध मन आवा ॥
कपरा में बिधि सिद्ध न होई। संत की राह और बिधि सोई ॥

प्रियेलाल सुन चित दे काना। संत रीति रस करौं बखाना ॥
त्यागन संग्रह संत न जाना। ये मन कर्म भर्म भरमाना ॥
त्यागन करै सोई पुनि पावै। फिरि फिरि भोग भाव जग आवै॥
संग्रह बंधन जगत बँधाना। ये दोउ भर्म भेद जग माना ॥
संत मता दोऊ से न्यारा। संग्रह त्यागन झूठ पसरा ॥
संतन सुरति निरति ठहराई। मन थिर करि करि गगन चढ़ाई॥
सूरति सूर बीर भइ द्वारे। नभ भीतर चढ़ि गगन निहारे ॥
सुरति सुहागिन सूर सिधारी। नित नित गगन गिरा से न्यारी॥
ता का मैं अब सब्द सुनाऊँ। संत मते की राह लखाऊँ ॥

॥ होली १ ॥

सुरति सुहागिन सूर भई री। गगन गिरा नभ गवन गई री॥टेक॥
अधर हिये चढ़ि चसम चली री। पिय को परस घर आई अली री।
अरध उरध बिच सुरति समानी। निरखा सब्द निरत अलगानी १
महलन जब जब पिय को निहारी। प्रीत पुरातम प्रेम पियारी।
अगम अधर घर निरखि निसानी। पिय को परसि पद रहो लपटानी॥२॥
सुख सागर मिलि सिंध समावा। बुंदा समुँद साध घर आवा।
ज्यौं पपिहा पिउ प्यास पुकारी। स्वाँति बुंद पिउ पास मिलारी३
तुलसी तन मन सुरति लगाई। लै की लगन पिय पलँग बिछाई।
सेज सम्हारत हिये हुलसानी। ज्यौं जल मिलि जल धार समानी

॥ होली २ ॥

अजब अली एक गगन गली री। सुरति चमक चढ़ि चटक चलीरी॥टेक॥
बिधि बिधि पुहुप बाग बन देखा। कहा कहौं अली अगम अलेखा।
ता बिच कंज कँवल मधु राजै। बिटप बरत तरु बिहँग बिराजै १
सोभा भूमि अधिक छबि छाई। सुन री सखी लख सुरति समाई।
तहँ सत सरवर ताल अनूपा। हंस भवन तन आतम भूपा॥२॥
हिये के नैन दुरबीन लगाई। सिंध बुंद परमातम पाई।

खिरकी अजर अली चढ़ि देखा। जहँ इक साहिब रूप न रेखा ॥३
तुलसी सतगुरु अगम लखाई। लै की लगन लखि लोक सिधाई।
दुख सुख दोष सोक सब छूटा। कलसा कुंभ करम का फूटा ॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रियेलाल मत मूर, सूर सुरति अस बिधि भई।
गई गगन के पार, सार समझि संतन कही ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस सुरति लोक लखि देखा। संत रीति रस अगम अलेखा ॥
बिधि बैराग त्याग तन के री। ये सब खानि जगत भौ बेरी ॥
जोगी जोग करत भरमाने। स्वाँसा पवन चढ़ावन जाने ॥
इड़ा पिंगला सुखमनि माईं। पवन भवन में जाइ समाई ॥
गगन बिनसि सुनि स्वाँस नसाई। मनमत जोगी जुगति न पाई ॥
ज्ञानी गुनि मन आतम जानी। वा मन को पुनि ब्रह्म बखानी ॥
आदि अंत का भेद न जानै। संत मता कैसे पहिचानै ॥
संत मता कछु रीति नियारी। बूझै साधू समझ बिचारी ॥
अस सुनि इष्ट भाव औतारा। ये सब जानौ काल पसारा ॥
गढ़ि मूरति मंदिर में धारा। ये सब जानौ झूठ पसारा ॥
पानी पाहन में मन लावै। अगिनि तत्त जल तत्त समावै ॥
नकल कृष्न कहौ किन को तारा। अस असुरन जिव आतम मारा ॥
नकल कृष्न पाहन की आसा। पाहन मुक्ति काल की फाँसा ॥
या से जिव उबरै नहिं खाना। जुग जुग बंधन माहिं बँधाना ॥
कृष्न राम जो संत बताया। ये औतारी कोउ नहिं गाया ॥
गो इंद्री गोबिंद कहाई। मनहिं कृष्न गोपिन के माईं ॥
गुन ही तीनौं ग्वाल कहावै। बिंद बीच बिंद्राबन आवै ॥
गो गोपी बिच कान्ह कहाई। ये मन बस रस इंद्री माईं ॥
अब या की सुन साखि बताऊँ। संध सब्द बिच भाखि सुनाऊँ ॥

॥ धमार ॥

अहो बस कान्हा गो माहीं हो ॥ टेक ॥
गो की गोप करम कहि ऊधौ, गुन सँग गैल गुवाल ।
नित नित चालि चलै मधुबन को, इंद्री रस खानि बसाई ॥१॥
अच्छर रमत राह भइ राधे, नंद नाद सुत कान्ह ।
खेलन खेल मेल फरफंदी, बूँदी तन रुचिर सुहाई ॥२॥
सब बृज बनिता बिंद्राबन कीन्हा, जसुमति सोमति जान ।
जो जस बुन्द सिंध से आये, ता को कर खोज लगाई ॥३॥
अरी अरजुन भौ खानि भीम बस, नकुल भये जग आई ।
साधै देह देख आपन को, दो दृष्ट दो दृष्ट लखाई ॥४॥
सुरत सुधार पार तुहि कान्हा, सुनि बिधि बात बिचार ।
छूटै मान खान चारासी, सूरति सत द्वार लगाई ॥५॥
तुलसी तोल बोल मन भूला, मूल मरम नहिं जान ।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित बिधि भवन समाई६

॥ होली ॥

अहो आली होरी लख बौरी हो ॥टेक॥
सूरति रंग रँगौ मन केसरि, ले पच पाँच निकारि ।
सखियाँ पचीस पकरि पिचुकारी, मारौ मन को मुख मोरी॥१॥
भरम अबीर गुलाल गुनन को, करि सतसंग उड़ाई ।
ज्ञान को छान छरो भरि सूरति, सनमुख नैना नित जोरी ॥२॥
चोया चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
घर घर धूर कूर सब काढ़ौ, करमन कर कीचर धोरी ॥३॥
नर तन नगर बिंद ब्रिंद्राबन, तन मन चीन्ह बिहार ।
होरी अंग भंग कर जानौ, तुलसी सज साज मिलौ री ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन तनहिं बिचारि, गो गोपिन में रमि रहा ।
गही न सतगुरु बाँहि, थाह मिलत लखि ब्रह्म सम ॥

॥ चौपाई ॥

ये मन ज्ञान ध्यान बिधि ठानी। ता से अपनी आदि न जानी ॥
सतगुरु से कछु बूझ न पाई। बिष रस राह फिरै भौ माईं ॥
मन थिर होइ सुरति घर पावै। तन बिच गगन गैल चढ़ि आवै ॥
गुन गफलत को दूर बहावै। आँख खोल अपना घर पावै ॥
सब मैं ब्यापक ब्रह्म समाना। दरसै गगन फोड़ि असमाना ॥
संत कृपा सुत सैल लखावै। मन चढ़ि गगन ब्रह्म को पावै ॥
सुन्न सहर बिच ब्रह्म समाना। चढ़ि चढ़ि देखैं संत सुजाना ॥
ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान से भाखै। ये सब झूठे ब्राह्मन ताकै ॥
ब्रह्म ज्ञान मन देखि न पावै। मन सँग गुन गिरि गाँठि बँधावै ॥
सतसँग करै ब्रह्म जब जानै। बिन सतगुरु खुलि नहिं पहिचानै ॥
हिये दृग दरपन को नित माँजै। सुरमा सुरति नैन प्रति आँजै ॥
निरख परै दरसन की रेखा। नित निज नैन ब्रह्म को देखा ॥
गुन गफलत जिन दूर निकारा। आँख खोल कर ब्रह्म निहारा ॥
बिधि बसंत बिच गाइ सुनाऊँ। प्रियेलाल लख लखन लखाऊँ ॥

॥ बसंत ॥

मत भरमै रे घर मैं दीदार। टुक आँख खोल गफलत बिसार ॥टेक
ब्यापक सब मैं अखंड ब्रह्म। छाँड़ भटक दुनिया को भर्म।
जुग जुग भरमत करि बिचार। सुरति नैन नित सत सुधार ॥१॥
बन भुलान घर बिसरी बाट। ठग सँग कीन्हौ घर न घाट।
दिना चारि तन की चिन्हार। छूटत तन भुगतत होनहार ॥२॥
बूझ समझ घर खोज रोज। अंदर मैं मन मार मौज।
सँग सतगुरु करि ले निरधार। भटक भूल सब दे निकार ॥३॥
जिन जिन सरन सतगुरु लीन्ह। तिन तिन पायौ अगम चीन्ह ॥
अगम गली इक बिधि बिचार। तुहि तुहि तुलसी वार पार ॥४॥

॥ दोहा ॥

वार पार तुलसी लखौ, पकौ चरन के ठाहिं ।
चखौ अगम रस ब्रह्म को, थकौ थीर मन माहिं ॥

॥ चौपाई ॥

ये तन पाइ बीत नहिं चीन्हा । कलप कलप रहे काल अधीना ॥
जब से सुरति आइ जग माईं । बंधन काल भई भौ आई ॥
आई सुलछ लेन अस जानी । लाभ न भयौ बिच बिषम बिकानी ॥
इंद्री बस गुन गैरत माईं । फँसी फाँस कछु कही न जाईं ॥
सब मिलि घेर घार बस कीन्हा । घर चीन्हे बिन भई अधीना ॥
अब सुनु गाइ बसंत सुनाऊँ । ता मैं खुल साखी समझाऊँ ।

॥ बसंत ॥

आई आई सखी स्रुति सुलछ लेन । भौ सागर भई अति बेचैन ॥टेक
पाँच पचीस मिलि ठाटो है ठाट । रोक रहो सब घाट घाट ।
पाँच तत्त गुन तीन सैन । तन भीतर रहे दिवस रैन ॥१॥
आदि अंत गइ बिसरि बाद । सतसंग बिसरी संत साध ।
ज्ञान गलो बिधि भूली बैन । दुख सुख लागे करम देन ॥२॥
है कोइ सतगुरु बूझै सार । भौ सागर कोइ करत पार ।
पिय की पीर तन तलफै नैन । लखि पाऊँ पद सुख से चैन ॥३॥
आये बहुत भये दिवस काल । फँसि गइ रहो माया मोह जाल
रबि दुख पावत परत गहन । तुलसी रहनि बिन झूठी कहनि ॥४॥

॥ दोहा ॥

बहुत काल भये पिउ तजे, माया मोह भुलान ।
नर तन पाइ न पिउ लखा, कस घर परै पिछान ॥

॥ चौपाई ॥

ता से अब ये नर तन पाईं । अब तुम समझि चलौ घर माईं ॥
काया बन ब्रह्मंड समाना । बन बन फूल भास उरझाना ॥
ये औसर सुरति समझावा । मन मलीन तजि सुरति समावा ॥
ये दुरलभ तन देइ पुकारा । सो तन पाइ करो निरवारा ॥

॥ दोहा ॥

ये दुरलभ तन पाइ कै, किया न पिउ परसंग ।
मगन मिलन मन भीख भौ, ज्यौं मुठि मरकट रंग ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बसंत में सीख, सब सब संतन भाखिया ।
लखौ आदि बिख्यात, मन सूरति सम थिर करौ ॥

॥ बसंत ॥

आई आई कंथ बसंत लाग । काया बन फूले भँवर बाग ॥टेक
तन भीतर नैना निहार । सुरति निरति ले कर गुँजार ।
नौ पल्लव बेली भँवर जाग । ले सुगंध तन बिषय तयाग ॥१॥
अमर लोक इक अजर दूब । हद अनहद के पार खूब ।
चढ़ि कर देखौ सुरति साग । जो कोइ निरखै बड़े भाग ॥२॥
कोइ खेलै संत बसंत बूझ । जिन आदि अंत की राह सूझ ।
ये अदेख अंदर में फाग । जहँ बिबिधि तरँग रँग उठत राग ३
सत्त पुरुष पद पुहुप पास । जहँ भूमि भँवर मन कर निवास
तुलसीदास भौ भरम आग । कोइ जरत न जागै बड़ अभाग[1] ॥४

॥ चौपाई ॥

सत्त पुरुष पद पार सुनाऊँ । पदम पार घर आदि लखाऊँ ॥
मन जेहि बूझ समझ स्त्रुत संगा। ये तन बिनस जात छिन भंगा ॥
निरति सुरति सँग कहत बुझाई। भौ सागर बिच रही फँसाई ॥
मनमत मोट खोट सँग लागी। बन रस फूल भयौ अनुरागी ॥
देखि देखि तन अजर तमासा। सूरति मन मिल करै बिलासा ॥
आदि अंत घर सुरति बिसारी। मन सँग फिरि फिरि फहम बिचारी

॥ दोहा ॥

सुरति आदि घर छाँड़ि कै, फिरै मन गुन की लार ।
जगत जाल बिच फँसि रही, क्यौंकर उतरै पार ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "कोइ नर तन जोग बड़े भाग" है जो ठीक नहीं मालूम होता ।

॥ बसंत ॥

देखो देखो सखी इक अजर खेल। चहुँ दिस फूली अमर बेल ॥टेक॥
बन बन फूले बिबिधि भाँति। कहँ लग बरनौं पुहुप जाति।
भिनि भिनि भौंरा करत केल। बिधि अपने घर छाँड़ि मेल ॥१॥
आदि अंत सूरति बिसार। चार लाख चौरासी धार।
कहँ लगि बरनौं ब्रह्मंड सैल। पिंड ब्रह्मंड रच्यो भूमि भेल ॥२॥
बेद पुकारत नेति नेति। बेदांत बरनि ताहि ब्रह्म कहेत।
संत ताहि कहै काल गैल। वे दयाल गति भिनि अपेल ॥३॥
पिंड ब्रह्मंड रचना के पार। वे साहिब दोऊ से न्यार।
रूम रूम ब्रह्मंड खेल। इन सब से वे भिनि अकेल ॥४॥
संत सदा वहँ आवैं जाइँ। वे जानैं सब भेद पाइ।
तन तिल्ली तुलसी जो तेल। मथि काढ़े तब भया फुलेल ॥५॥

॥ सोरठा ॥

जस तिल्ली तन तेल, भा फुलेल फूलै मिलै।
तन भीतर अस खेल, खिलै कँवल मिलि पुरुष मैं ॥

॥ चौपाई ॥

ज्यों तिल्ली बिच तेल निकारा। मिलि गया फूल फुलेल पुकारा ॥
ऐसे संग पुरुष तन माईं। सतगुरु जानि भेद बतलाई ॥
प्रियेलाल अस बूझ बिचारा। संग्रह त्यागन झूठ पसारा ॥
सतगुरु सूरति संध लखावै। तजि सब बंध जीव घर आवै ॥
अस सुनि ज्ञान समझ बिच बैठा। दिल बिच प्रियेलाल के पैठा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, प्रियेलाल लखि बूझि बिधि।
सूरति सिंध समाइ, जब लखि पावै भेद यह ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल यह बूझ बिचारी। राति रहे तुलसी के लारी ॥
प्रात होत अस्थाने जाऊँ। अब तो तुलसी सरन समाऊँ ॥

रहे राति पुनि सतसँग कीन्हा। भाव भेद ता को हम दीन्हा ॥
कालिंद्री मग सुरति लखाई । जमुना धार को धमक चढ़ाई ॥
नौलख कँवल द्वार में लाई । गोकुल फाड़ि गगन को जाई ॥
स्याम सेत खिरकी बतलाई । छिन छिन सूरति सिखर लगाई
तिल के आगे पहाड़ छिपाना । मुकुर बीच खिरकी में जाना ॥
भोरै होत डंडवत कीन्हा । चरनन सीस प्रीति से दीन्हा ॥
पुनि अस्थान जान हम कहिया। सीस टेकि मारग को गहिया ॥
पहुँचे कासी नगर मँझारा । सुरत गुपाल चले तेहि द्वारा ॥

बरनन अभ्यास फूलदास रेवतीदास और गुनुवाँ

॥ चौपाई ॥

फूलदास रेवती पुनि आये । अरज भाव बिनती सोइ लाये ॥
हिरदे गुनुवाँ चरन को लीन्हा। दास भाव बिनती जो कीन्हा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस अरज बिचारी । स्वामी दृष्टि दास पर डारी ॥
दयासिंध इक अरज बखाना । सो साहिब सुनियै दै काना ॥
सूरति से नरियर को मोड़ा । कदली पत्र भाव लख फोड़ा ॥
चौका पार चँदरवा ताना । सूरति से फोड़ा असमाना ॥
अष्ट कँवल बिच पवन सुपारी । पहुँचे जाइ सुरति की लारी ॥
उदित मुदित दोउ दीप मँझारा। चढ़े जाइ खिरकी के पारा ॥
चौथा हाथ पान पर जाई । पान परवाना अगम चढ़ाई ॥
अठमेवा पूरुष को देखा । भाखौं कस कस अगम अलेखा
ता के रूप रेख नहिं काया । अगम अगाध अनाम अमाया॥
देखा कँवल नैन नभ न्यारा। धरती गगन और सकल पसारा

चर और अचर दीप नौखंडा। बिधि बिधि से देखा ब्रह्मंडा ॥
सुरति सैल नित करै अकासा। फूलदास बिधि अगम तमासा ॥
फूलदास पार को जाई। पुरुष सुरति से भेंटि समाई ॥
फूलदास गति सब बिधि गाई। सो तुलसी को आनि सुनाई ॥
तुलसि ग्रंथ बिधि सकल बखाना। संत सुजन जन सुनिहैं काना ॥

॥ रेवतीदास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि रेवतीदास चलि आये। सीस टेक चरनन पर धाये ॥
तिन पुनि भेद सकल दरसावा। बिधि बिधि भाखा दरस प्रभावा
स्वामी तुलसी अरज हमारी। कहूँ बिधी चित दीजे सारी ॥
स्वामी चौका दीन्ह बताई। सो बिधि चौका कीन्ह बनाई ॥
पुरइनि पात नभ समुँदर माहीँ। सुरति सैल ठहरी तेहि ठाईँ ॥
बैठी जाइ कँवल के माहीँ। ज्यौँ दुरबीन मुकर नभ राही ॥
कदली पत्र फोड़ि चलि आई। सेत चँदरवा फोड़ेउ जाई ॥
नरियर तोड़ चली असमाना। सेत दीप पुरइनि नियराना ॥
पँखड़ी अष्ट कँवल के माहीँ। चार कँवल अंदर दरसाई ॥
ता मेँ देखा सकल पसारा। बिधि ब्रह्मंड जो जगत सँवारा ॥
ता से परे सुरति भइ न्यारी। द्वै दल कँवल पैठि भई सारी ॥
जहँवाँ पुरुष रहै इक न्यारा। तहँवाँ सूरति सजी अपारा ॥
सुरति निरति निस दिन वहँ खेला। नित नित करै अगम की सैला ॥
मन और सुरति निरति नित धावै। मन थिर होइ सुरति पर आवै ॥
येहि बिधि देखा सकल पसारा। स्वामी सो बिधि आन सँवारा ॥
फूलदास और रेवती दासा। भाखा दोउ मिलि अगम तमासा ॥
निरख निरख दोउ लख लख जोई। तुलसी जस जस रस तस होई ॥
येहि बिधि दोऊ करै बिलासा। और सकल छूटी जग आसा ॥
चेला गुरू जगत बिधि नाता। छूटा बिधि रस एकै साथा ॥

चेला गुरू बिधी नहिं मानै । दोनौं मिलि रस एकै जानै ॥
छूटा पान सुपारी चौका । छूटा गगन सुन्न भया सूखा ॥
छूटा पिंड छूट ब्रह्मंडा । तीनि लोक छूटा सब अंडा ॥
सात दीप पृथ्वी नौखंडा । चौथा पद जहँ पुरुष अखंडा ॥
ता के परे सैल हम कीन्हा । ता को जानै संत यकीना ॥
यह चौका बिधि संतन केरी । तुलसी दृष्टि सुरति से फेरी ॥
और चौका सब झूठ पसारा । तुलसी चौका सत्त सँवारा ॥
नित तुलसी तुलसी गोहरावा। दीन बिधी बिधि सुरति लगावा॥
फूलदास रेवती रत दासा । बस्तु पाइ नित अगम निवासा ॥

॥ गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ सुत हिरदे का आवा । सीस टेक चरनन लौ लावा ॥
अंतर भाव अरु चाव बखानी । सब बिधि अपनी कही कहानी ॥
जस जस स्वामी बिधी बताई । तस तस सूरति गगन लगाई ॥
चक्र फोड़ि सूरति भई पारा । चाँद सुरज तजि गई अगारा ॥
सुखमनि छेकी सरवर आई । मानसरोवर पैठि अन्हाई ॥
अगम द्वार खिरकी पहिचानी । गंगा जमुना सरसुती जानी ॥
सूरति चली अगम रस माती । जहाँ प्रयाग कंज रस राती ॥
जहँ सतगुरु बैठे सत बासा। अगम पुरुष घर कीन्ह निवासा ॥
सूरति ठहरि द्वार के माहीँ । रस रस धीर धीर चढ़ि जाई ॥
चढ़ै उतरै पुनि पुनि चढ़ि जावै । मकरी धागा तार लगावै ॥
येहि बिधि रहै दिवस और राती। सूरति लगन और नहिं भाती ॥
येहि बिधि लोक नाम किया बासा। चौथा पद सतनाम निवासा ॥
जहँ से आई तहाँ समानी । यहि बिधि आदि अंत हम जानी॥
जनम मरन दुख सुख सब छूटा। कर्म बंध बिधि सगरी टूटा ॥
स्वामी तुम चरनन बलिहारी। अगम बस्तु तुम दया बिचारी॥

हिरदे प्रीति दृष्टि दरसाई । नैन चरन बिधि भाव बताई ॥
मैं कहा जानूँ जीव अबूझा । हिरदे तत मत से सब सूझा ॥
लखनऊ मन अब नेक न भावै। अब तौ तुलसी तुलसी चावै ॥
हिरदे की जाऊँ बलिहारी । इन बिधि सगरी मोर सँवारी ॥
पिता दरस बिधि ऐसी कहिया। चरन लाइ बिधि अगम लखइया॥
हिरदे प्रीति हम तुम को पावा। हिरदे रीति अगम दरसावा ॥
तब स्वामी के चरन सँवारे । स्वामी कृपा से उतरे पारे ॥
सीस टेकि पुनि अज्ञा लीन्हा। सीस डारि चरनन पर दीन्हा ॥
स्वामी मो को अज्ञा दीजै। अस कहि नीर नैन से छीजै ॥
अज्ञा स्वामी दीन्ह बनाई । तब गुनुवाँ मारग को जाई ॥
हिरदे हरष हिये मैं लावा । गुनुवाँ काज भयौ बिधि भावा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

(बैरागी)

तुलसी हिरदे कहै बखानी । ये सत रीति संत कोउ जानी ॥
भेष भेष बिधि देखि निहारी। ये गति मति बिधि सब से न्यारी॥
बैरागी बिधि इष्ट भुलाने । काल जाल में जाइ समाने ॥

(जोगी)

जोगी जोग ध्यान रस भूला । स्वाँसा संघ कीन्ह अनुकूला ॥
मुद्रा पाँच तुरी मत झूला । ये पुनि ज्ञान जोग मत फूला ॥
इंद्री बस रस कीन्हैा धूला । वोऊ न पायौ सार रस मूला ॥

(परमहंस)

परमहंस पुनि ब्रह्म बखानै । ब्रह्म बिधो बिधि वोहू जानै ॥
जड़ तन मन में गाँठि बँधाना। ता को ब्रह्म कहै हैवाना ॥
कहै सब में सब हमीं समाना । आदि अंत नहिं चीन्ह ठिकाना ॥

बेद बिधी बेदांत बतावै । वा के आगे भेद न पावै ॥
मुख से कहै नाद को गावै । भूला बेद ताहि ठहरावै ॥
बेदउ नेत नेत कर गावै । पुनि ता की वह साखि बतावै ॥
संत मता उनहूँ नहिं पाया । ब्रह्म ब्रह्म बन जनम नसाया ॥

(सन्यासी)

सन्यासी कहै हम भगवाना । आदि अंत उनहूँ नहिं जाना ॥
कहै भगवान आप को जानै । आतम कहि कहि सुद्ध बखानै ॥
चेतन जड़ सँग गाँठि न जानी । सास्तर राह बिधी रस ठानी ॥
बेदउ सास्तर नेत पुकारा । इतनी बूझ न पाय गँवारा ॥
सास्तर बेद नाद से भइया । नाद अगम घर कहँ से अइया ॥
नाद की आदि सुन्न से न्यारी । सुन्नी सुन्न सुन्न के पारी ॥
वोही घर से नाद पुनि आया । ता पीछे ब्रह्मंड बनाया ॥
पाँच तत्त मन माया भाई । ता से रचि बैराट बनाई ॥
जड़ चेतन की गाँठि बँधानी । ता कौ नाम आतमा जानी ॥
गाँठि बँधे पर भूल समानी । आतम बुध मन बेद बखानी ॥
आतम बँधा गाँठि के माईं । पुनि ता ने यह बेद बनाई ॥
सोई बेद आतम बिधि गाई । बेद की आदि सुनौ तुम भाई ॥
आतम कर्म भाव गठियाना । बंधन आतम बेद बखाना ॥
ता की साखि बतावौ भाई । बेदउ नेति नेति करि गाई ॥
जब नहिं बेद बेद का करता । जब नहिं रूप रेख कछु धरता ॥
तत्त पाँच नहिं थे बैराटा । नहिं जो जब ब्रह्मंड न ठाटा ॥
निरंकार जोती नहिं भाई । परमातम आतम जब नाहीं ॥
सोहँग नहिं जब ओअंकारा । तबकी कहूँ बिधी बिधि सारा ॥
नहिं काया नहिं बोलनहारा । तब की कहूँ बिधि भाखि सँवारा
बेद नाद दोउ पीछे भइया । को पहिले जो बरनि सुनइया ॥
पहिले नाद कहाँ से आया । सुन्न न गगन हती नहिं माया ॥

वा घर की कोउ आदि बतावै। जब जोइ संत मते को पावै ॥
हिरदे की बिधि कोइ नहिं जाना। संत मिलैं तो करैं बखाना ॥
सन्यासी भूले अस भाई। पंडित बाम्हन कहा बताई ॥

(पंडित)

पंडित कहै हमीं पुनि स्याना। सास्तर पढ़ि पढ़ि बेद पुराना ॥
पढ़ि पढ़ि पढ़ने माहिं भुलाने। जा को पढ़े सोई नहिं जाने ॥
जा की ये सब साखि बतावै। वोऊ नेत नेत गोहरावै ॥
निरंकार को नेत बखाना। निरंकार के परे न जाना ॥
तीरथ बरत नेम के माईं। करम धरम पुनि जज्ञ बताई ॥
धरि धरि देहीं भोग करावा। भूले आप अरु जगहि भुलावा ॥
बाम्हन को बिद्या मन माना। ऐसे संत मता नहिं जाना ॥

(ब्रह्मचारी)

ब्रह्मचारी ब्रह्मचार बखानै। ब्रह्म पार का भेद न जानै ॥
वार पार का भेद बिधाना। यह बिधि वोहू राह भुलाना ॥

(डंडी)

डंडी डंड कमंडल लीन्हा। लकरी बाँधि जनेऊ कीन्हा ॥
बाम्हन हाथ प्रसादी पावै। और जाति का छुवा न खावै ॥
द्वैत बुद्धि बसी हिये माहीं। मुख से आतम एक बताई ॥
ऐसी बुद्धि द्वैत मन राती। पूजैं बाम्हन की पुनि जाती ॥
अंध अंध दोउ संग मिलाना। संत मते की राह न जाना ॥

(वैष्नव)

वैष्नव बिष्नु धर्म को पालै। पूजा इष्ट भाव बिधि चालै ॥
बिष्नू तीन गुनन के माईं। रजगुन तमगुन सतगुन भाई ॥
रज ब्रह्मा तम संकर भाई। सतगुन बिष्नू तिन के माईं ॥
तन बैराट से उपजे भाई। सो पुनि ब्रह्मा बिष्नु कहाई ॥

सतोगुन बिष्नू तिन के माईं। तेहि को छाँड़ि पाहन मन लाईं॥
चार धाम तीरथ को धावै। बिष्नू पास खोज नहिं पावै॥
पूजै जग खैराती खावै। करम भोगि फिर भव मैं आवै॥
संत मते की राह न जानैं। बिष्नू पूजि जगत सब मानै॥

(मुसलमान)

मुसलमान खुद खुदा बतावै। सब में खुदा खुदा करि गावै॥
खुदा एक कहै सब में भाई। बकरी मुरगी मारै खाई॥
येहि बिधि भूल है उनके माईं। खुद खुदाइ की राह न पाई॥
मुसलमान है हक्क इमाना। जिन कोइ भिस्त राह पहिचाना॥

(स्रावग)

स्रावग आदि धर्म बतलावा। आदि राह का मरम न पावा॥
ऋषब देव चौबीसौ भइया। ता को कहै मुक्ति को गइया॥
मुक्ति मुक्ति सब भाखि सुनावै। वोहू मुए मुक्ति गोहरावै॥
जीवत देखी कहै न आता। चौथा काल कहै बिख्याता॥

(कबीर पंथी)

पंथ कबीर का भाखि सुनाई। पंथ राह उनहूँ नहिं पाई॥
सत कबीर मुख भाखेउ बैना। उन सब कही अगम की सैना॥
पंथी सैन लखी नहिं भाई। पंथ राह की जाति चलाई॥

(नानक पंथी)

नानक संत जो भये अगाधू। चौथा पद पाये उन आदू॥
उन भाखा कढ़िया परसादी। इन कढ़ाव हलुवे की बाँधी॥
पंथ कहा सो मरम न जाना। पंथ राह उन अगम बखाना॥
ता की बूझ समझ नहिं आई। पंथी जाति जाति भइ भाई॥

(दादू पंथी)

दादू संत जो भये अनामी। वे कहि गये अगम की बानी॥
उन भाखा कोइ पंथ नियारा। अगम निगम का कुंजी तारा॥

ऐसे संत जो भये अनामी । उन की बिधि पंथी नहिं जानी ॥
पंथ चलाइ बढ़ाई साखा । सास्तर बेद मते में राखा ॥
पंथी मत उनका नहिं जानी । राम रमा सब कहत बखानी ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । सब बिधि पंथ धरम में रहिया ॥
कोइ पंथी कोइ धर्म चलावा । संत मते को कोइ नहिं पावा ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । धर्म पंथ ने करी अनीती ॥
संतन पंथ सुरति का गाया । पंथ सुरति की राह बताया ॥
सूरति मिलै सब्द में जाई । ये सब संतन पंथ बताई ॥
सुरति पंथ नहिं खोजा भाई । जाति पंथ का बोझ उठाई ॥
जो कोइ सुरति पंथ बतलावै । उन के मन में एक न आवै ॥
जो कोइ कहै सत्त की बाता । ता से करैं बहुत उतपाता ॥
निंदक ता को करि ठहरावैं । नास्तिक मता ताहि बतलावैं ॥
संत मते की रीति न जानैं । कहै जा की पुनि एक न मानैं ॥
कैसे होय जीव निरवारा । या में बढ़ि गया जाल पसारा ॥
पंथा पंथी टेक बँधानी । अपने अपने मति की ठानी ॥
संत पंथ जो राह बखानी । सो पंथी कोइ खबर न जानी ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । सत भाखै तेहि कहैं अनीती ॥
तब संतन ने बस्तु छिपाई । कहो जिव राह कहाँ से पाई ॥
साखी सब्दी ग्रंथ बनाई । गुप्त बस्तु नकल में गाई ॥
नकल बस्तु ग्रंथन में जानो । साखी सब्द नकल करि मानो ॥
या में खोजि खोज नहिं पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
नकल माहिं से असल दिखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
जा की खुली अगम की आँखी । साँचे सतगुरु ता को भाखी ॥
सुन हिरदे सतगुरु सहदानी । सतगुरु सत्त पुरुष को जानी ॥
चौथे पद में करैं निवासा । मिलै जाइ सतगुरु का दासा ॥

सतगुरु भेद अगम दरसावैं। तब चढ़ि जाइ अगमपुर पावै॥
हिरदे या को कोइ न जानै। जा से कहूँ सोई नहिं मानै॥

॥ हाल प्रियेलाल के अभ्यास का ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में प्रियेलाल जो आये। करि परनाम छुए तिन पाँये॥
प्रियेलाल अस बचन उचारा। स्वामी से कहिहौं कछु सारा॥
जो कछु कृपा सिंध अनुकूला। सो बिधि निरखि बताऊँ मूला॥
प्रियेलाल भाखे रस माते। कालिंद्री नित सुरति समाते॥
कालिंद्री पर नित नित जाईं। पुनि तेहि पार पार होइ राही॥
नौलख कँवल निरखि पुनि भागे। सहस कँवल के चलि गये आगे॥
सागर खिरकी समुँदर माईं। द्वार पैठि के सुरति चलाईं॥
देखा जाइ वहँ अजब तमासा। सुरति लीन कोइ पहुँचै दासा॥
अरध उरध मध माहीं बाटा। अंड फोड़ तहँ चढ़ि गये घाटा॥
सुरति नित नित बढ़ै बढ़ाईं। ठहरै नहीं बहुत ठहराईं॥
छिन छिन पद में पदम निहारी। कंज बास छूटै नहिं तारी॥
येहि बिधि दिवस रात लौ लागा। निरखा सुरति उठै अनुरागा॥
स्याम सेत भिनि न्यारी सैला। निकसा दूर अजर अस खेला॥
हम को स्वामी कीन्ह सनाथा। काल जाल से छूटेउ हाथा॥
मुख से कस कस बरनि सुनावा। तुम्हरी कृपा अगम दरसावा॥
मैं मति मंद बस्तु कहँ पाऊँ। मन मोटा जग गुरू कहाऊँ॥
मान मई बाम्हन की जाती। ऊँचा चारि बरन में पाँती॥
अंध घोर जग का जंजाला। नित नित मीच करै जम काला
तुम दयाल बिधि ऐसी कीन्हा। काल जाल तजि सारहि लीन्हा
तुम नहिं कृपा करत येहि भाँता। तौ करमन भौ माहिं समाता॥
यह बंधन बिधि भाव छुटावा। जहँ का जीव तहाँ पहुँचावा॥
यह जग भूल अंध जिव खाना। मन अपने का ज्ञान बखाना॥

दीन होइ संतन की लारा । तब पावै सत मत का द्वारा ॥
भेद बेद में नाहीं स्वामी । समभि परी यह अकथ कहानी ॥
ये नहिं बूझ दृष्टि में आवै । पूरा सतगुरु मिलै लखावै ॥
बिन सतगुरु जिव भरमै खाना। मूए पढ़ि पढ़ि ग्रंथ पुराना ॥
पढ़े सुने कोइ भेद न पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
बेद पुरान की झूठी राही । या में जीव काल उरझाही ॥
प्रीयेलाल हाथ दै मारा । झूठी बिधी अचार बिचारा ॥
स्वामी समझ माहिं अब आई । नित नित घोर कँवल के माईं ॥
देखा तब मोर मन पतियाई । बिन देखे परतीत न लाई ॥
निसा पूर मन साँची भाई । सुन्नी सुरति माहिं रही छाई ॥
बिजुली कड़क कड़क उँजियारा । बरसै पानी नैन निहारा ॥
सुरति निरति के मंझ मँझारा । धसि भीतर लखि अगम पसारा॥
धरती गगन चंद और सूरा । देखा सब में सब बसि पूरा ॥
सूरति रहै अगम रस पागी । नित नित रहै रंग अनुरागी ॥
अस स्वामी कोइ दृष्टि न आवै। अब कछु और और बिधि भावै ॥
जग पुरान बंधन के माहीं । सास्तर जाल काल सब राही ॥
संत राह कोइ चीन्हि न पावै । भरमै भर्म जीव भरमावै ॥
अस स्वामी ये कहूँ बिचारा । देखि न परै जीव निरवारा ॥
तुम चरनन बिन कछू न कोई । तुम्हरी कृपा होइ सो होई ॥
तुम ने प्रभू दया अस कीन्हा । औघट बहै घाट लखि दीन्हा ॥
अब स्वामी किरपा अस कीजै। अज्ञा भाव दरस मोहिं दीजै ॥
चरन छुए पुनि अरज बिचारी । अब चलने की बिधी निहारी ॥
उठे चरन गहि अज्ञा लीन्हा । कासी राह गवन तब कीन्हा ॥
सुरतगुपाल द्वार तब आये । भीतर आसन बैठे पाये ॥

॥ सोरठा ॥

कहै तुलसी सुन बात, हिरदे हरष सत मत कहूँ।
प्रियेलाल मुसक्यात, राह अगम गति पाइ कै॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कासी नगर भरा सब झारी। तेरह उतरे भौजल पारी ॥
तेरह गये अगमपुर धामा। तिन की काल न करिहै हाना ॥
काल जाल जम पास न आवै। जनम मरन बिधि एक न पावै ॥
अमर अजर घर जाइ समाना। जहाँ रहै सतनाम अनामा ॥
ये तेरह पर काल न आई। नित नित रहैं अजर घर छाई ॥
तेरह नाम बिधी बतलाऊँ। भाखि बिधी भिनि भिनि दरसाऊँ
करिया नाम रहै इक नारी। सैनी दूजी नाम बिचारी ॥
कर्मा धर्मा स्रावग जैनी। ये उतरे भौजल की सैनी ॥
अगम द्वार चलि गये अगाधा। सूरति गई अगमपुर साधा ॥
सेख तकी तकि भये नियारे। खुद खुदाइ रब लाह के द्वारे ॥
चूँ बेचूँ बेज्वाबो साईं। ता घर रूह राह तिन पाई ॥
पंडित तीनौं नाम बखानौं। दो तौ नैनू स्यामा जानौं ॥
तीजा माना पंडित होई। अगम राह घर पावै सोई ॥
गुनुवाँ हिरदे दोउ निज जाना। ये तौ गये अगमपुर धामा ॥
फूलदास और रेवतीदासा। इनका भया अगमपुर बासा ॥
प्रियेलाल इक जाति गुसाईं। सूरति सैल अगम घर जाई ॥
ये तेरह उतरे भौ पारा। काल जाल से होइ नियारा ॥
काल रहै उन से सिर नाई। मिलि गई सुरति अगमपुर धाई

॥ सोरठा ॥

तेरह तोल अपार, लखा सार सतगुरु मिले।
तुलसी कहै निहार, उतरि पार पद को मिले ॥

॥ छंद ॥

तेरह भये पारा अगम निहारा । सत मत सारा लार लये ॥१॥
पहुँचे वोहि धामा अगम अनामा । पार सार रस जाइ पिये ॥२॥
सतगुरु मत भावा अगम लखावा । पावा पद्म निवास किये॥३॥
चौथे पद माईं सतगुरु पाई । कंज माहिं रत भास भये ॥४॥
बेनी परियागा घट अनुरागा । पाइ न्हाइ अज अमर भये ॥५
सूरति सत सानी अगम समानी । जाइ निरानी राह लये ॥६॥
छूटा जंजाला जम और काला । साला हाला दूर बहे ॥७॥
अपना घर पाई सत्त समाई । सत्त लोक गइ सब्द मई ॥८॥
नहिँ आना जाना कर्म नसाना । तुलसी सतगुरु राह दई ॥९॥
यह बिधि अस पाई सो सब गाई । अगम सुनाई गाइ कही ॥१०
सतगुरु रस माते नित नित जाते । सो वे सतगुरु सुरति लई ॥११
सत सत मत भाखी देखा आँखी । राखन भाखी सत्त गही ॥१२॥
तुलसी तस गाई जस जस पाई । सुरति समाई राह लई ॥१३॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी अंदर अलेख, देख लेख जाई ॥टेक॥
तुलसी सतसंग जाइ, कासी प्रति होइ हाइ ।
बासी रस वार पाइ, बूझै सत साईं ॥
पारी पद अगम बास, हिरदे हित चरन खास ।
निरखा सगरा अकास, चेता तन माईं ॥
फूलदास आस पास, देखा हित लाई ॥१॥
पंडित बाम्हन तरन्न, नैनू स्यामा अमन्न ।
कीन्हा सतसंग आनि, दीन्हा ब्रत वाही ॥
कर्मा और धर्मा आइ, सैनी और करिया जाइ ।
पाया रस अगम खाइ, हरख हिये माहीं ॥
देखा रस अगम पाइ, दीदा रस राही ॥२॥

गुनुवाँ और रेवतीदास, सतगुरु रस पूर प्यास।
सूरति अगमन निवास, फोड़ पार जाई ॥
मियाँ एक तकी सेख, मन का बड़ पोढ़ देख।
सूरति सत सूर लेख, पेखा अपनाई ॥
पाया पद मूर सार, खुदा की खुदाई ॥३॥
आया इक प्रियेलाल, देखा मत बर्त चाल।
कीन्हा सतसंग हाल, जाति के गुसाईं ॥
देखा सब बेद असार, संतन मत बूझ सार।
सूझा मन हिये हार, तरके तक चाही ॥
दरदी दरदीन ताहि, सूरति लखवाई ॥४॥
तुलसी तेरह की लार, सब्दा रस पिया सार।
सूरति निरखा निहार, चौथा पद पाई ॥
सतगुरु पूरा दयाल, छूटा जम डंड काल।
तुलसी कीन्हा निहाल, आपदा मिटाई ॥
सिंध बुंद मिला मेल, जल मैं जल जाई ॥५॥
कासी मैं भया सोर, तेरह को लिया चोर।
तुलसी अस ज्ञान जोर, घोर नगर माहीं ॥
तुलसी इक साध रहत, तेरह कीन्हा अचेत।
वा से कोउ करो न हेत, देत जादू जाई ॥
कासी नर नारि हेत, पासी नहिं आई ॥६॥
संतन पर धरै दोस, पाप पुन्न खाइ खोस।
याही बिधि कुटुम पोस, कर्म रेख माहीं ॥
संतन को नीच जानि, अपनी बिधि ऊँच ठानि।
भूला अभिमान माहिं, चारि खानि जाई ॥
देखौ नर अंध अचेत, संत भाव नाहीं ॥७॥

॥ राग जैजैवंती ॥

एरी सुधि आदि तो निरत दरसाई, तुलसी समझाइ कै ॥ टेक ॥
फूलदास सुनियौ बानी । बिधि ग्रंथन भाखि बखानी ।
कहि हिरदे नाम अहीरा । ता की बिधि गाइ कै ॥१॥
तीन पंडित नाम बताये । ता की बिधि भिनि भिनि गाये ।
नैनू स्यामा माना नामा । कहिये सत भाव के ॥२॥
कर्मा धर्मा करिया नारी । सेख तकी और सैनो बिचारी ।
गुनुवाँ फूलदास बतलाऊँ । पाये सँग लाइ कै ॥३॥
रेवतीदास कबीरा पंथी । तिन बूझा सत मत संती ।
तुलसी सत सत लखवाई । सूरति नित पाइ कै ॥४॥
ये भये बारह रस माते । ये अगम पंथ नित जाते ।
इनकी सुधि बुधि पिउ पारा । रचे बारह धाइ कै ॥५॥
तुलसी बसो कासी सारी । निकरे बारह नर नारी ।
तिन की गति सत मत पाई । भये न्यारे जाइ कै ॥६॥
कहैं कासी जग मैं धामा । तेहि मद हम नाहिं पहिचाना ।
स्याना सुख सम्पत माहीं । तुलसी आबूझ कै ॥७॥
प्रियेलाल जाति गुसाईं । यह बिधि तेरह भये भाई ।
बिंद्राबन के रहे बासी । कासी सँग पाइ कै ॥८॥
तुलसी बिधि भाखि सुनाई । संतन रस राह बताई ।
पाई सतसँग से राही । सूरति सत पाइ कै ॥९॥
तुलसी पद राह लखाई । करिहै नर नारी जाई ।
सूरति सँग राह बखाना । तुलसी गोहराइ कै ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, नर नारी सबही सुनौ ।
सूरति संग सँवार, यह बिचार तुलसी कहा ॥१॥
सतसँग अगम अपार, जेहि दृग से सब लखि परै ।
सरै जीव कै काज, साजि सुरति सब लखि रही ॥२॥

बूझै सतसँग सार, बिना सार पारै नहीं।
कृपानिधि संत अपार, लखि अगार आगे कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सतसंगति बलिहारी। बरनौं सत सत बारम्बारी ॥
सतसँग सरन चरन गति पावै। अगम निगम गम निरखि लखावै ॥
बिन सतसंग चीन्हि नहिं पावै। सतसँग सत्त सुरति दरसावै ॥
सतसँग सतसँग अंतर भाई। कही सतसंग अनेकन राही ॥
सतसँग सतसँग सब गोहराया। सतसँग का कोइ अंत न पाया ॥
सतसँग कहि कहि सभी बताया। सतसँग आदि खोज नहिं पाया ॥
सतसँग महिमा अस अस गावा। करै घड़ी इक मुक्ति को पावा ॥
घड़ि इक मैं मुक्ती होइ जावै। सतसँग महिमा अस अस गावै ॥
बेद पुरान भागवत गीता। साखी सब्द जनम गयो बीता ॥
रात दिवस तेहि पढ़ि पढ़ि हारे। सुनत सुनत नहिं मुक्ति निहारे ॥
कथा पुरान अनेकन कीन्हा। सुपने मैं मुक्ती नहिं चीन्हा ॥
किरत्रिम मंदिर नित नित जावै। सतसँग महिमा तान सुनावै ॥
नृत करि करि कै तान अलापै। करम धरम मन चितवै पापै ॥
कोइ पुरान मान मद माते। कोइकोइ ज्ञान ध्यान रस राते ॥
कोइकोइ पढ़ि बिद्या मद माहीं। कोइ कोइ सुनै गुनै रित राही ॥
कोइ कोइ ब्रह्म ज्ञान बतलावै। कोइ कोइ तुच्छ जीव कहि गावै ॥
कोइ कोइ ब्रह्म आप को मानै। कोइ कोइ कर्मी जीव बखानै ॥
अंधा धुंध जगत ब्यौहारा। कोऊ न मुक्ति की राह बिचारा ॥
महिमा पलक माहिं गति गावै। खोजत मुक्ती जनम गँवावै ॥
पलक माहिं मुक्ती को पावै। सतसँग मुख महिमा अस गावै ॥
करते करते जनम सिराना। सतसँग सुपने मुक्ति न जाना ॥
तीरथ बरत नेम जग लागा। काहू मन धोखा नहिं भागा ॥
नीमखार बद्री परधाना। तीरथ सब प्रयाग असनाना ॥

चारौ धाम काम करि आवा । भरमि भरमि कहुँ मुक्ति न पावा ॥
जुग जुग रहै चहै सोइ कासी । बिन चीन्हे भये जमपुर बासी ॥
ये सब कर्म भाव भौखानी । ये सब काल राह रित मानी ॥
सतसँग काल जाल का कीन्हा । औ बस भाव बहै जस मीना ॥
सतसँग महिमा सन्त बतावै । पानी पाहन में मन लावै ॥
पूजा पाती करै अचारा । मैली बुधि सुध नाहिँ बिचारा ॥
पूजा मन मल नाहिँ छुड़ावा । फूल तोड़ जल पाहन नावा ॥
मैला मन पाहन की आसा । तीजे कर्म भाव कृत बासा ॥
किरत्रिम नास बास को पूजै । अबिनासी कौने बिधि सूझै ॥
नास भाव में सुरति लगाई । ये सतसँग जग महिमा गाई ॥
ये धोखा सबहिन हित लावा । ता से सतसँग खोज न पावा ॥

॥ दोहा ॥

धोखे सब जग पचि मुआ, पूजा नेम अचार ।
तीरथ ब्रत बिधि भर्म से, भुगतत खानि मँझार ॥१॥
बीत जनम सतसँग करत, और सरै न एकौ काज ।
पलक माहिँ सतसँग मिलै, सरै जीव कौ काज ॥२॥
पल महिमा सुनि कहत हैँ, मुख से बारम्बार ।
पल सतसंगति मुक्ति जो, खोजत नाहिँ गँवार ॥३॥
सात स्वर्ग अपबर्ग की, महिमा तुलै न ताहि ।
अस सतसंग बखानिया, पल में मुक्ति सहाइ ॥४॥
करत करत जनमै गयौ, नित नित सतसँग साथ ।
वो सतसंगति कौन है, मुक्ति जो आवै हाथ ॥५॥
वो सतसंगति और है, तुलसी अगम निहार ।
संत सुरति सतलोक में, मुक्ति तहाँ पनिहार ॥६॥
वो सतसंगति संत पै, जगत भेष नहिँ भेद ।
ये अभेद सतसंग को, मुक्ति चरन पद लेत ॥

मुक्ति मुक्ति ढूँढ़त फिरैँ, भेष जगत सब झार ।
संभासन चित संत कर, संत चरन की लार ॥८॥
संत मुक्ति नहिं आदरैँ, और फिरै संत की लार ।
संत अगम रस लेत हैं, जहँ पहुँचै न मुक्ति बिचार ॥९॥
ज्योँ जौहरि हीरा गहै, पाहन गहै गँवार ।
हरि हीरा संतन लखा, पाहन मुक्ति असार ॥१०॥
ज्योँ दधि भीतर घिर्त को, मथि काढ़ै कोइ संत ।
छाछ मठा जग को दयो, पावै न घृत मत अंत ॥११॥
मुक्ति मुक्ति माँगत फिरै, जगत भिखारी भेष ।
जिन माखन मथि काढ़िया, मठा रंक को देत ॥१२॥
संत मुक्ति मानैँ नहीँ, माँगै जगत अजान ।
संत दरस मुक्ती तरै, फिरै संत की लार ॥१३॥
गहै सतसंगति संत कर, मुक्ति लखावैँ हाल ।
नजर दृष्ट जीवत लखै, छूटै भौ भ्रम जाल ॥१४॥
बेद मता भौ जाल है, सास्तर सिम्रित पुरान ।
ये अंध फंद है काल को, संत चरन चित आन ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

सतसँग जाने संत, आदि अंत स्रुति से लखै ।
महल सातवाँ पंथ, वोहि मारग सतसँग कह्यौ ॥१॥
महल सात स्रुति राह, चढ़ि अकास सतसँग लखै ।
सत मत पंथ निहार, सो अगार अद्‌बुद चखै ॥२॥

॥ दोहा ॥

तुलसी सतसँग जग नहीँ, नहिं ब्रत नेम अचार ।
नहिं पुरान नहिं बेद मेँ, संत चरन की लार ॥१॥
जग अँधरा पंडित मिले, अँधरा भेष भुलान ।
ये तीनौँ अँधरा मिले, कौन बतावै राह॥२॥

पंडित लोभी भेष सब, ठग ठग जगत लबार ।
पाप पुन्य बतलाइ कै, मुए मिलन गोहरान ॥३॥
मुए मिलन आवै नहीं, चिट्ठी पत्री नाहिं ।
बिन बिधि देखी जो कहै, परै नर्क के माहिं ॥४॥
कहै देखी निज आपनी, जीवत मिलन बिचार ।
ये गति मति सत संत को, निरखि परै स्रुत सार ॥५॥
सतसंगति सत द्वार मैं, जानत संत सुजान ।
मुकर मनौ दुरबीन मैं, निरखि चढ़ै असमान ॥६॥
मुकर सन्त द्वारे बिना, सतसँग करौ हजार ।
बेद हाल भ्रम जाल से, कधी न उतरै पार ॥७॥
और सतसंगति झूठ सब, पचि पचि मरै लबार ।
संत मुकर स्रुति राह बिन, भरमत फिरै गँवार ॥८॥

॥ चौपाई ॥

सतसँग भेद और है भाई । सतसँग बिधी संत से पाई ॥
सतसँग बिधी जगत में नाहीं । वो सतसंगति संतन माहीं ॥
बेद पुरान न जानै बाटा । पंथी भेष न पावै घाटा ॥
पंडित बुद्धिहीन नहिं जानै । भूला जगत भूल पहिचानै ॥
वो सतसँग सतगुरु से पावै । भूल तोड़ सत द्वार लखावै ॥
जो कोइ द्वार कृपा से पावै । ता को सतसँग संत बतावै ॥
वो सतसंग जीव निज पावै । सत सत ता कौ नाम कहावै ॥
वो सतसंग मिलै पल माहीं । पल मैं मिलै जीव को राही ॥
या की साखि ग्रंथ गोहरावै । सुरति संग सतसंगति पावै ॥
भौजल नौका सतसँग भाई । सूरति चढ़ भौ पारै जाई ॥
मन मल्लाह नाव नहिं बूड़ै । सूरति बल्ली मन बल तोड़ै ॥
मन को पकरि नाव पर डारै । सूरति बल्ली पार उतारै ॥
उतरै पार परम घर चीन्हा । पहुँचै जाइ अगम लखि लीन्हा ॥

सतगुरु पद परसै उर नैना । लख लख परै संत की सैना ॥
सतसँग या कौ नाम कहाई । पल मेँ चढ़ै अगम घर जाई ॥
तुलसी जे जे संत कहाई । अगमै पंथ राह जिन पाई ॥
ऐसी अगम रीत गति राही । जगत अंध जड़ राह न पाई ॥
माया मद मन मस्त सरीरा । खान पान सुख तरुनी तीरा ॥
भाई बंद कुटुम बिधि नाना । सुख सम्पति सुपने बिधि माना ॥
तेल फुलेल चमक चटकाई । टेढ़ी पाग छोर उरमाई ॥
मन मेँ मस्त कछू नहिँ सूझै । काल कराल नेक नहिँ बूझै ॥
ऐसा गाफिल फिरै अयाना । छूटै तन पल माहिँ पयाना ॥
ये तन पानी ओरा[१] सुपना । तन घुलि जाइ छूटि नहिँ अपना
तन सराइ दिन दोइ बसेरा । तन छूटा पुनि बाहर डेरा ॥
ये सराइ दिन चारि मुकामा । रहना नहिँ मंजल को जाना ॥
सुत प्रिये तन धन सुपन सनेही। तन छूटे सुपने की देँही ॥
मिथ्या तन से प्रीति लगावै । जीव भूलि धोखे मेँ आवै ॥
त्रेता रामचंद्र भये राजा । भूले वोहू देँह सुख काजा ॥
तिरिया काज कीन्ह संग्रामा । बन बन फिरे लछन अरु रामा ॥
कुल आतम रावन को मारा । आतम हति लीन्हा सिर भारा ॥
आतम पाप अनीती कीन्ही । बालिहिँ मारि काल गति लीन्ही
ये अधर्म कीन्हा अन्याई । आतम मारि दया नहिँ आई ॥
दयाहीन जोइ दुष्ट कहावै । आतम हतै दया नहिँ आवै ॥
जग मेँ कोइ जिव मारै भाई । ता को सब जग दोष लगाई ॥
तुलसी अनीति कीन्ह अधमाई । ता को जग भगवान बताई ॥
ता को करता कहै भगवाना । रावन नारि लीन्ह नहिँ जाना ॥
करता राम भया मतिहीना । कपट मिरग उनहूँ नहिँ चीन्हा ॥
तिरिया काज कीन्ह सब कामा । लीन्हा भोग कीन्ह सोइ रामा ॥

---

(१) ओरा=ओला । मुं० दे० प्र० के पाठ में "औरै" अशुद्ध है ।

कर्म भाव भौ मैं भरमाये। कीन्हा कर्म भोग सोइ पाये॥
जिन जिन की पुनि नास कराई। तिन तिन हाथ नास पुनि पाई॥
नास बैर भोगै पुनि खाना। बैर दिये पुनि गर्भ समाना॥
देँह भाव दुख भरमै खाना। तुलसी भाखी सन्त प्रमाना॥
बिन हंकार हतै नहिँ भाई। अहंकार सस्तर बँधवाई॥
अहंकार आतम किया नासा। पुनि अहंकार खानि मैँ बासा॥
जो कछु किया राम हंकारा। रावन कुल आतम सब मारा॥
जस जस किया राम कृत काला। बाँधे जम डारै भौ जाला॥
जग अंधा तेहि साखि बतावै। वो पुनि कर्म आपने पावै॥
राम कर्म बस भरमै खाना। ता से मुक्ति कौन बिधि जाना॥
तुलसी राम मुक्ति नहिँ पाई। अंधा जग तेहि जपै बनाई॥
येहि बिधि कृष्न दसो औतारा। बाँधे काल कर्म को लारा॥
ये जग अंध मंद मति माईँ। कीन्हे कर्म कृष्न भुगताई॥
जगन्नाथ सब जगत पुकारा। हाथ और पाँव कटे केहि कारा॥
गोपी कर्म कीन्ह सँग माईँ। ता से कटे हाथ और पाँई॥
ये देखौ सादृष्ट बिचारा। वो हू परे कर्म की धारा॥
अस अज्ञान बूझ नहिँ लावै। लीन्हा सरन सोई दुख पावै॥
सरनि लीन्ह सोई बेहाला। उन को गहि बाँधेउ जमकाला॥
अपने मन मेँ करौ बिचारा। बड़े बड़े बूड़े भौ धारा॥
बड़े बड़े हाथी बहि जाईं। कहौ मसा केहि लेखे माईँ॥
राम कृष्न जग हाथी जाना। सोऊ बहे कर्म लपटाना॥
तुम पसु जीव मसा जम जाला। तुम तुम्हरा कहौ कौन हवाला॥
ये जग झूठ छूट तन नासा। तिरिया पुत्र भर्म भौ फाँसा॥
जन्मै बार बार भव माईँ। तिरिया पुत्र अनेकन ठाँईँ॥
तन छूटा झूठा भया नाता। जहँ से मुए टूट तेहि साथा॥
अनेक दाव तन छूटि सिराना। सुख सम्पति सुपने सम जाना॥

जिन ने तन का घाट सँवारा। ताहि न बूझि अबूझ गँवारा ॥
स्वाद करै इंद्री सुख नाना। सुपने का सुख देखि भुलाना ॥
जिमि सुख बाम गरल सोइ माना। जग का सुख है ताहि समाना ॥
जग रस भोग बिषय रस माया। भोगै भोग छूट तन काया ॥
नर तन भौ बारिद कर बेरा। सत सत संगति कीन्ह निबेरा ॥
नर तन दुरलभ सब गोहरावै। बार बार यह तन नहिं पावै ॥
या मैं भूला अंध अचेता। कीन्हा तन ता से नहिं हेता ॥
नखसिख साज कीन्ह सब काया। ता का मन मैं सोच न आया ॥
ये घर बार छूटिहै धामा। तन बिनसै वाही से कामा ॥
बूझै लेखा लेत हिसाबा। मुसकिल परै न होत जवाबा ॥
वा साहिब की राह बिसारी। छूटै सुत बित गृह नर नारी ॥
दस दरवाजे पवन समाई। छिन छिन स्वाँस जाइ रे भाई
कीन्हा ठाट अनेकन साजा। छिन छिन बजै कूच कर बाजा
ज्यौं सेमर सूवा साखि भुलाना। टौंट देत पुनि घुवा उड़ाना ॥
अस जग बंधन लेखा जानौ। टौंट मारि सुवना पछतानौ ॥
सेमर सेवत जनम गँवावा। जनम बीति रस एक न पावा ॥
ज्यौं बिल्ली सूवा सँग धाई। येहि बिधि काल रह्यो मँड़राई॥
तू अचेत निद्रा नित सोवा। चोटी काल धरी जब रोवा ॥
गाढ़े बंधन भया समाना। बाँधा काल कष्ठ जब जाना ॥
जम राजा बिधि बड़ा कसाई। देत मार पुनि कौन छुड़ाई ॥
ता ते बूझौ अंध अचेता। ये तन जात भजन बिन बीता ॥
आज काज है काल अकाजा। छिन छिन लेखा ले जम राजा ॥
तुलसी जिन सतसंगत कीन्हा। सत मत राह संत को चीन्हा ॥
ता को जम पूछै नहिं काला। कीन्ही किरपा संत दयाला ॥
सतगुरु मारग तुरत लखावा। सतगुरु कृपा अगम घर पावा॥
सतगुरु सोई सत्त दरसावै। भूला आदि अंत घर पावै ॥

जो सतसँग सतगुरु ने दीन्हा। संत कृपा से मारग चीन्हा॥
सतगुरु पदम माहिँ पद माईं। सतसँग सुरति गगन पर धाईं॥
सतगुरु सत्त सत्त सतनामा। सूरति मिली भया निज कामा
ये सतगुरु सत सत्त बतावा। सतगुरु पदम ग्रंथ मैं गावा॥
तीनि लोक में भिन्न निवासा। चौथा पद कहै तुलसीदासा॥
चौथे पद में सतगुरु बासा। तीनि लोक में काल निवासा
पंथी गुरू भेद नहिँ जानै। कान फूँकि फिर भौ में आनै॥
जगत गुरू सतगुरु नहिँ चीन्हा। तन छूटे पुनि काल अधीना॥
वे सतगुरु गति गाइ सुनाऊँ। पदम पार पर अगम लखाऊँ॥
सतगुरु सुरति सैल दरसावै। सो सतगुरु सत दया लखावै॥
सूरति संध सिंध की पावै। ज्यौं सलिता जल धार समावै॥
सूरति सार सब्द भई चेली। येहि बिधि आदि अगम खुलि खेली॥

॥ धमार १॥

अहो सत सुरति सहेली, खुलि खेली हो॥ टेक॥
गरजि घुमरि घन घोर सोरसखि, घट पट चटक चढ़ाई।
पल पल पलक पार दल अन्दर, चितवत नैना पट पेली॥१॥
घर घर से सब गवन सुहागिन, भैंट भवन सब आईं।
जिन मोहिँ गैल सैल समुँदर की, कीन्ही दृढ़ भान समेली॥२॥
गगन गिरा गुरु गाँठि छुड़ाई, भिनि भिनि बाट बताई।
सूरति सब्द समझ सुन माहीं, भइ गुरु मारग चेली॥३॥
मैं मति मंद फंद फँसि खाना, जाना न भेद भुलाई।
बिष रस बिषम बिषय मन माहीं, धोई तुलसी बुधि मैली॥४॥

॥ धमार २॥

अहो रँग राती रँगीली, रस माती हो॥ टेक॥
सजत सिँगार सार सुख सागर, दुख सुख दूर बहाई।
चढ़ि कर महल टहल सतगुरु की, निरखा भिनि भिनि पिय भाँती॥१

पिय पद परसि पलँग पिउ प्यारी, सब बिधि सेज सँवारि ।
रस कस समझ सुरति पिय पद को, मो से कछु कहत न जाती ॥२॥
रैन चैन रस रीत जीत कर, नित नित सैल सुनाई ।
जोइ जोइ सखियाँ समझ घर आईं, कीन्हा पिय के सुख साथी ॥३॥
तुलसी पोढ़ जोड़ सम सूरति, सोइ सोइ भेद लखाई ।
जे वे सुखी दुखी दुनियाँ में, जुग जुग जम मारत लाती॥४॥

॥ धमार ३ ॥

अहो नभ निरखि निहारी, पिउ प्यारी हो ॥ टेक ॥
सेत बरन सम सुरति समानी, कारे कँवल निकार ।
पारे पवन भवन सुत लागी, भागी भिनि सब्द बिचारी ॥१॥
दल पर नल निज नैन नगर मँ, चली चढ़ि सुन्न मँझार ।
लौ की लगन जाइ जिन साजी, भाजी लखि लोक नियारी ॥२॥
नल की नाल चाल चींटी सम, भँवर गुफा सम धाम ।
ता के पार पदम पद देखा, लेखा निज जनम सुखारी ॥३॥
मिलन मिलाप साफ सुत घर मँ, सर सम सब्द सुधार ।
सार समझ सुन मारग आई, तुलसी चढ़ सुरति हमारी ॥४॥

॥ धमार ४ ॥

अहो अज आदि अतूला, पद भूला हो ॥ टेक ॥
भवन चतुरदस से पद न्यारा, निरगुन जोति न जाइ ।
सुन्न न गगन धरन नहिं तारा, न्यारा कँवला कहूँ फूला ॥१॥
रबि नहिं चंद फटिक उँजियारी, खुलि गया अजर किवारा ।
महल महा सुन धुनि धधकारी, या से न्यारी चढ़ि झूला ॥२॥
सब्द न सार लार नहिं सूरति, मूरति मन नहिं जाई ।
जहँ रहँ संत अंत कछु नाहीं, औघट घट खिरकी खोला ॥३॥
अगम अपार पार कहा गाऊँ, जाऊँ नित नित धाइ ।
कंथ को पंथ बेअंत बिचारो, जिमि फाटक पर गज हूला ॥४॥

तुलसी तोल बोल नहिँ आवै, जावै जोइ देत जनाई ।
गूढ़ गुप्त परघट नहिँ खोलो, गावत सब्दन सँग भूला ॥५॥

॥ धमार ५ ॥

अहो सतसंग अमोला, जिन तोला हो ॥ टेक ॥
करि करि संग रंग नहिँ जाना, कित बदरी कित काला ।
हाल के हेत हरष सब भूले, या से परिहै झकझोला ॥१॥
कह कह अंत संत सब हारे, बूझै न सब्द सुधार ।
पार की खबरि सुनत उठि भागे, लागे जिमि माँगत मोला ॥२॥
नहिँ कछु दाम धाम धन माँगै, करि परहेत सुनावै ।
लेत न देत हेत साँई के, परमारथ की गँठ खोला ॥३॥
सुनत सुनाइ गाइ बहु भाँती, साधी न समझ बिचार ।
कस कस जार लार भव छूटै, लूटै जम जानत पोला ॥४॥
तुलसी समझ कूर कूकर सम, छाड़ै न सूकर चाल ।
ता से बेहाल काल नित मारै, पारै पद चीन्ह न चोला ॥५॥

॥ धमार ६ ॥

अहो सतसंग समाना, जिन जाना हो ॥ टेक ॥
सतगुरु मर्म भर्म गढ़ तोड़ै, मोड़ भये मन दीन ।
लीन्हे चरन सरन सतगुरु के, भीने रस रीति सिराना ॥१॥
जिन के इस्क इष्ट संतन की, प्रति प्रति दरसन लार ।
पार का सार धार दरसावै, दुख छूटत भौ भ्रम खाना ॥२॥
दरस परस मन मंजन पाना, सूरति रुचिर निकार ।
देत निहार ताल कर कूँची, ऊगै निरखत घट भाना ॥३॥
उमगी लहर सहर सूरति की, लखि लखि अंड अकार ।
चढ़ि चढ़ि चटक फटिक उँजियारी, तुलसी निज निरखि ठिकाना ॥४॥

॥ धमार ७ ॥

अहो मन भर्म भुलाना, बिष खाना हो ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीस तैंतीसा, तीन की तरँग तुलाई ।
जाइ जो जवन भवन चौरासी, बासी बस बास निदाना ॥१॥
ज्ञान न ध्यान जान नहिं मानै, मन मत की दिस जाई ।
ता से कर्म ईस सिर ऊपर, बाँधत जम जग फिर ताना ॥२
तपत सिला जिव तपन जरावै, तड़प तड़प दुख पाई ।
वा बिधि वक्त सख्त कर गाऊँ, जानै जोइ भोग समाना ॥३॥
तुलसी आज काज नर देँही, फिरि नहिं नर तन हाथ ।
सोवत खात सैन सुख माहीँ, बिनसै घट बीति सिराना ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन बिषम बिकार, सार सब्द चीन्है नहीं ।
कर्म भर्म भौ लार, हाथ हरख आवै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

जब सत संगत को मन चावै । तब कहूँ पकरि हाथ मैं आवै ॥
संत समीप चरन चित वारो । तब कछु सूझै पद के पारो ॥
सूरति निरति निकर कर बूझै । लख सत नाद सुरति जब जूझै ॥
अगम निगम नित निरखि निहारा । भाखा आदि अंत पद सारा ॥
अब दृष्टान्त कहूँ इक गाई । रहे सेठ सुन पच्छिम माहीं ॥
ता का बिधि बरतंत बताऊँ । सब्द साखि बिच भाखि सुनाऊँ ॥
जो बिधि भई बिधी बरतंता । सब्दन मैं गाई सब संता ॥

॥ रेख़ता ॥

अली इक बात सुन आई । कहूँ बरतंत समझाई ।
अजब इक बात ताजुब की । सखी सुन कान दे अबकी ॥१॥
समझ लख भेद की बाती । कहत मैं फटत है छाती ।
चले सजि सेठ पच्छिम सोँ । किया दिल देस दक्खिन को ॥२॥

संग सामान बतलाई । चढ़न घोड़ी और नाहीं ।
सिपाही तीन तुरकानी । करन परदेस दूकानी ॥३॥
बाट बिच सहर एक आया । लखा रुजगार चित चाया ।
सखी सुन सहर का नामा । सहतपुर नग्र नौ ठामा ॥४॥
पैठ सुन स्याम नित लावै । मठी बिच माल सब आवै ।
लोभ मन माल से लागा । समझ कर कीन्ह बहु जागा ॥५॥
खरीदी माल की लीन्हा । बहुत भरती भरत कीन्हा ।
लौंग काली मिरच राई । भरत भरि माल लदवाई ॥६॥
चली रस राह को गाड़ी । रही नौ कोस पर ठाढ़ी ।
जहाँ भट भील मवासी । रहत बन बीच का बासी ॥७॥
सुना लद माल मग ठाढ़ा । परा सखि रात को धाड़ा ।
बंद बिच सेठ गये आली । पकरि जंजीर में डाली ॥८॥
सखी सँग तीन उन के री । भये सब ताहि के बैरी ।
करे बस पाँच ने जेरा । रहै पचबीस का पहरा ॥९॥
बिपति कहुँ क्या सुनौ उस की । भये दुख रोग और खुसकी ।
निकरि कहुँ गैल ना पावै । कहौ घर कौन बिधि जावै ॥१०॥
बिसरि घर आदि और अंता। खबर कहै को बिना संता ।
करम बस राह रस खाना । बिना सतसंग भरमाना ॥११॥
मिलै सतसंग मन टूटै । अरी तब बंद से छूटै ।
अली भौ भील ने पकरा । जबर जंजीर में जकरा ॥१२॥
अली बिधि बेद से बाँधा । करम की साधना साधा ।
तिरथ और बर्त आचारा । करत नित नेम बिधि सारा ॥१३॥
लिये फल भोग करमन के । फिरे भौ भाव भरमन के ।
भया भौ काल का चारा । निकर नहिं होत निरवारा ॥१४॥
याद गइ भूलि सब घर की । मिली नर देह सुन अबकी ।
करो मन दीनता लावो । संत से राह तब पावो ॥१५॥

मिटै कर्म काल चौरासी । होइ तब लोक का बासी ।
अली यहि बात से आवै । और बिधि राह नहिं पावै ॥१६॥
तुलसी जब बूझ में आवै । अधर घर आदि अपनावै ।
फटै जब करम कागद के । लखै दुरबीन मन मँज के ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

सुनौ सेठ संबाद, साध समझ कोइ बूझिहै ।
सूझै समझ बिचार, ये अपार मन अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

मन की अगम चौज गति गाऊँ। गुन गोबिन्द बरनि येहि नाऊँ॥
बिन सतगुरु येहि धीर न आवै। बिना संत को पीर बुझावै ॥
गुन की गैल गवन नित भागै । सोवत नित सतगुरु सँग जागै ॥
सतगुरु पदम पार बलिहारी । सुरति लखाइ दीन दिल न्यारी॥
नित नित सैल सुरति चढ़ि चीन्हा । तब मन सूरति भया यकीना ॥
लख लख परा पदम पद न्यारा । तब भाखी भिनि सूरति पारा ॥
जग बैराट बना बिधि सारा। अंस सिंध से आनि सँवारा ॥
उठे बैराट बैराट बिधाना । मन तन साथ बँधा सोइ जाना॥
पच्छिम दिसा धाम मन केरी। सो नहिं सुपनेहू मन हेरी ॥
जगत देख दूषन में आया । मन बनियाँ सुन सेठ कहाया ॥
कर्म बंध बिच कीन्ह दुकाना । भर सुभ असुभ माल सोइ जाना॥
बंधन बेद जाल जग माहीं । भौ भ्रम भील जँजीर चढ़ाई ॥
नित नित परै काल का डाका। जग जग घेरि कर्म के नाका ॥
चौकी पाँच पचीस बसाई । तीन गुनन बिच नाम गुसाईं ॥
जो कछु माल कर्म का लादा। डाका परा सेठ पर जादा ॥
भये कैद बस सेठ बिचारे । बिना संत कहौ कौन उबारे ॥
भूले सेठ सार घर अपने । बिन सतगुरु छूटैं नहिं सुपने ॥
संत कृपा कोउ राह बतावै । बूझै बाट समझि घर आवै ॥

बिन बूझे नहिं लगै ठिकाना। जुग जुग भरम खानि भरमाना॥
जब सतगुरु ने सब्द सुनाया। पच्छिम से दक्खिन को आया॥
कर दुकान दुनियाँ ने लूटा। माल लुटे पर फिर नहिं छूटा॥
चर और अचर खानि जुग चारा। मन सोइ सेठ बंद बिच डारा॥
सज्जन साध करै निरवारा। उतरै भौसागर के पारा॥
सूरति चढ़ै सब्द निरवारा। नहिं तो रहै काल की जारा॥
कर्म काल ने माल डरावा। जग जम जाल खरीदन आवा॥
जा की रमज रेखता गाई। बूझै साध समझ जिन पाई॥
बेहोसी जग फाँस फँसाना। निज घर अपना आदि न जाना॥
संत दयाल सब्द दरसावै। ये मन बिच सुपने नहिं पावै॥
निस दिन फिरै अचेत अयाना। जुग जुग भरमै चारो खाना॥
अब चित बिच कछु चेत कराई। दुरलभ तन नर देही पाई॥
दृग से देख चेत चित माहीं। ये जग जाल बहा भौ माहीं॥
मन घरबार बाट बिच रोका। ब्यापै नित नित संसय सोका॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ। संत साध की साखि बताऊँ॥

॥ शब्द १ ॥

दृग देखौ रे चित चेतौ रे, ये जग जात बह्यौ॥ टेक॥
ये घटवार घाट घट रोकै, धोखे धार बहावै।
नौका नाव धाइ धसि पैठै, बैठै मन थिर लावै॥
बाट बटाऊ लेतो रे॥१॥

सुर नर मुनि गंधर्ब अरु देवा, ब्रह्मा बिष्नु करत मन सेवा।
बिन घट भेद न जाने भेवा, नारद ब्यास न पावै छेवा॥
बेद पुकारत नेतो रे॥२॥

ये तन तोर तलैया सूखै, काँच महल कूकर कृत भूसै।
आसा आस पास पद चूकै, बार बार बिष घर घर टूकै॥
भटक भटक भ्रम लेखो रे॥३॥

तुलसी मगर मीन मुख माईं, चर और अचर चराचर खाईं ।
साईं सब्द सुरति के माईं, ये बिधि लार लार लौ लाईं ॥
मन ब्रत तत सत सेतो रे ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अरी पिया परखौ री हिया हरखौ री, एरी आली आदि अटा ॥टेक
अलख अकेली चली अलबेली, पेली परख निहारी ।
सेली सुरति निरखि नभ न्यारी, सो धन पिया को लागै प्यारी ॥
चलौ सखि पिय सँग घर को री ॥१॥
चतुर सहेली सुन पर खेली, मेली मूर बहाई ।
धाइ धार पार भट भेली, घट चढ़ चटक चढ़ाई ॥
घुमरि घुमरि घन करको री ॥२॥
बदरी स्याम सुँदर सुत न्यारी, ये मत मूर न जानै अनारी ।
संत अधर रस अंत बिचारी, जग बिष रस भौ खानि भिखारी ॥
संध सुरति सत सरकौ री ॥३॥
ये लै लार पार पट माहीं, ताई तत्त नियारी ।
तुलसी मरम सरम सतगुरु को, पूर परम गुरु आई ॥
कोइ सतगुरु सिष तरको री ॥४॥

॥ दोहा ॥

जिन सतगुरु सरना तका, पका सुरति के माहिँ ।
जाइ पदमपुर कँवल मैं, हरख जो हिये समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सखि प्यार पुरुष का गाऊँ । ता मैं आदि अंत दरसाऊँ ॥
जो जस भया भाव बिधि लेखा । तस तस भाखौं अगम अलेखा ॥
बहु बिधि भाव बिपति से पाये । दुख सुख बिरह भाव दरसाये ॥
खोजत खोजत खोज लगावा । गुरु ने समझ बूझ समझावा ॥
भेष पंथ सब झारि निहारी । कोई न भाखा भेद बिचारी ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त भई बेहाला । सब जग जीव परे जम काला ॥

कोऊ न कहै बात सत के री । सब जग पचे भेष पर हेरी ॥
ब्याकुल तन मन बिरह समानी । कोई न कहै पिया पद जानी ॥
सत मत पत की पीर समानी । बिकल बिपत चित कहा बखानी ॥
ये जग भीतर काल कराला । बाँधा सब जग जम बिच जाला
तन हबूब बुल्ला जस फूटा । स्वाँस स्वाँस छिन छिन दम छूटा ॥
पवन भवन बिच स्वाँस समानी। जीव निकरि जस हवा उड़ानी
ज्योँ सुपना जग जग जस माना। सोवत जुग जुग पिया न जाना
दुर्लभ देह दाव अब आया । धृग जीवन जिन पिया न पाया॥
सुन या की बिधि सब्द लखाऊँ । बिधि बिहाग बिच बरन सुनाऊँ ॥

॥ बिहाग १ ॥

बिपति कासे गाऊँ री माई । जगत जाल दुखदाई ॥ टेक ॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवै । जम दारुन जग खाई ॥ १ ॥
पिय के ऐन बिन चैन न आवै । हर दम बिरह सताई ॥ २ ॥
जा दिन से पिय सुधि बिसराई । भटक भटक दुख पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास स्वाँस सुख नाहीं । पिय बिन पीर सताई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग २ ॥

आली री हिये हरष न आवै । कारे की लहर ज्योँ सतावै ॥टेक॥
तन मन सुधि बुधि सब बिसराई । अन्न पानी नहिं भावै ॥१॥
कहा करौँ कित जावँ सखी री । पिय बिन नींद न आवै ॥२॥
है कोइ सतगुरु पिय को लखावै । पत पिय पीर बुझावै ॥३॥
तुलसी तलफ तलफ तन सूखै । मन बिच थिर नहिं लावै ॥४॥

॥ बिहाग ३ ॥

अरी कहँ खोजौँ री माई । गुरु बिन भेद न पाई ॥ टेक ॥
खोजत खोजत जनम सिराना । काहू न खोज लखाई ॥ १ ॥
भेष पंथ सब खोजि निहारी । जोग बैराग गुसाईं ॥ २ ॥
अब मन मोर गुहार पुकारा । त्राह त्राह तन माईं ॥ ३ ॥
तुलसी तलब सुलभ जब पाई । सतगुरु अलख लखाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ४ ॥

आली री गुरु गैल लखाई । अलख पलक पर पाई ॥ टेक ॥
दृग दुरबीन चीन्ह जब पावा । हर दम सुरति लगाई ॥ १ ॥
लीला सिषर निकर नभ न्यारी । छिन छिन सुरति समाई ॥२॥
पच्छिम द्वार पार पट खोले । अगम निगम गम पाई ॥ ३ ॥
तुलसी तत्त तरक तन माहीं । अस आतम दरसाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ५ ॥

आली री आगे खोज लगाई । चढ़ि सुति गगन समाई ॥ टेक ॥
मकर तार मारग लखि पावा । ता बिच धधक चढ़ाई ॥ १ ॥
मानसरोवर निरखि निहारी । बेनी मैं पैठि अन्हाई ॥ २ ॥
भीतर भिन्न चिन्ह भइ न्यारी । कोटि भान छबि छाई ॥ ३ ॥
ता मध बीच द्वार इक दरसा । साहिब सिंध कहाई ॥ ४ ॥
तुलसी सुरति सब्द सुन माहीं । गुरु पद सुरति मिलाई ॥ ५ ॥

॥ बिहाग ६ ॥

आली री इक अचरज बानी । गुरुमुख आप बखानी ॥ टेक ॥
चौथे चार पार इक स्वामी । लखि भिनि नाम अनामी ॥ १ ॥
सूरति सैल महल पिय पाया । रूप न रेख निसानी ॥ २ ॥
मैं मिलि जाइ पाइ पिय अपना । जल जल धार समानी ॥ ३ ॥
प्यारी प्रीति जीति पिय पाये । तुलसी तलब बुझानी ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ७ ॥

आली री आज अनंद बधाई । पिय पद परसि पठाई ॥ टेक ॥
ये सुख चैन सैन कहा गाऊँ । कहि कहि संत सुनाई ॥ १ ॥
आदि अनादि अमर पद पावा । दुख सुख बिपति नसाई ॥ २ ॥
अब सब मरन जिवन भ्रम भागा । पिय प्यारी पद पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास बास घर अपने । अली सुख कहत न जाई ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

ये सुख का का कहौं बिचारा । जानै जोई कीन्ह निरवारा ॥
सतगुरु से लेखा जिन पावा । बिन गुरु हाथ न काहू आवा ॥

गुरु गुरु अंतर जानौ भाई । गुरु चिकटा गुरु चोख जनाई॥
अस अस गुरुमत बूझि बिचारा। सत सतगुरु मत इन से न्यारा॥
सतगुरु सत मत अगम लखावै । जा से जीव परम पद पावै ॥
जग के गुरू भेद नहिं जानैं । ज्यौं बनियाँ कर हाट दुकानै॥
आप आदि अपनी नहिं जानी । सिष कहौ कस पावै सहदानी॥
जो संतन स्रुत राह पुकारी । सो सब खोजि खोजि पचि हारी
जगत जीव संसार बिचारा । ये कहा जानै सार असारा ॥
जस जस कीन दीन समझाई । तस तस बाँधी गाँठि लगाई॥
इन सब आस बास फँस मारा । केहि बिधि उतरै भौजल पारा
जगत गुरू बिस्वास न माना । उनहूँ सतगुरु राह न जाना ॥
तुलसी सतगुरु सत्त लखावा । पुनि चढ़ि गये आदि घर पावा
मैं संतन कर दास निकामा । किरपा कीन्ह दीन्ह वोहि धामा ॥
मैं पुनि कल्प कल्प कर भूला । नीच जानि मेटेउ दुख सूला ॥
बुधि मतिहीन जानि कियो छोहा । संत कृपाल काटि मद मोहा ॥
सतसँग सतगुरु पंथ लखावा । सतगुरु संत पंथ सत पावा ॥
चौथे पद सतगुरु जिन जाना । ता का आवागवन नसाना ॥
जग गुरुवा से काज न होई । सत्त कही राखौ नहिं गोई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सतसँग सार, जग असार जानै नहीं ।
सूरति सत मत द्वार, लखि अगार संतन कही ॥१॥
जग अबूझ अज्ञान, सना करम बस कस लखै ।
पूजै जल पाषान, यौं भुलान भौ मैं परा ॥२॥

॥ छंद ॥

सतसंगति गाई जिन जिन पाई । करम नसाई पार भई ॥१॥
जिन कही बखानी देखि निसानी । जिन जिन घर की राह लई ॥२
बूझै मत दूरा कोइ कोइ सूरा । अगम अपूरा सार सही ॥३॥

उन की गति न्यारी संत बिचारी। भेद अपारी पार भई ॥४॥
उन उन गोहराई ग्रंथन गाई। भेद सुनाई बूझि दई ॥५॥
मन मँ मद माते बिष रस खाते। सहँ जम लातँ मार सही ॥६॥
कोइ कहै बुझाई मन नहिं लाई। महा मद माहीं ज्ञान गई ॥७॥
मति अपनी ऊँची और की नीची। बुधि बिष सींची मान मई ॥८॥
संतन गति पावै भूल छुड़ावै। संत लखावैं भेद कही ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त बिचार, जो अगार आगे कही।
सही संत बिधि बात, संत साथ पावै सही ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी जग हाल साल, काल जाल माहीं ॥टेक॥
पंडित और भर्म भेष, देखा सब अंध अचेत।
भुला ब्रत इष्ट टेक, पाहन लौ लाई ॥
तीरथ असनान ध्यान, खोजत नर चारि धाम।
ढूँढ़त पोथी पुरान, मूरत मन माहीं ॥
देखा सब जगत भेष, नेक खोज नाहीं ॥१॥
कोइ कोइ जपै इष्ट जाप, आपा चीन्है न आप।
बाँधे सिर मोट पाप, साफ नरक जाई ॥
बूझै सतसंग सार, पावै संतन की लार।
मन का मद मूर मार, सार पार पाई ॥
जाना मन भूल तोड़, पोढ़ सुरति साईं ॥२॥
छिन छिन तन छीन जात, बूझै नहिं एक बात।
तेरे कोउ कोउ न साथ, जाति पाँति नाहीं ॥
सम्पत सुख लार छार, निरखौ सुत नाहिं नार।
कुटुम बंध लोक चार, भूला भल भाई ॥
ये कोउ तेरे न लार, जग असार जाई ॥३॥

तुलसी तन होत छार, या से अगमन बिचार ।
कीजै भव उतर पार, नौका नसि जाई ॥
बूझै कोइ संत साध, सूझै कछु अंत आदि ।
जूझै चढ़ि सुरति नाद, लखि अनादि पाई ॥
पावै पद पुरुष दाद, साध सुरति माईं ॥४॥
मानौ सज्ञान सीख, मँगिहौ भौखानि भीख ।
भाखौ अज अमर लोक, देख द्वार माईं ॥
जनमन और मरन छूट, करमन की फाँसि टूट ।
सूझा मत साँच झूठ, लूटा जग जाई ॥
तुलसी मुख कहै बैन, नैन नजर आई ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी जगत भुलान, ज्ञान स्यान मद आप मेँ ।
बूझै सत मत नाहिँ, आप अपनपौ ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

भूला सब जग आपा माहीँ । आप अपनपौ खोजत नाहीँ ॥
मनमत मान बूझ नहिँ आवै । अपना ज्ञान ऊँच ठहरावै ॥
अपनी बुध सुध मनमत माहीँ। ता से ज्ञान स्यान गति गाई ॥
अपनी मनमत रत गत सानी । मान बड़ाई ज्ञान अज्ञानी ॥
तुलसी जग अपने मन माईं । ज्ञान स्यान और मान बड़ाई ॥
जा से कहूँ ज्ञान बिधि गाई । सो पुनि आन मोहिँ समझाई ॥
मैँ कहुँ एक ज्ञान बिधि भाई । वो पुनि चार मोहिँ समझाई ॥

॥ संबाद साथ पलकराम नानक पंथी के ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक नानक पंथी । रहै कासी मेँ बड़ी महंती ॥
कहते वाह गुरू मुख आये । मन अति लीन दीन गति गाये ॥
पैर परन हमहूँ पुनि कीन्हा । उठ कर पकर चरन को लीन्हा ॥

चाल बिधी जस साधन राही । जस जस देखी उनके माहीं ॥
अंतर दया भाव दिल दीन्हा । महिमा संत अंत नहिं चीन्हा ॥
संत प्रीत मन पूरा भावै । सुनै कोइ संत आप उठि धावै ॥
तन मन रहत संत सरनाई । मन उमगै मुख संत बड़ाई ॥
सील सुभाव नीच मन माहीं । मिलै संत चरनन लपटाई ॥
निरमल बुद्धि ज्ञान रस राता । मन सब चरन प्रीत हित बाता ॥
हमैं देखि हिये हरष समानी । चरन परे ढुरै नैनन पानी ॥
जस कछु रीत साध मत माहीं । तस तस तुलसी उन मैं पाई ॥
करता पुरुष नाम सत मानै । निरंकार जोती सोइ जानै ॥
पौड़ी सोदर पढ़ै अनेका । जपजी का परमारथ देखा ॥
आदि पुरान पचग्रंथी जानै । सुषमनि आसावार बखानै ॥
गुरु गोबिंद मुख भाखै बानी । बादसाह दस मैं सहदानी ॥
ग्रंथ बिहंगम कछु कछु जाना । पढ़ै और कुल झारि बिधाना ॥
संत चरन मन मैं रत जानै । हम से पूछ दीन मत आनै ॥
बावे निरंकार कहि गावा । और निरंजन जोति बतावा ॥
इनके परे और नहिं कोई । अस बावे मुख भाखा सोई ॥
वाह गुरू वाह गुरू बतावा । बावे मुख ग्रंथन मैं गावा ॥
लछमीचंद पुत्र बतलावा । दूसर सिरीचंद कर गावा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

साहिब नानक संत निदाना । जो कछु कहनि कही परमाना ॥
खुद साहिब नानक मुख बानी । कही अगम कोइ बिरला जानी ॥
वै पहुँचे चढ़ि सुरति निसाने । सब्द फोड़ गये अगम ठिकाने ॥
वै स्वामी गति अगम अपारा । तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
बार बार बन्दौं सरनाई । तुलसी चरन धूर मैं पाई ॥
साहिब नानक बड़े दयाला । गये अधर मारे जम काला ॥

और कबीर संत रस पाये । काल जीति सत सब्द समाये ॥
औरन की गति कहँ लग गाईं । जो जो गये अगमपुर ठाईं ॥
तुलसी निज निज दास तुम्हारा । सरनि जानि मोहिं कृपा निहारा ॥
नानक नैन नजर भर हेरा । तुलसी नीच चरन का चेरा ॥
सतसंगति गति अगम अपारा । तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
तुलसी हरष न हिये समाई । जब से परसे तुम्हरे पाँई ॥
संत रीति गति सब बिधि देखा । जस जस कही रीति रस लेखा ॥
जस नानक मत कहा अपारा । तस तस मुख भाखा सब सारा ॥
एक समय बावे गति लेखा । गोरख गुष्टी भई अनेका ॥
नवौ नाथ चौरासी सिद्धी । बावे कीन्ह गुष्टि की ऋद्धी ॥
ऐसे ग्रन्थ साखि बतलावा । बावे ग्रन्थ आप मुख गावा ॥
जपजी के परमारथ माहीं । बावे गुष्टि भिन्न करि गाई ॥
सब सिद्धन से चरचा कीन्ही । पुनि बावे गति काहु न चीन्ही ॥
या की बिधी ग्रन्थ के माहीं । मैं सुच्छम बिधि भाखि सुनाई ॥
जस जस भई गुष्टि बिधि भाई । भाखी जप परमारथ माहीं ॥
चौरासी सिध और नौ नाथा । दीन होइ जोड़े सब हाथा ॥
हारि चरन बावे के लीन्हा । बावे साथ जो भये अधीना ॥
तुलसी दीन भाव कर बोले । पलकराम से पूछन खोले ॥
स्वामी अरज एक चित आई । कृपा दृष्टि कर भाखि सुनाई ॥
बावे बरस बिधी कस भइया । सम्बत बरस की बिधी सुनइया ॥
बावे को कितने दिन भयऊ । गोरख कौन समय में रहेऊ ॥
गोरख सम्बत एकसै ग्यारा । हुए गोरख सोइ सम्बत सारा ॥
एकसै ग्यारा सम्बत माहीं । गोरख कुँडली में बिधि गाई ॥
नवौ नाथ चौरासी सिद्धा । उपजे सुकदेव तब की बिद्धा ॥
माया खैंचि पलक भर राते । उपजे सुकदेव तब की बातें ॥

पाँच हजार बरस तेहि भइया। सिध चौरासी समय तेहि रहिया ॥
बावे कितने बरस प्रमाने । सम्बत कौन कौन से जाने ॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी कहूँ बुझाई । पंद्रहसै अस्सी के माहीं ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

अब सोलह सै सोलह जाना। बावे बिधी कहूँ परमाना ॥
जेते दिन बावे को बीता । सो बिधि बरनि कहूँ सत रीता ॥
पंद्रहसै अस्सी के माहीं । अब सोलह सै सोलह भाई ॥
छत्तिस बरस बावे बिधि जाना । पंद्रहसै पाँच गोरख परमाना ॥
पंद्रहसै बरस गोरख भये आगे। बावे बिधी गुष्टि नहिं लागे ॥
छतिस बरस बावे बिधि साँचा। गोरख भये पंद्रह सै पाँचा ॥
ये तो बिधी मिली नहिं स्वामी। ग्रन्थ माहिं कस गुष्टि बखानी ॥
गोरख पंद्रह सै भये आगे । छतिस बरस बावे को लागे ॥
इन की गुष्टि कौन बिधि भइया। तुलसी के मन संसय रहिया ॥
भर्म एक मोहिं और समाना। पलकराम कहूँ भाखि बखाना ॥
चौरासी सिध और नौ नाथा। ये तो भये सुकदेव के साथा ॥
पाँच हजार बरस तेहि भइया। बावे कुल छत्तीस कहइया ॥
इन उन गुष्टि कौन बिधि कीन्हा। ये बिधि मिलि नहिं आवै यकीना
कस कस पलकराम पहिचानै। ये साँची कहो कैसे मानै ॥
पलकराम साधू सकुचाना । भर्म बहुत मन अपने आना ॥
पूछा ज्वाब भेद नहिं पाई । पलकराम मन बूझ समाई ॥
पलकराम साधू बड़े भोले । कहै तुलसी अस काहि कर बोले ॥
कहै तुलसी मैं दास तुम्हारा । तुम्हरे चरन माहिं निरवारा ॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी करौ बखाना । या का मन मैं भर्म समाना ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

पलकराम सुनियौ बिधि बानी। बावे की बिधि कहौं बखानी ॥
वे गोरख बिधि नहीं बताई। ये गोरख है तन के माहीं ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना। गोरख तन में संत बखाना ॥
मन बस गोइंद्री के माहीं। गोरख गोरख नाम कहाई ॥
मन गोरख को गुष्ट सुनाई। ये बावे अपने मुख गाई ॥
नौ में नाथ द्वार मन जाई। नौनथ मन नौनाथ कहाई ॥
चौरासी चौरासी खाना। करि करि गुष्ट फेरि मन आना ॥
गोरख मन गोइंद्री साथा। नथ नौद्वार सोई नौ नाथा ॥
नित नित परै चौरासी खाना। मन चौरासी सिद्ध बखाना ॥
कही बावे नानक मुख बानी। तन भीतर अंदर पहिचानी ॥
जो संतन मुख भाखि सुनाई। सो सब तन अंदर में गाई ॥
दसवाँ महल गगन के माहीं। सूरति चढ़ी द्वार दस जाई ॥
ता को दसवाँ महल बताई। सूरति चढ़ि कीन्ही पतसाही[1] ॥
सूरति इत उत चढ़ि दस द्वारा। तेहि दसवाँ पतसाह बिचारा ॥
गुरु गोबिंद जी बावे कहिया। पातसाह दसवाँ बतलइया ॥
नौ को तजि दसवें घर गइया। दसवाँ पातसाह येहि कहिया ॥
नानक सूरति चढ़ी अकासा। नौ को तजि दसवें में बासा ॥
दसवाँ महल दस द्वार कहाई। सूरति साथ नाम पतसाही ॥
पातसाह दस महल बताई। नानक येहि बिधि मुख से गाई ॥
पलकराम मन में हुलसाना। तुलसी सब घट माहिं बखाना ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी पूछौं बानी। बूझ मता की करौ बखानी ॥
मन सुति कहौ कहाँ से आई। कस कस दसवें महल समाई ॥

---

(१) बादशाही।

आदि अंत बिधि बिधि समझावौ। तब को हता सोई बतलावौ ॥
मूल भेद मोहिं कहिये स्वामी। तब को हता सहो पहिचानी ॥
मूल को भेद भिन्न कहौ गाई। है बाहर कै तन के माहीं ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम मैं तुम्हरौ दासा। सुन बिधि कहौं बचन परकासा॥
पलकराम भाखूँ बिधि बानी। जब नहिं आदि अंत नीसानी॥
नहिं तब बेद बिधी का चीन्हा। नहिं तब हता बेद जिन कीन्हा
नहिं तब आदि निरंजन देवा। ब्रह्मा बिष्नु महेस न सेवा ॥
नहिं तब आदि सक्ति निरमाया। नाम बिदेह धरी नहिं काया ॥
नहिं तब पाँच तत्त ब्रह्मंडा। नहिं चर अचर खानि भया अंडा
नहिं बिस्तार सरीर बनाया। सूर चंद आकास न माया ॥
नहिं तब नादि आदि कछु अंता। जगत न रहै भेष और पंथा ॥
नहिं तब रूप रेख नहिं काया। मन बुधि सुरति एक नहिं आया॥
जब निरगुन हुआ हता न भाई। सरगुन की कहौ कौन चलाई ॥
जोति निरंजन नहिं निरकारा। सास्त्र पुरान न बेद बिचारा ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

पलक राम पूछै अस बाता। कस कस हता कहौ बिख्याता ॥
कहौ बिधि भाखि अगम की बानी। तब को हता कहौ सहदानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ दै कानी। आदि अंत भाखौं सहदानी ॥
चौथे पद सत मत सत नामा। पातसाह दस याहि बखाना ॥
नानक सुरति महल पर कीन्हा। पक्के पातसाह सोइ चीन्हा ॥
नानक सूरति चढ़ी अटारी। वाह गुरू पद निरखि निहारी॥

वाह गुरू चौथे पद बासा । गये नानक सतनाम निवासा ॥
नानक बिधि सब अपनी भाखी । जो जो लखा अगम की आँखी॥
वा की नकल ग्रंथ मैं गाई । जगत अबूझ बूझ समझाई ॥
निःअच्छर अच्छर मैं नाईं । तेहि की नकल ग्रंथ बिधि गाई॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चैापाई ॥

तुलसी स्वामी करौ बखाना । निःअच्छर का कौन ठिकाना ॥
निःअच्छर बासा केहि ठाईं । ता की बिधि मोहिं बरनि सुनाई
को है सब का सिरजनहारा । कस कस किया आदि बिस्तारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

सत्त नाम सुत निरगुन राई । तास अंस जोती उपजाई ॥
जोती निरगुन हते न तेही । रह सतनाम पुरुष बैदेही ॥
जब ओंकार आदि नहिं भाई । पूरन ब्रह्म हते नहिं जाई ॥
ररंकार अच्छर नहिं काला । तब नहिं मन मन कीन्ही जाला
ओअँग सोहंग हते न भाई । आदि अंत मद्ध कछु नाहीं ॥
सतकर आदि सुरति घट माहीं । निःअच्छर मैं आनि समाई ॥
सूरति निःअच्छर से आई । सूरति सोहँग को उपजाई ॥
ता को बास अगमपुर ठामा । सोहँग कीन्हा सकल बिधाना ॥
आगे भेद कोऊ नहिं पावै । स्वाँसा सोहँग कहि गोहरावै ॥
सोहँग का कोइ भेद न पाई । सोहँग स्वाँसा है नहिं भाई ॥
तत्त पाँच गुन तीनि की स्वाँसा । सोहँग सुरति कीन्ह परकासा ॥
सोहँग है ब्रह्मंड के पारा । सोहँग सब मैं कीन्ह पसारा ॥
नाम भेद वाहू से न्यारा । नानक सत्त नाम पद सारा ॥
चौथा पद सतनाम अकाया । ता के परे अनाम अमाया ॥
नाम सुरति बिधि सब के माहीं। अगम भेद कोऊ नहिं पाई ॥

चहूँ लोक मेँ ब्यापक नामा । न्यारा चहूँ लोक मेँ जाना ॥
वा की संध सुरति नहिँ पाई । सूरति संध राह नहिँ जाई ॥
मूल नाम जानै नहिँ कोई । ता तेँ सूरति रही बिगोई ॥
निरगुन सरगुन सब ठहरावै । ता के आगे भेद न पावै ॥
पलकराम सुनियौ दै काना । निरगुन अच्छर ब्रह्म बखाना ॥
निरगुन ररंकार है सोई । निरंकाल काल है जोई ॥
निरगुन नाम निरंजन होई । संत काल भाखै तेहिं सोई ॥
सत्त नाम इनहूँ से न्यारा । ये बावे मुख कही बिचारा ॥
निरगुन कहियत है ओंकारा । सत्त नाम बिधि अगम अपारा ॥
घट म सुरति आदि से आई । नाम निअच्छर अच्छर नाहीं ॥
निःअच्छर अच्छर बिस्तारा । नाम भेद वाहू से न्यारा ॥
नाम डोरि है सब के माहीं । नाम भेद कोउ चीन्है नाहीं ॥
निरगुन सरगुन नाम बतावै । सत्त नाम का मरम न पावै ॥
बिन सतसंग समझ नहिँ आवै । सतगुरु बिना राह नहिँ पावै ॥
चौथा पद सत नाम बसेरा । वाह गुरू का वाँही डेरा ॥
वाह गुरू सतनाम कहाये । ये बावे मुख अपने गाये ॥
सूरति चढ़ै गगन को धावै । वाह गुरू पद जाइ समावै ॥
वाह गुरू पद पदम मँझारा । ये बावे मुख भाखा सारा ॥
वाह गुरू मुख भाखि बखानै । वाह गुरू का मरम न जानै ॥
वाह गुरू चौथे पद पारा । सूरति चढ़ि देखै सत सारा ॥
ये बावे मुख भाखि बखानी । वाह गुरू चौथे पद जानी ॥
बावे वाह गुरू बतलावा । तुम ने याहि गुरू मन लावा ॥
याही गुरू जगत के कीन्हा । वाह गुरू का मरम न चीन्हा ॥
याहि गुरू जग सभी भुलावा । चेला पंथ दुकान लगावा ॥
वाह गुरू पद इन से न्यारा । निरगुन सरगुन दोउ के पारा ॥
ये नानक बिधि भाखि बखाना । पलकराम सुनियौ दै काना ॥

परे साध कढ़ियाव बतावा । तुम दुकान बनिये बिधि लावा ॥
कढ़ियावै स्रुति परे को साधा । योँ बावे भाखी बिख्यादा[1] ॥
सुरति काढ़ि पर साधै कोई । तुम कढ़ाव हलुवे बिधि जोई ॥
हलुवा कढ़ाव न बावे गाई । सुरति काढ़ जिव घर को जाई॥
पंथी पंथ दुकान लगाई । लालच हलुवे लोभ बड़ाई ॥
बावे कहा और बिधि लेखा । घर दुकान नहिँ किया बिबेका॥
बावे अगम निगम बिधि गाई। सुरति काढ़ जिव घर को जाई ॥
भौजल छूटि जीव मुक्तावे । सूरति मिलै सब्द जब पावे ॥
सूरति सब्द पंथ बतलावा । तुम हलुवे का पंथ चलावा ॥
सूरति चढ़ै पंथ को जाई । तुम पंथी इक जाति बनाई ॥
पंथी राह भेद नहिँ पावा । येहि बिधि बावे पंथ न गावा ॥
ये कढ़ाव मत परघट जाना। गुप्त संत मत और बखाना ॥
संत मता सब दूर बतावै । बावे संत दूरि गति गावै ॥
ये तौ कढ़ाव दरब सँग होई । गुप्त संत औरै गति जोई ॥
दरब कढ़ाव हलुवे मेँ होता। जगत खरीद मुक्ति करि लेता ॥
जा से समझि परा सब लेखा। संत गुप्त कछु औरै देखा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सन्त सँवारा । संत मता सब गुप्त पुकारा ॥
स्वामी तुलसी जो तुम भाखी । बावे कही मिली सब साखी ॥
सूरति सब्द पंथ बिधि गाई । येहि बिधि बावे ग्रंथ सुनाई ॥
बावे वचन और तुलसी बानी। गुप्त कही सो भई निसानी ॥
निरंकार बेद बतलावे ।आदि जोति बिधि भेद लखावे ॥
इन का भेद जगत सब कहिया। संत का मता बेद नहिँ पइया ॥
संत का मता बेद नहिँ जानै । निरंकार और जोति बखानै ॥

(१) बिख्यात ।

निरंकार बेद ने भाखी। जानै न संत मते की साखी॥
संत मते को दूर पुकारा। निरंकार से होइहै न्यारा॥
निरंकार तो बेद बतावा। संत मते का अंत न पावा॥
गुप्त संत मत न्यारा होई। जहँ निरंकार जोति नहिं दोई॥
निरंकार को बेद बखाना। संत गुप्त मत और ठिकाना॥
सत्त पुरुष सतनाम कहाई। निरंकार जहँ जोति न जाई॥
तीनि लोक निरंकार समाना। वेद नेति बिधि करत बखाना॥
सत्त नाम चौथे के माहीं। निरंकार नहिं बेदन पाईं॥
इन के परे संत मत जाना। यौं मत बावे गुप्त बखाना॥
तुलसी स्वामी ये मत सूझा। तुम्हरी कृपा गुप्त अस बूझा॥
संत मता कछु इन मैं नाहीं। संत मता बिधि औरै राही॥
ये कढ़ाव बिधि कर्म पसारा। वाह गुरू इन बिधि से न्यारा॥
ये तो याह गुरू जग नाता। वाह गुरू बिधि औरहि बाता॥
याहि गुरू ने कढ़ाव बखाना। वाह गुरू मत संतन जाना॥
याहि गुरू चेला बिधि राही। पौड़ी चेला दीन्ह सुनाई॥
पौड़ी पढ़ पढ़ जन्म गँवाया। पौड़ी का कछु भेद न पाया॥
पौड़ी का कछु अरथ बिचारै। पौड़ी चढ़ि तब अगम निहारै॥
पौड़ी नाम सीढ़ी सहदानी। सूरत चढ़ी अगम घर जानी॥
पौड़ी चढ़ै तब गुरुवा पावे। वा गुरु सुरति कंज मैं लावे॥
पौड़ी पढ़ि पढ़ि जनम गँवावा। बावे पौड़ी सुरति चढ़ावा॥
येहि बिधि स्वामी बूझ मैं आई। तुम ने कही सो सत्त समाई॥
बावे गूढ़ गुप्त मत भाखी। तुम ने कही सूझि तब आँखी॥
हम पौड़ी पढ़ने बिधि जाना। तुम ने पौड़ी चढ़न बखाना॥
तुम्हरा बचन सत्त कर माना। पलकराम के हृदे समाना॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम पुनि हौ तुम साधा। बूझी बावे बचन समाधा ॥
अस कोइ साध बिबेकी होई। संत मते को बूझै सोई ॥
संतन की जो बानी बिबेका। सोई साध को मिटि है धोका ॥
संत मते की राह नियारी। पलकराम तुम खूब बिचारी ॥
जो कोइ संत सरन मैं आवै। दीन होइ संतन सिर नावै ॥
आपा पंथ भेष नहिं राखै। दृढ़ कर सत्त सत्त मत भाखै ॥
संत बिना और टेक न मानै। पंथ टेक सब झूठी जानै ॥
पंथा पंथी भेष भुलाना। ता से संत मता नहिं जाना ॥
संत सरन पापी तरि जाई। जो निंदक आवै सरनाई ॥
बिना संत नहिं लगै ठिकाना। यह बिधि बावे कही बखाना ॥
निंदक संत पातकी भारा। बावे कही न उतरै पारा ॥
जो कोइ सत्त संत को जाना। ता की सूरति मिलै ठिकाना ॥
बिना संत सूरति कहँ जाई। बिना संत संध कौन लखाई ॥

॥ पलकराम उबाच ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम तुलसी कही, समझि लखी बिधि खूब।
रोम रोम मैं रमि रहा, नानक साह महबूब ॥१॥
सब मैं नानक रमि रहा, कही बावे मुख आप।
चर और अचर बताइया, दूजा लखै सो पाप ॥२॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

नानक कही पुकार, पलकराम बिधि ग्रंथ मैं।
मैं बसूँ सब के माहिं, नानक यह मुख से कही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ बिधि रीती। पंथ भेष सब करैं अनीती ॥
कहि नानक मैं सब के माहीं। ये चेला करै कौने राही ॥

नानक बिना कोई जिव नाहीं। ये चेला कस करै बनाई ॥
जहँ नानक खुद आप बिराजा। सेवक कहै कौन बिधि साजा ॥
सब मैं नानक आप समाना। तौ पुनि सभी गुरू सम जाना ॥
ये बिधि या को बूझि बिचारा। जब होइ है जग से निरवारा ॥
नानक सब मैं आप बखाना। तुम ने जेहि सेवक करि ठाना ॥
ये तौ बड़ी अनीती जानौ। नानक को सेवक कर मानौ ॥
पंथ भेष याही मैं भूला। ये तौ कर्म भेद बिधि मूला ॥
सब मैं स्वामी संत बतावा। तुम स्वामी के स्वामि कहावा ॥
तुम निस्तार राह नहिं पाई। स्वामी को सेवक ठहराई ॥
सेवक होइ नन्हाँ रहै[१] भाई। स्वामी पद को दूर बहाई ॥
मोटे भये बहे जग माहीं। नन्हैं नौका पार लगाईं ॥
चीनी[१] बारू माहिं गिराई। हाथी मोटे हाथ न आई ॥
नन्हीं चींटी चुनि चुनि खाई। नन्हाँ रहै हाथ कछु आई ॥
अब बावे मुख साखि बताऊँ। एक साखि मुख भाखि सुनाऊँ ॥

॥ साखी ॥

नानक नन्हाँ होइ रहै, जैसे नन्हीं दूब।
बड़ी घास जरि जायगी, दूब खूब की खूब ॥

॥ चौपाई ॥

गुरू बने नहिं होइ गुजारा। चेला बनै मिलै कछु सारा ॥
अब दादू की साखि बताऊँ। दादू कही सोई बिधि गाऊँ ॥

॥ साखी ॥

दादू मैं सब गुरु किया, पसु पंछी बनराय।
सुछम थूल[२] खाली नहीं, सबही माहिं खुदाय ॥१॥
तुलसी तू मैं जो तजै, भजै दीन गति जोइ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥२॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं "नन्हाँ रहै" की जगह "निहारै" और "चीनी" की जगह "चींटी" अशुद्ध जान पड़ता है। (२) सूक्ष्म और स्थूल।

॥ चौपाई ॥

तुलसी तत मत सब के माहीं। गुरू बने कछु हाथ न आईं ॥
येहि बिधि सब सब संत पुकारा। चेला बनै होइ निरवारा ॥
तुलसी मैं अति नीच निकामा। मैं गुरु बिन कछु नाहिं बखाना
मैं किंकर संतन कर दासा। सतसंगति मैं सुना बिलासा ॥
अस अस संत सबन मिलि गाईं। दास बने जिन जिन कछु पाई
तुलसी ता से पंथ न कीन्हा। भेष जगत भया पंथ अधीना ॥
जो कछु संत पंथ बिधि गावा। सो बिधि पंथ कोऊ नहिं पावा ॥
तुलसी मैं कछु जानौं नाहीं। पलकराम तुम्हरी सरनाईं ॥
मैं हौं संत चरन की लारा। बन्दौं चरनन बारम्बारा ॥
संत बिना कोउ देखि न आना। सत सत सुरति संत को माना ॥
मोरे इष्ट भाव नहिं दूजा। संत समान और नहिं पूजा ॥
तुलसी और इष्ट नहिं सूझै। सुरति संत चरन पर जूझै ॥
जो कोइ कहै कह्यौ कस गाईं। मैं तो संत चरन सरनाईं ॥
नानक कही येही बिधि बानी। संत चरन बिन और न मानी ॥
सुखमनि संत चरन बिधि गाईं। देखौ नानक ग्रंथ मँझाईं ॥
और और जो संत अनेका। जिन सब राखि संत पद टेका॥
जे महातमा भये अगारा। संत सरन सब सबी पुकारा ॥
संत से अधिक कोऊ नहिं राखा। देखौ सब संतन की साखा ॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सब सब तरे, बिना संत नहिं अंत।
जा को संत लखाइया, पुनि तिन पायौ पंथ ॥१॥
देखौ आदि अनादि से, बेद न पावै पार।
तिरदेवा जोगी जती, सब कहै संत अगार ॥२॥
संत लखी कोउ ना लखै, अगम रीति रस सार।
संत कृपा जेहि जेहि करैं, सो जन उतरै पार ॥३॥

॥ छंद ॥

संतन गति गाई अगम सुनाई । जिन जिन पाई पार भई ॥१॥
सब सब मिलि गावा महूँ सुनावा । अगम अथाहा आदि कही ॥२
देखौ निज बानी संत बखानी । जिन जिन जानी जानि लई ॥३॥
सतसंगति गाई भर्म छुटाई । संत सहाई राह दई ॥४॥
जग जीव न जानी अकथ कहानी । कोइ न मानी मार सही ॥५॥
कर्मन के मैले बहु रस पेले । कर कर चेले भार लई ॥६॥
मद मान पुजावै राह न पावै । चहुँ दिस धावै भर्म ग्रही ॥७॥
सत रीत न जानी संत बखानी । सुन सुन ज्ञानी कर्म रही ॥८॥
को भाखै लेखा सुनै न एका । बाँधे टेका भेख बहे ॥९॥
जड़ पाहन पूजै और न सूझै । बूझ न चेतन चित्त गहे ॥१०॥
सतसंग न जाना सुनै पुराना । मन बुधि बानी बाद बहे ॥११
तुलसी कहि गाई सत मत राही । जिन जिन पाई गाइ कहे ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

ये गति अगम अपार, संत सार गति कस लखै ।
सकै संत के साथ, पकै चरन चित मैं चखै ॥१॥
सतगुरु दीन दयाल, करि निहाल अगमन दये ।
रहै चरन बिधि चाल, गहि अकाल तुलसी किये ॥२॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम अस कही बिचारी । दरसन किये भये सुख भारी ॥
संत गती सुनि ग्रंथ बखानी । तस तस तुलसी महिमा जानी॥
अस कही पलक नैन भरि आये । हिरदे उमँगि दीन गति गाये ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम कहै बात, नैन उमँगि ढुरि ढुरि बहै ।
लहै स्वाँस पर स्वाँस, बहै नीर धारा सही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम बिधि ऐसी देखी । जैसे साधू बिरह बिबेकी ॥
सतसँग कीन्ह लीन मत माहीं । जस जस साध रीति सत चाही

॥ दोहा ॥

पलकराम मत दीन गति, तुलसी कही बिचार ।
साध लच्छ बिधि जस कहै, तस तस इन के लार ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

जो कढ़ाव बिधि भेद बतावा । सो तौ सब सादृष्ट दिखावा ॥
वाह गुरू बिधि कही बनाई । सो भी बूझ समझ में आई ॥
गोरख की तुम कही बखाना । सो भी सत्त सत्त बिधि जाना ॥
चौरासी सिध नौ नाथ बतावा । बावे साथ और बिधि गावा ॥
पौड़ी सीढ़ी बावे कहिया । या बिधि खूब खूब समझइया ॥
गुरु गोबिंद बिधि कही बखाना । सोभी साँच साँच कर माना ॥
दसवाँ महल कहा समझाई । सो भी बिधी सत्त दरसाई ॥
तुलसी स्वामी बूझौं बाता । ग्रंथ बिधी भाखौ बिख्याता ॥
बावे आदि ग्रन्थ कस भाखा । पौड़ी की बिधि कस कस राखा ॥
पचग्रन्थी सुखमनी बनाई । आसावार जपजी को गाई ॥
या कौ भेद कछु कहौ बुझाई । ग्रन्थ बिधी बावे कस गाई ॥
तुलसी स्वामी कहौ बिचारी । कहौ बखानि बावे बिधि सारी ॥
या कौ मो को भेद बतावौ । ग्रन्थ भाव बिधि बिधि दरसावौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ हो स्वामी । निज मोहिं जानौ दास समानी ॥
जो कछु बूझा बिधी बिधाना । सो ग्रन्थन बिधि कहूँ बखाना ॥
पिरथम आदि ग्रन्थ गति गाऊँ । ता का मता भेद दरसाऊँ ॥
आदि ग्रंथ बावे अस भाखी । ता में कही कहूँ सब साखी ॥
आदि ग्रन्थ कह्यौ या कौ नामा । आदि से बँधी ग्रन्थ जिव जाना ॥
जड़ चेतन जिव ग्रन्थ बँधानी । जब रचना बैराट बखानी ॥
आदि से जीव ग्रन्थ जड़ संगा । सो कहै आदि ग्रन्थ रस रंगा ॥

आदि ग्रन्थ जड़ चेतन माहीं । ता को आदि ग्रंथ बतलाई ॥
अस बावे मुख भाखी बानी । जड़ चेतन की गाँठि बँधानी ॥
अब पुनि पाँच ग्रंथ बिधि भाखा। सब बिस्तार कहूँ बिधि ता का॥
यह बैराट पाँच तत माहीं । पाँच तत्त तन बिधी बनाई ॥
धरती पवन गगन और नीरा । अगिनि पाँच मिलि रच्यौ सरीरा॥
पाँच तत्त मिलि ग्रन्थि बँधानी। पचग्रन्थी जेहि नाम बखानी ॥
पाँच तत्त जड़ चेतन संगा । पञ्चग्रन्थी मेँ ये रस रंगा ॥
ये बिधि बावे करी बखाना । बूझैंगे कोई संत सुजाना ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा । संत मता पुनि ता के पारा ॥
पिंड ब्रह्मंड हता नहिँ भाई । जब की भाखौं साखि सुनाई ॥
जीवत निरखि नैन से देखा । मता संत का अगम अलेखा ॥
अब आसा के वार बताऊँ । ता की बिधी भेद समझाऊँ ॥
पाँच ग्रंथि जड़ चेतन आवा । ता को आसा वार बतावा ॥
आसा वार बँधा जग माहीं । आसा पार की सुधि बिसराई॥
आसा पार की राह भुलाना । आसा वार कर्म लिपटाना ॥
ता से आसा वार बतावा । आसा पार का मरम न पावा ॥
तब से जीव भयौ संसारी । आसा पार सुधि नाहिँ सम्हारी
यह बिधि तत्त ग्रंथ जेहि माहीं । आसा वार बिधी यों गाई ॥
यह बिधि सतसंगति से पावै । मिलै संत बिधि सब दरसावै ॥
बिना संत किरपा नहिँ पावै । मिलै संत बिधि सबै लखावै ॥
यह सुखमनी बिधी बिधि गाया । जो जो बावे ग्रन्थ बुझाया ॥
इड़ा पिंगला सुखमन माहीं । स्वाँसा पवन चढ़ै तेहि राही ॥
पाँचौ मुद्रा साधै जोगी । इंद्री जीत छाँड़ै रस भोगी ॥
मुद्रा पाँच बिधी बिधि साधै । सुखमनि मुद्रा धरै समाधै ॥
न्यारा न्यारा नाम बताऊँ । पाँचौ मुद्रा पुनि दरसाऊँ ॥
खेचरि भूचरि साधै सोई । और अगोचरि उनमुनि जोई॥

उनमुनि बसै अकास के माहीं। जोगी बास करै तेहि ठाहीं ॥
ये जोगी मति कहा पसारा। संत मता पुनि इन से न्यारा ॥
जोगी पाँचौ मुद्रा साधै। इड़ा पिंगला सुखमनि बाँधै ॥
सुखमनि घाट सुख मनी बताई। मानसरोवर आगे पाई ॥
जोगी मानसरोवर राखा। बावे अम्मरसर तेहि भाखा ॥
जो पंजाब अमरसर गाया। सो बावे ने नहीं बताया ॥
अम्मरसर है अगम के माहीं। न्हात अमर होइ संत बताई ॥
करि असनान अमरसर माहीं। अमर होइ बावे अस गाई ॥
तुम तलाव मैं निस दिन न्हावा। अमर भया कोउ नजर न आवा
नित नित जीव अनेकन न्हावै। गृस्थ फकीर जगत सब जावै ॥
देखौ अमर एक नहिं भइया। न्हाइ न्हाइ सब जनम गँवइया॥
अम्मरसर असनान को पावै। चढ़ि असमान अमर होइ जावै
बावे गगन अमरसर गावै। करि असनान अमर पद पावै ॥
जो जो गये अमरसर माहीं। ता का आवागवन नसाई ॥
ये अम्मरसर पिरथी माहीं। पानी पैठि पैठि सब न्हाई ॥
जीव साध कोइ अमर न पाई। न्हाइ न्हाइ सब बैस बिताई ॥
जीवत अमर न मूए जावै। नित नित पैठि अमरसर न्हावै॥
ये तो अमरसर पानी भाई। वो अम्मरसर गगन समाई ॥
सूरति चढ़ै गगन मैं न्हाई। वो अम्मरसर बावे गाई ॥
और संत बरनन जो कीन्हा। कहि तेहि मानसरोवर चीन्हा॥
अम्मरसर करि कहेउ बखानी। मानसरोवर तेहि को जानी॥
करि असनान हंस होइ जाई। हंस होइ पुनि घर को पाई ॥
चौथा पद हंसा सोइ पावै। जीवत वाह गुरू मिलि जावै ॥
वाह गुरू चौथे पद पारा। सो चेला वाह गुरू निहारा ॥
जब लगि वाह गुरू नहिं पावै। तब लगि निगुरा जीव कहावै ॥
मानसरोवर संत बखाना। बावे अम्मरसर कहि माना ॥

सुखमनि घाट अमरसर पाई । ये बावे बिधि ग्रन्थन गाई ॥
ये जिव जप परमारथ पावै । अमरसर को सुरति चढ़ावै ॥
जप परमारथ बावे गावा । जब जिव चढ़ै गगन पर धावा ॥
जपजी को परमारथ याही । सूरति सुखमनि घाट अन्हाई ॥
सूरति जपै परे रित माहीं । जपजी को परमारथ याही ॥
सुखमनि बावे सुरति चढ़ाई । सो जपजी परमारथ गाई ॥
पढ़े गुने कछु हाथ न आवा । पढ़ पढ़ बादै जनम गँवावा ॥
सुखमनि मारग संत के पासा । सुरति संत लख चढ़ै अकासा ॥
या को भेद संत से पावै । जो वे मिलैं घाट बतलावैं ॥
सुखमनि राह संत नित जावैं । परमारथ जप राह लखावैं ॥
ये बिधि भेष पंथ मैं नाहीं । भाखै जाति पंथ बिधि राही ॥
जैसे जगत जाति को माना । तैसे पंथी जाति बखाना ॥
पलकराम सुनियौ चित लाई । ये बिधि बावे सत्त लखाई ॥
तुम तौ पड़े पंथ के माहीं । जाति पाँति लेखे की राही ॥
पंथ राह कछु अगम कहाई । पंथ अगम बिधि बावे गाई ॥
सूरति बावे पंथ लखावा । सूरति चढ़ी गगन पर धावा ॥
गगन पंथ मारग को पावै । ता को संत पंथ मत गावै ॥
जाति पंथ मैं ये बिधि नाहीं । संत अजाति जाति नहिं जाही ॥
संत अजाति जाति नहिं मानैं । पंथ जाति बिधि एक न जानैं ॥
भेष जाति पंथी के माहीं । संत अजाति अगम घर जाई ॥
अगम पंथ चढ़ि अगम बतावा । अनुभौ भई संत गति गावा ॥
पलकराम बिधि समझ बिचारा । भेष पंथ से भेद नियारा ॥
पंथी जात जगत ब्यौहारा । या से कधी न उतरै पारा ॥
कर कढ़ाव हलुवा बनवावा । ता मैं से छै भाग कढ़ावा ॥
एक भाग गुरु पानी राखा । गुरु दरियाव ताहि को भाखा ॥
ऐसे अंध अचेत अबूझा । गुरु दरिया पानी मैं सूझा ॥

गुरु दरियाव राह नहिँ जाना। हलुवा पानी डार बखाना ॥
ये बावे नहिँ कही बिधाना। गुरु दरिया पानी मेँ जाना ॥
गुरु का दर दरवाजा भाई। ता को गुरु दरियाव बताई ॥
गुरु दर दरवाजा जो पावै। सुखमनि घाट अमरसर न्हावै ॥
गुरु के दर दरवाजे माहीँ। चढ़ै सो गगन अगम घर जाई ॥
जग गुरु दर दरियाव न चीन्हा। हलुवा पानी डार जो दीन्हा ॥
वाह गुरू पानी मेँ जाना। जा को हलुवा चढ़न बखाना ॥
ऐसे बुद्धि हुई जम काला। हलुवा ले पानी मेँ डाला ॥
वाह गुरू दरियाव न पावै। बिना संत कहो को दरसावै ॥
बावे पानी गुरू न भाखी। देखौ दृष्टि ग्रन्थ मेँ साखी ॥
बावे कही राह सोइ छूटी। पोल पोल सगरा जग लूटी ॥
इक वट डंड बाँस को पूजा। देखौ जड़ सँग लगे अबूझा ॥
चेतन ब्रह्म कहै सब माहीं। झंडा जड़ हलुवा कहु खाई ॥
अस अस भूल भर्म बस बूड़ा। संत मता कस मिलै अगूढ़ा ॥
नानक की जो बानी बूझै। तौ तुलसी सगरा मत सूझै ॥
आप डूब और जगत डुबावा। आदि अंत का मरम न पावा ॥
अस अस अंध धुंध का लेखा। बावे बचन नहीं कोइ पेखा ॥
तुलसी कहै नीच गति मोरी। सरनै पलकराम मैँ तोरी ॥
मोरी कहनि अबूझ न मानो। मैं तुम्हरे चरनन लपटानो ॥
मैँ किंकर संतन कर दासा। संत चरन बिन मोर न आसा ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम सुन ज्ञान, कहूँ बयान समझाइ कै।
संतन करी बखान, सो बिधि बिधि तुम से कहूँ ॥

॥ चौपाई ॥

सब्द ग्रंथ सुन भाखि सुनाऊँ। संतन मुख बानी समझाऊँ ॥
मन की लहर कहर को बूझै। जा को संत मता मत सूझै ॥

सब्द साखि मैं कीन्ह बखाना। बूझै सज्जन समझ समाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत सुजान, जानि समझि सुलटी कही ।
ये जग जान अयान, बिन समझे उलटी लगै ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक सब्द सुनाऊँ । ता मैं सब्र बरतंत बुझाऊँ ॥
रमक रेखते मैं बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥

॥ रेख़ता ॥

अली इक बात सुन सुलटी । बिना समझे लगै उलटी ॥१॥
कही सब संत ने बोली । गूढ़ मत गुप्त नहिं खोली ॥२॥
सुरत मन बुद्धि नहिं जावै । लखन मैं कौन बिधि आवै ॥३॥
अरी नहिं बेद ने जाना । कहत कर नेत गोहराना ॥४॥
जुगत जोगी नहीं जानी । ज्ञान नहिं ध्यान बिज्ञानी ॥५॥
जगत और भेष नहिं जानै । पढ़े पंडित्त भरमानै ॥६॥
सकल तिरलोक लौं गावै । निरंजन जोति ठहरावै ॥७॥
अगम रस राह नहिं सूझै । संत मत कौन बिधि बूझै ॥८॥
अस्त रबि होत अँधियारा । हिये तम रूप मैं सारा ॥९॥
मिलै गुरु गैल बतलावै । तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥
लखै तब संत के बैना । सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥
तरक ताली खुलै ताला । निरखि तहँ होत उँजियाला ॥१२॥
अधर घर सुरति चढ़ धावै । अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥
सुरति जब उलट कर बूझा । उलट सब सुलट कर सूझा ॥१४॥
तुलसी तन बीच मैं हेरा । सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥
कहनि कछु और बिधि गावै । उलट की सुलट कर भावै ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी समझ बूझ मन लावै । तब उलटी सुलटी कर भावै ॥
बिन सतसंग बिबेक न होई । संत बिना सूझै नहिं सोई ॥

झंडा तन बिच बीच बिचारा । गुरु दरियाव गगन के पारा ॥
अम्मरसर मैं पैठि अन्हाई । सो जिव सहज अमर होइ जाई ॥
सो संतन ने नभ पर जोवा । तुम तलाव पानी तन धोवा ॥
वा का सतगुरु से लछ पावै । दीन दया सोइ भेद बतावै ॥
बेद मता संतन सम जानै । ऐसो मूरख बुद्धि बखानै ॥
संत अंत बेदन नहिं जाना । देखो सुखमनि बावे बखाना ॥
बेद मता जो मूढ़ ठहरावै । संत का मता गूढ़ नहिं पावै ॥
या का सब्द साखि बतलाऊँ । पलकराम तोहि भाखि सुनाऊँ ॥

॥ सोरठा ॥

संत मता भै। पार, बेद त्रिधी जानै नहीं ।
सतगुरु सब्द अपार, भेष भेद जग भर्म मैं ॥

॥ रेख़ता ॥

बेद मत मूढ़ ठहरावै । संत मत गूढ़ नहिं पावै ॥१॥
पड़े भ्रम जाल के मूला । बेद बस कर्म के सूला ॥२॥
करै अली इष्ट मन रचि कै । मुए भ्रम भाव सब पचि कै ॥३॥
जिवत कोइ दरस ना पावै । मुए पर मुक्ति गोहरावै ॥४॥
अली ये जगत सब अंधा । पड़ा बस काल के फंदा ॥५॥
कहनि नहिं संत की भावै । बाट कहो कैान बिधि पावै ॥६॥
भूल जुग चारि से आई । खानि बस मैल मन माहीं ॥७॥
भटक नर देह अब आया । ज्ञान चित चीन्ह घर पाया ॥८॥
गहे सत संत के चरना । निकरि भैासिंध से तरना ॥९॥
समझि लखि जीव कैा काजा । मरे सब जगत की लाजा ॥१०॥
तुलसी तन छूटि जब जावै । बहुरि नर देह नहिं पावै ॥११॥
पाहन और इष्ट पानी का । झूठ भ्रम खानि जाने का ॥१२॥
निकरि निरवार नहिं पावै । समझ सतसंग से आवै ॥१३॥
जगत दिन चारि का सँग है । भीख भैाखानि मैं मँगिहै ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

ये तन रतन समान, बार बार पावै नहीं ।
सतगुरु करत बखान, सुपन जानि जग पेखना ॥

॥ चौपाई ॥

जग दिन चार लार के संगी । फिर भौ खानि भीख भौ मंगी ॥
ऐसा या जग का ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
संत सब्द उलटा करि गाई । समझ बूझ मन काहू न पाई ॥
पलकराम सुन सुलटी बानी । कोऊ सुलटि समझ नहिं जानी
कह संबाद सेठ परसंगा । ये बूझौ सब अपने अंगा ॥
जेहि बिधि राह रेखता कीन्हा । या को आनौ समझ यकीना ॥
उलटी चाल संत की बोली । बिन परचे को परदा खोली ॥
अस उलटी उन कही अगूढ़ा । पंडित भेष न जानै मूढ़ा ॥
पलकराम नहिं ग्रन्थन माहीं । पचि पचि मरे खोज नहिं पाई॥
सुनौ सेठ की कथा सुनाऊँ । ता की बिधि बरतंत लखाऊँ ॥
सेठ रीति से बीती न्यारी । जगत भाव बरतंत बिचारी ॥
पलकराम सुन सेठ सँबादा । वा पर भई जगत से ज्यादा ॥
अब रस रीति रेखता गाऊँ । पलकराम तोहि बरन सुनाऊँ ॥

॥ रेख़ता ॥

सखी सुन सेठ संबादा । भई जग रीति से ज्यादा ॥१॥
गुइयाँ सुन बात परसंगा । भये जग मान से भंगा ॥२॥
अली सुन साह पर बीती । कहूँ क्या बात अनरीती ॥३॥
कँवलपुर नगर के बासी । पुत्र गये तीर्थ को कासी ॥४॥
सेठ घर नारि और पुत्री । रहै मन चित्त से उतरी ॥५॥
चले दोउ जहाज समुँदर मैं । बहुत धन माल सुन घर मैं ॥६॥
सुनौ एक दिवस की बाता । कहूँ बरतंत बिख्याता ॥७॥
नारि ने यार इक कीन्हा । पुत्री नर इस्क मैं लीना ॥८॥
कहूँ क्या बात इक दिन की । कर्म भौ भाग मैं जिन की ॥९॥

दिवस इक सेठ ने चीन्हा । पकर वोहि यार को लीन्हा ॥१०॥
भया इन तीन मैं झगड़ा । लड़की लगवार को पकड़ा ॥११॥
सखी भये सेठ ऊदासी । कही दोउ जाउ तीर्थ कासी ॥१२॥
सेठ कहै बात सेठानी । मरम मारग मनै जानी ॥१३॥
बेटी बिधि और तुम संगा । करौ जग जाइ रस रंगा ॥१४॥
नहीं घर मैं रहन पावौ । निकरि कासी नगर जावौ ॥१५॥
गुसा सुन नारि उठि बैठी । चली सँग माय और बेटी ॥१६॥
गुसा बिच निकरि कर घर से । मिले कहै नारि नहिं बरसे ॥१७॥
बीच इक नगर मुलताना । रही बस राति को जाना ॥१८॥
फजर उठि रैन की जागी । चलन दर मँजल को लागी ॥१९॥
बाट बिच सहर आनूपा । राइ बलवान सुन भूपा ॥२०॥
सुवर सीकार को निकरे । कुँवर मद मान मैं जकरे ॥२१॥
दोऊ सँग डगर के माहीं । नारि दोउ नजर मैं आईं ॥२२॥
रहै बरसात का महिना । लखे पग पाँव के चीन्हा ॥२३॥
सुनौ उस भूप की बाता । बिधी बिधि बात बिख्याता ॥२४॥
कहे नृप राइ ने बैना । पुत्र सुन बात की सैना ॥२५॥
पाँव के चिन्ह चित लावो । ताहि पर दृष्टि ठहरावौ ॥२६॥
बड़े बिधि पाँव की नारी । मिलै सोइ नारि हम्मारी ॥२७॥
चलै सोइ चाल पग छोटी । हिये मन पुत्र के चोटी ॥२८॥
सुनौ इक बात अचरज की । कहूँ बरततं सुन इस की ॥२९॥
बड़ी रही डील मैं बेटी । माय तन डील मैं हेठी ॥३०॥
भूप ने लीन्ह बेटी को । कुँवर लई माय हेठी को ॥३१॥
गये घर सहर महलौं मैं । करैं रस केल फेलौं मैं ॥३२॥
भूप घर पुत्र नारी का । कहूँ बिधि भेद सारी का ॥३३॥
नानी खुस खेल बालक को । खुसी होइ कहत मालिक को ॥३४॥
मौज मैं बात इक आई । कहूँ बरतंत मन भाई ॥३५॥

बेटी सुत पुत्र है नाती । लगे दिल देवर इक भाँती ॥३६॥
कुँवर भइया भाव भाखा । नारी कहै नात नाती का ॥३७॥
दोऊ मेँ झटक झटकारा । करै कोइ संत निरवारा ॥३८॥
तुलसी ये भेद को जानी । सोई है साध परमानी ॥३९॥
बात बिधि अगम को बूझै । हिये की दृष्टि से सूझै ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पलकराम यह सेठ की, बूझौ बिधि बरतंत ।
सेठ सेठानी पुत्र को, समझैँगे कोइ संत ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस मता संत सब गाया । भेष गुरू कोइ भेद न पाया ॥
वाह गुरू बावे समझाऊँ । सोई सतगुरु संध दरसाऊँ ॥
जस जस संत अगम गति गाई । लखि लखि पिया रूप दरसाई ॥
निरखा घाट बाट मध माहीं । सो बसंत मेँ समझि सुनाई ॥
हद अनहद के पार ठिकाना । लखि अरूप पुनि रूप बखाना ॥

॥ बसंत ॥

लखि लखि लखिया पिय को रूप । जहँ अनहद बाजा बजै अनूप ॥टेक॥
बिजली चमकै अति अपार । गगन घोर नहिँ वार पार ।
मन मतंग जहँ सुनत भूप । इंद्री सँग तजि रहै चूप ॥१॥
मानसरोवर हंस घाट । ले चढ़ि लागी अगम बाट ।
अरध उरध मुख औँध कूप । चाँद सुरज नहिँ छाँह घूप ॥२॥
सूरति सुनि सतगुरु के बैन । निरखत हरखै हिये के नैन ।
अरध पंथ इक गली है गूप । जहँ इक साहिब अति अनूप ॥३॥
कोट भान छबि रोम तेज । तीन लोक कोइ पड़ै न पैज ।
तुलसी निरखि नित अज[१] अरूप । चढ़ि सूरति गइ पछिम पुहुप ॥४॥

॥ सोरठा ॥

रूप रेख नहिँ भेष, सो अरूप अंदर लखा ।
संत चरन पद पेख, देखा हिये दृग नैन से ॥

---

(१) अज = अजन्मा । मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "अजब" अशुद्ध है ।

॥ चौपाई ॥

लख लख लख पिया जानि बखाना। हद अनहद के पार ठिकाना ॥
अलख खलक दोऊ से न्यारा। पलकराम अस अगम अपारा ॥
जिन सतसंग कीन्ह तिन जाना। बिना संग नहिं समझ समाना॥
पलकराम मैं पल पल वारी। तुलसी तुम्हरा दास बिचारी ॥
बार बार चरनन सिर नाऊँ। सरन जानि कीजै निरबाहू ॥
मैं अजान कछु जानौं न भेवा। तन मन चरन संत की सेवा ॥
भाखा ज्ञान अबूझ न मानौ। मैं तुम्हरे चरनन कौ जानौं ॥
जो जो बावे करी बखाना। ता की बिधि मत कहेउँ बिधाना ॥
जो बिधि बावे कही बनाई। सो बिधि मैं तुम कान सुनाई ॥
पलकराम यह भूल बताओ। मन मैं निंदा समझ न लाओ ॥
निंदा संत करै कोइ नाहीं। निंदा चौरासी ले जाई ॥
तत नानक कही भाखि बखाना। सो तुलसी ने कही बिधाना॥
बावे पाहन नाहिं पुजावा। तुम सिष को पाहन बतलावा॥
पाहन पूजा साध न गावैं। और जीव को नाहिं बतावैं ॥
साधू चेतन आतम भाखा। चेतन की पूजा बिधि राखा ॥
तुम सिष जड़ पूजा बतलावा। पाहन आसा बास लखावा ॥
छूटै तन पाहन मन जावे। आसा जहँ जेहि तहाँ समावै ॥
पुनि पाहन मैं होइहै बासा। अस अस सिष्य बँधाई आसा ॥
गुरु गोबिंद ग्रंथ गति गावा। ता मैं बिधी सब्द बतलावा ॥
सुनौ सब्द मैं भाखि सुनाऊँ। गुरु गोबिंद बानी मुख गाऊँ ॥
पूजा पाहन नहीं बताई। देखौ गोबिंद ग्रन्थ मँझाई ॥
देखौ ग्रन्थ मैं या की साखी। एक सब्द तुलसी कहि भाखी ॥

॥ सवैया ॥

काहू ने पूजि धरी सिर पाहन, काहू ने लिंग गरे लटकायौ ॥१॥
काहू बुतान[1] को पूजत है पसु, काहू मृतान[2] को पूजन धायौ॥२॥

---

(१) बुत=मूर्त्ति। (२) मुर्दों।

कूर क्रिया उरझौ सबही जग, वाहगुरू को भेद न पायौ ॥३॥
आदि गिरंथ को भूल गये सब, नानक बानी चित्त न लायौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

येहि बिधि गोबिंद ग्रन्थ लखाई । देखौ सब्द ग्रन्थ के माहीं ॥
औरौ सुनौ भूल इक गाऊँ । गुरु गोबिंद की साखि बताऊँ ॥
गुरु गोबिंद मुख अपने गावा । ग्रन्थ बिधी मैं देखि बुझावा ॥
कृष्न राम भगवान जो भाखा । नहीं काल ने उन को राखा ॥
गुरु गोबिंद ग्रन्थ मैं गावा । भये भगवान काल ने खावा ॥

॥ सवैया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है ॥१॥
कालै खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, कालै खाइ गयौ जोगिया है ॥२॥
कालै खाइ सुरासुर गंधर्ब, जच्छ भुजंग दिसा बिदिसा है ॥३॥
इंद्र मुनिंद्र सबै बस काल, इक नानक संत अकाल सदा है ॥४॥

॥ चौपाई ॥

सब्द साखि इक ग्रन्थ बतावा । नानक राम रहीम न गावा ॥
राम रहीम बेद नहिं माना । गुरु गोबिंद मत और बखाना ॥
ता की सब्द साखि सुनि लीजै । गुरु गोबिंद कही सो कीजै ॥

॥ सवैया ॥

पाँव गहे जब तैं तुम्हरे, तब तैं कोउ आँखि तरे नहिं आन्यौ ॥१॥
राम रहीम कुरान पुरान, अनेक कहे मत एक न मान्यौ ॥२॥
सिम्रित सास्तर बेद कह्यौ, बहु भेद कह्यौ हम एक न जान्यौ ॥३॥
कहै नानक किरपा तुम्हरी कर, मैं न कह्यौ सब तोहि बखान्यौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

नानक ग्रन्थ मता अस गावा । तुम्हरा ग्रन्थ साखि बतलावा ॥
तुम्हरे भेष पंथ के माहीं । ग्रन्थ बिधी कोउ बूझै नाहीं ॥
बावे कही सो नहिं तुम मानी । तुम ने अपना मनमत ठानी ॥
कही भगवान काल ने खाया । बावे ग्रन्थ मैं येहि बिधि माया ॥

तुम भगवान सत्त बतलावा । बावे सब्द असत्त लखावा ॥
राम राम सब सिष्य सिखावा । बावे सब्द काल सब गावा ॥
राम रहीम सब्द सब तोड़े । बावे पानी मैं सब मोड़े ॥
अपने घर बाबे की बानी । सब्द कही तुम एक न मानी ॥
बावे राम रहीम उठाये । तुम कहौ इष्ट कौन बिधि लाये ॥
नानक सब्द मैं दिये उठाई । और कहै निंदक बतलाई ॥
पिरथम नानक सब्द बिचारौ । निंदक भाव और पर डारौ ॥
नानक राम रहीम उठावा । ता को निंदक नहिं ठहरावा ॥
और जो कहै सत्त की बानी । ता को निंदक कर कर मानी ॥
ये तौ नानक सब्द पुकारे । राम रहीम काल बस डारे ॥
नानक पंथी जाकर नामा । नानक कही चले परमाना ॥
नानक कही बिधी नहिं मानै । सब्द ग्रन्थ की साखि न जानै ॥
राम साखि बावे नहिं माना । राम रहीम बेद नहिं जाना ॥
ये तुम्हरे मति बावे गाई । ता को छाड़ि और मति धाई ॥
अपने गुरु मति राह बिचारौ । बावे कही सोई मति धारौ ॥
अब कहूँ एक बिधी बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥
साध दया आतम बिधि जानै । आतम कष्ट बहुत दुख मानै ॥
साध दयाल दया अस गावैं । आतम दया बहुत बिधि लावैं ॥
ऐसे ग्रन्थ संत सब गावैं । बावे को दयाहीन न भावै ॥
दयाहीन बहुतै अधमाई । आतम हतै सो काल कसाई ॥
देखौ संत मते मैं रीती । आतम हत सब कही अनीती ॥
पलकराम ये कैसी रीती । साहिबजादे करैं अनीती ॥
लड़की[1] मारि करैं अजगूता । यह हत्या आतम होइ भूना ॥

(१) पंजाब मैं आम तौर पर और ख़ास कर जाटों मैं (जिस क़ौम के लोग सिक्खों मैं कसरत से हैं) भ्रून हत्या यानी दुख़्तर-कुशी का रिवाज बड़ी कसरत से था। मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "लड़की" के बदले हर जगह "बकरा" का शब्द रख दिया गया है।

यह तो आप आतमा नासा। छूटै नहीं भोग बिन बासा ॥
जो चेतन बसै लड़को माहीं। सो चेतन है अपने ठाहीं ॥
लड़की देँह दृष्टि करि देखी। ता मैं अदृष्टि ताहि नहिं पेखी ॥
साधू देँह दृष्टि नहिं मानै। बोलै अदृष्टि ताहि पहिचानै ॥
देँही दृष्टि जगत की रीती। साधू देखै चेतन सेती ॥
ता को नास करौ तुम भाई। बावे यह बिधि कही अधमाई ॥
यह तुम पाप कीन्ह केहि काजा। साध दया मति आवै न लाजा ॥
ग्रन्थ माहिं देखौ तुम जाई। आतम हत्या साध न गाई ॥
या बिधि भूल करौ अजगूता। जम राजा बँधिहै मजबूता ॥
साखी बावे मति की जाना। पर-आतम हत नरक निदाना ॥
आज गृहस्थ लड़की जो मारै। ता को जगत अधम करि डारै ॥
साध बने यह कर्म बिचारौ। हिरदे दया नेक नहिं धारौ ॥
साधू चलै अनीती लारा। गृहस्थी डरै पाप के भारा ॥
औरौ सुनौ एक अधमाई। बिन बकरा मरे मास न आई ॥
बकरा मरै जीव दुख पावै। तब पुनि मास कसाई लावै ॥
आतम मरै कष्ट के माहीं। कसकै साधू देँह धुजाई ॥
ऐसे निष्ट साध जो खावैं। तिन को साधू काहि कहि गावैं ॥
दयाहीन इंद्री सुख भावै। जिभ्या रस मह्री बतलावै ॥
जो कोइ पूछै कस कस खाई। तुम ता कौ मह्री बतलाई ॥
जिवहत्या कछु नाहिं बिचारा। ऐसे साध अनीति अधारा ॥
करै स्वाद मह्री बतलावै। इंद्री स्वाद बिधी नहिं गावै ॥
मह्री तौ तब जानैं भाई। ढेला खेत उठावै खाई ॥
जब जिभ्या सुख चीन्ह न आवै। तब मह्री कहि सच करि गावै ॥
नोन मिरिच पुनि छौंकै जाई। पुनि तेहि करै स्वाद से खाई ॥
कोइ कोइ गृस्थ बिष्नु तेहि थूकै। धूजै देँह प्रान तेहि सूखै ॥
गृस्थ अनीती मानै नीके। मास खाइ तेहि संगति छेके ॥

ये साधन के कर्म निकामा । नरक परै छूटै जब जामा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । गृस्थ डरै तेहि साधन लइया ॥
दरस साध के कहँ पुनीता । करै साध ये कर्म अनीता ॥
बड़े साध येहि बिधि से गाये । यह अनीति सब संत बताये ॥
पलकराम बिधि समझौ भाई । कहिये साध कि कहिये कसाई ॥
ये बावे मुख नहीं बखाना । मन अपने सुख इंद्री खाना ॥
तुलसी मैं तौ सब कौ दासा । देखि देखि जिव भयौ उदासा ॥
ऐसी कहि कहि कहँ लग गाई । मता साध का कहूँ न पाई ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी भाखौ भेवा । साहिबजादे कर्म के लेवा ॥
यह बिधि संत मते मैं नाहीं । सत सत ये तौ कही गुसाँई ॥
कहौ तुलसी इन का निरवारा । ये भी कबहूँ लगिहैं पारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम तुम सुनियौ स्वामी । ये तौ परिहैं नर्क की खानी ॥
आतम नास मास जिन खाया । बकरा मारि करम मैं आया ॥
आतम नास कीन्ह तेहि खाया । अपनी इंद्री सुख मैं लाया ॥
इंद्री सुख भयौ आतम बैरा । जिन के भये नरक मैं डेरा ॥
ये तौ कधी न छूटैं भाई । ये बैराट लौटि जो जाई ॥
साध फकीर गृस्थ पुनि कोई । जिन जिन कीन्ह नर्क गये सोई ॥
बैर भाव छूटे नहिं भाई । गला काटि सोइ बंधन पाई ॥
या का सुन बरतंत सुनाऊँ । जा की चाल हाल दरसाऊँ ॥
रामायन मैं देखौ जाई । साखि समझ बिधि देउँ दिखाई
और पुरान जान जिन बूझा । हत्या पाप सबन कहँ सूझा ॥

॥ दोहा ॥

राम बान बाली हता, मारे सब जग जानि ।
पुनि पूरबले बैर से, भील भाल तन हानि ॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्न औतारी भाई । बाल भील होइ मारौ ताही ॥
पाँव पदम बिच मारेउ बाना । कृष्न बैर पुनि मरे निदाना ॥
ऐसे बैर न जैहै भाई । गला कटे बिन छूटि न पाई ॥
अब बावे मुख सब्द सुनाऊँ । नानक कही सोई समझाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
गल बिच छुरी चलाइया, तुझे दरद न आई ॥टेक॥
क्या बकरी क्या भेड़िया, क्या अपना जाया ।
सब का लोहू एक है, तुझै किन फुरमाया ॥ १ ॥
नानक लखि परचै भई, सब घट बिच प्यारा ।
सब जहान जिव एक है, घट माहिं निहारा ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

यह नानक बिधि भाखि सुनाई । अपने घर की समझ न आई ॥
नानक साहिब बड़े दयाला । जीव हतन ग्रन्थन नहिं डाला ॥
ये सब रीत स्वाद की लारी । स्वारथ जिभ्या पेट सँवारी ॥
कहिये दया संत की रीती । यह कस करी मुक्ति परतीती ॥
नित प्रति जीव कसाई मारै । हत्या कहि कहि संत पुकारै ॥
संत कसाई एकहि लेखा । या मैं ठहरा कौन बिबेका ॥
यह अन्धे अन्धे कर लेखा । आतम मारि न करै बिबेका ॥
अंध धुंध सब भेष भुलावा । सब्दन बिच नानक नहिं गावा ॥
कोइ बावे मुख साखि सुनावै । तौ तुलसी के मन मैं आवै ॥
हत्या भई मुक्ति की दाता । नानक पंथ भेष सब खाता ॥
सबही भेष भेड़ की रीती । अंधे अंध कर्म मन चीती ॥

अब या का परसंग सुनाऊँ । घूघर[1] जुत्थ बैठ इक ठाऊँ ॥
जग अँधरा जस घूघर लेखा । जो बिरले कोइ ज्ञान बिबेका ॥
ज्ञानवंत कोइ बूझि बिचारै । लख अनीति आतम नहिं मारै
घूघर अंध काग भये भेषा । नीचो बुद्धि कुबुधि कर लेखा ॥
घूघर दर दृष्टान्त बताऊँ । मंगल माहिं भेद दरसाऊँ ॥

॥ मंगल ॥

घूघर अंधे भेष टेक अभिमान मेँ ।
सूझै न सब मेँ ब्रह्म धुंध अज्ञान मेँ ॥१॥
घूघर नेतर खुलै सुनो सोइ साध है ।
देखा तन बिच भान सो ब्रह्म अगाध है ॥२॥
जाने भाखा भेद अंध वा को कहै ।
सब घूघर जिमि भेष टेक अपनी लहै ॥३॥
हंस सिरोमनि साध गगनगंगा बसै ।
काग कुबुद्धी भेष भर्म भो मेँ फँसै ॥४॥
वे का जानैं मर्म हंस केहि का कही ।
जस घूघर रवि अंध दिवस दीसै नहीं ॥५॥
सो सब अंधे भेष ब्रह्म बूझैं नहीं ।
तन बिच आतम जीव परख सूझै नहीं ॥६॥
मारत निकरै स्वाँस माँस सोइ खात हैं ।
सोइ साधू निज भेष नर्क मेँ जात हैं ॥७॥
गृस्थ रहैं जग माहिं मास मछरी भखैं ।
जुग जुग नरक निवास तासु पुरखा चखैं ॥८॥
ये कोइ भेदी भेद संत बतलावहीं ।
गगन गंग कर बास सो हंस सुनावहीं ॥९॥

---

(१) उल्लू ।

काग कुबुद्धी जीव न मन उनके बसै ।
छूटै नर्क निदान जान जम ना फँसै ॥१०॥
तुलसी बूझि बिचार चारि जुग से कहो ।
जो कोइ मानै अंत संत सरना सोई ॥११॥

॥ चैापाई ॥

संत सार सरना सोइ पावै । नीति अनीति नजर में आवै ॥
संत सरन बिन पंथ न सूझै । जीव हतन तन दया न बूझै ॥
जस घूघर दिन दिखै न भाई । अस जग भेष नैन अँधराई ॥
दृग्ग दिवस तेहि सूझि न आवै । राति परे चरने को जावै ॥
घूघर का परसंग सुनाऊँ । नीत अनीत भेद दरसाऊँ ॥
गूलर बृच्छ रहै कहुँ एका । ता पर घूघर बसैं अनेका ॥
आपस मैं चरचा भइ भाई । अपनी अपनी सब्न सुनाई ॥
बोले एक सुरज कहँ रहिया । ता कै कछु बिख्यान सुनइया ॥
ता मैं एक घूघर उठि बोला । दिन को सूरज उगै अतोला ॥
सब सुनि बात अचंभा कीन्हा । सुन कर कोउ न हुँकारी दीन्हा ॥
ये तो आज सुनी हम भाई । हम सब के यह मन नहिं श्राई ॥
वा को झूठा करि ठहराया । पूछा कहो कहाँ सुनि आया ॥
उन से कहा सुनौ परसंगा । समुँदर बीच मिली जहँ गंगा ॥
ता बिच धाम मोर अस्थाना । कई दिवस जहँ बीति सिराना ॥
एकै दिवस भया अस लेखा । हंसा सरवर आवत देखा ॥
समुँदर वार काग कहुँ आये । उन हंसन पर चोँच चलाये ॥
हंसा कही सुनौ रे कागा । मैला मन बुधि ज्ञान न जागा ॥
जग विच सूरज उगै जहाना । आँखि न सूझ अबूझ बखाना ॥
जस घूघर दर दिवस न सूझा । अस अँधरा हम तोहि को बूझा
अस अस बातैं भईं बनाई । सो मैं सुनी कान के माहीं ॥
डर कागा के रहूँ छिपाई । अस विधि सुनी सुनौ रे भाई ॥

यह सब के मन भया अचंभा । दिवस अंध मानौ जस खंभा ॥
दिवस दृगन से सूझै न सोई । बूझै कहा दिर्ग बिन जोई ॥
ऐसे अंध भया सब भेषा । सूझै न संत मते का लेखा ॥
गूढ़ बचन बानी उन केरी । वे का जानैं अंध निवेरी ॥
ग्रंथ सब्द बिन बूझ न आवै । मन जस चलै तेही दिस धावै ॥
खान पान बस भेष दुकाने । मन जग लूटत नाहिं डराने ॥
अस अस ज्ञान भया सब माहीं । योँ अस बूड़े भेष भुलाई ॥
जीव हतन ऐसी बिधि कीन्हा । कर कर पाप आप सिर लीन्हा॥
जीव हतन को दया न आई । ये साधू कोउ कहै न भाई ॥
ये सब नीच बुद्धि जग रीती । कोइ कोइ जाति न करै अनीती
जीव को मारि मास जो खाई । पुरखा तासु नरक मैं जाई ॥
अस अस जग मैं डरै बनाई । सो अस मास साध होइ खाई ॥
नानक ग्रंथ मैं नहीं बखाना । सब्द मास नहिं कीन्ह बिधाना ॥
सब साखी मैं देखौ लेखा । ये कस खाइ पंथ बिच भेषा ॥
आप खाइ और सबै सिखावै । कायथ या से सिष्य कहावै ॥
और खत्री सुन सिष्य सुनाई । मास खानि कीन्ही गुरुवाई ॥
ये गुरु सिष्य भाव अस लेखा । परै नरक दोउ घोर अलेखा ॥
सुनि साहिबजादों की रीती । लड़की मारि जो करैं अनीती ॥
कन्या पाप जगत मैं भारी । सो वे साधू करैं बिचारी ॥
अस अस पाप करम की जुगती । सो साधू नहिं पावै मुक्ती ॥
अस अस अधम काम जिन कीन्हा । जम ने बाँधा भये अधीना ॥
अस अस करम काम जो करिहै । धरि धरि काल जाल मैं डरिहै ॥
परे पारधी पंछिन माहीं । पकरि पकरि झोलिन मैं नाई ॥
पंछी पकरि पारधी लेखा । अस जम करै पकरि सब भेषा ॥
जे जे मास मीन जिन खाई । सोइ सोइ बाँधै काल कसाई ॥
या मैं नेक एक नहिं जानौ । बूझौ संत साखि सुन मानौ ॥

नानक और कबीर सुनाई । दादू दरिया सब ने गाई ॥
सब्द साखि बिच लेउ बिचारी । हत्या पाप नरक होइ भारी ॥
अस अस साधू सबहि पुकारै । ये मत नीच कीच की लारै ॥
ये पुरान मैं देखौ जाई । सास्तर सबै अनीति बताई ॥
जग मैं रीति अनीती जानै । सो साधन बिच साखि बखानै ॥
यहि बिधि संत मुक्ति गोहराई । मास खाइ भौ पार न जाई ॥
ये सब भेष टेक मन जानी । साखि सब्द बिच नाहिँ बखानी
सुन कर बूझै ज्ञान बिबेका । ये सब खान मान मद लेखा ॥
अपनी देखी करौ न भाई । नहिँ कोइ आगे साखि लखाई ॥
ये सब अंध धुंध कर लेखा । बूझै न ज्ञान पंथ कोइ भेषा ॥
संत दयाल दया निधि गावै । दयाहीन नहिँ साध कहावै ॥
जीव मारि जो करै बेहाला । वा को वोहि भया जम काला ॥
ये जिव हानि करै जो कोई । जिन ये कीन्ह नरक गये सोई ॥
या मैं कोई लाख बुझावै । नरक बास आसा तन पावै ॥
देखौ मता संत कर बावे । ये तौ नरक करम मैं जावे ॥
संत मते की राह नियारी । ये तौ भरम भाव जग सारी ॥
ये कहुँ संत मते मैं नाहीं । संतन का मति श्रौरै भाई ॥
पलकराम बूझो मन माहीं । संत मते की औरै राही ॥
संत मते का औरै लेखा । कोई भेष न किया बिबेका ॥
संतन सत सत कही बखाना । बिना बूझ निंदा कर जाना ॥
या से भाव भेद नहिँ पावै । बिना भेद निंदक ठहरावै ॥
जो बावे मुख कही लखाई । जैजैवंती मैं बिधि गाई ॥
जो कछु सुरति पंथ मति रीती । बावे बचन भाखि परतीती ॥
जैजैवंती मैं सब गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥

॥ जैजैवंती ॥

एरी दृग माहिँ तौ निरखि हिये माहीं, सूझा नहिँ नैन से ॥टेक॥
तुलसी कहि निरखि बिचारी, नानक ग्रंथन मति झारी ।
सारी बानी सब्द बताई, जाइ देखौ ग्रंथ में ॥१॥
पलकराम सतसँग पावा, बानी सतगुरु सब्द लखावा ।
पाया संत चरन सरनाई, तिन से बिधि जाइ कै ॥२॥
पंथी भेद बिधी नहिँ जानै, मति पंथी जाति बखानै ।
बावे पंथ सुरति गति गाई, पाये चढ़ि धाइ कै ॥३॥
सूरति कढ़ियाव बताई, परे साधन संघ चढ़ाई ।
वाह गुरू चौथे पद पाया, सब गाया संत ने ॥४॥
गोरख जो गुष्ट बताई, मन गोरख इंद्री माहीं ।
चौरासी सिध नौ नाथा, नाथे नौ द्वार में ॥५॥
नाथे नौ द्वारे माहीं, चौरासी नित नित जाई ।
दृग से साँई नहिँ देखा, लेखा येहि गुष्टि में ॥६॥
पौड़ी बिधि बावे गाई, सिढ़ी पौड़ी चढ़न बताई ।
तुम तौ बिधि पढ़ हारे, पारे नहिँ देखिया ॥७॥
पचग्रन्थी तत्त लखाये, पृथवी पवन अकास समाये ।
अगिनी जल पाँच बँधाया, पचग्रन्थी गाइ कै ॥८॥
आदि ग्रन्थ परथम्म बखाना, जब बना ब्रह्मंड समाना ।
आदि ग्रन्थी रचना बाँधी, बावे कही जाय कै ॥९॥
सुखमनी ये घाट कहाई, इड़ा पिँगला सुखमनि माहीं ।
चढ़ी सूरति गगन समावा, पावा वोहि धाइ कै ॥१०॥
आसा के वार बताई, आसा भै वार बँधाई ।
आसा परे जब लखि पावै, सूरति सत पाइ कै ॥११॥
जप का परमारथ जाना, जब जीव सुरति पहिचाना ।
जब सुखमनि सुरति लगावा, चीन्हा पहिचानि कै ॥१२॥

सतगुरु दरियाव बखाना, सो बिधि तुलसी सब जाना।
लखि अलख अरूप अकाया, द्वारा निरखा पाइ कै ॥१३॥
अम्मरसर गुरू लखाई, जहँ जीव अमर होइ जाई।
अस माना चढ़ि असमाना, जाना जिन जाइ कै ॥१४॥
हलुवा बट छाकर लीन्हा, इक बट पानी मैं कीन्हा।
इक झंडा जाइ धरावा, चीन्हा नहिं भूल से ॥१५॥
जा को भगवान बतावा, बावे कही काल चबावा।
गोबिंदजी निज मुख भाखा, बावे कही साखि में ॥१६॥
बावे राम रहीम न माना, गुरु गोबिंद ग्रंथ बखाना।
मत संतन और बतावा, साहिब कोइ और है ॥१७॥
पूजा पाहन बावे न गाई, गुरु गोबिंद नहिं ठहराई।
तुम पूजौ ग्रंथ अचेता, चीन्हा नहिं भेद को ॥१८॥
आरति भौ खंड न भाखा, चाँद सूरज दीपक राखा।
गगना मैँ थाल बताई, थाह मिलै स्रुति लाइ कै ॥१९॥
ये गति नानक बिधि गाई, सतसंग करै जब पाई।
संतन कोइ संधि लखावा, पावा स्रुत धाइ कै ॥२०॥
नानक स्रुत चढ़ी अकासा, कीन्हा सैल ब्रह्मंड निवासा।
ब्रह्मंड से परे सिधारे, निराकार नहिं जात है ॥२१॥
चौथा पद वाहगुरु माहीं, जहँ नानक सुरति चढ़ाई।
निराकार वहाँ नहिं जावै, चढ़े नानक धाइ कै ॥२२॥
तुलसी संतन गति न्यारी, जहँ जोति नहीं निराकारी।
इन को सब काल बतावै, तुलसी पीव दयाल है ॥२३॥

॥ बिलावल ॥

नानक नजरा निहाल पलक मैँ निहाला ॥टेक॥
सूरति चली अगम चाल, छूटो ग्रन्थी निहाल।
सतगुरू वाहगुरू दयाल, नाल नौ के पारा ॥

दया के कपास पान, संतौं का सूत जान।
ग्रन्थी जित बाट मान, ये जनेऊ सारा॥
फीकी जग गाँठि खोल, तोल मोल न्यारा॥१॥
त्रै पन नहिं तमक होइ, मन का जो मैल धोइ।
ऐसी सत रीति जोइ, खोइ खूब डारा॥
तेरा तोही मैं यार, सूरति नैना सँवार।
निरखा संतन निहार, माहिं मौज मारा॥
सूरति ले निरत बूझि, सूझि सब्द सारा॥२॥
पाँडे के गले घात, टूटै ना जरै जात।
मैली ना होवै हाथ, धन वे सेवक न्यारा॥
संतौं ने ग्रन्थ खोल, सूझा अगमन अमोल।
गोबिंदजी गुरु अतोल, चोल चाल पारा॥
पाया सत नाम संत, हाथ लाग हीरा॥३॥
पौड़ी का अरथ जान, सीढ़ी चढ़ना पिछान।
सूरति सुखमना सान, मान लै की लारा॥
अंबर असमान देख, अंबरसर अधर पेख।
पावै अद्बुद् अलेख, आदि अंत सारा॥
दसवाँ महलन के पार, तार चार द्वारा॥४॥
सूरति कढ़ियाव सार, साधो परे साध पार।
गुरु गुरु दरियाव लार, कार कँवल मारा॥
आदि ग्रन्थ गाँठि तोड़, पाँच ग्रन्थ बाट मोड़।
आसा के वार छोड़, जपजी के पारा॥
तुलसी नानक कृपाल, मारि काल डारा॥५

॥ सोरठा ॥

पलकराम सुन बात, बावे ये बिधि यौं कही।
गोबिंद मुख विख्यात, लाग चरन संतन मिलै॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ सोरठा ॥

सतसँग तुलसी सार, जो कछु अगम लखाइया ।
बावे बिधि बिधि पार, सार सार सगरा कहा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सत्त बताई । संत भेद हम तुम से पाई ॥
संत मता है अगम अलेखा । सो कोइ भेष न किया बिबेका ॥
पलकराम चरनन को दासा । सत सत संत चरन बिस्वासा ॥
जो जो भेद तुम भाखि सुनाया । सो तो हम सुपने नहिं पाया ॥
पूछौं बिधी भेद सब कहिया । वाह गुरू बावे कस पइया ॥
निराकार की आदि बतावौ । जोती आदि सबै दरसावौ ॥
इन के परे कौन है स्वामी । ता की महिमा बिधी बखानी ॥
तुम दयाल पूरे हौ स्वामी । बावे बिधी कही सोइ जानी ॥
संतन अगम आदि कस गाई । सो स्वामी मोहिं भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तीनि लोक से चौथा न्यारा । चौथे के परे अगम अपारा ॥
पुरुष तहाँ इक अगम अनामी । चौथा पद तेहि पार ठिकानी ॥
चौथा पद सतनाम कहाई । तेहि नानक वाहगुरू बताई ॥
सत्त नाम वाहगुरू बतावा । तेहि कबीर सत सब्द लखावा ॥
तीनौं नाम एक हैं भाई । वे बासी चौथे पद माहीं ॥
वाहगुरू का अंस कहइया । जा से सोलह निरगुन भइया ॥
ता में एक निरंजन राई । गुरू अंस से जोती आई ॥
जोति निरंजन की है नारी । दोनौं मिलि कीन्हा बिस्तारी ॥
वाहगुरू पद इन से न्यारा । निराकार नहिं जोति पसारा ॥
तीनि लोक निराकार समाना । वाहगुरू चौथे में जाना ॥
वाहगुरू का भेद नियारा । निराकार नहिं पावै पारा ॥

जोति निरंजन किया बिधाना। उपजे तीन पुत्र परमाना ॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसुर जाना। काल निरंजन से उतपाना ॥
निरंजन जोति काल अन्याई। दस औतार याहि के भाई ॥
काल ने लिये दसौ औतारा। तीनि पुत्र पुनि साज सँवारा ॥
ब्रह्मा बेद पुरान बनावा। ता में सकल जीव उरझावा ॥
देवल देव पखान पुजावा। ता में सकल जीव भरमावा ॥
निरंकाल काल अन्याई। जोती ठगिनी जाल बिछाई ॥
ब्रह्मा बिस्नु काल के बेटे। दस औतार काल के पेटे ॥
ये ठग ठग मिलि जाल पसारा। जीव बाँधि चौरासी डारा ॥
वाहगुरू का मरम न पाया। चेला जीव जहाँ से आया ॥
निरंकाल जोती ने भाई। वाहगुरू की राह छिपाई ॥
वहाँ जीव जाने नहिं पाई। ठग ठग मिलि सब जाल बिछाई
कोइ कोइ संत अगमपुर बासी। मारा काल भये अबिनासी ॥
सूरति चढ़ी गगन के माहीं। चौथा पद वाहगुरू दरसाई ॥
पदम कंज में गुरु का बासा। गुरू मिलैं तब चढ़ै अकासा ॥
संत मिलै कोइ वा घर बासी। दरसावै काटै वो फाँसी ॥
संत दयाल मिलै कोइ पावै। पलक एक में राह लखावै ॥
है पुनि अगम सुगम होइ जावै। वाहगुरू जीवत मिलि जावै ॥
नानक येही रीति से पावा। औरौ संत यही बिधि गावा ॥
तब तिन वाहगुरू पद भाखी। जीवत मिलै कही पद साखी ॥
तुम तौ वाहगुरू को मानौ। वाहगुरू का मरम न जानौ ॥
वाहगुरू मुख भाखि बखानौ। वाहगुरू की महिमा ठानौ ॥
बावे वाह गुरू बतलाया। तुम तौ याह गुरू मन लाया ॥
कस कस राह मिलै पुनि भाई। भेष पंथ ने राह भुलाई ॥
संत चीन्हि जावै सरनाई। वाह गुरू सहजै में पाई ॥
बिना संत कछु मिलै न भेदा। ऐसे काल करै जिव खेदा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम अगम सुनाई। ये कहुँ भेद जगत में नाहीं ॥
साध संत बहु खोजि सिराना। भेद पंथ में सुना न काना ॥
सुना भेद मन चक्रित भइया। ये तौ स्वामी अकथ सुनइया ॥
मैं तो सरन तुम्हारी लीन्हा। संत चरन जल मन जस मीना ॥
मो को चरन सरन में राखौ। सरन संत मन सत कर भाखौ ॥
मोर निबाह संत के हाथा। करिहैं मो को संत सनाथा ॥
मैं किंकर हौं सरन अनाथा। निबहौं संत चरन के साथा ॥
मो को संत चरन की आसा। दूजा और नहीं बिस्वासा ॥
अस कहि बहै नैन से पानी। स्वाँसा भरै चरन लपटानी ॥
साधू रीति प्रीति गति भाखी। सुरख भये नैना निज आँखी ॥
बोले बचन दीन गति गाई। अब अज्ञा अस्थाने जाई ॥
चरनपरसि पुनि अज्ञा लीन्हा। तुलसी सीस चरन पर दीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सरनि मैं स्वामी। दया कीन्ह मोहिं अंतरजामी ॥
अस भाखि चल कीन्ह पयाना। पलकराम पहुँचे अस्थाना ॥
मन मैं मगन प्रीति भई गाढ़ी। सूरति लगी फिरै नहिं आड़ी ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम बिधि कहा कहूँ, सत मत साधू भाय ।
मन प्रति दीन प्रभाव अति, सब साधन के मायँ ॥१॥
साध संत हिये प्रीति ज्यौं, उमगत बारोइ बार ।
नैन निरखि आँखी भरे, करै संत से भाव ॥२॥

॥ बिलावल ॥

पलकराम प्रेम मगन, संतन सरनाई ।
अति अजान जान कछू, किंकर की नाँई ॥टेक॥

चरन चिन्ह भाव सुमन, संतन स्तुति परन बंध ।
नैना झर झरत नीर, बरनै लघुताई ॥
जोइ जोइ मुख कहत बैन, बानी मृदु पुलक गात ।
गुनन गिनत संत साथ, मन तन हित लाई ॥१॥
हिरदे हित हरन बैन, किंचित मन भरम भै न ।
निर निर निरभै समीर, थिरता अधिकाई ॥
भावन मन भाव लाइ, चावत चित चेत साथ ।
तुलसी ये भक्ति भाँत, चाहत चरनाई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पलकराम के प्रेम की, तुलसी करत बखान ।
बैन बचन मुख चैन की, सो कहूँ कौन बयान ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे हरष समाय, पलकराम साधू समझ ।
मंजन तन परभाय, लाह लहर कस कस कहूँ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि हिरदे बोला अस बानी । कासी में साधू अस जानी ॥
स्वामी साधू बड़े प्रमानी । संत चरन बिन और न जानी ॥
कासी में देखे यह साधू । कासी और कींच पुनि काँदू ॥
स्वामी सत मत कोउ न चीन्हा। यह पुनि साध बड़े मति लीन्हा॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन हिरदे बाता । कासी नगर काल मति राता ॥
कासी करम जीव अज्ञाना । जुग चारी जग जीव भुलाना ॥
कासी जगत धाम बतलावै । मरै जीव पुनि भूत कहावै ॥
सिव की पुरी धाम जग भाखा । उनके भूत प्रेत की साखा ॥

सिव भये भूत प्रेत के राजा। मरै जीव होइ भूत समाजा ॥
ये कासी मिलि भूत बड़ाई। सिव कैलास भूत में भाई ॥
ता से जड़ मत जीवन लीन्हा। जड़ सँग जिव जो भया अधीना
घटरामायन सुनि भौ सोरा। कासी नगर भया घनघोरा ॥
पंथ भेष जग लड़न खखारा। घट रामायन परी पुकारा ॥
अस सुन सोर भयो जग माहीं। सहर मुलक सब गँवई गाँई ॥
भेष पंथ में अचरज भइया। दरसन भेष लखन को अइया ॥

॥ दोहा ॥

जगत सोर सब भेष में, नगर गाँव सब ठौर।
भेष फकीरी पंथ के, लख जाँचत सत मोर ॥

संवाद साथ गुपाल गुसाईं कबीर पंथी के

॥ चौपाई ॥

दरसन करन आये इक संती। मन मत नाम कबीरा पंथी ॥
हम पुनि धाइ चरन को लीन्हा। उन पुनि दया गुसाईं कीन्हा ॥
आसन दे कीन्हा सनमाना। पूछा रहौ कौन अस्थाना ॥
कहँ से दया गवन कियो स्वामी। क्रिरपा कीन्ह दीन मोहिं जानी ॥

॥ उत्तर गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

तिरहुत देस घनौती गाँईं। भगत नाम गोपाल गुसाईं ॥
भाव भक्ति हा साध कहावे। संत चरन पर सीस नवावैं ॥
साध जान हमहूँ चलि आये। दरसन करि मन आनँद पाये ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास के बंसन माहीं। कै कोइ साध और मति राही ॥
कबीरदास पुनि हैं धर्मदासा। उन से भिन्न रहौ केहि पासा ॥
यह बरतंत सुनावौ स्वामी। भाव भक्ति हा केहि बिधि जानी॥

हम कबीर मति एक बिचारा। तुम कहीं और भेद बिस्तारा ॥
भाव भक्ति हा केहि बिधि भइया। सो स्वामी मोहिं बरनि सुनइया॥

॥ गुपाल गुसाईं उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ चित लाई। तुम अपना कहौ भेद जनाई ॥
कौन मते के साध कहावौ। अपना गुरु मति भेद बतावौ ॥
हम हमरा जब सत मत भाखैं। गुरु मत कहँ भेद नहिं राखैं ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

हमरे गुरु हैं संत सुजाना। हम तौ गुरू संत को माना ॥
संत गुरू और पंथ न जानी। निस दिन संत चरन सुत आनी॥
संत चरन कर दास दिवाना। साधू सरन चरन लपटाना ॥
और इष्ट नहिं दूजा भाऊ। निस दिन साधू चरन उमाऊ ॥
मैं निकाम कछु जानौं न भेदा। नीच बुद्धि मन छल बल खेदा ॥
तुम्हरे चरन सरन कछु पाई। मैं मतिहीन साध सरनाई ॥
दरसन तुम्हरे भये सनाथा। न्यारा करि पकरौ मोरा हाथा ॥

॥ गुपाल गुसाईं उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी साधू तुम परमानी। बचन सुधा रस अमृत बानी ॥
तुम्हरा तोल बोल प्रिय मीठा। कासी मैं साधू तुम दीठा ॥
अब मैं गुरु मति भेद बताऊँ। भये जस भाव भक्ति हा नाऊँ ॥
भाख भये भगवान गुसाईं। गद्दी रहै धनौती माहीं ॥
उनके मति के साध कहावैं। बीजक मति परमान बतावैं ॥
रामैनी चौरासी गाई। ये कबीर मति कहा गुसाईं ॥
धर्मदास मति मूल न मानी। बंस मता हम सत्त न जानी ॥
मूल मरम बीजक के माहीं। बंस भेद यह जानत नाहीं ॥

मुख कबीर मति आप बखानी। तत्त बस्तु बीजक मैं आनी ॥
और ग्रंथ सब बंस बनाये। ये सब छुच्छम भर्म भुलाये ॥
इन मैं कछू नहीं है भाई। ये सब गये गवन गफलाई ॥
जो जो बंस राह मति माहीं। उन बीजक का मरम न पाई ॥
जो जो बंस राह मति चाली। जम सोंटे से भये बेहाली ॥
बंस राह चौके मैं भूला। कहा जानै मति बीजक अतूला ॥
एक बिधी तुलसी सुन लीजै। बंस मता चित नेक न दीजै ॥
बरनौं बंस राह की रीती। बीरा परवानै परतीती ॥
पान परवाना लिखि लिखि जोई। जा की कहूँ बरतंत बिलोई ॥
असत अजावन बीरा कीन्हा। बिंद बिरज से लिख कर दीन्हा
सो सिष भिष्ट खवावै भाई। अस अस बीरा बंस चलाई ॥

॥ दोहा ॥

बीज बिंद बीरा करै, सो सिष पान खवाइ।
बंस राह रस रीति की, अस अस बूझ लखाइ ॥

॥ तुलसी साहिब उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

एक बिधी हमहूँ सुनि पाई। ता की स्वामी भाखि सुनाई ॥
बसै साध इक मँडले माहीं। गोबिंददास नाम रहै भाई ॥
वे हमरे अस्थाने आये। उन सब बिधि बरतंत सुनाये ॥
इक दिन चरचा कही बुझाई। सो बिधि तुम को भाखि सुनाई
बीजक बरनन बात निकारी। उन बरतंत कहा सब झारी ॥
सो बरतंत कहि के समझाऊँ। जस उन कही कहन दरसाऊँ ॥
धर्मदास सुत जुगल कहाई। एक नाम चूरामनि भाई ॥
बचन कबीर भाव से भइया। अस चूरामनि नाम कहइया ॥
दूजा नाम नरायन होई। ऐसे जुगल बंधु कहै सोई ॥
धर्मदास के दरब न थोरा। माया रहै सोइ चारि किरोरा ॥

गुन गुमास्ते दो रहे पासा । जागू भागू नाम प्रकासा ॥
दास कबीर एक दिन आये । धर्मदास पूजा मन लाये ॥
सालिगराम न्हवावै भाई । पूजा करिके ध्यान लगाई ॥
सो कबीर देखत मुसक्यानी । पत्थर कस धोवत नित पानी ॥
अस कबीर मुख बचन बखाना। धर्मदास मन में रिसियाना ॥
कस निंदक ने बचन सुनाया । ठाकुर को पत्थर ठहराया ॥
धर्मदास दिल गुसा समाई । पूजा साज उठायौ जाई ॥
है कोइ यह नास्तिक मत माहीं। चरचा इन से करौं बनाई ॥
धर्मदास पूछी इक बाता । पूजा सो सब करत सनाथा ॥
तुम पत्थर कैसी बिधि गावा। इष्ट हमारे दोष लगावा ॥
बेद पुरान सास्तर गावा । तिन को तुम पत्थर ठहरावा ॥
तुम्हरा मता कौन है भाई । सो तुम हम को भाखि सुनाई ॥

॥ कबीरदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ धर्मदास इक बाता । ब्रह्मा से भये बेद सनाथा ॥
ब्रह्मा भये बैराट की नाभी । सो बैराट में किस की स्वाबी ॥
पाँच तत्त कहौ कहँ से आये । सो रचि कै बैराट बनाये ॥
सो बैराट पिंड सब गावै । ये सब बिधी बेद बतलावै ॥
बिधि बेदान्त ब्रह्म कहि गावा। आतम भीतर सुद्ध बतावा ॥
और पुरान तुम्हरा गोहरावा। पत्थर पूजन कौन बतावा ॥
ये बैराट पिंड तन माहीं । गगन माहिँ नौ खंड समाई ॥
पाँच तत्त तन वदन बनाया । ता में चेतन ब्रह्म समाया ॥
चेतन आतम सब के माहीं । तुम पत्थर पूजौ केहि राही ॥
धरमदास मन बूझि बिचारा। या से ज्ञान कहूँ निरबारा ॥
तब पंडित दो चारि बुलावा। ये फकीर कहा कहत बुझावा ॥
जहँ इक पंडित कंजा नामा । कहा फकीर कस करत बखाना॥

जो कछु बेद सनातन गाई । सो मति को हम मानैं भाई ॥
तुम फकीर कहौ कैसे साधू । धर्म भृष्ट करौ बाद बिवादू ॥
जोइ जोइ आदि राह चलि आई । मेटेउ सब यहँ से उठि जाई ॥
पंडित कहै कंजा अस बाला । येहि को काढ़ि देउ दै लाता ॥
इन सब धर्म नास्ती कीन्हा । मुख देखन नहिं जोग अलीना ॥
कंजा कहर लहरि कहि सारी । तब कबीर ने मौन बिचारी ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि बोले बिन रहा न जाई । तुम पंडित हौ कर्म कसाई ॥
जग सब अंध धुंध करि डारा । पूजत पाहन जीव बिगारा ॥
पानी जीव बँधाई आसा । अस अस जगत कर्म बस फाँसा
देबी बकरा गला कटावौ । टका मूड़ बस पाप करावौ ॥
माला टोपी काँध जनेऊ । करि असनान अचारी बनेऊ ॥
हाँड़ी हाड़ मास घर सीझा । तलफत गला कटत जिव छीजा॥
पत्थर पानी जगत पुजाई । देखी पंडित की पँडिताई ॥
बेद पुरान ज्ञान समझावौ । दयाहीन हति आतम खावौ ॥
मछरी मास घास पसु खाई । अस तुम पसू नरक के माहीं ॥
सुन पंडित तन अगिनि समानी । गरम तवा जस डारौ पानी ॥
जग बिच रहत कसाई जाता । तुम बिन करै कौन यह बाता ॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ । सब्द साखि में लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

साधो भाई पाँड़े निपुन कसाई ।
बकरी मारि भैंड़ि को धावै । दिल में दरद न आई ॥टेक॥
करि असनान तिलक दै बैठे । बिधि से देबी पुजाई ।
आतम मारि पलक में बिनसै । रुधिर की नदी बहाई ॥१॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये । सभा माहिं अधिकाई ।
इन से गुरु-दिच्छा सब माँगै । हँसी आवै मोहिं भाई ॥२॥

पाप कटन को कथा सुनावैँ। करम करावैँ नीचा।
हम तो दोऊ परस पर डीठा। बाँधे जम जग बीचा ॥३॥
गाइ बधै सो तुरुक कहावै। ये क्या इन से छोटे।
कह कबीर सुनौ हो साधो। कलि मेँ बाम्हन खोटे ॥४॥

॥ साखी ॥

जला जीव तुम बिन बिन खाये। काहे को छाँड़ी गाई ॥१॥
बेद पुरान भागवत गीता। पढ़ि पढ़ि भये कसाई ॥२॥

॥ धर्मदास ॥

॥ चौपाई ॥

अरे फकीर कस खोटी बोलौ। पहुँचे करामात कछु खोलौ ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

जब कबीर इक बिधी बिचारी। धरमदास सुन बात हमारी ॥
अंतर सालिगराम दिखाऊँ। हिरदे ठाकुर काढ़ि बताऊँ ॥
गगन भूमि चढ़ि नैन पसारौ। ऐसे सालिगराम निहारौ ॥
कहि कबीर इक हुचकी लीन्हा। काढ़े ठाकुर भया यकीना ॥
पुनि ठाकुर कब्बीर बुलाये। सो चलि चले हाथ मेँ आये ॥
देखत सब को भया अचंभा। मन बिस्वास बास बिच थंभा॥
धरमदास मन साँच समाना। ये साधू कोइ परम निधाना॥
जीव भाव मुक्ती अस जाना। तब पुनि गये चरन लपटाना॥
मंदिर आसन कीन्ह बनाई। सत कबीर आसन पर आई ॥
तिरिया चरन आन करि लीन्हा। बचन बाक चूरामनि दीन्हा ॥
दास नरायन दूजे भाई। अस कबीर बिधि बरनि सुनाई॥
सब घर के नर नारि बुलाये। चरन परसि के भवन सिधाये ॥
दास नरायन बोले बानो। गई मत बापू की हम जानो ॥
ये फकीर ठग कहँ से आया। सब घर जादू भर्म भुलाया ॥

दास नरायन दीन्हा ज्वाबै । ठग फकीर पै हम नहिं जावैं ॥
जब कबीर बोले मुख बानी । दास नरायन काल निसानी ॥

॥ दोहा ॥

कहा कबीर धर्मदास से, चौका करौ बनाइ ।
साज सकल बिधि आनिकै, बीरा सन्त समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तब चौके का साज मँगाया । धर्मदास चित चौका चाया ॥
चौका करि परवाना पावा । मुक्ति भाव सब बिधि दरसावा ॥
अस बरतंत कहा सब लेखा । कहूँ आगे का सुनौ बिबेका ॥
गोबिंददास समझ समझाई । गुपल गुसाइँ कहौ बुझाई ॥
अब आगे बरतंत सुनाई । गुपल गुसाइँ सुन मन लाई ॥
अस कबीर धर्मदास चितावा । सो बरनन हम बरनि सुनावा ॥
कहत कबीर सुनौ धर्मदासा । माया मोह जगत जिव फाँसा ॥
सब माया को देउ लुटाई । साधू संग रहौ लौ लाई ॥
सुन करि धर्मदास सोइ कीन्हा । माया द्रब्य लुटाई दीन्हा ॥
पुनि कबीर दिल भये दयाला । सब्द साखि सब ग्रंथ निकाला ॥
बीजक और और कही बानी । दीन्ही धर्मदास को आनी ॥
गुन गुमास्ते जागू भागू । चेला भये धरमनि सँग लागू ॥
धरमदास चित चेला होई । जागू भागू नाम बिलोई ॥
सब्द साखि बीजक और बानी । जागू भागू पास बखानी ॥
सिपुरस[1] धर्मदास ने कीन्हा । सोइ भागू सिर ऊपर लीन्हा ॥
देंही धरमदास तन त्यागा । तब चूरामनि ग्रन्थ जो माँगा ॥
और ग्रन्थ सब दीन्हेउ भाई । बीजक भागू लीन्ह चुराई ॥
रहे भगवान गुसाइँ भाई । बीजक दै उन दीन्ह भगाई ॥
तब तिरहुत में गद्दी कीन्हा । जाइ धनौति महंती लीन्हा ॥
येहि बिधि भाव भक्ति हो भइया । गोबिंददास बरन अस कहिया ॥

---

(१) सपुर्द ।

और जागू कछु कही बखाना। गुपल गुसाईं सुन दै काना ॥
भये भगवान गुसाईं साधू। तिन की भाखूँ जड़ बुनियादू ॥
बाम्हन बालक जाति बखानी। मात पिता केहि जाति निदानी॥
जगबँधनी माता कर नाऊँ। पितु कालू बिधि बरनि सुनाऊँ॥
उनके पुत्र रहे वे भाई। नाम कहा भगवान गुसाइ ॥
पुनि पुरान में रहे प्रबीना। गुरुमत करनी भाव न कीन्हा ॥
पुनि कोई दिन मत में रहेऊ। तजि सतसंग गुसाईं भयेऊ ॥
जुगल गुरू मति छाँड़ि पराई। बीजक मिले भक्ति हा भाई॥
बीजक मति की चाल चलाई। जा से नाम भक्ति हा पाई ॥
अब कालू की आदि बताई। जा से भये भगवान गुसाईं ॥
कालू चलन बिषय रस राऊ। रहै तेलिन मँगली वोहि गाऊँ ॥
ता सँग इस्क मुहब्बत कीन्हा। लेकर पकरि राज सोइ लीन्हा ॥
मँगली तेलिन कालू दोई। बाँधे पकरि राज ने सोई ॥
कालू पितु सुन सब्द सुनाई। डंड दीन्ह पुनि लीन्ह छुड़ाई ॥
पुनि तेलिन ने सब्द बिचारा। मैं सँग रहौं रहौं येहि लारा ॥
सब बाम्हन मिलि बहुत बुझाई। कहिया बहुत न मानै भाई ॥
तब पितु माता दीन्ह निकारी। न्यारे रहे भये घरबारी ॥
मँगली नाम फेरि तब दीन्हा। जगबँधनी धर नाम नबीना ॥
मँगली से जगबँधनी कहिया। तेलिन नाम फेरि अस भइया ॥
जा से भये भगवान गुसाईं। येहि बिधि उन की आदि सुनाई

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुन बरतंत मनहिं मन भाखा। कछु कछु समझ मनहिं बिचराखा ॥
हम आगे बरतंत न जाना। उन बिधि बिधि सब सत्त बखाना ॥
हम सब भाँति सुनी यह बानी। तुलसी तुम ने करी बखानी ॥
गोबिंददास कही बिधि सारी। हम ने सुनी कहौं बिस्तारी ॥

जो बरनन उन भाखि सुनावा। जा में कछु मन में नहिं आवा॥
कछु कछु तौ उन ठीक बतावा। कछु कछु समझ नहीं मन आवा
अब या का बरतंत सुनाऊँ। जस जस सुनी समझ समझाऊँ॥
धर्मदास तन त्यागा भाई। जागू भागू कैद कराई॥
धर्मदास का कीन्ह भँडारा। सब साधू आये ज्यौनारा॥
समय पाइ भगवान गुसाईं। बोले द्वै साधू आये नाहीं॥
पुनि कोइ साधु कान सुनि लइया। रहे साधु ये को अस कहिया॥
तब बोले भगवान गुसाईं। जागू भागू नाम कहाई॥
सो चूरामनि कैद कराई। सब मिलि कै उन को छुड़वाई॥
तब चूरामनि लीन्ह बुलाई। साधु कैद से आनो भाई॥
तब दोउ साधु कैद से काढ़े। आये जहाँ साधु सब ठाढ़े॥
सब पंगति ज्यौनार कराये। भोजन करि आसन पर आये॥
सब साधुन मिलि न्याव सँवारा। बीजक देना बिधी बिचारा॥
जब बीजक आयौ उन हाथा। अस बिधि वा तें भये सनाथा॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर बिधी भर्म मन आवा। तुम कछु औरहि और सुनावा॥
उन सब कही और बिधि भाखी। तुम रस रमज और बिधि राखी॥
यह तौ बिधी मिली नहिं भाई। तुम उन औरै और सुनाई॥
अब आगे का करौ बयाना। बीजक कहौ बिधान बिधाना॥
कस कस बीजक बरन सुनाया। जस कबीर मुख अपने गाया॥
सब्द साखि सोइ भाखि सुनावौ। बीजक का बरतंत बतावौ॥
जीव काल से बचै न भाई। भौ के पार कौन बिधि जाई॥
सब्द अरथ साखी समझावौ। भिन भिन वा कौ अर्थ बतावौ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाईं। अब बीजक का सब्द सुनाईं॥

॥ शब्द ॥

साधो भक्ती सतगुरु आनी ॥ टेक ॥
नारी एक पुरुष दो जाय, बूझो पंडित ज्ञानी ॥१॥
पाहन फोड़ि गंग इक निकसी, चहुँ दिस पानी पानी ॥२॥
तेहि पानी दुइ परबत बूड़े, दरिया लहर समानी ॥३॥
उड़ि माखी तरवर के लागी, बोलै एकै बानी ॥४॥
वा माखी के माखा नाहीं, गरभ रहा बिन पानी ॥५॥
नारी सकल पुरुष वोहि खाया, ता से रह्यौ अकेला ॥६॥
कहै कबीर जो अब की समझै, सोई गुरू मैं चेला ॥७॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाईं । सब्द अरथ मोहिं कहौ बुझाई ॥
को सतगुरु को भक्ती लाये । ये कबीर कस बरनि सुनाये ॥
जुगल पुरुष केहि नारि ने जाई । पाहन फोड़ि गंग कस आई ॥
फैली गंगा चहुँ दिस पानी । यह कबीर कहा कही बखानी ॥
को दोउ परबत बूड़े पानी । कहौ या की भिनि भिनि करि छानी ॥
को दरिया कित लहर समाई । को तरवर को माखी भाई ॥
बिन माखा माखी गरभानी । सो कबीर कस कही बखानी ॥
परसे नर बिन गर्भ न होई । कस माखी गरभिनि भइ सोई ॥
कहौ को नारि पुरुष सब खाई । कही कबीर मैं नारि बचाई ॥
कौन नारि लख बचे बतावा । नारि बचे सोइ गुरू कहावा ॥
कही कबीर अपने मुख बानी । या का भाखौ भेद बखानी ॥
गुपल गुसाईं सुन मन माहीं । एक ज्वाब उन भाखि सुनाई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी समझाई । यह कबीर ने अगम सुनाई ॥
या में मन बुधि चित नहिं चाली । उपजी एक सुनाऊँ हाली ॥

सतगुरु नाम कबीर कहाये । वे जग में भक्ती ले आये ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मदास मुख होती बानी । तौ कबीर सतगुरू बखानी ॥
खुद कबीर मुख बचन बतावा । उन सतगुरु कहौ केहि को गावा
यह तौ अर्थ न आवा भाई । कहौ कबीर सो गुरू बताई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी इक बाता । मैं नहिं जानौं अर्थ बिख्याता॥
हम तौ सब्द पढ़न पढ़ि लीन्हा । गाइ गाइ खँजरी सँग कीन्हा ॥
बोले हाथ जोरि मुख बानी । स्वामी तुलसी कहौ बखानी ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी मन मुसकाने भाई । मैं कहा जानौं गुपल गुसाईं ॥
सतसंगति संतन में पाई । सो मैं भाखौं समझि सुनाई॥
सतगुरु तो सतपुरुष बताया । सत्तलोक रहै पुरुष अकाया ॥
वहँ से सुरति कबीरा आई । तीनि लोक ब्रह्मंड समाई ॥
आतम जीव कबीर कहाई । धर्मदास मन को बतलाई ॥
काया बीर कबीर कहाई । धर्मदास मन को समझाई ॥
मन इंद्री बिच बास कराये । गुन प्रकृती बिच जग उपजाये॥
काया बिच बस बँधे कबीरा । भूले सिंध अमोलक हीरा ॥
सिंध बुंद तजि सूरति आई । वा कर नाम कबीर कहाई ॥
बुंद सिंध की सुधि बिसराया । काया बन्द कबीर कहाया ॥
सत्त पुरुष पद कीन्हा मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
और कबीर काया के माहीं । जड़ तन बस भौ में भरमाई ॥
जिन बीजक रचि बरन सुनाया । तिन कबीर वह सतगुरु पाया॥
वो सतगुरु का भेद बतावै । लोक अलोक राह समझावै ॥

जो कबीर का पंथ पिछानै । नहिं पंथी सब जाति कहाने ॥
अब जागू भागू समझाऊँ । चूरामनि के चिन्ह चिन्हाऊँ ॥
जो जागे सो भागे भाई । मन चूरा सोइ ब्रह्म कहाई ॥
नर तन नाम नरायन जाना । गो सँग मन भगवान कहाना ॥
मन इंद्री गो संग गुसाईं । भग सँग भैा भगवान कहाई ॥
अस कबीर बीजक बिधि भाखा । तुम बेसमझ समझ नहिं राखा
बीजक नाम बीज बिंद केरा । नाद बिंद जग किया बसेरा ॥
बिंद बीज बीजक अस गाया । यह बिधि बीजक बरनि सुनाया ॥
अब सुन सब्द अर्थ समझाऊँ । कही कबीर बीजक सोइ गाऊँ ॥
बिंद बीज स्रिष्टी उपजाई । तन बैराट बनाया भाई ॥
बीजक एक बीज सब कीन्हा । नाद बिंद अस बीजक चीन्हा ॥
सत्त पुरुष सतगुरु से आई । सोई सुरति गई भक्त कहाई ॥
भैा रस बन्ध रही जग माहीं । सो सूरति मन इच्छा भाई ॥
इच्छा नारि पुरुष मन मानी । पुरुष नारि अस द्वै उतपानी ॥
सब्द फोड़ि सूरति सोइ गंगा । मन बस फैल जगत रस रंगा ॥
सो चहुँ दिस फैली जग माहीं । पानी परबत दोइ बुड़ाई ॥
सूरति नाम कबीर कहाई । धर्मदास यह मन है भाई ॥
द्वै परबत ये अस बिधि बूड़ा । यह बीजक मत कहा अगूढ़ा ॥
सब्द सिंध से सूरति आई । भैा दरियाव लहर जग माहीं ॥
तरवर तन इच्छा मन राखी । कर्म भर्म इच्छा भई माखी ॥
बिना पुरुष की इच्छा नारी । बिन संयोग गर्भ भया भारी ॥
गर्भ कर्म इच्छा गरभानी । येहि बिधि गर्भ रहा बिन पानी ॥
इच्छा नारि जगत को खाया । या का चीन्ह कबीर बताया ॥
अब की बार नारि सोइ चीन्हा । सो गुरु कहूँ जगत परबीना ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी अगम अरथ समझाये । ये तौ हम सुपने नहिं पाये ॥
हम ठोली सायर रस जाना । या म तुम ने अगम बखाना॥
सतगुरु पद सतलोक लखावा । सूरति चेला मिलन बतावा ॥
सूरति मिलै सब्द के माहीं । सब्द जो मिलै अगम घर जाई
अगम सिंध से सब्द जो आया । सब्द ने सूरति को पठवाया ॥
सो सूरति गुन इंद्री माहीं । मन बनिया बैराट बनाई ॥
तन मन गुन गो ज्ञान समाना । कल्प कल्प भै भौ भरमाना ॥
अस अस समझि परा यह लेखा । तुलसी स्वामी बचन बिबेका
तुम ने कहन गहन सोइ गाई । हेरि हिये दिल माहिं समाई
हम ने पढ़ि पढ़ि जनम गँवाया । सब्द साखि खँजरी सँग गाया
या का भेद भाव नहिं चीन्हा । बूझा तुलसी कहन यकीना ॥

॥ दोहा ॥

अगम निगम गम पाइया, तुलसी चरन प्रताप ।
मैं महंत मन मान हौं, बीजक के बिस्वास ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी अगम लखाई । बीजक भेद भर्म के माहीं ॥
अब स्वामी इक सब्द सुनाऊँ । या का अर्थ अंत समझाऊ ॥
या मैं कस कस कही विचारा । बीजक में बरने निरधारा ॥

॥ शब्द ॥

एकै पुरुष एक है नारी, ता का करौ बिचारा ॥टेक॥
एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भूलि संसारा ॥१॥
एक नारि जम जाल पसारा, जग मैं भया अँदेसा ॥२॥
खोजि खोजि काहू अंत न पाया, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ॥३॥
नाग फाँस लीन्हे घट भीतर, मूसनि सब जग झारी ॥४॥

ज्ञान खड्ग बिन सब कोइ जूझै, पकरि केहू नहिं पाई ॥५॥
आपहि मूल फूल फुलवारी, आपहि चुनि चुनि खाई ॥६॥
कहै कबीर सोई जन उबरे, जिन गुरु लीन्ह जगाई ॥७॥

॥ दोहा ॥

नर नारी दोउ कौन है, कहो प्रभु अर्थ बिचार ।
गुपल गुसाईं सरन में, तुलसी चरन निहार ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

पुरुष निरंजन मन भया, इच्छा नारि बिचार ।
ये दोऊ मिलि जग ठगा, कही कबीर निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

मनहिं निरंजन पुरुष बखानो । इच्छा जोती नारि कहानी ॥
पाँच तत्त ब्रह्मंड पसारा । जहँ लगि अंड कीन्ह बिस्तारा
ठगनी ठग मिलि सब ठगि लीन्हा। इच्छा मन सँग जग्त अधीना
अस अस भूले भौ की खाना । चौरासी जम हाथ बिकाना ॥
एक नारि जम जाल पसारा । इच्छा मन किये काल अहारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न बाचे । रजगुन तमगुन सतगुन राचे ॥
वोहि मन इच्छा नागिनि भाई । ठगि ठगि मूल सबन को खाई ॥
वोहि नारी का सब्द सुनाऊँ । बिधि बरनन ता का दरसाऊँ॥

॥ होली ॥

नर से निकसी इक नारी, कोइ बूझै साध बिचारी ॥ टेक ॥
हाथ न पाँव सीस नहिं काया, खाया सब जग झारी ।
माई न बाप आप से उपजी, करी खसम की ख्वारी ॥१॥
बारी न बूढ़ि तरुन तन नाहीं, सोवत सब जग मारी ।
आवै न जाय मरै ना जीवै, जुग जुग रहत करारी ॥२॥
ऋषी मुनी सब झारि बिगारी, सब जग त्राह पुकारी ।
रबि ससि सूर चंद्र तारा गन, ये सब खाइ बिडारी ॥३॥

चर और अचर सकल चर लीन्हा, कीन्ह ब्रह्मंड पसारी।
चेतन जाग भाग सोइ बाचे, जिन सतगुरु सरनि सुधारी ॥४
चीन्है नारि सार सोइ पावै, तब उतरै भै पारी।
तुलसीदास फाँस तजि भागै, संतन साथ उबारी ॥५॥

॥ चैापाई ॥

ऐसी नारि जबर जग माहीं। ज्ञान गिरा सब लीन्ह हिराई॥
ज्ञान खड़ग बिन सब कोइ जूझा। बिन सतगुरु कोइ भेद न बूझा॥
इच्छा मन कीन्ही फुलवारी। तन मन जीव ब्रह्मंड सँवारी ॥
इच्छा सें जग उपजा भाई। सोइ इच्छा जग खाइ बुड़ाई ॥
या से उबरे जोइ जन भाई। सतगुरु सत्त पुरुष दरसाई ॥
सूरति सत्त लोक मेँ बासा। सो बाचै सतगुरु का दासा ॥
गुरु मति पंथ भेष मेँ नाहीं। या से मुए टेक करि माहीं ॥
जग्त गुरू जम जाल पसारा। ज्यौँ धीमर मछरी गहि मारा॥
पंथी गुरू भेद नहिं जानै। कान फूकि फिर भै मेँ आनै ॥
जग्त गुरू सतगुरु नहिं चीन्हा। तन छूटे फिर काल अधीना॥
जग्त गुरू बिस्वास न माना। उनहूँ सतगुरु मरम न जाना॥
अस परपंच गुरू जग माहीं। भैाजल मेँ जिव गोता खाई ॥
ये सब हाट बजार दुकानी। बूड़े गुरु चेला बिन पानी ॥
सब्द साखि सब भाखि बतावै। अर्थ भेद ता को नहिं पावै ॥
बिन सतसंग नजर नहिं आई। बिना संत बूड़े भै माहीं ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कही पुकारि, गुपल गुसाईँ भेद यह।
तुम बीजक मति माहिं, मरम भेद गति ना लखी॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चैापाई ॥

सब्द भेद मोहिं समझ सुनाई। तुलसी दरपन सो दरसाई ॥
चौरासी रामायनि गाई। या की तुलसी कहै अरथाई॥
साखी एक समझ समझाई। ता मेँ सब रामायनि गाई ॥

॥ रमैनी ॥

जीव रूप इक अन्तर बासा । अन्तर जोति कीन्ह परकासा ॥१॥
इच्छा रूप नारि औतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥२॥

॥ चौपाई ॥

ये साखी स्वामी कस बूझा । हम बीजक मति रहे अबूझा ॥
भेद भाव नहिं जानैं भाई । ये संतन कहि अगम अगाही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब रामायनि अरथ बताऊँ । कही कबीर सोइ लखन लखाऊँ ॥
रूप सरीर जीव मध बासा । अन्तर जीव जोति परकासा ॥
जिव आतम सोइ सुरति कहाई । या का तेज जोति ठहराई ॥
जोती तेज ऐन पर आया । मन माया गुन भवन समाया ॥
गयउ जीव तिरगुन के माहीं । इच्छा नारि गायत्री गाई ॥

॥ सोरठा ॥

रामायनि बिच माहिँ, येहि बिधि सब साखी लखै ।
अन्तर घट के माहिँ, तुलसी तन बिच सब कही ॥१॥
चौरासी रामायनी, राम ऐन दरपन महीं ।
सो चौरासी खानि, उतपनि जगत कबीर कहि ॥२॥
मन मत राम कहान, बिंद ब्रह्मंड मन सँग भया ।
ग्रंडा खलक समान, अलख काल सँग बस रही ॥३॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

ये स्वामी यह बूझ बुझाई । तुलसी कहनि समझ मैं आई ॥
यह कबीर कहि जग ब्यौहारा । या से नहीं जीव निरबारा ॥
मन चिताइ कै ज्ञान लखावा । बीजक मैं अस अस परभावा ॥
अगम पंथ की राह नियारी । सो लखि दई संत दरबारी ॥

तुम चरनन से अस अस बूझा । तुलसी गहनि कहनि से सूझा ॥
अब स्वामी साखी समझावौ । सोइ साखी का अर्थ बुझावौ ॥

॥ साखी ॥

जहिया जन्म मुक्तै हता, तहिया हता न कोइ ।
छठी तुम्हारी हो जगी, तुम कहँ चले बिगोइ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब ब्रह्मंड पिंड किया साजा । निरमल जीव तनहिं करै राजा ॥
मन इच्छा तब हती न भाई । इंद्री षट रस जुवाँ[1] न चाही ॥
जीवन मुक्ति जीव तन माहीं । जब की साखी साखि सुनाई ॥
जब जेहि हता कोई नहिं भाई । काम क्रोध तजि आप रहाई ॥
छूटै[2] छै रस मैं मन बाँधा । हुआ जग जग मन रहा न सीधा ॥
हुआ अहंकार माहिं मन लागा । तेहि सँग चल बिगोइ मत त्यागा

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

साखी सतगुरु एक सुनाऊँ । या का भेद भाव दरसाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त का पूतरा, जुगत रचा म कीन्ह ।
मैं तोहि पूछौं पंडिता, सब्द बड़ा कै जीव ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाइ सुनिये बाता । अर्थ भेद भाखूँ बिख्याता ॥
पाँच तत्त पिंजर तन साजा । ता मैं आतम जीव बिराजा ॥
मन माया सँग रचा पसारा । पिंड पिंड तन मन बिस्तारा ॥
सब्द सुन्न से उठै अवाजा । तासु तेज जिव आतम राजा ॥

(१) जीभ । (२) झूठे ।

ब्रह्म सब्द तन भीतर माहीं । जीव अंस तन पिंजर पाई ॥
गुपल गुसाईं सुनियौ बानी । येहि बिधि अर्थ कबीर बखानी ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥
॥ चौपाई ॥

इक साखी प्रभु और सुनाऊँ । या का अर्थ भेद समझाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त ले तन किया, सो तन ले क्या कीन्ह ।
कर्मन बस जिव रहत है, कर्मन को जिव दीन्ह ॥

॥ तुलसी साहिब ॥
॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुन गुपल गुसाईं । वन मन तन का मरम सुनाई ॥
नर तन पाँच तत्त से कीन्हा । बादहि जनम आप नहिं चीन्हा ॥
कर्म काल बस रहन निहारे । जीव कर्म बस रहन बिचारे ॥
गुपल गुसाईं सुन दे काना । यह साखी अस कही बिधाना ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥
॥ चौपाई ॥

इक साखी और अरज बिचारी । वा की समझ कहौ निरबारी ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त के भीतरै, गुप्त बस्तु अस्थान ।
बिरले मर्म कोइ पाइ है, गुरु के सब्द प्रमान ॥

॥ तुलसी साहिब ॥
॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी अब अर्थ सुनाऊँ । कहि कबीर मुख लखन लखाऊँ ॥
पाँच तत्त तन भीतर भाई । गुप्त अवाज उठै सुन माहीं ॥
बिरले गगन फोड़ि स्रुति जावै । परे मन निकरि सब्द गुरु पावै ॥
सूरति सिखर गिरा नभ राही । जब चढ़ि गई गगन गुरु पाई ॥

गुपल गुसाईं सुन यह बानी । बीजक मत कही भिनि भिनि छानी ॥
सतसँग रँग बिन नहिं निरवारा । बिन सतगुरु कस खुलै किवारा ॥
तुम बीजक के सब्द सुनाया । गाइ गाइ सब जनम गँवाया ॥
पढ़ते सब्द जनम गयौ बीती । समझ बूझ बिन अँधरे रीती ॥
सब्द समझ सतगुरु से पावै । बिन सतगुरु पढ़ि जनम गँवावै ॥
अब या का इक सब्द सुनाईं । सुनियौ कानन गुपल गुसाईं ॥

॥ शब्द १ ॥

सब्द साखि भाखत भये, तन बीति सिराना हो ॥टेक॥
भेष पंथ भूले फिरैं, कोइ मरम न जाना हो ।
सुन्न सहर सत द्वार मैं, चढ़ि सुति असमाना हो ॥१॥
नभ निवास न्यारी भई, मारग पहिचाना हो ।
पछिम पार पट खोलि कै, खिरकी नियराना हो ॥२॥
होति जोति जगमग लखै, आतम दरसाना हो ।
कँवल केल आगे चली, दल दोय दिखाना हो ॥३॥
परमातम पद परसि कै, लखा पुरुष पुराना हो ।
अगम गली आगे चली, अली आदि अनामा हो ॥४॥
तुलसीदास दुरबीन मैं, कोइ संत समाना हो ।
अगम निगम गम गाइकै, जिन भाखि बखाना हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सब्द भेद साखी लखै, सोइ साध सुजाना हो ॥टेक॥
अगम निगम गम चीन्ह कै, बानी पहिचाना हो ।
सुरति सिष्य सब्दै गुरू, मिलि मारग जाना हो ॥१॥
लखि अकास औंधा कुआँ, ता मैं सुरति समाना हो ।
गगन गिरा गरजत भई, फूटा असमाना हो ॥२॥
गंग जमुन बिच सरसुती, बेनी असनाना हो ।
जोग ज्ञान गम ना लखै, अली अगम ठिकाना हो ॥३॥

तुलसी दर दुरबीन का, कोइ फोड़ि निसाना हो ।
सिंध बुन्द सागर मिला, सोइ सिंध कहाना हो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

बुन्दा सिंध समान, मिलि सागर सागर भयो ।
गुपल गुसाईं सब्द को, बिन बूझे बागर रह्यो ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं सब्द न बूझा । बीजक मति में रहे अबूझा ॥
अगम निगम गम सब्द पुकारा। तुम अँधरे नहिं बूझ बिचारा
सब्द सिंध सतगुरु गोहरावैं । बिन सतसँग कस नजर समावै॥
हिये दृग नैन किवारी खोली। सोइ सतगुरु की समुझै बोली॥
सतगुरु अगम राह दरसाई । सब्द साखि सब भाखि सुनाई॥
पिय मारग मिलने की रीती । नैन नगर नित प्रति स्रुति प्रीती ॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ। तुम को रमज राह दरसाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

सुरति निरति निज नैन को, सतगुरु दरसावा हो ॥टेक॥
अति उतंग पिय पंथ को, तब मारग पावा हो ।
सुरति जहाज पै बैठि कै, अपने घर आवा हो ॥१॥
सजि सिँगार सुंदरि चली, पिय को अपनावा हो ।
फूलन सेज सँवारि कै, सजि पलँग बिछावा हो ॥२॥
लगन लार लै से मिली, पिय रीझ रिझावा हो ।
सुरति सुहागिनि साजि कै, पिय से लिपटावा हो ॥३॥
तुलसी तरँग रँग राह की, कछु कहत न आवा हो ।
पति परचे पिउ पास की, जाना जिन गावा हो ॥४॥

॥ चौपाई ॥

अस अस खुलि खुलि सब्द सुनावै । पंथ भूल से नजर न आवै ॥
पंथ राह रस्ते को गाया । तुम पंथी इक जाति बनाया ॥

पंथ अगम घर जो चढ़ि जावै। ता को नाम पंथ कहलावै ॥
उलट बास संतन ने भाखी। जा की समझ सूर कोइ राखी ॥
सुलटी को उलटी कर बूझा। उलटी सुलटी समझ न सूझा ॥
अब या को इक सब्द सुनाऊँ। उलटि सुलटि वोहि माहिं दिखाऊँ ॥

॥ रेख़ता[1] ॥

अली इक बात सुन सुलटी। बिना समझे लगै उलटी ॥१॥
कही सब संत ने बोली। गूढ़ मत गुप्त नहिं खोली ॥२॥
सुरति मन बुद्धि नहिं जावै। लखन मैं कौन बिधि आवै ॥३॥
अरी नहिं बेद ने जाना। कहत करि नेत गोहराना ॥४॥
जुगत जोगी नहीं जानी। ज्ञान नहिं ध्यान बिज्ञानी ॥५॥
जगत और भेष ना जाने। पढ़े पंडित्त भरमाने ॥६॥
सकल तिरलोक लौं गावैं। निरंजन जोति ठहरावैं ॥७॥
अगम घर राह नहिं सूझै। संत गति कौनि बिधि बूझै ॥८॥
अस्त रबि होत अँधियारा। हिये तम रूप मैं सारा ॥९॥
मिलै गुरु गैल बतलावै। तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥
लखै तब संत के बैना। सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥
तरक ताली खुलै ताला। निरखि तहँ होत उजियाला ॥१२॥
अधर घर सुरति चढ़ धावै। अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥
सुरति जब उलट कर बूझा। उलट की सुलट कर सूझा ॥१४॥
तुलसी तन बीच मैं हेरा। सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥
कहन कछु और बिधि राखै। उलट की सुलट कर नाखै ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

संत गती गति उलटी रीती। तुम्हरी बुधि जग बिदित अनीती ॥
चेला करि परिवार चलाई। संत मता कहो कस कस पाई ॥
बीजक टेक माहिं तुम भूला। संतन का मत अगम अतूला ॥

(१) यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

बिन सतगुरु कोइ भेद न पाया। सब्द गाइ सब जनम गँवाया ॥
गान पढ़न बूझन से न्यारा। संत भेद मत अगम अपारा ॥
जब लग पंथ पकड़ नहिं छूटै। बुधि मति हीन पकड़ि जम लूटै ॥
जो कबीर मति भाखि पुकारा। बिन सतगुरु नहिं बूझ बिचारा
पाइ महंती भेद न जाना। उन सतगुरु मति नहिं पहिचाना ॥
जिन से बूझ समझ कहि पाई। पढ़ि बीजक सब जनम गँवाई ॥

॥ सोरठा ॥

बिन सतगुरु उपदेस, सुर नर मुनि नहिं निस्तरे।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, और सबन की को गिनै ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु सत्त पुरुष अबिनासी। सत्त लोक पद परम निवासी ॥
सूरति चढ़ि पहुँचै उन पासी। सो सूरति सतगुरु की दासी ॥
जब होइ जीव निकरि निरवारा। नहिं जग बूड़ै भौजल धारा ॥
स्रवन लाइ सुन गुपल गुसाईं। ये कबीर मति अस बिधि गाई ॥

॥ सोरठा ॥

बूझै समझ बिचार, ये ब्रतंत भिनि भिनि कह्यौ।
बीजक मति निरवार, भाव भक्ति हा भेद सब ॥

॥ चौपाई ॥

अब आगे बरतंत सुनाऊँ। संत पंथ मति राह लखाऊँ ॥
जस कबीर ने पंथ चलाया। सूरति पंथ अगम घर पाया ॥
सो घर बिधि बिधि बरति सुनाऊँ। संत पंथ मति राह लखाऊँ ॥
अब या की बरतंत बताऊँ। गगन गुमठ घघकार सुनाऊँ ॥
नित प्रति उठै महल झनकारा। निरखा तुलसी बस्तु अपारा ॥

॥ दोहा ॥

ढोल ढोल घघकार की, मंदर उठै अवाज।
तुलसी सतगुरु संत से, पाई बस्तु अपार ॥

॥ रेख़ता ॥

हुलना सुनौ घघकारी । महलौं उठै झनकारी ॥१॥
लागी लगन अली मन की । लहरैं उठीं चलीं बन को ॥२॥
देखा पंथ सब झारी । ढूँढा जग भेष भिखारी ॥३॥
कहूँ ना निसाँ दिलदारी । खोजै पिया पिउ प्यारी ॥४॥
सभी सतगुरु संत बतावैं । कहूँ सतसँग से लखि पावै ॥५॥
बूझा सुना धुनि बानी । कोइ भाखै न भेद बखानी ॥६॥
अली अस अस बैस बितावा । कहूँ खोजत खोज न पावा ॥७॥
कंजा गुरु गैल लखाई । धुनि सुनि सत सुरति लखाई ॥८॥
तुलसी तन तपन बुझाई । सुनि स्त्रुति अपने घर आई ॥९॥
सिंघा बुँद समुँद समाना । लखि सूरति सब्द ठिकाना ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाईं । सब्द भेद सब साखि बताई ॥
अस अस बैस बीति गई सारी । खोजत खोजत जनम सिहारी ॥
कंज गुरू सोइ गैल लखाई । धुनि सुनि सुरति द्वार पर छाई ॥
तब तन मन की तपन बुझानी । सूरति सब्द मिली सहदानी ॥
सिंध बुंद जब मिला ठिकाना । सब्द सुरति लखि अगम बखाना

॥ सोरठा ॥

हिये पिय लखन लखाउ, गगन गुमठ दरसत लखा ।
सागर सुरति छुड़ाय, करम कलस क्रत फूटि सब ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिये मैं पिय को लखि पावा । गगन गुमठ सोइ अगम दिखावा
ये तन बीच हिये के माहीं । बस्तु अगोचर संत लखाई ॥
जिन जिन घट मैं सुरति समाई । सो पहुँचे सतगुरु सरनाई ॥

॥ रेख़ता ॥

हिये मैं पिय लखि पावा । गगन गुमठ दरसावा ॥१॥
स्याह रँग सुरति से छूटा । कलसा करम का फूटा ॥२॥

सुन की धुनि दरसानी । पौरी पिया पहिचानी ॥३॥
सुन मैं सब्द लखि पावा । मन से सुरति दौड़ावा ॥४॥
फूला कँवल दल माहीं । सुरती सब्द मैं धाई ॥५॥
नाली निरखि नभ द्वारा । देखा ब्रह्मंड पसारा ॥६॥
गुरु से गली लखि पाई । प्यारी पिया घर जाई ॥७॥
बेनी बिबिधि बिधि देखा । भाखा अगम का लेखा ॥८॥
बूझै कोइ संत बिचारी । निरखा जिन नैन निहारी ॥९॥
तुलसी चरन का चेरा । पावन रज कीन्ह निवेरा ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन रज धूर, सूर सुरति सगरी करी ।
भरी गगन के माहिं, गुमठ गगन चढ़ि लखि परी ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सहर हेरा नहीं, किया न सतगुरु खोज ।
बीजक मति सँग पचि मुए, पढ़ पढ़ मनमत मौज ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं खोज न कीन्हा । सब्द भेद का सार न चीन्हा ॥
बुधि मति हीन सूझ नहिं आई । गावत गावत जनम बिताई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी सरनि तुम्हारी । संत चरन पर तन मन वारी ॥
स्वामी चरन सरन मैं लीजै । दास जानि मोरा कारज कीजै ॥
मैं मति अंध नैन मति हीना । अब तौ तुलसी चरन यकीना ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि लीजै अब गुपल गुसाइ । बिन सतसंगति कोऊ न पाई ॥
सूरति सब्द समझ घट माहीं । पूछो सोइ सतगुरु से राही ॥

सब्द गुरू सुरति जब पावै । चढ़ि चढ़ि गगन गुमठ पर आवै
गगना गुमठ फोड़ि असमाना । सुरति चढ़ि सब्दा गुरु जाना ॥
सार सब्द गुरु सुरति समानी । अस कबीर गुरु सिष्य पिछानी॥
गुरु सिष भया अगम गम चेला। सो साधू सतगुरू का चेला ॥

॥ सोरठा ॥

गुपल गुसाईं धाइ, पाँय पकर करि सिर दियौ ।
हिया उमँगि जल धार, नैन नीर टप टप चुवै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी बोध ताहि का कीन्हा । समझ बूझ मारग को लीन्हा ॥

भेद राम और रामायन का जो तुलसी साहिब ने अपने शिष्य हिरदे से कहा

॥ चौपाई ॥

हिरदे पंथ भेष सब बूड़ा । संत मते को लखै अगूढ़ा ॥
वेद मता सब कासी माहीं । बूड़े जा में भेष भुलाई ॥
रामायनि घट बूझि न जानी । सब जग पंडित भेष न मानी ॥
घट मठ मैं रामायनि गाई । कासी कदर भेष नहिं पाई ॥
सुनि सुनि के सब अचरज कीन्हा । बुधि मत हीन न काहू चीन्हा ॥
परमहंस सन्यासी जोगी । ब्रह्मचारि जग बिष रस भोगी ॥
भेष पंथ मति सगरे झारी । अस बिधि कासी परी पुकारी ॥
कासी नगर सोर भया भारी । जग पंडित सब कहै नकारी ॥
हिरदे घट रामायनि माहीं । निंदा की बिधि नाहिं सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सत मति मूल, जग अबूझ भूला फिरै ।
सहै करम कृत सूल, सत अतूल गति ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सत मति संत राह गति गाई । पुनि काहू परतीत न आई ॥
अब कहूँ भाखि सो सुन संबादा। घट मैं अंड ब्रह्मंड अगाधा ॥

घट मैं रावन राम जो लेखा। भरत चत्रगुन दसरथ पेखा ॥
सीता लखन कौसल्या माहीं। मंथ्रा केकई सकल रहाई ॥
इंद्रजीत मंदोदरि भाई। रावन कुंभकरन घट माहीं ॥
सारा जगत पिंड ब्रह्मंडा। पाँच तत्त रचना कर अंडा ॥
जिन जिन घट अंदर मैं चीन्हा। सोइ सोइ साधू करैं यकाना ॥
या से अगम अगम येहि माहीं। निरखा देख नजर से आई ॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। घट रामायन मैं दरसइया ॥
घट रामायन अगम पसारा। पिंड ब्रह्मंड लखा बिधि सारा ॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। सो सब घट भीतर दरसइया ॥
अगम निगम और अकथ कहानी। तुलसी भाखी अगम निसानी ॥
घट रामायन ग्रंथ बनाई। साखी सब्द अगम बिधि गाई ॥
कही बिलावल जैजैवंती। कोइ कोइ बूझि अगम गति संती

॥ जैजैवंती[1] ॥

ए री घट माहिं तो रामायन गाई, ग्रंथन बनाइ कै ॥ टेक ॥
तुलसी सब भाखि सुनाई, घट रामायन बिधि गाई।
पिंड पिंड ब्रह्मंड दिखाना, तुलसी लौ लाइ कै ॥१॥
द्रुग देखा पिंड ब्रह्मंडा, निरखा सात दीप नौखंडा।
अंडा तत पाँच बनाया, काया धसि जाइ कै ॥२॥
तीन लोक घट माहीं, पुनि चौथे जाइ समाई।
परे ता के रहत अनामी, स्वामी निरताइ कै ॥३॥
सूरति द्रुग दीप उड़ानी, लीला गिर जाय समानी।
सुन्न सेत सब्द सुहाना, पुनि आई धाइ कै ॥४॥
हिये हिरदे नैन खुलाना, जहँ निरखा पुरुष पुराना।
वहँ सुन्न न सब्द न बोला, खोला द्वार पाइ कै ॥५॥
मिला प्रीतम पुरुष पुराना, अगमन अज घर हम जाना।
स्यामा भइ गति मति मोरी, बुंदा सिंध पाइ कै ॥६॥

(१) यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं नहीं है।

तुलसी संतन प्रति पाई, येहि अगम राह दरसाई ।
लिया अजर अगमपुर धामा, ता मैं रही छाइ कै ॥७॥
कहूँ अब सतसंगति गाई, भइ कासी नगर मँझाई ।
कासी काया भाखि बखानी, बिधि बिधि दरसाइ कै ॥८॥
हिरदे अहीर बखाना, हिरदे मैं हेर समाना ।
गुनुवाँ मन गुन सँग खेला, ता को कही गाइ कै ॥९॥
नैनू पंडित नैन कहाये, ता मैं स्यामा स्याम समाये ।
जहँ माना मन लै बैठा, पंडित पिंड आइ कै ॥१०॥
कर्मा करि करि कर्म कहाये, धर्मा सब धर्म चलाये ।
करिया पुतरी लै जाना, भाखूँ समझाइ कै ॥११॥
तकी तकि तकि नैन निहारा, सैनू सैनै सुरति सँवारा ।
रहे मन इत रेवतीदासा, या कौ कही गाइ कै ॥१२॥
फूलदास फूल गयौ कँवला, जहँ सूर दल पर सम्हला ।
प्रिय प्रीति सुरति चढ़ि आई, येही प्रियेलाल कै ॥१३॥
चढ़ि गई गगन के माहीं, परदा तीनौं फोड़ि समाई ।
पद चौथे जाइ निहारा, कंजा मैं गुरु पाइ कै ॥१४॥
गइ चौथे पद पर ताकी, राहि सुन्नी सुन्न न बाँकी ।
तुलसी मति कीन्ही दीना, संतन गति गाइ कै ॥१५॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा, घट रामायन लिखि सारा ।
सूरति घट घट मैं देखा, लेखा पद जाइ कै ॥१६॥
कासी मैं चौल[1] उड़ाई, तब हम ने गुप्त छिपाई ।
जानै कोइ सतसँग बासी, नहिं कासी भाखियै ॥१७॥
हिरदे जाने जाति अहीरा, घट रामायन वोहि तीरा ।
कोइ सत मत मन का आवा, जा को कही गाइ कै ॥१८॥

(१) चुहल, हँसी ।

तुलसी तत तोल बताई, पुनि कहि कहि भाखि सुनाई।
घट रामायन बूझै, सूझै तिहूँ लोक मैं ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, सोलह सै अठरा कही।
सही भई नहिं सार, लार निकट कासी बसै ॥

॥ चौपाई ॥

सोलहसै अठरा के माहीं। घट रामायन कीन्ह बनाई ॥
सम्बत सोलहसै अट्ठारा। घट रामायन साज सँवारा ॥
पिरथम घट रामायन गाई। कासी सुनि सब अचरज लाई ॥
तुलसी नाम इक साध गुसाईं। ग्रंथ कीन्ह इक भाखि बनाई ॥
ता मैं बेद किसेब न राखा। दस औतार कछू नहिं भाखा ॥
तीरथ बरत एक नहिं मानै। वो कहै और और परमानै ॥
पंडित हिरदे से भयौ झगरा। और भेष जग कासी सगरा ॥
तब तुलसी मन कियौ बिचारा। घट रामायन गुप्त करि डारा ॥
जग के माहिं चलन नहिं पाई। जग बिरोध नित झगरा लाई ॥
ये जग भवसागर की धारा। संत मता भवसागर पारा ॥
सत सत मति संतन ने गाया। पुनि काहू की दृष्टि न आया ॥
अगम निगम और आदि अनादा। समझै सुनि बूझै कोइ साधा ॥
काहू चित धर चेत न कीन्हा। ता से सतगुरु भेद न दीन्हा ॥
जग बिरोध देखा जब जानी। सात कांड रामायन बखानी ॥
घट रामायन संत कोइ चीन्हा। समझै संत होइ लौ लीना ॥
रावन राम कीन्ह संबादा। तब कासी मैं चली अगाधा ॥
तुलसी मता कोई नहिं चीन्हा। गुप्त भेद सब जग से कीन्हा ॥
ये भौसागर जगत असारा। तुलसी मता मते की लारा ॥
जग मैं बस्तु कोई नहिं चीन्हा। जा से ग्रंथ गुप्त कर दीन्हा ॥
जिन कोइ संत मते को चीन्हा। बूझै सोई होइ लौलीना ॥

॥ सोरठा ॥

कासी नगर मँझार, भरम भाव सगरे भयौ।
घट रामायन लार, ये निकाम कासी बसै ॥१॥
राम चरित्र बनाय, जगत भूल भ्रम ताहि मैं।
इष्ट भाव ब्रत मान, समझाया समझै नहीं ॥२॥
जासु बनी है बात, देखन बिधि बिधि योँ कही।
लही जो तुलसी दास, संत चरन रज धूरि धरि ॥३॥
हिरदे जानै बात, तुलसी तत मत लखि कही।
लई अपनपौ आइ, जाइ सुरति सब्दै मिली ॥४॥
सतसँग करौ हजार, बिना संत अंतै नहीं।
भेष पंथ मैं नाहिं, ये अतंत रस अगम है ॥५॥
मैं संतन कर दास, लखि हुलास अद्बुद कह्यौ।
लह्यौ अमर पद बास, योँ अकास अंबर गह्यौ ॥६॥
सूरति निरति सँवारि, सार पार पद निरखि कै।
बूझै बूझनहार, ये अगार अंदर कही ॥७॥
मैं संतन की लार, सत सँवार सूरति दई।
गई सेत के पार, सत सतगुरु मैं मिलि रही ॥८॥
सत स्रुति महल अगार, फारि आठ अटकी नहीं।
सटकी सिंध मँझार, पदम कंज निरखत रही ॥९॥
अलल पच्छ इमि बास, सजि अकास आगे गई।
लही अमरपुर बास, स्वाँस भास जहँ गम नहीं ॥१०॥

तुलसी साहिब के पूर्ब्ब जन्म का हाल

॥ दोहा ॥

तुलसी कहत बताइ, अपनी उत्पति मति बिधी।
सुधि सतसंगति लार, जग जब से तन मैं सिधी ॥

॥ चौपाई ॥

अब अपनी बिधि कहा बिसेखा । तुलसी कीच नीच कर लेखा ॥
मैं अति अधम अचेत अबूझा। संत चरन कछु मोहिं को सूझा ॥
मैं तो अजान जानि जित जाई। संतन कीन्ह जानि सरनाई ॥
मैं तो अचेत चेत चित नाहीं। संत चिताइ लीन्ह अपनाई ॥
मैं पुनि संत सरन सम नाहीं। संत दयाल दया के साईं ॥
तुलसी मत बुधि नाहिं बिबेका। संत चरन चित बाँधी टेका ॥
मैं अब अपनी आदि बताओं। अपनी बिथा आदि गति गाओं॥
जग ब्यौहार जगत जग राही। तन उपजा बिधि कहौं बुझाई ॥
राजापुर जमुना के तीरा। जहँ तुलसी का भया सरीरा ॥
बिधि बुन्देलखंड वोहि देसा। चित्रकोट बीच दस कोसा ॥
संबत पंद्रासै नावासी। भादौं सुदी मंगल एकादसी ॥
भया जनम सोइ कहौं बुझाई। बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई ॥
तिरिया बरत भाव मन राता। बिधि बिधि रीत चित्त सँग साथा
ज्ञानहीन रस रँग सँग माता। कान्ह कुब्ज बाम्हन मोरी जाता॥
जगत भाव ऊँचा सब भाँते। कुल अभिमान मान मदमाते ॥
मोटा मन कछु चीन्ह अचीन्हा। ज्ञान मते मत रहौं मलीना॥
एक बिधी चित रहौं सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौं तेहि लारे॥
संत साथ मोहिं नीका भावै। ज्ञान अज्ञान एक नहिं आवै ॥
अब आगे का सुनौ बिधाना। ता की बिधी कहौं परमाना ॥
संबत् सोलासै थे चौधा। ता दिन भया अगम का सौदा॥
सावन सुदी नौमी तिथि बारी। आधी राति भई गति न्यारी ॥
बिजुली चमक भई उँजियारी। कड़का घोर सोर अति भारी ॥
मन मैं बहु बिधि भर्म समाया। यह अजगुत कहो कहँ से आया॥
राति बीति गइ भयउ बिहाना। मन अचरज सोइ कहौं बिधाना
पुनि प्रति रोज रोज अस होई। एक दिवस सूरति चढ़ि जोई ॥

नील सिखर गुरुद्वारे माहीं । निरखा अचरज कहा न जाई ॥
कहँ लगि कहौं बिधी बिधि डंडा । पुनि सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
गंगा जमुना और त्रिबेनी । कँवल माहिं सतगुरु की सैनी ॥
पद्म प्रयाग अगमपुर बासा । सतगुरु कंज सुरति पद पासा ॥
तीनि लोक भीतर सब देखा । कहौं कहाँ लगि बिधि बिधि लेखा ॥
जो ब्रह्मंड भरा जग माहीं । सो देखा सब घट मँ जाई ॥
नित नित सैल सुरति सँग खेला । निरखा अगम निगम अस सैला ॥
कस कस कहौं अगम बिधि नाना । एक दिवस चढ़ि अगम ठिकाना
वहँ की सैल चौज कछु भारी । अंड खंड ब्रह्मंड से न्यारी ॥
अस अस देखा अगम तमासा । चौथा पद सतलोक निवासा ॥
वे सत सतगुरु भेंटे जाई । सूरति सत्तनाम रही छाई ॥
तीनि लोक से चौथा न्यारा । तहँ गइ सूरति सतगुरु पारा ॥
नित नित सैल कोई दिन कीन्हा । चौथा पद जहँ सतगुरु लीन्हा ॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती । सूरति चढ़ि रस आगे पीती ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारी । उतरै चढ़ै चढ़ै नित चारी ॥
चौथे पद से न्यारा धामा । सतगुरु पद के पार अनामा ॥
तुलसी प्रीति सुरति की लागी । राति दिवस सोवै नहिं जागी ॥
कहँ लगि ब्यान कहौं गति गाई । तुलसी मो से कही न जाई ॥
जो सब बिधि मैं कहौं सुनाई । तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥
ये बिधि देखा सकल बिधाना । अब कहौं सुनौ और बिधि नाना
कंज गुरू ने राह बताई । देह गुरू से कछु नहिं पाई ॥
अब आगे बिधि सुनौ बिधाना । ता की बिधी कहौं परमाना ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने । राजापुरी जगत सब जाने ॥
लोग दरस को नित नित आवै । दरस भाव सब को उपजावै ॥
नर नारी सब आवैं झारी । दरसन करैं सिपारस भारी ॥
हिरदे अहीर कासी का बासी । रहै राजापुर नौकर पासी ॥

वोहु प्रति दिन दरसन को आवै। प्रीति बड़ी हित कहा न जावै ॥
राति दिवस दिन दिन रहै पासा। तुलसी बिना और नहिँ आसा॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती । कासी गये बहुत दिन बीती ॥
हमरा चित हिरदे में बासी । हम चलि गये नग्र जहँ कासी ॥
संवत सोलासै रहे पंद्रा । चैत मास बारस तिथि मँगरा ॥
पहुँचे कासी नगर मँझाई । हिरदे सुनत दौड़ि चलि आई ॥
आये चरन लीन्ह परसादी । बिधि बिधि रहन कुटी की साधी
कुटी बनाय कीन्ह अस्थाना। कासी में हम रहे निदाना ॥
गंगा निकट कुटी जहँ कीन्हा। हिरदे नित आवै लौलीना ॥
सतसँग रंग राह रस पीना । हम पुनि बस्तु अगम की दीन्हा
अस अस कछु दिन कासी माहीँ। रहे तहाँ पुनि सहज सुभाई ॥
सोलासै सोला में सोई । कातिक बदी पंचमी होई ॥
आये पलकराम इक संती । रहे कासी में नानक पंथी ॥
गुष्टि भाव बिधि उन से कीन्हा। खुसी भये मारग को लीन्हा ॥
घट रामायन ग्रंथ बनावा । ता की बिधी दिवस सब गावा॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा । उठी मौज ग्रंथ कियो सारा ॥
भादौं सुदी मंगल एकादसी । आरँभ किया प्रथम मन भासी॥
सुनि कासी में अचरज कीन्हा। सोर नगर में भयो अलीना ॥
पंडित जग्त जैन अरु तुरका। भयौ झगरा आइ कासी पुर का॥
पंडित भेष जग्त मिलि सारा। घट रामायन परी पुकारा ॥
जो कुल झगरा रीति जस भाँती । जस जस भया दिवस अरु राती
ता से ग्रंथ गुप्त हम कीन्हा । घट रामायन चलन न दीन्हा ॥
या से संत मते की रीती । जग्त अजान न जानै प्रीती ॥
सम्मत सोलासै इकतीसा । राम चरित्र कीन्ह पद ईसा ॥
ईस कर्म औतारी भावा । कर्म भाव सब जगहिँ सुनावा ॥
जग में झगरा जाना भाई । रावन राम चरित्र बनाई ॥

पंडित भेष जगत सब झारी । रामायन सुनि भये सुखारी ॥
अंधा अंधे बिधि समझावा । घट रामायन गुप्त करावा ॥
अब कहँा अंत समय अस्थाना। देह तजी बिधि कहँा बिधाना॥

॥ दोहा ॥

सम्मत सोलासै असी, नदी बरुन के तीर ।
सावन सुकला सत्तमी, तुलसी तज्यो सरीर ॥

॥ चौपाई ॥

मैं अपना बरतंत बताई । समझ बूझ सुध बुध चित लाई ॥
जस जस भया बिधी बिधि लेखा। तस तस तुलसी कहा बिसेखा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी नीच निकाम, गति मति उतपति सब सुधी ।
निधि स्रुति संत समान, आदि अंत तुलसी बिधी ॥

संतमत भेद बरनन

॥ छंद ॥

सरनि सूर संता सो लीला अनंता । कृपा कीन्ह कंथा दयालं कृपालं ॥१॥
मिटे दुक्ख दुंदा कटे काल फंदा । फटे भौ निखंदा न दुंदं न फंदं ॥२॥
दया संत जानी सो कहँ लौं बखानी । मता मूल मानी न करमं न भरमं ॥३॥
गुरू दीन्ह संधा भया नीच बंदा। जु तुलसी निखंदा सुबोधं प्रबोधं ॥४॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सम मुक्ति मन, तन मन समझ सिहार ।
बूझि बचन मन मूल को, सबहि सूल मिटि जाय ॥१॥
पकरि पदर धरि संत पद, जद्यपि सुरति बिचार ।
लार लगन लागी रहै, तब उतरै भौ पार ॥२॥

॥ छंद ॥

लखौ संत स्वामी पकौ पंथ नामी। अचिंतं अनामी न ठामं न धामं ॥१॥
करौ प्रेम प्रीती सरन सूर सुरती। धरौ पद्म प्रीतं न नीतं अनीतं ॥२॥
धरै धीर चरना हरै पीर सरना । भगै भूमि भरमं न जनमं न मरनं ॥३॥

गुरू सब्द सारा निकरि सिंध पारा। धसी अगम धारा नियारं सुपारं॥४॥
चली सार संगी लगी लार चंगी। तनी तार तंगी उमंगै उलंघी॥५॥
लखौ लोक न्यारी पकौ प्रेम प्यारी। अधर मैं निहारी न रंगं न रूपं॥६॥
गहै सूर साधू सो भाखै अगाधू। न स्रावन न भादूँ न नीरं न पीरं॥७॥
बना बेनि घाटा लखौ चीन्ह बाटा। सखी संग ठाटा बिराटं बिधानं॥८॥
लखी सुर्ति सैला चखी चौज खेला। तका तुलसी तालं कटा भर्म जालं॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो कौ कियौ।
लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ॥

॥ दोहा ॥

भर्म भूल बस जग रहै, सहै जो जम के सूल।
फूल फँदे जग जाल मैं, बंध न चीन्हा भूल॥१॥
ये जग जाल कराल है, फँद फँद मुनि बेहाल।
काल चाल चीन्हा नहीं, तुलसी संत कृपाल॥२॥
मैं मतिमंद निकामता, पता न जानौं भेद।
खेद जन्म की मिटि गई, लई लगन स्रुति लार॥३॥
सतगुरु सुरति लखाइया, दिया जो भेद सुनाइ।
पाँय परसि रस बस रही, गई गगन के माहिँ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तन मन अगम तमासा। लखै साध कोइ बरनि बिलासा॥
कहि कहि कहौं संत के बैना। सुनि सुनि समझ भया सुख चैना॥
मो मन जानि जमक जस गाई। खाइ खलक सोइ नाहिँ सुनाई॥
ये जग जोर घोर अँधियारा। अंधे लगे अंध की लारा॥
संत मता नहिँ चीन्हि गँवारा। कस कस लखै पार पद न्यारा॥
नैन न चैन ऐन हिये झाँई। सो कहौ संत अंत कस पाई॥
मैला मन मद माहिँ चलावै। साधन संग रंग नहिँ भावै॥
मन तरंग तन लहर गड़ानी। भया अंध कहौ कस कस जानी॥

॥ दोहा ॥

मन तरंग थिर ना भयौ, गही न सतगुरु टेक ।
भेष भरम बस पचि मरे, धर धर जनम अनेक ॥

॥ छंद ॥

तुलसी तोल बानी सो भाखा बखानी । अली आदि जानं सो छानं बखानं॥
कही आदि जेती भई भाख तेती। लई संत सेती जो सूझं सो बूझं
गुरू गैल गवना लखी लोक भवना। चखी चौज मौजं न सोगं न भोगं
पती पीर जानी मती मूल मानी । सती सूर सानी सो आपं मिलापं
मिली सिंध सारा जो सलिता सिधारा। धसी पैठि धारा जो सिंधसो बुंदं
असी सुर्त चाली मिली सब्द नाली। भई भैंट भालं अकालं न जालं
तलब तुलसि भारी लगी प्रेम प्यारी। पिया सौँसवारं जो नैना निहारं

॥ दोहा ॥

प्रेम पियारी प्रीति सौं, जीति जन्म मन सार ।
पार पकरि स्रुति सैल कर, भर भर भवन सिधार ॥

॥ चौपाई ॥

जोइ जोइ भेद भया सोइ भाखा । तुलसी कहन कछू नहिं राखा ॥
ये बिधि भया भेद सोइ गाया । तुलसी अगमन भाखि सुनाया॥

॥ सोरठा ॥

जोइ जोइ बिधि बरतंत, संत समझ मो को दई ।
लही जो तुलसीदास, कही कहन घट लखि परी ॥१॥
कहि लख लखन लखाव, चाव चौज जस जस भई ।
दही दधि माखन भाव, काढ़ि तत्त येहि बिधि लह्यो ॥२॥
पद परसंग समान, जानि कल्प जुग जुगन की ।
पलक पार दरियाव, भाव भेद लखि जिन कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

हित चित चेत सेत स्रुति सारा । संत चरन पर तन मन वारा ॥
मोरे बुधि बल बरन बिबेकी । मैं नित लखन संत की देखी ॥

कही सुनी नहिं निज निज बानी। सब्द बूझ कोइ संत पिछानी ॥
मोरे तन मन दृष्टि दिखानी । सो सब कृपा संत की जानी ॥

॥ सोरठा ॥

संतन सरन उबार, लार लगन जो कोउ करै ।
भरै भवन खुलि द्वार, पार परसि पारस भये ॥

॥ चौपाई ॥

मैं लोहा जड़ कीट समाना । गुरु पारस सँग कनक कहाना ॥
कंचन भया सोन सुख माना। सो सराफ की तुलै दुकाना ॥
पुनि गहना गढ़ि कीन्ह सुनारा। तोड़ मोड़ बहु भाँति सँवारा ॥
पुनि पारस नहिं सोन कहाना । सोन सोन जुग जुग जिव जाना॥
पारस परसत पारस होई । लस सतगुरु मत भाखा सोई ॥
तुलसी सतगुरु पारस कीन्हा । लोहा सुगम अगम लखि लीन्हा
लोहा कंचन पारस होई । पारस पद संतन मत सोई ॥
करि सतसंग रंग जोइ जाना । जिन वोहि पारस को पहिचाना
कर सोइ पारस कंचन होई । ये पारस सतगुरु सम सोई ॥

॥ सोरठा ॥

पारस कंचन कीन्ह, दीन द्रब्य बस भौ भई ।
दई दई कर्म लीन्ह, मीन बिबस बस जल भई ॥१॥
सतगुरु पारस सार, लगै लार पारस करै ।
सरै जीव कैा काज, भरै सुरति भिनि भवन मैं ॥२॥
सूरति सब्द मिलाप, आठ अटारी चढ़ि चली ।
अली अगम गढ़ घाट, बाट लखन सतगुरु दई ॥३॥

॥ चौपाई ॥

जिन सतगुरु पद चरत सिहारा । सोइ पारस भये अगम अपारा ॥
सतगुरु पारस संत बखाना । चौथा पद चढ़ि अगम कहाना ॥
या को भर्म भाव कोइ लावै । सतसँग करै भर्म खुलि जावै ॥

जो कोइ कहै अगम कस भाखा। आदि अरु अगम सुरति रस चाखा
तुलसी तुच्छ ग्रंथ घट कीन्हा। बूझैं संत अगम लौ लीना ॥
मैं उन का बालक बिधि गाई। सुनिहैं संत बाल हित लाई ॥
मैं अजान बुधिहीन अचेता। वे सुनि करैं करैं हित हेता ॥
मैं बुधि लरिका की लरिकाई। बुधि बालक बिधि कीन्ह बनाई ॥
संत दयाल दया के स्वामी। तुलसी कीन्ही निरखि निसानी ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, जग बिरोध गुप्त करी।
लगी संत के हाथ, बूझि भेद सारा लिया ॥१॥
अगम निगम रस सार, निरखि संत हाथै करी।
मथि माखन रस काढ़ि, जगत भाँड बिधि निरखि कै॥२॥
तुलसी तत मत जान, सत्त भेद निंदा नहीं।
ये मत माखन सार, जग असार जानै नहीं ॥३॥
सब संतन रस मूल, कर्म सूल गाढ़े कटे।
फटे कागद करतार, सार बस्तु हाथै लगी ॥४॥
तुलसी निपट अयान, जानि संत बूझै सोई।
घट रामायन सार, लखि अगार बिधि यौं कही॥५॥
आदि अंत की बात, भाखि भेद संतन लखा।
पका परम पद पार, झका भर्म भौ में रहा ॥६॥
जिन बूझा मत मूल, सरन सूल सगरे कटे।
फटे भरम क्रम भूल, जब अतूल अद्बुद लखा ॥७॥

॥ दोहा ॥

जो ब्रह्मंड पिंड मैं मई, मइ मइ मोर पसार।
सब्द सार गुरु पदम की, तुलसी कहत निहार ॥

॥ चौपाई ॥

टाटी त्रोटक तोड़ बताई। छंद माहिं सब संध लखाई ॥
जस जस भया गुरू सिष मेला। सो तुलसी त्रोटक में खोला ॥

था की बूझ संत कोइ जानी । जिन जिन मंजिल राह पिछानी
आदि अंत और अगम निवासा । ज्ञान भक्ति और जोग बिलासा॥
पुनि बैराग राग रस भारी । अगम निगम मत कहा बिचारी
गुरु सतगुरु मत मिलन मिलापा । छूटै तिमर अंध और आपा ॥
सतगुरु गगना गगन गुहारा । जब हिये नैना निरखि निहारा॥
पल पल सुरति पदम पद माहीं। ताकै ऐन सैन की राही ॥
प्रथमहिं बन्दौं सतगुरु स्वामी। तुलसी बारंबार प्रनामी ॥

॥ सोरठा ॥

गुरु पद गगन गुहार, जब निहार निरनय लखै ।
पकै पदम स्रुति सार, तकै ऐन अंदर मई ॥

॥ छंद १ ॥

प्रथम वंद स्वामी सो सतगुरु प्रनामी । अगम पंथ धामी सो वारं न पारं
परम पद्म मूलं सो महिमा अतूलं । कटै घोर सूलं अनंतं अपारं
कही तोल बानी अकथ गति कहानी । कहाँ लौ बखानी सो चरनारविंदं
मुए जोग ज्ञानी सो महिमा न जानी । बरन बेद बानी सो नेता जो नेतं
तुलसी सैल सानी सो भाखा बखानी । जो बंदौं नमामी सो लेखा अलेखं

॥ छंद २ ॥

गुरू धाम कंजा मनी मैल भंजा । धनू तोड़ भंजा सो लीलं अपोलं
घोर गरजा घरारी कमठ सेस भारी । सो कड़का करारी सो अंगं भुअंगं
दिगज दिग्पाली परे पट्ट चाली। रबी चाँप डाली सो तोलं अतोलं
हली भूमि भारी कुलाहल अपारी । धसी तोड़ धारं गगन घोर सारं
तकी सुन्न जाई पकी ताल माहीं। सो तुलसी अन्हाई छुटे कर्म मैलं

॥ छंद ३ ॥

अगम पंथ बाटा चढ़ी सुर्ति घाटा । गगन गैल फाटा सो आतं निआतं
पिला पील भारी चढ़ी सुर्ति सारी। सो खिरकी निहारी लखा ब्रह्म पूरं
अधर लेख लेखा सो जानै न भेषा । सुरति संत देखा सो लेखा अलेखं
तुलसी तत्त बानी किया मत्त छानी । लिया लै निदानं जो ज्ञानं सो ध्यानं

॥ छंद ४ ॥

कही सिंध बानी सो बुंदा न जानी । सो सतगुरु बखानी अनाथं सनाथं
अजर कूप भारी सो सूरत सँवारी। कटे कर्म बंधं बसे बुन्द सिंधं
चढ़ी चेट चाली खड़ी बंक नाली। धसी द्वारपाली प्रबोधं सो धोयं
तुलसी तत्त तोली अधर चाँप खोली । लखी संत बोली सो मोलं अमोलं

॥ छंद ५ ॥

जड़े जाल कर्मं पड़े भूल भर्मं । घरे घर अधर्मं न मरमं न सरमं
नहीं भक्त ज्ञानी जो आपा न जानी। सो पाषान पानी न जाना अजानं
भया मोह बंधे त्रिया पुत्र फंदे । बिषय भोग अंधे सो गंदं निखंदं
तुलसी छेक छोड़े हथी और घोड़े । तिनुका इस्क तोड़े सो मोड़ं करोड़ं

॥ छंद ६ ॥

गिरा गोह गाँठी परे पाँच बाटी। फँसे घोर घाटी सो ठाटं बैराटं
प्रकिरती पचीसं गुना नाम ईसं । गिरा गोह ग्रीसं सो प्रीसं अनीसं
जड़े जोड़ जानी पड़े पिंड पानी। चले चेत खानी न ज्ञानं न ध्यानं
तुलसी मैल मारं भया भूमि भारं। न तुरती सम्हारं सो वारं न पारं

॥ छंद ७ ॥

कृतिम काल जारं फिक्र फहम फारं। निकर नौ निवारं सो भारं उतारं
अली आदि जानी भली भूल मानी। चली चौन्ह खानी हितानं चितानं
तिरकूट तालं करौ सैल भालं । मिलौ मौज मालं सो कालं निकालं
तुलसी तोल गाई गगन गैल जाई। सुरति सैल पाई सो साधं अगाधं

॥ छंद ८ ॥

अली आत्म रूपं अकासं सरूपं । रबी भास भूपं अनंतं अनूपं
निराकार कारं भई जोति जारं । लई बिस्व भारं सो सारं सम्हारं
सरगुन स्याम वारं सो सृष्टी सवारं । रचो खानि चारं सो भूमी अपारं
अली आस अंडा जमा जीव पिंडा। सो तुलसी अखंडा बैराटं ब्रह्मंडं

॥ छंद ९ ॥

गुना गोह तीतं बना बास कीतं । पके पाँच पीतं सो चीतं अनीतं
बैराट धारं सो बेदौ न पारं। जो नेतौ पुकारं सो वारं न पारं

निरबान बानं जगा जोग ध्यानं। पगा प्रेम पालं सो कालं करालं
तुलसी तत्त धोयं गठे गाँठि गोयं। पड़े पाँच मोयं जो सोयं सो खोयं

॥ सोरठा ॥

त्रोटक तरक बिचार, समझि संघ साधू लखै ।
तकै सुरति धरि ध्यान, सो समान पद को चखै ॥१॥
घट रामायन अन्त, समझि सूर संतहि लखै ।
झकै भेष और पन्थ, थकै जगत भौ भिल रहा ॥२॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष जो, नहिँ पावै कोइ अंत ।
ये अतन्त रस अगम है, लखै सूर कोइ संत ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मैं मतिहीन, संत चीन्ह मो को दई ।
भई निरत पद लीन, होइ अधीन अन्दर मई ॥

॥ इति ॥

॥ सूची पत्र ॥

घट रामायन—भाग १

घट रामायन–भाग २